मॉरमन की पुस्तक

सुसमाचार सिद्धान्त शिक्षक निर्देशिका

मॉरमन की पुस्तक

सुसमाचार सिद्धान्त शिक्षक निर्देशिका

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर साल्ट लेक सिटी, युटाह द्वारा प्रकाशित

टिप्पणी और सुझाव

इस निर्देशिका के बारे में आपको टिप्पणी और सुझाव की सराहाना की जाएगी। कृप्या इन्हें निम्न पत्ते पर भेजें:

Curriculum Planning
50E, North Temple St., Rm. 2420
Salt Lake City, UT 84150-3220
USA
E-mail: cur-development@ldschurch.org

कृप्या अपने नाम, पत्ते, वार्ड और स्टेक की सूचना दें। निर्देशिका का शीर्षक बताएं। तब निर्देशिका की मज़बूती और उन क्षेत्रों के संभावित सुधार के बारें में अपने टिप्पणी और सुझाव दें।

आवरण: मसीह तीन नफायटी शिष्यों के साथ, गैरी एल. काप्प द्वारा

© 2004 Intellectual Reserve, Inc.
द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित बेहतर की गई 2003

भारत में छपी
अंग्रेजी की अनुमति: 4/03
अनुवाद की अनुमति: 4/03
Book of Mormon Gospel Doctrine Teacher's Manual का अनुवाद

Hindi

विषय सूची

पाठ संख्या और शीर्षक	पृष्ठ
शिक्षक के लिए सहायता	v
1. “हमारे धर्म की नींव का पत्थर”	1
2. “सारी बातें उसकी इच्छानुसार” (1 नफी 1–7)	6
3. जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन (1 नफी 8–11; 12:16–18; 15)	11
4. “जिनको मैंने उस समय देखा था जब कि मैं आत्मा में खोया हुआ था” (1 नफी 12–14)	16
5. “सत्य को सुनना और उसे मानना” (1 नफी 16–22)	20
6. “चुनने की स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन” (2 नफी 1–2)	25
7. “मैं जानता हूँ कि मेरा विश्वास किस पर है” (2 नफी 3–5)	29
8. “हमारे ऊपर परमेश्वर की कितनी बड़ी कृपा है (2 नफी 6–10)	33
9. “यशायाह की वाणी से मेरी आत्मा आनन्दित होती है” (2 नफी 11–25)	37
10. “वह सभी को अपने पास बुलाता है” (2 नफी 26–30)	42
11. “मसीह में दृढ़ विश्वास रखते हुए आगे बढ़ते चलो” (2 नफी 31–33)	47
12. “तुम पहले परमेश्वर के राज्य को खोजो” (याकूब 1–4)	51
13. जैतून के वृक्ष का दृष्टान्त (याकूब 5–7)	56
14. “एक विवेकमय उद्देश्य के लिए” (इनोस, जराम, ओमनी, मॉरमन के शब्द)	61
15. “अपने पिता के अनन्त ऋणी होंगे” (मुसायाह 1–3)	66
16. “तुम मसीह की सन्तान कहलाओगे” (मुसायाह 4–6)	71
17. “एक दिव्यदर्शी—अपने साथी लोगों के लिए भारी सहायक सिद्ध होता है” (मुसायाह 7–11)	75
18. “स्वयं परमेश्वर—अपने लोगों को मुक्त करेगा” (मुसायाह 12–17)	79
19. “प्रभु को छोड़ कर दूसरा कोई उन्हें दासता से मुक्त नहीं कर सकता” (मुसायाह 18–24)	84
20. “मेरी आत्मा को कोई दुःख नहीं है” (मुसायाह 25–28; अलमा 36)	89
21. “अलमा—न्यायपूर्वक निर्णय करता रहा” (मुसायाह 29; अलमा 1–4)	94
22. “क्या तुमने अपनी आकृति में उसकी किरणों को प्राप्त किया है?” (अलमा 5–7)	98
23. “एक से अधिक ने गवाही दी” (अलमा 8–12)	102
24. “मसीह में...हमें विश्वासानुकूल शक्ति दें” (अलमा 13–16)	107

25. “उन्होंने परमेश्वर की शक्ति और अधिकार के साथ शिक्षा दी” (अलमा 17–22)	112
26. “प्रभु के समक्ष परिवर्तित” (अलमा 23–29)	116
27. “सारी वस्तुएं सुचित करती हैं कि परमेश्वर है” (अलमा 32–35)	120
28. “मसीह में उद्धार को वचन है” (अलमा 32–35)	124
29. “मेरे वचनों को सुनो” (अलमा 36–39)	128
30. “ख़ुशहाली की महान योजना” (अलमा 40–42)	133
31. “मसीह के विश्वास में दृढ़” (अलमा 43–52)	138
32. “उन्होंने आज्ञा के प्रत्येक वचन का यथार्थता के साथ पालन किया था” (अलमा 53–63)	142
33. “एक पक्की नींव” (इलामन 1–5)	146
34. “तुम अपने परमेश्वर को कैसे भुल गए?” (इलामन 6–12)	150
35. “पश्चाताप करो और प्रभु के पास वापस लौटो” (इलामन 13–16)	155
36. “मैं कल दुनिया में आऊंगा” (3 नफी 1:7)	160
37. “जो आएगा मैं उसे स्वीकार करूंगा” (3 नफी 8–11)	164
38. “पुरानी चीज़ें हो चुकी हैं; और सब चीज़ें नई हो गई हैं” (3 नफी 12–15)	168
39. “देखो, मेरा आनन्द पूर्ण है” (3 नफी 17–19)	173
40. “तब मैं उन्हें अन्दर इकट्ठा करूंगा” (3 नफी 16; 20–21)	177
41. “उसने उन्हें सब चीज़ें समझाईं” (3 नफी 22–26)	181
42. “यह मेरा सुसमाचार है” (3 नफी 27–30; 4 नफी)	185
43. “तुम प्रभु के मार्ग से कैसे भटक गए?” (मॉरमन 1–6; मरोनी 9)	190
44. “मैं तुमसे उसी तरह बोल रहा हूं जैसे मानो तुम मेरे सामने उपस्थित हो” (मॉरमन 7–9)	194
45. “मुझ पर मनुष्य ने कभी ऐसा विश्वास नहीं किया जैसे तुमने किया है” (एथर 1–6)	198
46. “विश्वास द्वारा सब चीज़ें पूरी हुई हैं” (एथर 7–15)	202
47. “उन्हें सही मार्ग में रखने के लिए” (मरोनी 1:6)	206
48. “मसीह के पास आओ” (मरोनी 7–8; 10)	210

शिक्षक की सहायता के लिए

बारह प्रेरितों के साथ एक सभा के अन्तर्गत, भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने "बन्धुत्व से कहा था कि मॉरमन की पुस्तक ही इस धरती पर सबसे सही पुस्तक है, और हमारे धर्म की नींव है, मनुष्य किसी अन्य पुस्तक के मुकाबले इसके उपदेश पर कायम रहने से परमेश्वर के निकट आएगा" (History of the Church, 4:461; मॉरमन की पुस्तक का परिचय भी देखें)।)

सुसमाचार सिद्धान्त शिक्षक के रुप में, इस वर्ष आपके पास धरती की सबसे सही पुस्तक की शिक्षा देने का मौका है। आत्मा के निर्देशन द्वारा, आप कक्षा के सदस्यों को अनन्त नियमों को समझने में सहायता करेंगे और यीशु मसीह की गवाही में, उसके सुसमाचार, और भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के मिशन में और भी पक्के होंगे। आप उन्हें अन्य आशीषें प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं जोकि मॉरमन की पुस्तक का निरन्तर सावधानी से किए गए अध्ययन से मिलती हैं, कुछ इनमें से अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बेनसन द्वारा बताई गई हैं:

"मॉरमन की पुस्तक के बैरियों का वर्णन है। इसमें ग़लत सिद्धान्त का खण्डन और विवादों को नष्ट किया है। यह मसीह के पीछे चलने वाले नम्र लोगों को बूरी योजनाओं, गया कपट, और शैतानी सिद्धान्तों के विरुद्ध शक्ति प्रदान करती है। मॉरमन की पुस्तक के स्वधर्मत्याग उसी तरह समान्य है जिस तरह आज हमारे साथ होता है। परमेश्वर ने अपने अनन्त पुर्वज्ञान से मॉरमन की पुस्तक को इस तरह बनाया है कि हम गलत शिक्षा, राजनीति, धर्म, और अपने दार्शनिक दोषों को देख सके और जाने कि किस तरह इनसे बचाव करना है।" (Conference Report अप्रैल, 1975, 94–95; या *Ensign*, मई 1975, 64)।

"इस पुस्तक में एक शक्ति है जो आपके जीवन के उन क्षणों में बहती है जिस क्षण से आप इस पुस्तक को गंभीरता से पढ़ना शुरु करते है। आप के भीतर लालच को रोकने की महान शक्ति प्रदान होती है। आप कपट से बचने की शक्ति प्राप्त करते हैं। आप सीधे संकरे रास्ते पर कायम रहने की शक्ति पाते हैं....। जब आप उन शब्दों के प्रति भूख और प्यासे होते हैं, तब आप अपने जीवन में महान से महान प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।" (Conference Report, अक्टूबर 1986, 6; या *Ensign*, नव. 1986, 7)।

जब आप शिक्षा देते हैं, प्रभु की आत्मा आपको मॉरमन की पुस्तक की शक्ति की गवाही में लोगों को यीशु मसीह के ज्ञान में और उसके सिद्धान्त में दृढ़ और स्थिर रहना बताता है।

आत्मा के द्वारा शिक्षा देना

जब आप सुसमाचार सिद्धान्त कक्षा की तैयारी करें, यह बहुत ज़रुरी है कि आप पवित्र आत्मा की प्रेरणा और मार्गदर्शन को खोजें। "आत्मा आपको विश्वास की प्रार्थना द्वारा दी जाएगी" प्रभु ने कहा था, "और अगर आपको आत्मा नहीं मिलती आप शिक्षा नहीं दे सकेंगे (देखें सि. और अनु. 42:14)। याद रखो कि आपकी कक्षा में पवित्र आत्मा ही शिक्षक है।

आप आत्मा की खोज प्रार्थना द्वारा, उपवास, धर्मशास्त्र को प्रतिदिन पढ़कर, और आज्ञाओं का पालन करके कर सकते हैं। कक्षा की तैयारी करने के लिए प्रार्थना करने से आप की धर्मशास्त्र को समझने में और कक्षा की ज़रुरतों को जानने में सहायता मिलती है। आत्मा आपको धर्मशास्त्र को अच्छी तरह से और अर्थपूवर्क चर्चा में और अपने आज के जीवन में लागू करने में भी सहायता करती है (देखें 1 नफी 19:23)। आत्मा के मार्गदर्शन के साथ, आप प्रभु के हाथ में प्रभावी बनकर उसके बच्चों को उसके शब्दों की शिक्षा देते हैं।

आत्मा को अपनी कक्षा में आमन्त्रित करने के कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं:

1. कक्षा सदस्यों को पाठ से पहले और बाद में प्रार्थना करने के लिए आमन्त्रित करें। कक्षा के दौरान, अपने हृदय में आत्मा के नेतृत्व के लिए प्रार्थना करें, कि गवाही और प्रेरणा के लिए कक्षा के सदस्यों के हृदय तैयार हों।
2. धर्मशास्त्र का प्रयोग करें ("धर्मशास्त्र पर केन्द्रीत करें" नीचे देखें)।
3. जब कभी आत्मा आपको उत्तजित करे गवाही दें न कि सिर्फ पाठ के अन्त में। यीशु मसीह की गवाही दें। बीच बीच में कक्षा के सदस्यों को उनकी गवाही देने के लिए आमन्त्रित करें।
4. स्तुति गीत, प्राथमिक गीत, और अन्य पवित्र संगीत को कक्षा के सदस्यों को आत्मा महसूस करने के लिए तैयार करने को उपयोग करें।
5. कक्षा के सदस्यों के लिए, अन्यों के लिए और स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के लिए प्रेम व्यक्त करें।
6. जैसा उचित हो, पाठ से संबंधित निरीक्षण, भावनाएं और अनुभव बाँटें। कक्षा सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए आमन्त्रित करें। कक्षा के सदस्य पूर्व पाठ पर चर्चा किए गए नियमों को उन्होंने कैसे प्रयोग किया है भी बता सकते हैं।

धर्मशास्त्रों पर प्रकाश डालें

एल्डर बोएड के. पैकर ने सिखाया था, "सच्चा सिद्धान्त, समझ आता, अवस्था और आचरण में बदलाव लाता है।" (Conference Report, अक्टू. 1986, 20; या *Ensign*, नव. 1986, 17 में)। अपनी तैयारी और कक्षा में, धर्मशास्त्र जैसे सुसमाचार के बचाने वाले सिद्धान्तों पर, और अन्तिम–दिनों के भविष्यवक्ताओं पर प्रकाश डालें। आपको ज़रुरत है धर्मशास्त्र को ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करने की। प्रभु ने आज्ञा दी, "मेरे शब्दों की घोषणा करना न ढूँढें, परन्तु पहले मेरे शब्दों को प्राप्त करना खोजो, और तब तुम्हारी जबान खुलेगी; तब, अगर तुम्हारी इच्छा हो,तुम्हें मेरी आत्मा और वचन मिलेंगे, हाँ, परमेश्वर की शक्ति मानव जाति को विश्वास दिलाएगी" (देखें सि. और अनु. 11:21)।

हर सप्ताह कक्षा के सदस्यों को कक्षा में धर्मशास्त्र लाने के लिए प्रोत्साहित करें। चुने हुए धर्मशास्त्र के अंश एक साथ पढ़ें जब उनकी आप चर्चा कर रहे हों।

प्रत्येक कक्षा के सदस्य के पास *मॉरमन की पुस्तक कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* (35684) की एक प्रति होनी चाहिए। यह छोटे आकार की पुस्तक कक्षा सदस्यों को उनकी पढ़ाई क्षमता में सुधार करने में सहायता करती है। यह धर्मशास्त्र को समझने में, जीवन में लागू करने में, उन्हें कक्षा में चर्चा की तैयारी करने में, और उसे पारिवारिक चर्चा में प्रयोग करने में सहायता करती है। कक्षा सदस्यों को धर्म-संबंधी अंशों का अध्ययन करने में और प्रत्येक सप्ताह कक्षा में आने से पूर्व अध्ययन पुस्तिका के अंशों का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करें।

मॉरमन की पुस्तक को बाँटना

अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बैनसन ने गिरजाघर के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक को बाँटने की चुनौती दी। उन्होंने कहा था:

मॉरमन की पुस्तक से धरती को भर देने का समय बहुत पहले से लम्बित है—परमेश्वर हमें उत्तरदायी ठहराएगा यदि हमने अभी मॉरमन की पुस्तक की एक महान मार्ग में आगे बढ़ने में सहायता नहीं की।

हमारे पास मॉरमन की पुस्तक है, हमारे पास सदस्य हैं, हमारे पास प्रचारक हैं, हमारे पास ज़रिये हैं, और दुनिया को ज़रुरत है।

"अब समय है" (Conference Report, अक्टू. 1988, 4; या *Ensign*, नव. 1988, 4–5 में)।

जब इस वर्ष आप रविवार विद्यालय में मॉरमन की पुस्तक की शिक्षा देंगे, कक्षा सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे मॉरमन की पुस्तक को अपने परिचितों और अपने दोस्तों के साथ बाँटें जो सदस्य नहीं हैं। (शिक्षा विचार पाठ 1 में द्वितीय अतिरिक्त भाग देंखे)। वर्ष के शुरुआत में, आप शायद धर्माध्यक्षता के और वार्ड प्रचारक मार्गदर्शक के साथ इस बारे में सलाह लेना चाहते हों कि कक्षा सदस्य किस प्रकार मॉरमन की पुस्तक प्राप्त करें और अन्यों के साथ बाँटें।

इस निर्देशिका का प्रयोग

यह निर्देशिका एक औजार है जो आपके धर्मशास्त्र में से सुसमाचार के सिद्धान्तों की शिक्षा देने में सहायता करती है। यह युवाओं को और वयस्क को सुसमाचार सिद्धान्त कक्षाओं के लिए लिखी गई है और यह हर चार वर्ष बाद प्रयोग की जाती हैं। अतिरिक्त संदर्भ और टिप्पणी को करना आवश्यक नहीं है। एल्डर एम. रासल बलार्ड ने कहाः "शिक्षकों को अन्य दुसरी सामग्री को करने से पहले धर्मशास्त्र और उनके निर्देशिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने की सलाह दी जाती है। बहुत से शिक्षक पाठ्य पुस्तक की स्वीकृत सूची से उन्हें अच्छे से दोहराये हुए भटक जाते हैं। अगर शिक्षक को पाठ प्रस्तुत करने में धर्मशास्त्रों और निर्देशिका के अलावा कुछ अच्छी सामग्रियों का प्रयोग करने की आवश्यकता महसूस हो उन्हें पहले गिरजाघर की पत्रिका का प्रयोग करना चाहिए।" (Conference Report, अप्रैल 1983, 93; या *Ensign*, मई 1983, 68)।

प्रत्येक पाठ की कम से कम एक सप्ताह पहले से समीक्षा करें। जब आप पढ़ने के कार्यभार और पाठ सामग्री का पहले से अध्ययन करते हैं, आपको विचार और प्रभाव सप्ताह के दौरान प्राप्त होंगे जोकि पाठ की शिक्षा देने में आपकी सहायता करेंगे। जैसे आप सप्ताह के दौरान पाठ पर मनन करते हैं प्रार्थना करें कि आत्मा आपको मार्गदर्शन दें। विश्वास करें कि प्रभु आपको आशीष देगा।

इस निर्देशिका के प्रत्येक पाठ में उससे ज्यादा जानकारी दी गई है जितनी कि आप एक कक्षा समय में शिक्षा दे सकते हैं। प्रभु की आत्मा को खोजें चुने हुए धर्मशास्त्र विचारने में, प्रार्थना में, और अन्य अध्याय समाग्री जो अच्छी ज़रुरत होती है कक्षा सदस्यों की।

प्रत्येक पाठ के अर्न्तगत निम्नलिखित भाग हैंः

1. *शीर्षक।* शीर्षक दो भागों से बना हैः एक लघु विवरणात्मक उद्धरण या वाक्यांश और धर्मशास्त्र वृतान्त आपको पढ़ना चाहिए जब आप पाठ की तैयारी करते हैं।

2. *उद्देश्य।* उद्देश्य कथन एक मुख्य विचार देता है जिस पर आप पाठ की शिक्षा और तैयारी करते समय ध्यान केन्द्रीत कर सकते हैं।

3. *तैयारी करना।* यह भाग पाठ की रुपरेखा में धर्मशास्त्र के वृतान्तों को संक्षिप्त करता है। यह अतिरिक्त सामग्री को और तैयारी के लिए अन्य सुझावों को भी सम्मलित कर सकता है, जैसे वे सामग्रियां जो आप कक्षा में ला सकते हैं। इनमें से बहुत सी सामग्रियाँ सभाघर की पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। (पाँच अंकों की संख्या प्रस्तावी चित्रों के निम्नलिखित नाम से सभाघर पुस्तकालय क्रम में हैं; अगर चित्र सुसमाचार कला चित्र किट (34730) में सम्मलित हैं, तो वो संख्या भी दी गई है।

4. *ध्यानाकृषण गतिविधि।* यह भाग एक साधारण गतिविधि, पाठ उद्देश्य, उद्धरण, या कक्षा सदस्यों को सीखाने में सहायक प्रश्न, भाग लेना, और आत्मा के प्रभाव को महसूस करने से बना है। आप चाहे तो निर्देशिका ध्यानाकृषण गतिविधि या अपने स्वयं की एक का प्रयोग करें, यह बहुत महत्वपूर्ण है कक्षा सदस्यों के ध्यान को अध्याय के शुरुआत से केन्द्रीत करना। गतिविधि संक्षिप्त में होनी चाहिए।

5. *धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग में लाना।* यह पाठ का मुख्य भाग है। प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र भाग का अध्ययन करें कि आप उनसे प्रभावित तरीके से शिक्षा और चर्चा कर सकते हैं। सुझावों का प्रयोग "कक्षा चर्चा को प्रोत्साहित करना" में (पृष्ठ viii) और "विभिन्नता का प्रयोग धर्मशास्त्र की शिक्षा देने में" (पृष्ठ ix) बहुत से

शिक्षा देने के तरीके हैं कक्षा सदस्यों की रुचि बनाए रखने के। चुने प्रश्न और तरीकें जोकि कक्षा सदस्यों के आयु और अनुभव के अनुसार हों।

6. *निष्कर्ष* । यह भाग आपकी सहायता पाठ को संक्षिप्त में और कक्षा सदस्यों को नियमों को जीने में प्रोत्साहित करता है जिसकी आपने चर्चा की थी। यह आपको आपकी गवाही देना भी याद दिलाता है। याग रहे प्रत्येक अध्याय के समाप्त होने से पूर्व कुछ समय रख छोड़ें।

7. *अतिरिक्त शिक्षा सुझाव* । यह भाग निर्देशिका के बहुत से पाठों में दिया गया है। इस में शायद धर्मशास्त्र वृतान्तों की अतिरिक्त सच्चाइयां भी दी हैं, शिक्षण के अन्य तरीकों, गतिविधियाँ या अन्य सुझाव जोकि पाठ रुपरेखा की शेषपूर्ति करते हो। आप इसमें से कुछ विचार पाठ के भाग के लिए भी प्रयोग कर सकते हैं।

कक्षा चर्चा को प्रोत्साहित करना

आपको समान्य रुप से उपदेश नहीं देना चाहिए। बदले में, कक्षा के सदस्यों की अर्धपूर्वक धर्मशास्त्र चर्चा में भाग लेने पर सहायता करें। कक्षा सदस्य के भाग लेने से उनकी सहायता होती है:

1. धर्मशास्त्र के विषय में अधिक सीखाना।
2. सुसमाचार नियमों को कैसे लागू किया जाए सीखें।
3. सुसमाचार को जीने में अधिक वचनबद्ध होना।
4. कक्षा में आत्मा को आमन्त्रित करना।
5. एक दुसरे को शिक्षा दें और उपर उठायें ताकि वे एक दुसरे के उपहारों, ज्ञान, अनुभव, और गवाही से लाभ उठाएं।

चर्चा कक्षा के सदस्यों को उद्धारक और उसके शिष्यों के समान जीने में सहायता करना चाहिए। विषय के विपरीत चर्चा उद्देश्य को पूरा नहीं करती।

सोच उत्तेजक प्रश्न पूछना एक बहुत ही प्रभावशाली शिक्षा कला हो सकती है। यही कला उद्धारक अपनी शिक्षा देते समय भी प्रयोग करते थे। आत्मा के मार्गदर्शन को खोजें जब आप इस निर्देशिका के प्रश्नों को पढ़ें और निर्णय लें कि कौनसा पूछना है। निर्देशिका धर्मशास्त्र संदर्भ आपकी सहायता के लिए देता है और कक्षा सदस्य इन प्रश्नों के ज्यादा उत्तर पाते हैं। अन्य प्रश्नों के उत्तर कक्षा सदस्यों के अनुभव से आते हैं।

यह बहुत ज़रुरी है कि कक्षा सदस्य धर्मशास्त्र को समझे और लागू करें ना कि निर्देशिका के सारे अध्यायों को आप तैयार करें। अगर कक्षा सदस्य अच्छी चर्चा से सीखते हैं, यह प्रायः सहायक है कि इसे जारी रखे ना कि निर्देशिका के सारे अध्यायों को पूरा करने की कोशिश करें।

कक्षा चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित रुपरेखा का प्रयोग करें:

1. उन प्रश्नों को पूछें जिसमें विचार और चर्चा करना ज़रुरी है ना कि वो प्रश्न जिनका उत्तर हाँ या ना में हो सकता है। प्रश्न जिनकी शुरुआत क्यों, कैसे, कौन, क्या, कब और कहाँ से होती है समान्य रुप से प्रोत्साहित चर्चा के लिए प्रभावशाली होते हैं।
2. कक्षा के सदस्य को अनुभव बाँटने में प्रोत्साहित करें जो दिखाते हैं कि कैसे आत्मिक नियम और सिद्धान्त जीवन में लागू कर सकते हैं। उनको उत्तेजित भी करें कि अपने भावों को बाँटें कि वह धर्मशास्त्र में से क्या सीखते हैं। उनके सहयोग के लिए उनकी प्रशंसा करें।

3. प्रत्येक कक्षा के सदस्यों की ज़रुरत के प्रति सचेत रहें। यद्यपि सभी कक्षा सदस्यों के कक्षा चर्चा में शामिल होने के लिए उत्साहित करना चाहिए, कुछ शायद उत्तर देने में संकोच करें। आप शायद अकेले में उनसे बात करें और पता करें कि जोर से पढ़ने में या कक्षा में शामिल होने के बारे में वे कैसा महसूस करते हैं। ध्यान दें यदि वे संकोच करें तो उन्हें कक्षा में उत्तर देने के लिए न कहें।

4. कक्षा के सदस्यों को कुछ प्रश्नों के उत्तर पता करने के लिए धर्मशास्त्र से संदर्भ दें।

धर्मशास्त्र की शिक्षा देने में विभिन्नता का प्रयोग करें

निम्नलिखित सुझावों को धर्मशास्त्र को ज्यादा प्रभावशाली और विभिन्न तरीकों से सीखाने में प्रयोग करें:

1. कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्र यीशु मसीह के विषय में क्या सीखाता है समझने में सहायता करें। उनसे पूछें कि किस तरह से कोई अनुच्छेद उद्धारक पर उनके विश्वास और उसके प्रेम को महसूस करने में सहायक होता है।

2. कक्षा के सदस्यों से उसके बारे में सोचने और विशेष रुप से बाँटने को कहें कि एक धर्मशास्त्र का अनुच्छेद उनके जीवन में लागू हो सकता है। उन्हें खास अनुच्छेदों में मानसिक रुप से उनके नामों को रखकर धर्मशास्त्र को व्यक्तिगत बनाने दें।

3. सिद्धान्त की शिक्षा के अतिरिक्त, मॉरमन की पुस्तक में प्रेरणा से भरी कहानियाँ हैं। निश्चय करें कि कक्षा सदस्य कहानियों को समझे और उन्हें लागू करने के तरीकों पर चर्चा करें। पूछें, "आपके विचार से क्यों यह जानकारी मॉरमन की पुस्तक में दी गई थी?" या "इस कहानी से हम क्या सीख सकते हैं जो हमारी मसीह के उत्तम अनुयाई बनने में सहायता कर सकती है?"

4. कक्षा के सदस्यों को शब्दों वाक्यांशों, या विचार जो कि धर्मशास्त्र अनुच्छेद में अक्सर आते हैं या जिसका उनके लिए विशेष अर्थ हो ध्यान देने दें।

5. चार्कबोर्ड पर वाक्यांश, विशेष शब्द, या प्रश्न जो कि धर्मशास्त्र वृतान्तों से संबंधित हों लिखें। तब वृतान्त को पढ़ें या संक्षेप करें। जैसे कक्षा सदस्य वाक्यांश, विशेष शब्द, या प्रश्न का उत्तर सुनते हैं, रुकिये और उनकी चर्चा करें।

6. पूरी मॉरमन की पुस्तक में, वाक्यांश "इस तरह से हम देख सकते हैं" सीखाए गए नियम का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए प्रयोग किया गया है (उद्धारण के लिए, इलामन 3:28 देखें)। धर्मशास्त्र के अनुच्छेद को पढ़ने के पश्चात, कक्षा सदस्यों से वाक्यांश "इस प्रकार हम देख सकते हैं" की व्याख्या करें।

7. संकेतों पर ध्यान दें। और चर्चा करें जो कि मॉरमन की पुस्तक में प्रयोग किए गए। उद्धारण के लिए, एक सीधा और सकरा रास्ता बहुत बार सुसमाचार के प्रतीक के रुप में प्रयोग किया गया है (2 नफी 31:17–20; 33:9; याकूब 6:11; 3 नफी 14:13–14; 27:33)।

8. नोट करें कैसे लोगों या धर्मशास्त्र की घटनाओँ में विषमतांए या समानतांए हो सकती हैं। उद्धारण के लिए, आप लमान और लेमुएल में उनके भाइयों नफी और साम के साथ अन्तर या उद्धारक का पहाड़ पर संदेश जैसे नया नियम में है की समानता 3 नफी 12–14 के वृतान्त के साथ कर सकते हैं।

9. कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्र की कहानियों में से विभिन्न लोगों के शब्दों को ऊँची आवाज में पढ़कर नाटक करने दें। सुनिश्चित करें कि नाटकीयकरण धर्मशास्त्र के लिए आदर दिखाता हो।

10. कक्षा को दो या अधिक छोटे समूह में बाँटें। धर्मशास्त्र के वृतान्त को दोहराने के बाद, प्रत्येक समूह वृतान्त में पढ़े गए नियम और सिद्धान्त को लिखें। तब समूह एक एक करके चर्चा करें कि कैसे यह शिक्षा उनके जीवन में लागू होती है।

11. कक्षा के सदस्यों को पैंसिल लाने के लिए और विशेष वृतान्त पर निशान लगाने जैसे वे उसकी चर्चा करते हैं, के लिए आमन्त्रित करें।

नये सदस्यों की सहायता करें

आपको शायद उन सदस्यों को जो गिरजाघर में नये हो पढ़ाने का मौका मिले। आपकी शिक्षा इन सदस्यों की उनके विश्वास में दृढ़ होने में सहायता कर सकती है।

प्रथम अध्यक्षता ने कहा थाः "गिरजाघर के प्रत्येक सदस्य को प्रेम और पोषण की आवश्यकता होती है, विशेषकर बपतिस्में के बाद के कुछ पहले महीने में। जब नये सदस्यों को ईमानदार मित्रता मिले, सेवा का मौका, और आत्मिक पालन पोषण जो कि परमेश्वर के वचनों के अध्ययन से आता हो, तब वह चिरस्थायी धर्मपरिवर्तन का अनुभव और सन्तों के साथ के सह नागरिक और परमेश्वर के परिवार, के बनते हैं (इफिसियों 2:19)" (प्रथम अध्यक्षता का पत्र, 15 मई 1997)।

युवाओं को सुसमाचार की शिक्षा देना

अगर आप युवाओं को पढ़ते है, याद रखें कि उन्हें बारम्बार सक्रिय भाग लेने और सिद्धान्त जिसकी चर्चा हो दृष्टिगत प्रदर्शन की आवश्यकता होती है। आपके विडियों प्रदर्शन का प्रयोग, चित्र, गतिविधियाँ जिनका निर्देशिका में सुझाव दिया गया है अध्याय में युवाओं की रुचि बनाए रख सकता है। अन्य विचार आपकी युवाओं को सुसमाचार की शिक्षा देने में मदद करते हैं।

हमारे धर्म की नींव का पत्थर

पाठ
1

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यह समझने में सहायता करना कि कैसे मॉरमन की पुस्तक हमारे धर्म की नींव का पत्थर है और किस तरह उसका दृष्टिकोण हमें परमेश्वर की निकट पहुँचने में हमारी सहायता करता है।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्र पढ़े, विचारें, और उनके बारे में प्रार्थना करें: 1 नफी 13:38–41; 19:23; 2 नफी 25:21–22; 27: 22; 29:6–9; मॉरमन 8:26–41; एथर 5:2–4; मरोनी 1:4; 10:3–5; सिद्धान्त और अनुबंध 10:45–46; 20:8–12; 84:54–58 मॉरमन की पुस्तक का उद्गम सामग्री, साथ में विषय का पृष्ठ, प्रस्तावना, तीन साक्षियों की गवाही, आठ साक्षियों की गवाही, और भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही भी पढ़ें।
2. अतिरिक्त पढाई: मॉरमन की पुस्तक—हमारे धर्म की नींव का पत्थर (Ezra Taft Benson, *Ensign*, नव. 1986, 4–7; Conference Report, अक्टू. 1986, 3–7 भी देखें)।
3. पहले ही से, कक्षा के एक सदस्य को भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही को संक्षेप में तैयार करने को कहें, दुसरे से तीन साक्षियों की गवाही को संक्षेप में तैयार करने को कहें, और तीसरे से आठ साक्षियों की गवाही को संक्षेप में तैयार करने को कहें।
4. अगर निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध है, पाठ के दौरान उनका प्रयोग करने को तैयार रहें:

   क. चित्र मरोनी जोसफ स्मिथ के कमरें में आया (62492; सुसमाचार कला चित्र किट 404) और जोसफ स्मिथ के स्वर्ण पट्टियाँ प्राप्त करता है (62012; सुसमाचार कला चित्र किट 406)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरुआत करने के लिए निम्नलिखित गतिविधि या अपनी स्वयं की का प्रयोग करें।

चॉकबोर्ड पर एक पत्थर का मेहराब बनाएं:

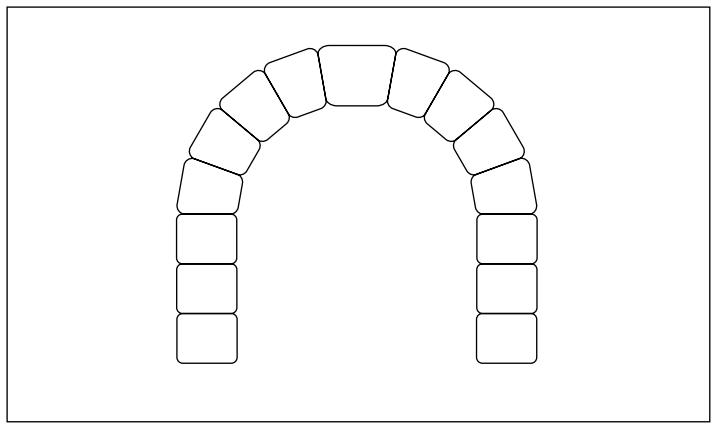

व्याख्या करें कि जब इस तरह के मेहराब सही ढंग से बनाए जाए, यह बिना किसी सहारे के पत्थर और सीमेंट के बीच खड़े रह सकते हैं।

- मेहराब को क्या चीज़ एक साथ खड़ा रखती है?

मेहराब के बीच के पत्थर पर *आधारशिला* शब्द लिखें। समझाएं कि मेहराब की आधारशिला अन्य पत्थरों को जगह पर खड़ा रखती है। यह पाठ अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर की आधारशिला पर चर्चा करता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों को, प्रश्नों, और अन्य अध्याय सामग्री को चुने जो कि कक्षा सदस्यों की ज़रुरत से अच्छा मेल खाती हो। चर्चा करें कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र रोज के जीवन में लागू होते हैं। कक्षा सदस्यों को उचित अनुभव बाँटने को प्रोत्साहित करें जो आत्मिक नियमों से सम्बन्धित हैं।

1. मॉरमन की पुस्तक हमारे धर्म की आधारशिला है।

कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक के परिचय पलटने को कहें और एक कक्षा सदस्य को छठा परिच्छेद को पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करें, *आधारशिला* के नीचे *मॉरमन की पुस्तक* चॉकबोर्ड पर लिखें।

अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग नहीं करते हैं, चॉकबोर्ड पर *मॉरमन की पुस्तक* = *आधारशिला* लिखें और समझाएं कि आधारशिला अन्य दुसरें पत्थरों को अपनी जगह में पकड़े रहता है और मेहराब के गिरने से बचाता है।

- आपके विचार से क्यों जोसफ स्मिथ ने मॉरमन की पुस्तक को हमारे धर्म की आधारशिला कहा था?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने व्याख्या की थी, "अगर आधारशिला निकल जाए मेहराब टुकड़े-टुकड़े हो जाता है, तो सारा गिरजाघर खड़ा या गिरता है मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई के साथ" (Conference Report, अक्टू. 1986, 5; या *Ensign*, नव. 1986, 6 में)।

- गिरजाघर मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई के साथ खड़ा या गिरता क्यों है?

इस प्रश्न की चर्चा के पश्चात, कक्षा के सदस्य से अध्यक्ष बेनसन के निम्नलिखित कथन को पढ़ने को कहें: तीन रास्ते हैं जिनसे मॉरमन की पुस्तक हमारे धर्म की आधारशिला है। यह हमारे मसीह की गवाही की आधारशिला है। यह हमारे सिद्धान्तों की आधारशिला है। यह हमारी गवाही की आधारशिला है (Conference Report, अक्टू. 1986, 4; या *Ensign*, नव. 1986, 5में)।

चॉकबोर्ड पर *मसीह की साक्षी* लिखें।

- कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक के विषय पृष्ठ पलटने को कहें, और व्याख्या करें कि यह पृष्ठ भविष्यवक्ता मरोनी ने लिखा था। दुसरे परिच्छेद के अनुसार, मॉरमन की पुस्तक के तीन उद्देश्य क्या हैं? (इस्राएल के घर के अवशेष प्रभु ने अपने पिता के लिए महान काम किया था; प्रभु की ज़रुरत के द्वारा अनुबंध की शिक्षा; और सारे लोगों की प्रतीति करना कि यीशु ही मसीह है, अपने आपको सारे देशों पर स्पष्ट किया दर्शाता है।)

- 1982 में उपशीर्षक *यीशु मसीह का दुसरा नियम* मॉरमन की पुस्तक के शीर्षक से जोड़ा गया था। उद्धारक के इस अतिरिक्त नियम को जोड़ना महत्वपूर्ण क्यों था? (1 नफी 13:38–41; 2 नफी 29:6–9 देखें।) यह क्यों ज़रुरी है कि दुनिया को घोषणा की जाए कि मॉरमन की पुस्तक मसीह की गवाही देती है?

- आप मॉरमन की पुस्तक से यीशु मसीह के बारे में क्या सीखते हैं? मॉरमन की पुस्तक कैसे आपको यीशु मसीह की गवाही पर शक्ति प्रदान करती है?

चॉकबोर्ड पर *सिद्धान्त* लिखें।

- किस तरह से मॉरमन की पुस्तक "हमारे सिद्धान्त की आधारशिला है"? (देखें सि.और अनु. 10:45–46; 20:8–12)

  अध्यक्ष बेनसन ने बयान किया, "प्रभु ने खुद ही बयान किया था कि मॉरमन की पुस्तक में यीशु मसीह की सुसमाचार की पूर्ति है (देखें सि. और अनु. 20:9)। इसका यह मतलब नहीं है कि इसमें सारी शिक्षा, सारे सिद्धान्त हैं जो कभी प्रकट किए गए थे, इसका मतलब है कि मॉरमन की पुस्तक में सिद्धान्तों की वह पूर्ति हम पाते हैं जो

हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है। और इसे इतने साधारण और सीधे तरीके से सिखाया जाता है कि बच्चे भी उद्धार और उन्नति के रास्ते सीख सकते हैं" (Conference Report, अक्टू. 1986, 4; या *Ensign*, नव. 1986, 6 में)।

- कैसे मॉरमन की पुस्तक ने महत्वपूर्ण सुसमाचार सिद्धान्तों की आपकी समझ को बढ़ाया है?

चॉकबोर्ड पर शब्द *गवाही* लिखें।

- मॉरमन की पुस्तक पुनःस्थापित सुसमाचार की गवाही के लिए ज़रुरी क्यों है?
- उनको क्या आशीषें मिलती हैं जो मॉरमन की पुस्तक की गवाही को पाते और उसकी शिक्षाओं पर चलते हैं? हमें मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई और गवाही को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? (देखें मरोनी 10:3–5)

कक्षा के सदस्यों को यह बताने के लिए आमन्त्रित करें कि उन्होंने कैसे जाना कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है।

2. बहुत सी साक्षियों ने मॉरमन की पुस्तक की गवाही दी है।

यदि आप मरोनी जोसफ स्मिथ को प्रकट होता है और जोसफ स्मिथ स्वर्ण पट्टियां प्राप्त करता है के चित्रों का प्रयोग करते हैं, उन्हें अभी दिखाएं। कक्षा के सदस्य को भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की गवाही के लेख की घटना को संक्षिप्त में बताने के लिए बुलाएं। तब व्याख्या करें कि जोसफ स्मिथ के मॉरमन की पुस्तक के अनुवाद समाप्त करने के बाद, अन्य लोगों को स्वर्ण पट्टियों को देखने का अवसर मिला था। कक्षा के सदस्यों को उनके तीन साक्षियों की गवाहियाँ और आठ साक्षियों की गवाही की संक्षिप्त में करने के लिए बुलाएं।

- स्वर्ण पट्टियों के लिए गवाहियां क्यों महत्वपूर्ण हैं? (देखें एथर 5:2–4)। आपके विचार से अतिरिक्त साक्षी होने ने कैसे भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ की सहायता की थी?
- हमारे पास कौनसी अन्य साक्षियां हैं कि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है?

3. मॉरमन की पुस्तक हमारे दिनों के लिए लिखी गई थी।

बताएं कि यद्यपि मॉरमन की पुस्तक एक प्राचीन दस्तावेज़ है, यह हमारे दिनों के लिए लिखी और सुरक्षित रखी गई थी (2 नफी 25:21–22; 27:22; मॉरमन 8:34–35; मरोनी 1:4)।

- कक्षा के सदस्यों के साथ मॉरमन 8:26–41 पढ़े। व्याख्या करें कि इन वचनों में आने वाली मॉरमन की पुस्तक की भविष्यवाणी की गई। किन परिस्थितियों में मरोनी ने पहले से देख लिया था कि मॉरमन की पुस्तक संसार में दुबारा से कब प्रकट होगी? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर लिखें। उत्तर शायद नीचे दी गई सूची से मिलते हो।) कैसे यह परिस्थिति आजकल की संसारिक बातों में साफ है?

  क. "परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार किया जाएगा" (आयत 28)।
  ख. "यह उस समय आएगा जब कि धरती पर भारी दुषण होगा" (आयत 31)।
  ग. लोग "अपने हृदयों के अहंकार में इतराते हुए चलते हो" (आयत 36)।
  घ. लोग "कंगालों, ज़रुरतमंदों—से अधिक प्रेम तुम अपने पैसों से करते हो" (आयत 37)।
  च. लोग "तुम अपने ऊपर मसीह का नाम लेने से क्यों लज्जित हो" (आयत 38)।

- किन तरहों से प्राचीन भविष्यवक्ताओं की शिक्षा हमारी सहायता का स्त्रोत बन सकती है? कैसे जान सकते हैं कि मॉरमन की पुस्तक हमारे आज के दिनों के लिए लिखी गई थी जब हम इसका अध्ययन करते हैं? (देखें 1 नफी 19:23)

  अध्यक्ष बेनसन ने सिखाया थाः "मॉरमन की पुस्तक—हमारे दिनों के लिए लिखी गई थी। नफायटियों के पास पुस्तक कभी थी ही नहीं; ना ही प्राचीन समय के लमनायटियों के पास थी। इसका मतलब हमारे लिए था—प्रत्येक मुख्य मॉरमन की पुस्तक के लेखक ने साक्षी दी थी कि यह भविष्य वशों के लिए लिखी गई थी—अगर

उन्होंने हमारे दिनों को देखा था और उन चीज़ों को चुना था जिनका हमारे लिए बहुत मोल है, क्या यह नहीं है कि हमें कैसे मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए? हमें लगातार अपनेआप से पूछना चाहिए, कि क्यों प्रभु मॉरमन (या मरोनी या अलमा) को प्रेरणा देता रहा उन लेखों में? मैं कैसे पाठ सीख सकता या सकती हूँ कि यह मुझे इन दिनों में और युग में सहायता कर सकें?" (Conference Report, अक्टू. 1986, 5; या *Ensign*, नव. 1986, 6 में)।

4. मॉरमन की पुस्तक हमें परमेश्वर के निकट ला सकती है।

एक कक्षा के सदस्य को मॉरमन की पुस्तक के छठे वाक्य के विशलेषण को दुबारा से पढ़ने को कहें।

- आज्ञा क्या है? (आज्ञा या नियम)। मॉरमन की पुस्तक की आज्ञा कैसे हमें परमेश्वर के निकट ला सकती है?
- अगर हम मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन नहीं करते, हम पर क्या परिणाम आ सकते हैं, व्यक्तिगत और एक गिरजाघर के नाते? (देखें सि. और अनु. 84:54–58)
- क्या परिवर्तन और आशीषें हमारे जीवन में आती हैं जब हम मॉरमन की पुस्तक का रोजाना अध्ययन और विचार करते हैं?

निष्कर्ष

पढ़े या कक्षा के सदस्य को निम्नलिखित बयान अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा लिखी गई को पढ़ने के लिए कहेः

"जिस क्षण [आप मॉरमन की पुस्तक] को गंभीरता से पढ़ना शुरु करते है, आप लालच से बचने के लिए महान शक्ति पाएंगे। आप कपट से बचने की शक्ति प्राप्त करते हैं। आप सीधे संकरे रास्ते पर कायम रहने की शक्ति पाते हैं....। जब आप उन शब्दों के प्रति भूखे और प्यासे होते हैं, तब आप अपने जीवन में महान से महान प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।" (Conference Report, अक्टू. 1986, 6; या *Ensign*, नव. 1986, 7)।

कक्षा के सदस्यों को अनुभव पाने के लिए अपने आप इस वर्ष मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन के लिए उत्तेजित करें। आत्मा के नेतृत्व के द्वारा, पाठ के चर्चा के दौरान सच्चाई की साक्षी देना।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. सुसमाचार के पुनःस्थापना में मॉरमन की पुस्तक का महत्व

निम्नलिखित वाक्याशों की सूची को बिना किसी क्रम संख्या के चॉकबोर्ड पर लिखेंः

6. मन्दिर कार्य मृतकों के लिए शुरु हुए।

3. मलकिसिदक पौरोहित्य की पुनःस्थापन हुई।

5. प्रेरितों को बुलाया गया।

1. जोसफ स्मिथ को पहला दिव्यदर्शन मिला।

4. गिरजाघर का संगठन हुआ।

2. मॉरमन की पुस्तक का प्रकट होना।

कक्षा के सदस्यों से पूछें इन घटनाओं के घटने के अनुसार क्रम में पहचानें (घटना के बांए दिये गये संख्या सही क्रम का प्रतीत करते है; इन संख्या को चॉकबोर्ड पर अंकित करें जैसे कक्षा के सदस्य घटनाओं को सही तरीके से क्रम में पहचानते है)। तब पढ़ें या कक्षा के सदस्य की निम्नलिखित व्याख्या अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बैनसन द्वारा को पढ़ें:

"एक....मॉरमन की पुस्तक की महत्वपूर्ण शक्तिशाली गवाही से ज्ञात होता है जब प्रभु उसके आगे आने का जगह समय अनुसार पुनःस्थापना को प्रकट करते हैं। सिर्फ एक चीज़ उसे आगे बढ़ाते हैं वह है पहला दिव्यदर्शन—

"यह इस संदर्भ में सोचें कि वह क्या सूचित करता है। आगे आने वाली मॉरमन की पुस्तक पौरोहित्य को पुनःस्थापना करता है। यह गिरजाघर के संगठन होने के कुछ दिनों बाद प्रकाशित हुआ था। सन्तों को मॉरमन की पुस्तक पढ़ने को दी गई थी पहले उन्हें प्रकटीकरण की बाही रेखा दी गई जैसे महान सिद्धान्त जैसे तीन दर्जे की महिमाएं सिलेस्टियल विवाह, या मृतकों के लिए काम। यह पहले पौरोहित्य परिषद् और गिरजाघर संगठन में आया था। क्या यह हमें इसके बारे में कुछ नहीं बतलाता है कि प्रभु ने इस पवित्र काम का दर्शन कैसे दिया?" (Conference Report, अक्टू. 1986, 3; या *Ensign*, नव. 1986, 4 में)।

2. मॉरमन की पुस्तक को बाँटना

धर्माध्यक्षता और वार्ड मार्गदर्शक के साथ सलाह करें कि सदस्य असदस्य मित्रों और परिजनों के साथ बाँटने के लिए मॉरमन की पुस्तक की प्रतियाँ कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

कक्षा में, सुझाव दें कि इस वर्ष कक्षा का लक्ष्य है मॉरमन की पुस्तक असदस्य मित्रों और परिजनों के साथ बाँटना चाहिए। कक्षा के सदस्यों को समझाएं कि कैसे वह मॉरमन की पुस्तक की प्रतियाँ ले सकते हैं, और प्रत्येक कक्षा के सदस्य को प्रोत्साहित करें कि वे कम से कम एक मित्र को या परिजन को उस वर्ष के दौरान एक प्रति दें।

इस वर्ष के दौरान अनेक समय, जैसे आत्मा नेतृत्व करता है, कक्षा के सदस्यों से पूछें अगर उनमें से किसी ने अभी तक मॉरमन की पुस्तक की प्रति को बाँटा है। कक्षा के सदस्य को आमन्त्रित करें जिसने यह किया है अपने अनुभव को संक्षिप्त में बतलाएं। कक्षा के सदस्यों को दुसरों के साथ मॉरमन की पुस्तक बाँटने के लिए नियमित रुप से प्रोत्साहित करें।

पाठ
2

“सारी बातें उसकी इच्छानुसार”

1 नफी 1–7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की सहायता करना देखने में, लेही और नफी के उदाहरण के द्वारा, कि सुरक्षा और उद्धार प्रभु की आज्ञा मानने से मिलता है।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्र पढ़े, विचारें, और उनके बारे में प्रार्थना करें:

   क. 1 नफी 1–2। लेही ने दिव्यदर्शन में ज्ञान पाया कि यरुशलेम का नाश होगा। उसने लोगों को पश्चाताप करने की चेतावनी दी, परन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार किया और उसे मार डालने की कोशिश की। प्रभु ने लेही को अपने परिवार के साथ यरुशलेम छोड़ने को बतलाया। लेही और उसका परिवार वीरानभूमि में चले गये।

   ख. 1 नफी 3–4। नफी और उसके भाई यरुशलेम लबान से पीतल की पट्टियाँ लेने लौटे।

   ग. 1 नफी 5। नफी और उसके भाइयों ने पट्टियाँ वापस अपने परिवार को लौटाई। इन पट्टियों में लेही परिवार के वशंज उनकी भाषा, उनके पूर्वज, और परमेश्वर की शिक्षा और आज्ञाएं बचा कर रखी गई थी।

   घ. 1 नफी 7। नफी और उसके भाइयों ने इस्माइल और उसके परिवार अपने साथ वीरानभूमि में आने को कहने के लिए यरुशलेम लौटे।

2. अतिरिक्त पढ़ाई; मुसायाह 1:3–7; अलमा 3:11–12।

3. पहले से, कक्षा के एक सदस्य से नफी और उसके भाइयों का लबान से पीतल की पट्टियाँ लाने की कोशिश को संक्षेप में तैयार करने के लिए कहें (1 नफी 3:9–4:38)।

4. अगर निम्नलिखित समाग्री उपलब्ध हो, पाठ के दौरान उसका इस्तेमाल करें:

   क. लेही की यरुशलेम के लोगों को भविष्यवाणी का चित्र (62517; सुसमाचार कला चित्र किट 300) और लेही के परिवार का यरुशलेम छोड़ कर जाना (62238; सुसमाचार कला चित्र किट 301)।

   ख. एक पेन या पेन्सिल और एक कागज़ प्रत्येक कक्षा के सदस्य के लिए।

5. कक्षा शुरु करने से पहले, चॉकबोर्ड पर रुपरेखा और धर्मशास्त्र संदर्भ जो चार्ट में पृष्ठ 8 में प्रयोग होंगे की सूची लिखें।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित लगे, निम्नलिखित गतिविधि का प्रयोग करें या अपनी स्वयं की का उपयोग करें।

कक्षा के सदस्यों को कल्पना करने को कहें कि जिस शहर में वह रहते है नष्ट होने वाला है और उन्हें तुरन्त छोड़ना है।

- आपको इस खबर के विषय में कैसा लगता है? आप क्या करेंगे?
- आप में क्या परिवर्तन होगा कैसा महसूस करेंगे और आप क्या करेंगे अगर आपको पता चले कि यह जानकारी परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता के द्वारा आई है?

व्याख्या करें कि यह पाठ लेही और उसके परिवार के विषय में है, जिन्होंने यरुशलेम में अपना घर छोड़ दिया था क्योंकि जल्द ही शहर नष्ट होने वाला था। पाठ चर्चा करता है कि यरुशलेम छोड़ने के बाद वे कहाँ गए और उन्होंने क्या किया था।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र के वाक्यांश का, प्रश्नों का, और अन्य पाठ समाग्री का चुनाव करें जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रुरतों से मेल खाता हो। चर्चा करें कि किस तरह से चुने हुए धर्मशास्त्र रोजमरा के जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बाँटने के लिए उत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र नियमों से सम्बन्धित हो।

1. लेही ने यरुशलेम छोड़ा और अपने परिवार को वीरानभूमि में ले गया।

1 नफी 1–2 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयत को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

- एक पहली घटना मॉरमन की पुस्तक में लेही और उसके परिवार को यरुशलेम से चले जाना बतलाती है। क्या परिस्थितियाँ थी इस चले जाने की? (देखें 1 नफी 1:4–15, 18–20; 2:1–3। यदि आप लेही भविष्यवाणी का चित्र उपयोग कर रहे हैं, तो अभी दिखाएं।)

- यरुशलेम के लोगों ने लेही और अन्य भविष्यवक्ताओं के संदेश को अस्वीकार क्यों कर दिया था? (देखें 1 नफी 1:19–20; 2:12–13; 16:1–2)। आज भी कुछ लोग प्रभु और उसके सेवकों के विरुद्ध विद्रोह क्यों करते हैं? नफी अपने पिता के संदेश का कैसे उत्तर दिया था? (देखें 2:16, 19) हम नफी से क्या सीखते हैं कि कैसे हम अपने हृदयों को भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं के प्रति अधिक ग्रहणशील बना सकें?

- प्रभु ने नफी से क्या वादा किया था अगर वह आज्ञाओं को मानेगा? (देखें 1 नफी 2:19–20, 22) प्रभु लमान और लेमुएल से क्या वादा किया था अगर वह विद्रोह करेंगे? (देखें 1 नफी 2:21, 23–24) कैसे यह प्रत्येक वादे हम पर लागू होते हैं?

- लेही अपने परिवार को यरुशलेम छोड़ने के बाद किस तरह के प्रदेश में ले गया था? (देखें 1 नफी 2:2। अगर आप लेही परिवार यरुशलेम छोड़ने के चित्र का प्रयोग कर रहे हैं, तो उसे अभी दिखाएं।) आपके विचार से लेही के परिवार ने अपना घर, अधिकार, और मित्रों को छोड़ने पर कैसा महसूस किया था? प्रभु के प्रति आज्ञाकारी रहने के लिए आपने कौनसे बलिदान दिए हैं? आप कैसे आशिषित हुए हैं जब आपने इस प्रकार के बलिदान दिए?

- तीन दिन के पश्चात वीरानभूमि में, लेही ने प्रभु का धन्यवाद करने के लिए एक वेदी बनाई थी (1 नफी 2:6–7; 1 नफी 5:9; 7:22 भी देखें)। हम कठिन परिस्थितियों में आभार प्रकट करना महसूस कर सकते हैं?

- लेही के प्रभु का पालन करने और यरुशलेम छोड़ने से कौनसी महत्वपूर्ण आशीषें आई थी? (कक्षा सदस्यों के जवाब चॉकबोर्ड पर लिखें। जवाब में यह भी जोड़े कि लेही और इस्माइल के परिवार नष्ट होने से बच गए थे; एक इस्राएल की शाखा का मार्गदर्शन वादा किए गए देश तक किया गया था; और मॉरमन की पुस्तक, यीशु मसीह का दुसरा नियम, उपलब्ध कराया गया था)

2. नफी और उसके भाई यरुशलेम पीतल की पट्टियां लेने लौटे।

1 नफी 3–4 से चुने हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- लेही अपने पुत्रों को यरुशलेम वापस क्यों भेजा था? (देखें 1 नफी 3:1–4) लमान और लेमुएल ने वापस जाने पर कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी? (देखें 1 नफी 3:5) नफी ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी? (देखें 1 नफी 3:7) यदि आपसे ऐसी यात्रा करने को कहा जाए, आपके विचार से आपकी प्रतिक्रिया कैसी होती? क्या फर्क पड़ता यह जानकार कि प्रभु ने उसे करने के लिए आपसे कहा है?

- लेही के परिवार को पीतल की पट्टियों की आवश्यकता क्यों थी? (देखें 1 नफी 3:3, 19–20; 4:15–16; 1 नफी 5:21–22; मुसायाह 1:3–7 भी देखें।)

नियुक्त कक्षा के सदस्य को पट्टियां प्राप्त करने के लिए नफी और उसके भाइयों के प्रयासों को संक्षेप में बताए (1 नफी 3:9–4:38)।

- ऐसी क्या कुछ परिस्थितियां हैं जिसमे हमें आत्मा का मार्गदर्शन पर चलाना पड़े, पहले से यह जाने बिना कि हमें क्या करना चाहिए? (1 नफी 4:6)। हम नफी के शब्दों से क्या सीख सकते हैंः "फिर भी मैं आगे बढ़ा"? (1 नफी 4:7)।

- नफी को लबान को मार डालने के लिए विवश क्यों किया गया था? (देखें 1 नफी 4:10) नफी ने कैसे स्वीकार किया कि उसको लबान को मार डालना चाहिए? (देखें 1 नफी 4:11–18)

- कक्षा के सदस्य 1 नफी 3:7 को ज़ोर से पढ़ें। प्रभु ने कैसे "एक रास्ता तैयार किया" नफी के करने के लिए जो उसे आज्ञा दी गई थी करने को? उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए प्रभु कैसे आपके लिए रास्ता तैयार करता है?

- नफी और उसके भाई जोराम को अपने साथ वीरानभूमि वापस ले जाने के लिए इच्छुक क्यों थे? (1 नफी 4:35–36) नफी और उसके भाइयों के साथ जाने के लिए जोराम को किसने विवश किया था? (देखें 1 नफी 4:31–34। व्याख्या करें कि लेही के समय के लोगों के बीच में, प्रतिज्ञा पवित्र होती थी। जोराम जानता था कि नफी कभी भी अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ेगा।) यह क्यों ज़रुरी है कि हमें अपने वचनों को रखने वाले लोगों के रुप में जाना जाए?

स्पष्ट करें कि लमान और लेमुएल ने अपने पिता की आज्ञा का पालन कर उनके साथ वीरानभूमि में गये और फिर पीतल की पट्टियाँ लेने वापस यरुशलेम लौटे थे, वे बड़बड़ाने और लगातार परिवार की यात्राओं के दौरान विद्रोह करने लगे थे। दुसरी तरफ, नफी और साम, अपने अनुभवों में विश्वासी और आज्ञाकारी रहे थे? आप शायद व्याख्या करना चाहे कि साम का अधिक वर्णन नहीं हुआ, धर्मशास्त्र संकेत करता है कि वह विश्वासी और आज्ञाकारी था, जैसे नफी था (1 नफी 2:17; 8:3)।

कक्षा के आधे सदस्यों को उन धर्मशास्त्र अंशों को पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। उन्हें शब्दों या आयतों पर ध्यान देने दें जो नफी को दर्शाती हैं। कक्षा के बाकी सदस्यों को अन्य अंश पढ़ने, शब्दों या आयतों पर ध्यान देने के लिए आमन्त्रित करें जो लमान और लेमुएल को दर्शाती हैं। आप प्रत्येक कक्षा के सदस्यों को जब वह पढ़ते है नोट बनाने के लिए एक कागज़ और एक पैन या पैन्सिल दें। तब कक्षा के सदस्यों को जो उन्होंने पाया था उसकी रिपोर्ट करने दो। प्रत्येक आयत की सूची में चॉकबोर्ड पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (उदाहरण नीचे दिए गए चार्ट में है; आपको एकदम समान वाक्य का प्रयोग करने की ज़रुरत नहीं है)।

नफी	लमान और लेमुएल
1:1 जानता था उसके ''अच्छे माता पिता'' थे	2:11 अपने पिता के विरुद्ध बड़बड़ाए
2:16 विश्वास किया सारे शब्द उसके पिता द्वारा बोले गये थे	2:13 लेही के सारे ''शब्दों'' पर विश्वास नहीं किया
2:16, 19 प्रभु के पास ज्ञान पाने के लिए गया था	2:12 ''परमेश्वर—के कामों को नहीं जानते थे''
3:7 जैसे प्रभु ने आज्ञा दी थी वैसा करने का और जाने का इच्छुक था	3:5 शिकायत करना कि प्रभु ने ''कठिन काम'' करने को कहा था
3:15 बिना पट्टियों के लौटने से इन्कार	3:14 एक प्रयत्न के बाद छोड़ देना चाहते थे
4:1, 3 जानता था कि प्रभु ''लबान से ज्यादा शक्तिशाली'' था	3:31 शंका कि प्रभु लबान को उन्हें दे सकता था

जब चार्ट पूरा हो जाए, निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें:

- नफी ने कैसे अपना ठोस और दृढ़ विश्वास दिखाया था? हम कैसे उसके उदाहरण पर चल सकते हैं?

- लमान और लेमुएल ने बड़बड़ और विद्रोह क्यों किया था? (देखें 1 नफी 2:11–12) वे क्यों नहीं जान पाए परमेश्वर के कामों को? (देखें 1 नफी 2:18)

3. नफी और उसके भाइयों ने पीतल की पट्टियां अपने परिवार को लाकर दी।

1 नफी 5 से चुनी हुई आयतों को पढ़े और चर्चा करें।

- लेही और सारा ने अपने चार पुत्रों के प्रति जब वे आखिरकर पीतल पट्टियां लेकर आए कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी? (देखें 1 नफी 5:1–9) उनका वापस आना कैसे सारा की गवाही को प्रभावशाली बनाता है? (देखें 1 नफी 5:8)।
- पीतल की पट्टियों में क्या था? (देखें 1 नफी 5:10–16; 13:23। इनमें मूसा की पाँच पुस्तकें, यहूद्री का एक लेखा राजा सिदकिय्याह तक (600 ई. पू. के बारे में) पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां और लेही परिवार की वंशावली थी।
- लेही ने पीतल की पट्टियों के विषय में क्या भविष्यवाणी की थी? (देखें 1 नफी 5:17–19) यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई थी?

4. नफी और उसके भाइयों का इस्माइल के परिवार को लाने के लिए यरुशलेम लौटना।

1 नफी 7 से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- नफी उसके भाई पीतल की पट्टियां लाने के तुरन्त बाद दुबार यरुशलेम क्यों लौटे थे? (देखें 1 नफी 7:1–2) इस्माइल और उसका परिवार लेही के परिवार से जुड़ने के लिए कैसे स्वीकार हुए थे? (देखें 1 नफी 7:4–5)
- लमान और लेमुएल और कुछ इस्माइल के बेटे वीरानभूमि की यात्रा के दौरान विद्रोही क्यों हुए थे? (देखें 1 नफी 7:6–7) आपके विचार से वे क्यों यरुशलेम लौटना चाहते थे? नफी ने कहा था कि यदि वे लोग वीरानभूमि की यात्रा जारी रखेंगे और प्रभु के साथ विश्वासी रहेंगे तो क्या होगा? (देखें 1 नफी 7:13) उसने ऐसा क्या कहा था अगर वे यरुशलेम में ठहरने के लिए लौटे तो क्या होगा? (देखें 1 नफी 7:13–15)
- 4 नफी अपने भाइयों के साथ किन गुणों का प्रदर्शन किया था? (देखें 1 नफी 2:17–18 के लिए कुछ उदाहरण) हम किस प्रकार से इन गुणों को अपने परिवार के सदस्यों और अन्यों के साथ अपनी बन्धुत्वा का प्रदर्शन कर सकते हैं?

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को स्मरण करायें कि लेही और नफी की आज्ञाकारी इच्छा के कारण लाखों लोगों को आशीष मिली है। कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें हमेशा "मैं जाऊंगा और वह काम करुंगा जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है" (1 नफी 3:7)।

जब आत्मा का निर्देशन हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाईयों की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. "अच्छे माता-पिता से उत्पन्न हुआ" (1 नफी 1:1)

- अच्छे घराने की अपने बच्चों के लिए कौनसी कुछ जिम्मेदारियां हैं? (देखें 1 नफी 1:1) माता-पिता लेही और सारा से क्या सीख सकते हैं कैसे यह जिम्मेदारियाँ पूरी की जाए के बारे में?

2. प्रत्येक कष्ट का अनुभव करता है

चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित शब्दों की सूची बनाएः आत्मिक, पराक्रमी, चिंतित, शक्तिशाली, आनन्दित विश्वासी, दुखी, विश्वास के योग्य, निराशा, परिश्रमी, धैर्य, दानशील।

कक्षा के सदस्यों को निर्णय लेने दे कि कौन से शब्द नफी का वर्णन करते है उनके चुने हुए शब्दों का घेरे में, और उन्हें नफी से सम्बन्धित कहानियों से संक्षिप्त में उस चरित्र की व्याख्या करने दें जिसका उन्होंने चुना है।

तब उन सभी शब्दों की व्याख्या करें जो नफी का उसके जीवन में अनेक बार वर्णन करते हैं। ज़ोर दें कि नफी एक आज्ञाकारी व्यक्ति था और आज्ञाओं का पालन करने के लिए उसकी भक्ति के लिए याद किया जाता है। परन्तु नफी भी कभी-कभी चिंतित, निराशा और दुखी होता था। ध्यान दें प्रायः हम सोचते हैं कि भविष्यवक्ता और अन्य गिरजाघर मार्गदर्शक के पास सिर्फ अच्छे अनुभव होते है और कभी भी संघर्ष नहीं होते। किन्तु हमारे समान, वे भी दुखों और कष्टों का सामना करते हैं।

- यह जानना हमारी किस प्रकार से सहायता करता है कि भविष्यवक्ता और अन्य गिरजाघर मार्गदर्शकों के पास भी परेशानियां होती हैं?
- यद्यपि नफी ने "(अपने) जीवन के दिनों में अनेक विपत्तियाँ को देखा था," वह जानता था कि उसके ऊपर "परमेश्वर की कृपा बनी हुई थी" (1 नफी 1:1)। यह कैसे संभव है कि पास में बहुत सी विपत्तियाँ हो और परमेश्वर की कृपा बनी रहे? विपत्तियाँ हमारी आशीषें पाने में कैसे मदद करती है? (कक्षा के सदस्यों को शांत रुप से इस प्रश्न पर चिंतन करने के लिए आमन्त्रित करें यदि वे अपने जवाबों को दुसरों के साथ बाँटना नहीं चाहते हो।)

3. नफी अभिलेख की विषय सूची

- 1 नफी 6 में नफी की दी हुई व्याख्या है जिसे वह अपने अभिलेख में लिखेगा। नफी ने अपने अभिलेख रखने का क्या उद्देश्य बताया था? (देखें 1 नफी 6:3–4। ध्यान दें कि इब्राहिम, इजहक, और याकूब का परमेश्वर यीशु मसीह है) नफी के अभिलेख आपको मसीह के पास आने में कैसे सहायता करते हैं?

कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे अपनी गवाहियाँ, साथ ही साथ अन्य आत्मिक अनुभवों, विचारों, और भावनाओं को, अपनी दैनिकी में लिखें।

जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन

पाठ
3

1 नफ़ी 8–11; 12:16–18; 15

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन के चिन्हों को समझने में और इन्हीं चिन्हों को अपने जीवन में लागू करने में सहायता करें।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को पढ़ें, विचारें, और उनके बारे में प्रार्थना करें: 1 नफ़ी 8–11; 12:16–18; 15।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करके पाठ को शुरु करें।

व्याख्या करें कि बहुत से प्रतीकात्मक स्वप्न और दिव्यदर्शन धर्मशास्त्रों में वर्णन किये गये हैं। तब निम्नलिखित उदाहरणों को बांटें और कक्षा सदस्यों से प्रत्येक चिन्हों के मतलबों की व्याख्या करने को कहें:

क. राजा नबूकदनेस्सर ने एक आदमी की लम्बी आकृति, या मूर्ति स्वप्न में देखी थी। आदमी के शरीर का प्रत्येक भाग भिन्न भिन्न समाग्री से बना था। एक पत्थर ने आकृति को नष्ट कर दिया और वह बड़ा पहाड़ बना कर सारी पृथ्वी पर फैल गया। (देखें दानिय्येल 2:31–45; सि. और अनु. 65:2 को भी देखें। आकृति का अलग-अलग भाग राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है जिसका पृथ्वी पर राज्य था। पत्थर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो अन्तिम-दिनों में अन्य सारे राज्यों पर पुनःस्थापित होगा।)

ख. सात दुर्बल और कुरूप गायों ने सात मोटी और सुन्दर गायों को खा लिया और सात पतली मुरझाई बालें सात अच्छी बालों को निगल गई का फ़िरौन ने स्वप्ना देखा। (देखें उत्पत्ति 41:17–31। सात अच्छी गायें और सात अच्छी बालें सात बहुतायत की उपज के वर्षो का प्रतिनिधित्व करते हैं जोकि मिश्र देश में आएंगे। सात दुर्बल और सात पतली मुरझाई बालें प्रतिनिधित्व करते हैं सात अकाल के वर्षो का जोकि बहुतायत की उपज के पश्चात होंगे।

ग. प्रेरित पतरस ने एक दिव्यदर्शन में देखा, आकाश से एक बड़ी चादर में अशुद्ध जानवर नीचे उतरे गये, और उसे आज्ञा दी गई इन जन्तुओं को मार और खा। (देखें प्रेरितों के काम 10:9–16, 28, 34–35। अशुद्ध जानवरों ने अन्यजाति का प्रतिनिधित्व किया, जिन्हें अब सुसमाचार सीखाया जा रहा है।)

व्याख्या करें कि आज के पाठ में अन्य स्वप्न चिन्ह जिनकी धर्मशास्त्र में वर्णन है पर चर्चा करेंगे: लेही और नफ़ी द्वारा प्राप्त जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन। बहुत से स्वप्न या दिव्यदर्शन असमान होते है जोकि सिर्फ विशिष्ट लोगों या एक विशिष्ट समय पर लागू होते हैं (जैसे फ़िरौन के स्वप्न की गाय और बालों का), जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन परमेश्वर के प्रत्येक बच्चों पर लागू होता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

जैसे आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अंश की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कैसे इन चिन्हों को हम रोज़ के जीवन में लागू कर सकते हैं। कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें अनुकूल अनुभव बाँटने के लिए जोकि इस चिन्हों द्वारा चित्र सहित नियमों से सम्बन्धित हो।

1. जीवन के वृक्ष के दिव्यदर्शन में प्रमाण चिन्ह

व्याख्या करें कि लेही ने दिव्यदर्शन प्राप्त किया और उसके बारे में अपने परिवार को बताया था (1 नफी 8:2)। नफी ने अपने पिता को दिव्यदर्शन की चीज़ों के बारे में बताते सुने के बाद, वह भी "उन चीज़ों को देखना और सुनाना और जानना चाहता था" (1 नफी 10:17; प्रथम अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को भी देखें)। क्योंकि यीशु मसीह में नफी का विश्वास, उसकी विनिती सुनी गई (1 नफी 11:16)। यह नफी के अनुभव उसके लेख के द्वारा ही हम उस दिव्यदर्शन का अर्थ जान पाए।

दिव्यदर्शन जीवन के वृक्ष पर चर्चा करें। जैसे आप चर्चा करते है लेही और नफी ने क्या देखा था, (या एक या अधिक कक्षा सदस्य बनाएं) चॉकबोर्ड पर दिव्यदर्शन के मुख्य भाग बनाएं। कलाकृति समाप्ति के बाद कुछ ऐसी लगनी चाहिएः

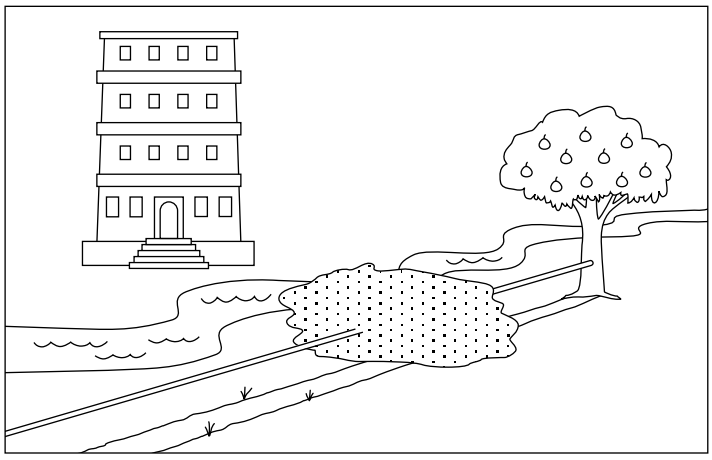

जीवन का वृक्ष और उसके फल

एक कक्षा के सदस्य को 1 नफी 8:2–10 पढ़ने को कहें। तब बनाएं (या कक्षा के एक सदस्य को बनाने दें) चॉकबोर्ड पर वृक्ष और उसके फलों को।

- जब नफी को जीवन का वृक्ष दिखाया गया था, उसने उसके अर्थ जानने को कहा था (1 नफी 11:8–11)। उसने सीखा कि वृक्ष क्या प्रतिनिधित्व करता है? (देखें 1 नफी 11:21–25।) नफी ने क्या देखा कि उसे परमेश्वर के प्रेम को अच्छे से समझने में सहायता मिली थी? (देखें 1 नफी 11:13–21, 24, 26–33। उसने यीशु मसीह का जन्म, शासन, और प्रायश्चित देखा था।)

  कक्षा के एक सदस्य को यूहन्ना 3:16 को ज़ोर से पढ़ने को कहें। ज़ोर दें कि स्वर्गीय पिता ने हमारे लिए अपने प्रेम की गहराई दिखाई जब उसने "अपना एकलौता पुत्र दिया।" प्रायश्चित हमारे लिए यीशु मसीह के प्रेम का प्रामाण है।

  एल्डर जैफरी आर. हॉलेंड ने सीखाय था कि जीवन का वृक्ष यीशु मसीह का एक चिन्ह है। उन्होंने कहाः "मसीह की आकृति और वृक्ष कुछ इस तरह से एक दुसरे से जोड़े हैं....मॉरमन की पुस्तक के शुरुआत में ही,....मसीह ही अनन्त जीवन और प्रसन्नता, पवित्र प्रेम का जीवित प्रमाण, और रास्ता जिसके द्वारा परमेश्वर अपने इस्राएल के घराने के साथ और सारे समय की मानवजाति से, उन्हें उनके अनन्त सारे वादों वापस करेगा, सुन्दर रीति से अपने अनुबंध पूरे करेगा" (*Christ and the New Covenant* [1997], 160, 162)।

- परमेश्वर के प्रेम का हमारे जीवन में क्या प्रभाव है? हम कैसे परमेश्वर के प्रेम को अपने लिए बेहतर तरीके से पहचान सकते हैं?

- वृक्ष का फल क्या प्रतिनिधित्व करता है? (देखें 1 नफी 15:3; सि. और अनु. 14:7)

- लेही और नफी ने जीवन के वृक्ष और उसके फलों का कैसे वर्णन किया था? (कक्षा के सदस्य को अनुकूल आयतों को देखते नीचे दी गई सूची के वाक्यांश को ढूंढने दें। चॉकबोर्ड पर वाक्यांश लिखें जब कक्षा सदस्य उन्हें ढूंढ लेते हैं। ज़रुरत के अनुसार वाक्यांश का संक्षिप्त करें।)

  क. इतना मीठा है कि ऐसा मीठा फल पहले मैंने कभी भी नहीं खाया था (1 नफी 8:11)।
  ख. इतना सफेद, कि उतनी सफेदी....नहीं देखी थी (1 नफी 8:11; 1 नफी 11:8 को भी देखें)
  ग. यह फल खाने के लिए अन्य फलों से श्रेष्ठ था (1 नफी 8:12; 1 नफी 15:36 भी देखें)
  घ. उसकी सुन्दरता....सभी सौन्दर्यों से श्रेष्ठ थी (1 नफी 11:8)
  ड़. सभी वस्तुओं से अधिक मूल्यवांन (1 नफी 11:9; 15:36)
  च. सबसे अधिक आत्मा को आनन्दित करना (1 नफी 11:23; 1 नफी 8:10 भी देखें)
  छ. परमेश्वर द्वारा दिए गए सभी उपहारों से बड़ा है (1 नफी 15:36)

  ज़ोर दें कि अनन्त जीवन बहुत मधुर और बहुत अमूल्य आशीष हम पा सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए है, यह आशीष हमारे लिए यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा उपलब्ध होती है।

- दिव्यदर्शन में, लेही के एक बार वृक्ष के फल को खाने के बाद क्या इच्छा जागी थी? (देखें 1 नफी 8:12) हम अपने प्रियजनों को उद्धारक के नजदीक लाने में और अनन्त जीवन के वादे को पाने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

लोहे की छड़

एक कक्षा के सदस्य को 1 नफी 8:19–20 पढ़ने दें। तब लोहे की छड़ और वृक्ष तक जाते रास्ते का चित्र बनाएं (या कक्षा के एक सदस्य को चित्र बनाने दें)।

- लोहे की छड़ क्या प्रतिनिधित्व करती है? (देखें 1 नफी 11:25; 15:23–24) हम परमेश्वर के वचन को कहां पा सकते हैं? (धर्मशास्त्रों, अन्तिम—दिनों के भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं, और पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन में।) परमेश्वर के वचन हमें कैसे मसीह के निकट आने में सहायता करते हैं? यह हमें कैसे अनन्त जीवन के पथ पर रहने देते हैं?

दूषित जल की नदी, गहन अंधेरे धुंध, और बड़ा और रहस्यमई महल

कक्षा के एक सदस्य को 1 नफी 8:13, 23, 26–27 पढ़ने दें। तब नदी का, गहन अंधेरे धुंध, और बड़ा और रहस्यमई महल का चित्र बनाएं (या कक्षा के एक सदस्य को चित्र बनाने दें)।

- दूषित जल की नदी क्या प्रतिनिधित्व करती है? (देखें 1 नफी 12:16; 15:26–29)

- गहन अंधेरे धुंध क्या प्रतिनिधित्व करता है? (देखें 1 नफी 12:17) गहन अंधेरे धुंध का क्या प्रभाव पड़ता है? (देखें 1 नफी 8:23; 12:17) शैतान परमेश्वर के प्रेम से हमें क्यों अंधा बनाए रखना चाहता है? यीशु मसीह के प्रायश्चित से? परमेश्वर के वचन से? शैतान किन तरीकों से हमें अंधा बनाने की कोशिश करता है?

- लोहे की छड़ "नदी के किनारे किनारे उस तक फैली हुई थी" (1 नफी 8:19), सीधा और संकरा रास्ता और दूषित जल के बीच में सुरक्षा की तरह सेवा करती है। यह लोगों को दर्शन में कुछ थामने को देती है जब वह गहन धुंध के अन्धेरे में होते हैं (1 नफी 8:24, 30)। यह हमें कैसे परमेश्वर का वचन हमारी सहायता करता है के विषय में शिक्षा देते हैं?

- बड़ा और रहस्यमई महल क्या प्रतिनिधित्व करता है? (देखें 1 नफी 11:34–36; 12:18) यह क्या अभिप्राय है कि महल "हवा में– –खड़ा था"? (देखें 1 नफी 8:26। ध्यान दें कि महल की मज़बूत नींव नहीं थी।) घमण्ड एक व्यक्ति को अनन्त जीवन पाने से कैसे रोक सकता है?

- कुछ लोग दिव्यदर्शन में फल का स्वाद लेते हैं परन्तु शर्मिन्दा होते हैं क्योंकि बड़ा और रहस्यमई महल के लोग उनका उपहास कर रहे थे (1 नफी 8:26–28)। हम कैसे उपद्रव में स्थिर होने की शक्ति पा सकते हैं?

2. दिव्यदर्शन में जीवन के वृक्ष के लोग

व्याख्या करें कि दिव्यदर्शन में, लेही ने "असंख्य लोगों को देखा था" (1 नफी 8:21)। इन लोगों को उनके वृक्ष और फल को खोजने के हाव-भाव से चार श्रेणी में विभाजित करें। कक्षा के सदस्य को पहचान ने और इन चार श्रेणी की व्याख्या करने में, नीचे दिये गये अंश की सूची को प्रयोग करने में सहायता करें। (आप के कक्षा सदस्यों को चार समूह में विभजित कर सकते हैं और प्रत्येक समूह एक अंश पढ़ेगा और तब उस अंश में दिये गये लोग के भाव की व्याख्या करेगा)

क. 1 नफी 8:21–23। (जिन्होंने उस पथ पर शुरुआत की परन्तु गहन अंधेरे धूंध में भटक कर खो गए थे।)

ख. 1 नफी 8:24–28। (जिन्होंने लोहे की छड़ को पकड़ के रखा था जब तक कि वे वृक्ष तक न पहुँच गये और फल को खाया,परन्तु वे तब लज्जित हुए और खो गए)

ग. 1 नफी 8:30। (जो लोहे की छड़ को पकड़े रहे जब तक कि वे वृक्ष तक न पहुँच गये और फल को खाया, और तब भी वे विश्वासी बने रहे।)

घ. 1 नफी 8:31–33। (जिन्होंने उस पथ की शुरुआत कभी की ही नहीं थी परन्तु वे सीधे उस बड़े और रहस्यमई महल में चले गये थे।)

- आज के संसार में यह श्रेणी किस की साक्षी देती है? (उद्धाहरण के लिए, लोग जो कहते हैं कि उन्हें अनन्त जीवन चाहिए परन्तु अन्य चीज़ों द्वारा आकर्षित होते है, जैसे कि सम्पत्ति या दुनिया भर के आराम, यह उनकी तरह है जिन्होंने पथ पर शुरुआत की थी परन्तु वे तब खो गए थे।)

- दिव्यदर्शन में, किस तरह की सड़क पर लोग यात्रा करते जब वे लोहे की छड़ को छोड़ते हैं या जीवन के वृक्ष छोड़ देते हैं? (देखें 1 नफी 8:28, 32; 12:17।) उनका क्या होता है जो ऐसे रास्ते पर चलते है? अगर हम "निषेध", "अनजान", या "चौड़े" रास्ते की और बढ़ते हैं, हम कैसे सीधे और संकरे रास्ते पर लौट सकते हैं?

- हमें सीधे और संकरे रास्ते पर रहने के लिए क्या कुछ चीज़ें करनी चाहिए? हम अन्यों को उस पथ पर रोके रहने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

निष्कर्ष

सुझाव दें कि कक्षा के सदस्य निम्नलिखित शब्दों को अपने धर्मशास्त्रों पर निशान लगायें: आगे बढ़ना (1 नफी 8:22), पकड़े हुए (1 नफी 8:24), पकड़े रहना (1 नफी 8:24), और लगातार (1 नफी 8:30)। स्पष्ट करें कि यह शब्द हमें समझने में सहायता करेंगे कि हम जीवन के वृक्ष तक कैसे पहुँच सकते हैं: हमें सीधे और संकरे पथ पर कायम रहना, लोहे की छड़ को पकड़ कर और उस पर आगे बढ़ना और लगातार वृक्ष की ओर बढ़ते रहना चाहिए।

जैसे आत्मा द्वारा मार्गदर्शन हो, पाट के दौरान सच्चाई की साक्षी पर चर्चा करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. "वह जो परिश्रम से खोजेगा वह पाएगा" (1 नफी 10:19)

- नफी की अपने पिता के दिव्यदर्शन के विषय में सुनने के बाद क्या इच्छा जागी थी? (देखें 1 नफी 10:17) उसने उस इच्छा की पूर्ति के लिए क्या किया था? (देखें 1 नफी 10:17–19; 11:1–6) नफी का उदाहरण हमारी सुसमाचार सच्चाई को समझने की खोज में कैसे सहायता करता है? (कक्षा के सदस्य से अनुभव बाँटने को कहें कि पवित्र आत्मा ने उनको सुसमाचार सच्चाई समझने में कैसे सहायता की थी?

- किस तरह से लमान और लेमुएल ने अपने पिता के दिव्यदर्शन का जवाब नफी के जवाब से भिन्न दिया था? (देखें 1 नफी 15:1–2) क्यों लमान और लेमुएल सच्चाई को समझने में असमर्थ थे जिसकी लेही ने उनको शिक्षा दी थी? (देखें 1 नफी 15:3, 8–11)

2. "क्या तुम परमेश्वर की कृपा को जानते हो?" (1 नफी 11:16)

वाक्यांश को समझने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करें "परमेश्वर की कृपा" (1 नफी 11; 16, 26), व्याख्या करें कि यह वाक्यांश शब्द कृपा अर्थ स्वेच्छा से नीचे स्तर पर आना है। फिर एल्डर ब्रूस आर. मैंकांकी द्वारा निम्नलिखित बयान को बाँटें:

"परमेश्वर की कृपा (अर्थ पिता) यथार्थता में रहना है कि....वह नाशवान बच्चा नाशवान औरत से जन्मा का व्यक्तिगत और मूलार्थक पिता बना था। और परमेश्वर की कृपा (अर्थ पुत्र) यथार्थक में रहना कि—वह (यीशु मसीह) नाशवारता के सारी परेशानियाँ, दुख, लालच, और शरीर का दर्द, भुख, प्यास और थकान, एक व्यक्ति के सहने से अधिक, अधीन में दिया था सिवाये उसके मृत्यु के (मुसायाह 3:5–8), आखिरकर उसको मृत्यु तिरस्कृत ढंग से दी गई थी" (*Mormon Doctrine,* द्वितीय प्रकाशन [1966], 155)।

3. "और वे खिल्ली उड़ाने के भाव में थे" (1 नफी 8:27)

जब कक्षा के सदस्य बड़े और रहस्यमई महल की चर्चा करें, बताएं कि महल के अन्दर के लोगों का "खिल्ली उड़ाने के भाव" में थे। यह खिल्ली उड़ाना उनको जो फल खाने से लज्जित हुए और खो गये थे (1 नफी 8:27–28)।

- किस तरह से हमारे भाव अन्यों को खो जाने देते हैं?

निश्चय करें कि व्यक्तिगत जिम्मेदारी अपने स्वयं के भावों के लिए उत्तरदायी होता है; किन्तु, हमारे भाव अन्यों को उनके नेक परिश्रम में शक्ति देते हैं या उन्हें निराश करते हैं। कक्षा सदस्य एक दुसरे को प्रोत्साहित करें और कभी भी दुसरों को मजाक या विरोध न करें।

पाठ
4

“जिनको मैंने उस समय देखा था जब कि मैं आत्मा में खोया हुआ था”

1 नफी 12–14

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को नफी के भविष्य के दिव्यदर्शन और उसमें की चेतावनी और वादों को हम आज कैसे लागू करते हैं को समझाने में सहायता करें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को पढ़े, विचारें, और उनके बारे में प्रार्थना करें:

   क. 1 नफी 12। नफी ने दिव्यदर्शन में अपने वंशज और अपने भाइयों के वंशज को देखा था। उसने एक दुसरे के विरूद्ध युद्ध करते देखा और दुष्टों को उद्धारक के आने से पहले नष्ट होते देखा था। उसने उन्हें उद्धारक के आने के बाद नेक जीवन जीते देखा परन्तु तब उन्हें दुष्टता से भी दूर होते देखा।

   ख. 1 नफी 13। नफी ने दिव्यदर्शन में एक बड़े और घृणित गिरजाघर की नींव को, अमेरिका में बस्ती, स्वधर्मत्याग और अन्तिम-दिनों में सुसमाचार की पुनःस्थापना को देखा था।

   ग. 1 नफी 14। नफी ने दिव्यदर्शन में अन्यजातियों के वादे जो विश्वासी रहे को आशीषें, उन अन्यजातियों पर श्राप जोकि विश्वासी नहीं रहे थे पर, और अन्त में परमेश्वर के मेमने का गिरजाघर का बड़े घृणित गिरजाघर पर विजय को देखा था।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करें, एक बड़े से पृष्ठ के टुकड़े पर समय रेखा या कार्डबोर्ड पर या चॉकबोर्ड पर तैयार करें।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करके पाठ को शुरु करें।

निम्नलिखित समय रेखा से संदर्भ करें:

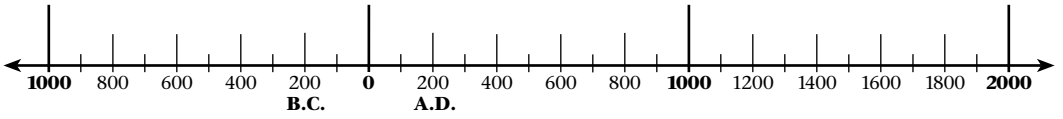

कक्षा के सदस्यों की निम्नलिखित घटनाओं को समय रेखा पर अंकित करने में सहायता करें। कक्षा के सदस्यों के ज्ञान पर भरोसा करना, आप तिथि को समय रेखा पर लिख सकते हैं और कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक तिथि पर हुई घटनाओं को पहचानने के लिए कहें। या आप घटनाओं की चॉकबोर्ड पर सूची बना सकते हैं और कक्षा के सदस्यों को घटना कब हुई थी को पहचानने को कह सकते हैं।

क. यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ना (ईस्वी सन 33)
ख. महान स्वधर्मत्याग (लगभग ईस्वी सन 100 से ईस्वी सन 1800)
ग. लमनायटियों और नफायटियों के बीच अन्तिम युद्ध (लगभग 385 ईस्वी सन)
घ. क्रीस्टोफर कोलम्बस द्वार अमेरिका की खोज (ईस्वी सन 1492)
ड़. यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना (ईस्वी सन 1820—वर्तमान)

जब कक्षा के सदस्य घटना को समय रेखा पर रखते हैं, व्याख्या करें कि नफी ने यह घटनाएँ और अन्यों को अपने भविष्य के दिव्यदर्शन में देखा था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंश, प्रश्नों, और अन्य सामग्री का चुनाव करें जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रुरत से अच्छा मेल खाते हैं। चर्चा करें कि चुने हुए धर्मशास्त्रों को अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू करें। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभव बाँटने के लिए प्रोत्साहित करें जोकि धर्मशास्त्र नियमों से मिलता हो।

1. नफी अपने वंशज और अपने भाइयों के वंशज का भविष्य देखता है।

1 नफी 12 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को जोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। व्याख्या करें कि 1 नफी 12 में, नफी ने अपने भविष्य के दिव्यदर्शन में (अपने वंशज) और अपने भाइयों के वंशज का वर्णन किया था। जैसे आप इस पाठ की चर्चा करें, ध्यान दें कैसे जीवन के वृक्ष के दिव्यदर्शन में कुछ चिन्ह (गहन अंधेरे धुंध, बड़ा और रहस्यमई महल, और दुषित जल की नदी) नफी के वंशज के गिरने का प्रतिनिधित्व करते हैं।

- नफी ने पृथ्वी की परिस्थिति उद्धारक के अमेरिका में भेंट से पहले क्या थी का वर्णन कैसे किया था? (देखें 1 नफी 12:1–6) यह परिस्थिति उद्धारक के दुबारा आगमन से आनी वाली परिस्थिति से कैसे सामान्य होगी? (देखें जोसफ स्मिथ—मत्ती 1:27–37) नफी ने उद्धारक की भेंट के पश्चात परिस्थिति कैसी होगी का वर्णन किया था? (देखें 1 नफी 12:11–12; इस भविष्यवाणी की पूर्ति को भी देखें, जिस का लेखा 4 नफी 1:2–4 में है।) यह क्या नेकता और शान्ति लाती है? (देखें 4 नफी 1:15)
- नफी ने देखा था कि नेकता केन्द्र लगभग चार वंशज की, उसके वंश और उसके भाई के वंश एक दुसरे के विरुद्ध दुबारा युद्ध करेंगे (1 नफी 12:12–15)। नफी ने अपने वंश का इन युद्धों में क्या होते हुए देखा था? (देखें 1 नफी 12:19–20) नफी के वंशज को क्यों अधीन और नष्ट किया गया था? (देखें 1 नफी 12:19) घमण्ड और शैतान का लालच नाश की ओर कैसे भी जा सकता है?

2. नफी ने महान और घृणित गिरजाघर की नींव, अमेरिका में बस्ती के, स्वधर्मत्याग, और सुसमाचार की पुनःस्थापना को देखा।

नफी में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि 1 नफी 13 नफी के दिव्यदर्शन का एक निम्नलिखित लेखा हैः

क. महान और घृणित गिरजाघर की नींव।
ख. अमेरिका बस्ती की खोज।
ग. स्वधर्मत्याग और बाइबल में से अधिकांश स्पष्ट मूल्यवांन बातें हटा दी गई थी।
घ. मॉरमन की पुस्तक का आना और सुसमाचार की पुनःस्थापना होना।

महान और घृणित गिरजाघर की संरचना

- नफी ने अन्य जातियों के राष्ट्र के बीच में क्या बनाते देखा था? (देखें 1 नफी 13:4–5) महान और घृणित गिरजाघर की नींव का संस्थापक कौन है? (1 नफी 13:6)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकांकी ने कहा था, “शैतान के गिरजाघर का शीर्षक और महान और घृणित गिरजाघर सारे गिरजाघर और संस्था का जो भी नाम या चरित्र हो को पहचानो—चाहे राजनीति, दार्शनिक, शिक्षा संबंधी, समाजिक, भ्रात-सदृश, नागरिक, या धार्मिक हो—जो कि आदमी को परमेश्वर के रास्ते से और उसके नियमों और परमेश्वर के राज्य में मुक्ति से दूर ले जाता है” (Mormon Doctrine, 2nd ed.[1966], 137–38)।

जोर दें कि महान और घृणित गिरजाघर अपनी सारी रीति से स्वधर्मत्याग का एक चिन्ह है। यह सारे गलत सिद्धान्तों, गलत आराधना, और धार्मिक व्यवहार से विपरीत का एक प्रतिनिधित्व करता है। इसका आज कल के संसार में कोई विशेष प्रतिनिधि नहीं है।

- "महान और घृणित गिरजाघर" के कुछ लक्षण क्या हैं? (देखें 1 नफी 13:5–9। उत्तर में शायद शामिल है कि इसके कमजोर विश्वास, संसारिक धन की इच्छा और पाप, संसार से अपनी महिमा लेना है।) जीवन के वृक्ष का दिव्यदर्शन में महान और घृणित गिरजाघर के चिन्हों में क्या अनुरुपता थी? (1 नफी 2 13:5–9 के साथ 1 नफी 11:35–36 से तुलना करें।)

- आप महान और घृणित गिरजाघर के कार्यों में आज के सन्तों को नष्ट करने के क्या सबूत देखते हैं? हम कैसे सुरक्षित हो सकते है कि हम लोगों से धोखा न खाया या कि ऐसी संस्था से जो लोगों को परमेश्वर और उसके नियमों से दूर न ले जायें?

अमेरिका की खोज और बसना

- अन्य जातियां जो "दूर इन—समुंद्रों के पार" के क्रिस्टोफर कोलम्बस ने समझा और अन्य से पहली खोज और अमेरिका में बसने वाला था। (1 नफी 13:12–13)। इन खोजने वालो और बसने वालो का अपने में क्या सामर्थ्य प्रयास था? (देखें 1 नफी 13:14–19)

- इन पूर्व खोजने वालों और बसने वालों को सुसमाचार के पुनःस्थापना में क्या योगदान था? (इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका राष्ट के रास्ते की नींव डाली थी। संयुक्त राष्ट्र की रचना धर्म की आजादी थी जो कि मॉरमन की पुस्तक को लाने में और सुसमाचार को पुनःस्थापित करने में बहुत आवश्यक था। देखें सि. और अनु. 101:77–80)

स्वधर्मत्याग और बाइबल के बहुत से स्पष्ट और बहुमूल्य भागों का खोना

- नफी ने अन्यजातियों को कौनसी पुस्तक लिये देखा था? (देखें 1 नफी 13:20–23। बाइबल।) महान और घृणित गिरजाघर ने उस पुस्तक के साथ क्या किया था? (देखें 1 नफी 13:24–26) क्यों? (देखें 1 नफी 13:27)

- बाइबल में से "बहुत सी स्पष्ट और बहुमूल्य चीज़ों" के खोने का क्या परिणाम हुआ था? (देखें 1 नफी 13:29)

मॉरमन की पुस्तक का आगमन और सुसमाचार की पुनःस्थापना

- प्रभु जानता था कि महान और घृणित गिरजाघर बाइबल में से परमेश्वर के शब्द को नष्ट करने की कोशिश करेंगे। उसने कैसे आश्वासन दिया कि उसके शब्द आने वाले अन्तिम–दिनों में सुरक्षित होंगे? (देखें 1 नफी 13:35–36।) यह अभिलेख क्या है जोकि नफी के वंश द्वारा रखा गया था? (मॉरमन की पुस्तक)

- मॉरमन की पुस्तक के उद्देश्य क्या हैं? (देखें 1 नफी 13:40–41; मॉरमन 7:8–9 भी देखें; सि. और अनु. 20:8–12। आप कक्षा के सदस्य के जवाबों की सूची चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं।) आप कैसे इस उद्देश्य को पूरा होता देखते हैं?

- कुछ सिद्धान्त क्या हैं जो कि बाइबल में समझने में कठिन हैं परन्तु मॉरमन की पुस्तक में स्पष्ट और बहुमूल्य हैं? (उत्तर में शायद शामिल हैं प्रायश्चित करना, पुनरुथान, और बपतिस्मा। आप शायद इन उदाहरणों को बांटना चाहेंगे कैसे इन सिद्धान्तों को मॉरमन की पुस्तक में स्पष्टता से शिक्षा दी गई है। उद्धारण के लिए, आप कक्षा के सदस्य से अलमा 11:42–45 पढ़ने को कह सकते हैं, जो स्पष्ट और बहुमूल्य सच प्रायश्चित और पुनरुत्थान के बारे में शिक्षा देते हैं, या 3 नफी 11:21–26 और मरोनी 8:11–12 में, जो स्पष्ट और बहुमूल्य सच बपतिस्मे के बार में शिक्षा देते हैं।) मॉरमन की पुस्तक बाइबल को और अधिक समझने में हमारी सहायता या हमारी बाइबल की गवाही को अधिक कैसे करती है?

3. नफी ने विश्वसियों की आशीषों के वादे देखें; उसने महान और घृणित गिरजाघर को नाश होते भी देखा।

1 नफी 14 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

कक्षा को दो समूह में विभजित करें। एक समूह खोजें 1 नफी 14:1–7 में से अन्यजातियों (जो इस्राएली नहीं थे) को आशीषों के वादे ढूंढने दें अगर वे प्रभु में विश्वासी हैं। अन्य समूह को सामान्य आयत पढ़ने दें और परमेश्वर द्वारा दिये गये दुःख के वादे अन्यजातियों को अगर वे अपना हृदय को कठोर बनाते और प्रभु से दूर होते है इन विषयों की सूची चॉकबोर्ड पर लिखें। तब पूछें:

- हम क्या करें अपने हृदयों को कोमल करने के लिए कि हम इन आशीषों को प्राप्त कर सकें?
- किन तरहों से सिर्फ ये दो समूह आज की दुनिया में हैं? (देखें 1 नफी 14:10; 2 नफी 10:16)
- महान और घृणित गिरजाघर का अन्त में क्या होगा? (देखें 1 नफी 14:3–4, 15–17; 22–23)।
- नफी ने देखा था कि यहां तक कि अन्तिम-दिनों में प्रभु के गिरजाघर के सदस्य लगभग कम होंगे, वह महान और घृणित गिरजाघर के उपद्रव से उपर उठेंगे। नफी ने सन्तों को परमेश्वर का हथियार के साथ देखा था? (देखें 1 नफी 14:14) हम कैसे "नेकता के हथियार और परमेश्वर की शक्ति के साथ" हो सकते हैं?

निष्कर्ष

व्याख्या करें कि नफी का दिव्यदर्शन पृथ्वी के इतिहास में बहुत कुछ हो चुकी और होने वाली घटनाओं को दर्शाता है। यह इसे भी दर्शाता है कि हमें सिर्फ दो के बीच में रुचि लेनी चाहिएः यीशु मसीह के पीछे चलना या उसके विरुद्ध कार्य करना और शैतान के पीछे होना। कक्षा सदस्य को याद दिलायें कि 1 नफी 14 में आशीष के वादे हम सब के लिए उपलब्ध हैं अगर हम यीशु मसीह के पीछे चलना चुनें।

जब आत्मा मार्गदर्शन दें, सच्चाई की साक्षी की चर्चा पाठ के दौरान करें।

पाठ 5

"सत्य को सुनना और उसे मानना"

1 नफी 16–22

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों नफी के विश्वासी और आज्ञाकारिता की इच्छा के पीछे चलने की प्रेरणा दें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 1 नफी 16; 17:1–3। लेही के पुत्रों ने और जराम ने इस्माइल की पुत्रियों से विवाह किया। प्रभु ने लोगों को लियाहोना दिया, जिसके साथ उसने उनका वीरानभूमि में उनके विश्वास और परिश्रम के द्वारा नेतृत्व किया था। नफी का धनुष टूट गया, शिकार करना कठिन था। सभी बड़बड़ाने लगे सिवाय नफी के, जिसने एक नया धनुष बनाया, लेही से पूछा भोजन के लिए कहां जांऊ, और लोगों के लिए भोजन लाएं।

   ख. 1 नफी 17:4–55; 18:1–4। नफी ने एक नाव बनाने के लिए प्रभु की आज्ञा का विश्वास दृढ़ता से किया था।

   ग. 1 नफी 18:5–25। लमान लेमुएल ने नफी को बांध दिया, जिसने इस परेशानी में भी प्रोत्साहन और आभार का प्रर्दशन किया था। प्रभु ने एक बड़ी आंधी भेजी। लमान और लेमुएल ने नफी के बंधन खोल दिये, जिसने नाव का प्रतिज्ञा के देश की ओर नेतृत्व किया।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: अलमा 37:38–46।

3. तीन कक्षा के सदस्यों के साथ पहले से बात करके रखें, प्रत्येक के नीचे दी गई धर्मशास्त्र का एक लेख का संक्षिप्त में तैयारी करने को कहें। उनसे घटनाओं के अभिलेख में वर्णन करने की रिपोर्ट पूछें न कि सिद्धान्त या व्यक्तिगत लागू करने को, जिसकी चर्चा उनकी दी गई रिपोर्ट के बाद करें।

   क. 1 नफी 16:9–33

   ख. 1 नफी 17:4–55; 18:1–4

   ग. 1 नफी 18:5–22

4. अगर निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध है, उसे पाठ के दौरान प्रयोग करने की तैयारी करें।

   क. लियाहोना चित्र (62041; सुसमाचार कला चित्र किट 302) और लेही और उसके लोगों की प्रतिज्ञा के देश में पहुंचना (62045; सुसमाचार कला चित्र किट 304)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधियां

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग कर पाठ की शुरूआत करें।

निम्नलिखित बयान का चॉकबोर्ड पर लिखें:

मैं नहीं चाहता।
मैं उसके विषय में विचार करूंगा।
मैं कोशिश करूंगा।

कक्षा सदस्य को 1 नफी 3:4 पढ़ने को कहें।

- चॉकबोर्ड पर दिये गये बयानों में से एक जवाब नफी अगर प्रभु की आज्ञा का देता तो क्या हो सकता था? नफी ने जवाब कैसे दिया था? ("मैं करूंगा।" देखें 1 नफी 3:7)

चॉकबोर्ड पर से बयान को मिटाये, और “मैं करूंगा” बयान को बड़े शब्दों में लिखें। व्याख्या करें कि नफी और उसके परिवार को आशीष मिली थी जैसे वह प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा की थी क्योंकि नफी ने लगातार “मैं करूंगा” का व्यवहार रखा था—प्रभु की आज्ञाओं को मानने की उसे कोई जिज्ञासा नहीं हुई। यह पाठ दर्शाता है कैसे हम नफी के विश्वास और आज्ञाकरिता की इच्छा के उदाहरण पर चल सकते हैं।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों का, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चुनाव करें जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरत से अच्छा मेल खाता हो। चर्चा करें किस तरह से चुने हुए धर्मशास्त्रों को दैनिक जीवन में लागू करें। प्रोत्साहित करें कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभव बांटने को जोकि धर्मशास्त्र नियमों से सम्बन्ध रखता हो।

प्रभु ने लेही और इस्माइल के परिवारों का मार्गदर्शन उनके विश्वास और परिश्रम के अनुसार किया।

अगर आप लेही के लियाहोना पाने का चित्र प्रयोग कर रहे हो, तो उसे अभी दिखाएं। कक्षा के सदस्य जिससे पूछा गया हो को 1 नफी 16:9–33 में दी गई घटना का संक्षेप में वर्णन करने दें। तब चुने हुए 1 नफी 16; 17:1–3 में से आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- “गोला या संचालक” जोकि प्रभु ने लेही को दिया था “लियाहोना” कहलाता था (अलमा 37:38)। लियाहोना का उद्देश्य क्या था? (देखें नफी 16:10, 29) लोगों को लियाहोना से कार्य हो के लिए क्या करना चाहिए था? (देखें 1 नफी 16:28–29; अलमा 37:40) जब लोग अविश्वासी और अवज्ञाकारी होते तो क्या परिणाम होते हैं? (देखें अलमा 37:41–42)

- हमारे जीवन में कुछ मार्गदर्शन क्या हैं कि, लियाहोना जैसा हमारे विश्वास और परिश्रम के अनुसार काम करें? (उत्तर में शामिल है धर्मशास्त्र, जैसे अलमा 37:38–46; में व्याख्या दी गई है; पवित्र आत्मा; कुलपति का आर्शीवाद, जीवित भविष्यवक्ताओं की शिक्षा; और हमारी चेतना, जैसे नीचे दिये गये उदाहरण में व्याख्या की गई है।) यह मार्गदर्शन आपकी सहायता कैसे करता है?

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल ने कहा थाः

  “प्रभु ने प्रत्येक व्यक्ति....को चेतना दी गई है जो उसे हर समय उसके गलत राह शुरू करने पर बताती है। वो हमेशा बताती है यदि उसे सुने; परन्तु व्यक्ति कर सकते, वास्तव में, चेतना का संदेश सुनने के आदि हो जाते हैं कि वो आखिर कर उसे स्वीकार नहीं करते जब तब उसका प्रभाव न हो।

  आपको अहसास होना चाहिए कि आप के पास दिशासूचक जैसा कुछ है, जैसे लियाहोना, हमारे आत्मा में। प्रत्येक बच्चे को वह दिया गया है—अगर वह लियाहोना को नजरांदाज करते है जो कि उनके आत्मा में दी गई है, उन्हें आखिरकर उससे उनका फुसफुसाना नहीं सुनाई देता—हम गलत राह पर नहीं जा पाएंगे—अगर हम अपने खुद के लियाहोना के मार्गदर्शन को सुनेंगे, जिसे हम चेतना कहते हैं” (in Conference Report, Oct. 1976, 117; or *Ensign*, Nov. 1976, 79)।

- लमान और लेमुएल की कैसी प्रतिक्रिया थी जब नफी से उसका धनुष टूट गया था? (देखें 1 नफी 16:18, 20) लेही की कैसी प्रतिक्रिया थी? (देखें 1 नफी 16:20) नफी की कैसी प्रतिक्रिया थी? (देखें 1 नफी 16:22–23) हम नफी के इस चुनौती के जवाब से क्या सीख सकते हैं जिससे कि हम जब चुनौती का सामना करते हों में हमारी सहायता कर सकें? (उत्तर में शायद शामिल है कि हमें प्रभु पर विश्वास रखना चाहिए, चुनौती से उभारने में कार्य परिश्रम करना, और प्रभु और उसके सेवकों के विरूद्ध शिकायत करना बन्द कर देना चाहिए।)

- नफी के एक नये धनुष बनाने के पश्चात, उसने लेही से भोजन कहां मिलेगा जाने को पूछा था (1 नफी 16:23)। लेही ने अपने पुत्र के अनुरोध का जवाब कैसे दिया था? (देखें 1 नफी 16:24–25) लेही का खुद में नम्र होना और प्रभु के पास लौटने का क्या परिणाम हुआ था? (देखें 1 नफी 16:26–32) हम प्रभु का लेही की इस घटना के

आचरण से क्या सीखते हैं? (उत्तर में शायद शामिल है कि प्रभु हमें क्षमा करेगा और आशीष देगा जब हम अपने को दीन करते और उसके पास लौटते हैं।)

- लियाहोना से बात करना, नफी ने ध्यान दिया "कि थोड़े से साधन के द्वारा प्रभु महान कार्य कर सकता है" (1 नफी 16:29; देखें अलमा 37:6–7 भी; सि. और अनु. 64:33)। अपनी जिन्दगी में, आप कैसे देखते हैं कि यह सच है? इस नियम का ज्ञान हमारी सहायता कैसे कर सकता है?

2. नफी ने प्रभु की आज्ञा पूरा करके नांव बना कर अपने दृढ़ विश्वास का प्रदर्शन दिया।

कक्षा के सदस्य को 1 नफी 17:4–55; 18:1–4 में दी गई घटनाओं को संक्षेप्त में वर्णित करने को नियुक्त करके पूछें। तब उन अंशों से चुने हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- हम नफी को प्रभु की आज्ञा पालन करके एक नांव बनाने के कार्य जवाब से क्या सीख सकते हैं? (देखें 1 नफी 17:8–11, 16–19, 50–51; 18:1–3; याकूब 2:17–18 भी देखें)

  एल्डर एल. टॉम पैरी ने कहा थाः "यह धर्मशास्त्रों की बहुत ही रोचक कहानियों में एक है क्योंकि यह उस घटना को बताती है जिसमें प्रभु ने सहायता प्रायाप्त की परन्तु तब एक तरह होकर उसके एक पुत्र को उसकी स्वयं की पहल करने की आज्ञा दी। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि नफी ने प्रभु से औजार बनाने की कच्ची धातु के स्थान पर औजार मागें होते तो क्या हुआ होता। मुझे शक है कि प्रभु उसकी विनति का आदर करते। आपने देखा, प्रभु जानते थे कि नफी औजार बना सकता है, और यही कुछ कदाचित प्रभु हमारे लिए करेंगे कि हम अपने लिए कर सकते हैं" (in Conference Report, Oct. 1991, 87–88; or *Ensign,* Nov. 1991, 64)।

यदि आप वीडियों प्रदर्शन का प्रयोग कर रहे हैं "I Will Prepare the Way" को अभी दिखायें। उसे दिखाने के पश्चात, चर्चा करें कि कैसे प्रभु ने सुसम जो मुख्य चरित्र है, के लिए रास्ता तैयार किया, सुसमाचार बांटने की। कक्षा के सदस्यों को देखने में सहायता करें कि वे, नफी और सुसन के पसन्द करें, प्रभु के वादे में शक्ति पा सकते हैंः "मैं तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करूंगा, अगर तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे" (1 नफी 17:13)।

- लमान और लेमुएल की क्या प्रतिक्रिया थी जब उन्होंने नफी को एक नांव बनाते देखा था? (देखें 1 नफी 17:17–22) नफी ने उनकी निन्दा उत्पत्ति में मिश्र के इस्राएलियों की याद दिलाते हुए की थी। उत्पत्ति के लेही और उसका परिवार किस प्रकार से उत्पत्ति के मूसा और इस्राएलियों के सामान्य था? (देखें 1 नफी 17:23–44)

- नफी ने लमान और लेमुएल को बतलाया कि वे "(तुम) देर किया करते हो, कि तुम (प्रभु) के शब्दों को महसूस नहीं कर सकते" (1 नफी 17:45)। प्रभु के शब्दों को महसूस करने का क्या अर्थ है? (नीचे दिए गए उदाहरण को देखें।) लोगों का "देर से महसूस" करने के कारण क्या है? हम अपने आप को प्रभु के शब्दों को महसूस करने में कैसे तैयार कर सकते हैं?

  एल्डर बोएड के. पैकर ने सीखाया थाः पवित्रात्मा आत्मा के साथ दिमाग में वार्तालाप करता है शारीरिक चेतनाओं से ज्यादा। यह निर्देशन विचारों के रूप में, अहसासों से, प्रभावी और उत्साह के द्वारा आता है। प्रेरणा का वर्णन हमेशा सरल नहीं होता। धर्मशास्त्र हमें शिक्षा देता है कि हम आत्मिक वार्तालाप को "महसूस" कर सकते हैं उन्हें सुनाने से कहीं ज्यादा, और आत्मिकता के साथ देखते है ना कि नाश्वर आंखों के साथ (देखें 1 नफी 17:45)" (in Conference Report, Oct. 1989, 16; or *Ensign,* Nov. 1989, 14)।

- लोगों के सामने क्या परिणाम आते हैं जब वे लमान और लेमुएल को पसन्द करते, सच्चाई के विरूद्ध अपने हृदय को कठोर करते हैं? (देखें 1 नफी 17:46–47)

- नफी ने अपने भाइयों से अपने पिता के विरूद्ध न बड़बड़ाने की विनति की थी (1 नफी 17:49)। बड़बड़ाना हमारे परिवार पर कैसा करता है? हहम कैसे अपने परिवार सदस्यों के विरूद्ध चुगली करने से और गलत बोलने पर कैसे विजय पा सकते हैं?

- नफी लगातार प्रार्थना करता रहा जैसे वह नांव बना रहा था (1 नफी 18:1–3)। प्रभु ने उसकी प्रार्थनाओं का जवाब कैसे दिया था? (देखें 1 नफी 18:1, 3–4) यह हमारे लिए क्यों आवश्यक है प्रभु को बारम्बार प्रार्थना में खोजें?

3. लमान और लेमुएल ने नफी को बान्धा, इसके बावजुद जिसने इस परीक्षा में उत्साह और आभार दिखाए। बाद में उन्होंने उसे आजाद किया, उसने नांव का प्रतिज्ञा के देश की ओर नेतृत्व किया।

1 नफी 18:5–22 में दी घटना का वर्णन संक्षेप में चुने हुए कक्षा सदस्य से करने को पूछे। 1 नफी 18:5–25 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- जैसे वह प्रतिज्ञा के देश की ओर वायु के सहारे चल रहे थे, लमान, लेमुएल, इस्माइल के पुत्र, और उनकी पत्नियां "नाच गाने में मग्न हो गए" (1 नफी 18:9)। नफी का उनकी प्रतिक्रिया पर क्या जवाब था? (देखें 1 नफी 18:10) मधु मग्न होने में गलत क्या था? (देखें 1 नफी 18:9। वह प्रभु को भुल गए थे और भद्र व्यवहार करने लगे थे। आप चाहें तो इस आयत को सि. और अनु. 136:28 में अन्तर कर सकते हैं।)

- सिर्फ वो क्या चीज़ थी कि लमान और लेमुएल को नफी को छोड़ने के लिए मनाया था? (देखें 1 नफी 18:15–20) लमान और लेमुएल और ज्यादा कठोर हो गये थे जैसे वे प्रभु के खिलाफ विरोधी थे, पश्चात, और तब लगातार विद्रोह करते रहे (1 नफी 18:20 के साथ 1 नफी 2:14; 7:19–21; 16:39; 18:4 में अन्तर करें)। एक ही तरह के पाप बार-बार करने से क्या खतरा होता है? (देखें सि. और अनु. 82:7)

- प्रभु ने लोगों को आशीष कैसे दी लमान और लेमुएल के पश्चाताप और नफी के बन्धन खोलने के बाद? (देखें 1 नफी 18:21–25। अगर आप लोगों के प्रतिज्ञा देश में पहुंचने का चित्र का प्रयोग कर रहे हो, अभी उसे दिखाएं।)

- जब लोग वीरान भूमि से यात्रा कर रहे थे और समुद्र पार किया, किन परिस्थितियों ने उन्हें बहुतो को बड़बड़ाने दिया? (1 नफी 16:18–20, 34–36; 17:21) नफी का इस परेशानियों के समय क्या व्यवहार था? (देखें 1 नफी 18:16। जोर दें कि जब जो उसके पास थे परमेश्वर के खिलाफ शिकायत करने लगे, नफी कभी भी अपनी आज्ञाकारीता से नहीं डगमगाया और उसका प्रेम प्रभु के लिए।)

निष्कर्ष

ध्यान दें कि मॉरमन की पुस्तक में आखिरी शब्द नफी द्वारा लिखा गया था सच्चाई के चरित्र से उसके वर्णन को अपनाना: "प्रभु ने मुझे आदेश दिया, और मैं उसका पालन करूंगा" (2 नफी 33:15)। तब एल्डर हिबर जे. ग्रान्ट द्वारा दिया गया निम्नलिखित बयान बांटे:

"कोई बाधा अजय नहीं है यदि परमेश्वर आदेश देता है और हम पालन करते हैं" (in Conference Report, Oct. 1899, 18)।

आत्मा के नेतृत्व द्वारा, पाठ के दौरान सच्चाई की साक्षी की चर्चा करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. धर्मशास्त्र खोज़ें

कक्षा के सदस्यों को 1 नफी 16–18 में जांच करने दें, शब्द ढूंढें जोकि नफी का वर्णन करें और शब्द लमान और लेमुएल का वर्णन करें। शब्दों की सूची चॉकबोर्ड पर लिखें, और उन्हें नफी और उसके भाइयों के विद्रोह के बीच अन्तर दिखाने में प्रयोग करें।

2. 1 नफी 19–22 में से निरीक्षण करें

- एक पहली चीज़ प्रभु ने नफी को करने की आज्ञा दी उसके परिवारों के प्रतिज्ञा के देश में आगमन के बाद लोगों का अभिलेख रखना था (1 नफी 19:1–4)। नफी ने कहा था कि उसने अपने लोगों के लिए "पवित्र चीज़ें" लिखी थी "कि शायद (वो) उन्हें विश्वास दिलाये कि प्रभु उनका मुक्तिदाता है याद रखें" (1 नफी 19:5, 18)। अगर हम अपने जीवन की पवित्र घटनाओं का अभिलेख रखें तो क्या आशीषें हमारे वंश पर आएंगी?
- नफी के अनुसार, संसार उद्धारक को उसके नाश्वन शासन के दौरान कैसे स्वीकार करेगा? (देखें 1 नफी 19:7–10) संसार ने यीशु को "एक तुच्छ वस्तु" जानकर अस्वीकार क्यों किया था? (देखें 1 नफी 19:9) यीशु ने ऐसी पीड़ा उठाने की इच्छा क्यों की थी? (देखें 1 नफी 19:9)
- नफी के अनुसार, यहूदियों को क्यों "सभी लोगों द्वारा दण्ड दिया जाएगा"? (देखें 1 नफी 19:13–14) क्या होगा जब यहूदी यीशु के विरूद्ध "अपना मन नहीं फिराएंगे"? (देखें 1 नफी 19:15–16)
- नफी ने शिक्षा दी अपने भाइयों को "पुराने भविष्यवक्ताओं" और "प्रभु के द्वारा दुसरे देशों में, बीते युगों के लोगों में किये गये काम" के बारे में (1 नफी 19:21–22)। आप अपने आपको आशिषित कैसे मानते है जब आप धर्मशास्त्रों का और प्राचीन भविष्यवक्ताओं से सीखते हैं?
- हमारे लिये "सभी धर्मशास्त्र हमारे लाभ के लिए हैं" क्यों महत्वपूर्ण हैं? (1 नफी 19:23)। आप इसे करके कैसे लाभ उठाते हैं?

1 नफी 21–22 में अन्तिम दिनों की विशिष्ट भविष्यवाणी है। आप शायद निम्नलिखित अशों को दोहराना चाहेंगे।

क. 1 नफी 21:22–23; 22:6–8। सुसमाचार की पुनःस्थापना से बिखरे हुए इस्राएल को फिर से एकत्रित करेगा।

ख. 1 नफी 21:26; 22:10–12। प्रभु ने इस्राएल को "अन्धकार की स्थिति से बाहर लाने और अन्धेरे से बाहर लाएगा; और वे जानेंगे कि प्रभु ही उनका उद्धारक और मुक्तिदाता है।" (ध्यान दें कि मॉरमन की पुस्तक महत्वपूर्ण अभिनय करती है उनके लिए जो (प्रभु) के अनुबंध और उसके सुसमाचार को लाते हैं जो इस्राएल के घराने के हैं।" (1 नफी 22:11–12 की मॉरमन की पुस्तक के शीर्षक पृष्ठ के साथ तुलना करें।)

ग. 1 नफी 22:13–15। राष्ट्र जो कि परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं एक दुसरे के विरूद्ध युद्ध करेंगे और नष्ट हो जाएंगे।

घ. 1 नफी 22:16–19। प्रभु नेक लोगों को बचाएगा।

ङ. 1 नफी 22:26। मसीह के हजार वर्षो के शासन के दौरान शैतान को बान्ध दिया जाएगा।

“चुनने की स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन”

पाठ
6

2 नफी 1–2

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को “चुनने की स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन” यीशु मसीह के द्वारा, सारे मनुष्यों का महान मध्यस्थ पाने की महान इच्छा रखने में सहायता करें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 2 नफी 1। लेही ने शिक्षा दी कि उसके लोगों ने अनुबंध द्वारा “एक प्रतिज्ञा का देश” पाया था। उसने अपने पुत्रों से पश्चाताप करने, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने, और नेकता का कवच पहनने की विनति की।

   ख. 2 नफी 2:1–10। लेही ने शिक्षा दी कि मुक्ति यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा आएगी।

   ग. 2 नफी 2:11–30। लेही ने शिक्षा दी कि स्वर्गीय पिता की योजना में विरोध ज़रूरी है और कि हम “स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन...या बन्धन और मृत्यु को चुनने की आजादी है।”

2. अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करें, अर्लाम घड़ी को कक्षी में लाएं।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करके पाठ को आरम्भ करें।

अर्लाम घड़ी को कक्षा में लाएं, और पाठ के शुरू में उसे बजने दें। जब वहे बजे, ध्यान दें कि हमें भी बहुधा बार अर्लाम घड़ी जैसी चीज़ की जरूरत पड़ती है हमें उठाने में सहायता करती है। व्याख्या करें कि यह पाठ लेही की सलाह के सहायता के साथ उसके पुत्रों की आत्मिकता को जगाने के साथ आरम्भ होता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

इस पाठ चर्चा में पाठ लेही के कुछ आखिरी शब्द उसके बच्चों के लिए थे। प्रोत्साहित करें कक्षा के सदस्यों को लेही की सलाह को अपने जीवन में अपनाने के लिए। प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरत से अच्छे से मिलता हो।

1. लेही अपने पुत्रों को प्रायश्चित करने, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने, और नेकता के कवच को पहनने की सलाह देता है।

2 नफी 1 की चर्चा करें। कक्षा सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। व्याख्या करें कि इस अध्याय में वो सुझाव है जो लेही ने अपने पुत्रों को अपने मरने से पूर्व दिया था। कक्षा सदस्यों से कुछ विशिष्ट चीज़ों को देखने के लिए कहें जोकि लेही ने अपने पुत्रों से करने को और आशीषों के लिए वादे किये थे कि वो प्राप्त करेंगे अगर वे उसकी सलाह का पालन करेंगे।

- लेही ने कहा था कि उनकी पीड़ाओं के बावजूद, उसके लोग अनुबंध के द्वारा “प्रतिज्ञा का देश पाएंगे” (2 नफी 1:5)। प्रभु और लेही के लोगों के बीच क्या अनुबंध हुए थे? (देखें 2 नफी 1:6–7, 9–10।) लेही ने देश के निवासियों का क्या होगा अगर वे उद्धारक को नहीं मानेंगे के बारे में क्या कहा था? (देखें 2 नफी 1:10–12)
- लेही ने अपने पुत्रों को पश्चाताप करने की चुनौती उन्हें आज्ञा देकर कहा “जागो नर्क की नींद से, और जिस जंजीर से तुम बन्धे हुए हो” (2 नफी 1:13; देखें आयत 14, 21, और 23 भी)। कैसे दुष्टता गहरी नींद के समान होती है? कैसे पापी जंजीरों से बन्धा होता है?

- लेही ने अपने पुत्रों को "धुल से उठने...मनुष्य बनने" की सलाह दी थी (2 नफी 1:21)। नेक आदमी में क्या गुण होते हैं? (देखें 2 नफी 1:21–27। कक्षा सदस्यों से लेही के सुझाव के लिए गुणों की आयत खोजने को कहें। आप इस सूची को और अन्य गुणों को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं।) मनुष्यजाति की संसारिक भाषा क्या है? हम युवा पुरूष को मनुष्यजाति की संसारिक भाषा से उपर नेकता को चुनने में सहायता कैसे कर सकते हैं?

- लेही ने अपने विश्वसी होने से क्या आशीषें पाई थी? (कक्षा सदस्य को 2 नफी 1:15 ज़ोर से पढ़ने को कहें। ध्यान दें कि जब तक उसके कुछ पुत्र पाप की "भयंकर जंजीर" से बन्धे हुए थे, लेही;"(उद्धारक) के प्रेम की बांहों में अनन्त रूप से घिरा हुआ था।" ज़ोर दें कि जैसे हम मसीह के पास नम्रता से पश्चाताप से और आज्ञाकारीता से आयें, हमें मुक्ति मिलेगी और "उसकी प्रेम की बांहों में अनन्त रूप से घिरे हुए होंगे।")

2. लेही यीशु मसीह के प्रायश्चित की साक्षी देता है।

2 नफी 2:1–10 पढ़ें और चर्चा करें।

- लेही ने कहा था कि "बिना नियम के किसी का न्याय नहीं होगाः या, सांसारिक नियम के अनुसार उनको अलग किया गया था" (2 नफी 2:5)। न्याय होना परमेश्वर के साथ फिर से बन्धना होगा, पापों की सज़ा से क्षमा, और नेक और निर्दोष घोषित होना। सांसारिक नियम अनुसार हमें अलग होना और हमें न्याय होने से रोकना कैसा होगा? (देखें याकूब 2:10; 1 नफी 10:21। जब हम आज्ञा का पालन नहीं करते, हम दोषी और अशुद्ध होते हैं, और कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के साथ नहीं रह सकती।)

- हमारा न्याय नियम द्वारा नहीं हो सकता, हमारा न्याय कैसे होगा और परमेश्वर के सम्मुख जाने में योग्य होंगे? (देखें 2 नफी 2:6–8। ज़ोर दें कि यीशु मसीह के प्रायश्चित के कारण, हम पश्चाताप कर सकते हैं और हमारे पाप गवाह किये जाएंगे।)

- लेही ने कहा था कि उद्धारक नियम का उत्तर किसी भी अन्य द्वारा नहीं होगा (2 नफी 2:7)। वाक्यखंड "नियम का उत्तर" पत्तन के परिणाम और परमेश्वर की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी न होने की "नियुक्त सज़ा" को संदर्भ करता है (2 नफी 2:5, 10)। उद्धारक ने नियम के अन्त का कैसे उत्तर दिया था? (देखें 2 नफी 2:7; अलमा 34:13–16; सि. और अनु. 19:16–19; 45:3–5; नीचे दिये गये उद्धरण को भी देखें।)

  अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने कहा था, "यीशु आया और उसने सहा, न्याय के लिए अन्याय, वह जोकि बिना पाप का था उसके लिए जिसने पाप किए थे, और नियम के लिए कारण दण्डित किया गया था जिसका उल्लंघन किया था" (*Gospel Doctrine,* 5th ed. [1939], 204)।

- हमें कैसे जीना होगा कि मसीह के पीड़ा के द्वारा हमारे पापों का न्याय हो? (देखें 2 नफी 2:7; रोमियों 10:4; सि. और अनु. 19:15–16; विश्वास के अनुच्छेद 1:3 भी देखे।)

- कक्षा के सदस्य को 2 नफी 2:8 ज़ोर से पढ़ने को कहें। "वे बातें" क्या हैं जो कि हमें जानना चाहिए? (देखें 2 नफी 2:6–8) हम "इन बातों" को कैसे जान सकते हैं? हमारा इन बातों को जानना उद्धारक और उसके प्रायश्चित के प्रति कैसे आभार प्रकट करते हैं?

3. लेही ने प्रतिकूलता के महत्व की तथा अच्छे और बुरे में से चुनने की आजादी की शिक्षा दी।

2 नफी 2:11–30 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

जैसे लेही ने अपने पुत्रों को प्रतिकूलता के लिए ज़रूरतों के विषय में शिक्षा दी थी, उसने आदम और हव्वा के प्रतिबंधित फल को खाने के अभिलेख की समीक्षा की थी। कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 2:15–25 में से कुछ आयतों को एक के बाद एक पढ़ने दें। उन्हें ध्यान देने के लिए कहें (1) उन परिस्थितियों पर जो कि आदम और हव्वा के

प्रतिबंधित फल खाने से पूर्ण हुई थी और (2) प्रतिकूलता जो आदम और हव्वा ने फल खाने के पश्चात अनुभव किया था। कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर चार्ट में संक्षेप करें। चार्ट नीचे दिए गए चार्ट के समान होना चाहिए।

ध्यान दें कि 2 नफी 2 में लेही ने कुछ परिस्थितियों का वर्णन किया था जो कि पत्तन के द्वारा लाई गई थी। हालांकि, पत्तन का सिद्धान्त का आशय उससे काफी व्यापक है जितना कि इस अध्याय में दिया गया है। कक्षा के सदस्यों को समझना चाहिए कि पत्तन शारीरिक मृत्यु और आत्मिक मृत्यु इस दुनिया में लाया था, इस प्रकार से मुक्ति की योजना प्रभाव में लायी गई।

प्रतिबंधित फल खाने से पहले की परिस्थितियां	फल खाने के पश्चात विरोध का अनुभव हुआ
वे स्वयं के लिए कार्य कर सकते थे (2 नफी 2:15–16), परन्तु उन्होंने अच्छा नहीं किया था, "उन्हें पाप का ज्ञान नहीं" था (2 नफी 2:23)।	वे अच्छा कर सकते थे, और वे पाप भी कर सकते थे (2 नफी 2:23)। उन्हें अपने पापों से पश्चाताप करने की आज्ञा दी गई थी (2 नफी 2:21)।
उन्हें भूमि से भोजन के लिए जोतने को बगीचे में उगाने की ज़रूरत नहीं थी (2 नफी 2:19; देखें मूसा 2:29 भी)।	उन्हें भोजन प्राप्ति के लिए काम करना था (2 नफी 2:19)।
वे भला या बुरा नहीं जानते थे (2 नफी 2:23)।	उन्होंने अच्छे और बुरे का अनुभव किया (2 नफी 2:23)।
वे "उसी अवस्था में...सदैव रहते, और अन्त नहीं होता" (2 नफी 2:22)।	वे पतित और नाश्वान हो गये थे—शारीरिक मृत्यु भोगने के लिए (2 नफी 2:22; देखें मूसा 6:48 भी)।

- अगर आदम और हव्वा प्रतिबंधित फल नहीं खाते, वे इस चार्ट में दिये गये प्रतिकूलता का अनुभव नहीं करते (2 नफी 2:22–23)। आदम और हव्वा के पत्तन के विरोध का दुनिया में आने के कारण हमें क्या आशीषें प्राप्त हुई थी? (देखें 2 नफी 2:23–27; मूसा 5:10–12।)
- लेही ने अपने बच्चों से कहा था, क्योंकि हर एक कार्यो में प्रतिकूलता स्वाभाविक है (2 नफी 2:11; आयतें 15 को भी देखें)। आप कैसे देखते हैं कि हमारे दैनिक जीवन में प्रतिकूलता का होना अति आवश्यक है? (कक्षा सदस्यों को 2 नफी 2:11–13 को पढ़ने दें अगर आप चाहें जैसे वे इस प्रश्न की चर्चा करें) प्रतिकूलता कैसे हमारी प्रगति में मदद करती है?
- 2 नफी 2:24–28 के अनुसार, हमारा स्वर्ग का पिता हमारे लिए क्या चाहता है? (आनन्द, स्वतन्त्रता, और अनन्त जीवन।) वो हमें यह आशीषें पाने में कैसे हमारे लिए रास्ता तैयार करता है? (देखें 2 नफी 2:26–27; यूहन्ना 14:6 को भी देखें।) शैतान हमारे लिए क्या चाहता है? (देखें 2 नफी 2:18, 27, 29। दुर्गति, अधीनता, और आत्मिक मृत्यु।) हमारे व्यक्तिगत कर्म कैसे बतलाते हैं कि हम आनन्द, स्वतन्त्रता, और अनन्त जीवन, या दुर्गति, अधीनता और आत्मिक मृत्यु पाएंगे?

  एल्डर जोसफ बी. वर्थलिन ने शिक्षा दी थी "प्रभु ने हमें स्वतन्त्रता का उपहार दिया (देखें मूसा 7:32) और निर्देश दिया भाँलिभाति से बुराई में से अच्छाई को जानो (देखें 2 नफी 2:5)। आप चुनने को स्वतन्त्र हैं (देखें 2 नफी 2:27) और कार्य करने की अनुमति प्राप्त है (देखें 2 नफी 10:23; इलामन 14:30), परन्तु आपको परिणाम चुनने की स्वतन्त्रता नहीं है। केवल निश्चय के साथ, अच्छे का चुनाव और सही मार्गदर्शन आनन्द और शान्ति की ओर ले जाता है, जब कि पाप और बुराई अन्त में दुर्भाग्य, दु:ख और अप्रसन्नता की ओर ले जाते हैं" (in Conference Report, Oct. 1989, 94; or *Ensign,* Nov. 1989, 75)।

- 2 नफी 2 में सृष्टि का सिद्धान्त के विषय (2 नफी 2:14–15), पत्तन (2 नफी 2:4–5, 8, 18, 25), और प्रायश्चित (2 नफी 2:3–4, 6–10, 26–27) दिया गया है। यह तीनों सिद्धान्त स्वर्गीय पिता की मुक्ति की योजना का केन्द्र कैसे है?

निष्कर्ष

ज़ोर दें कि यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, हम (उद्धारक) की प्रेम की बांहों में अनन्तता के लिए घेरे जा सकते हैं (2 नफी 1:15)। व्याख्या करें कि यह "चुनने की स्वतन्त्रता" एक महान आशीष है, और कक्षा के सदस्यों को यीशु मसीह सभी मनुष्यों का महान मध्यस्थ के द्वारा, "स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन चुनने" के लिए प्रोत्साहित करें (2 नफी 2:27)।

जैसा आत्मा का निर्देशन हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

लेही की शिक्षा को दुनिया की शिक्षा का सामना करने में प्रयोग करना

चॉकबोर्ड पर नीचे दी गई रूपरेखा के कथनों की सूची लिखें "दुनिया की झूठी शिक्षाएं"। कक्षा के सदस्यों को कल्पना करने को आमन्त्रित करें कि उन्हें एक मित्र, एक सहकर्मी, या विद्यालय अध्यापक ने इन गलत कथनों पर बहस के लिए प्रेरित किया है। तब व्याख्या करें कि लेही ने सच्चाई बांटी थी जो कि हमें शान्ति और आश्वासन दे सकता है जब हम दुनिया की झूठी शिक्षाओं का सामना करते हैं। चॉकबोर्ड पर धर्मशास्त्र संदर्भ की सूची रूपरेखा के अर्न्तगत "लेही शिक्षाएं" लिखें। कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक धर्मशास्त्र अशं पढ़ने दें और सकल्प करें कि कैसे यह उन्हें शान्ति महसूस करने में सहायता कर सकता है जबकि वे दुनिया की झूठी शिक्षाओं द्वारा परेशान हो। कक्षा सदस्यों को धर्मशास्त्र को अपने जीवन में लागू करने के लिए चर्चा करने को प्रोत्साहित करें।

दुनिया की झूठी शिक्षाएं	लेही की शिक्षाएं
कोई अच्छा या बुरा नहीं है।	2 नफी 2:5 (''मनुष्य को भलिभाँति निर्देश दिये हैं कि बुराई में से अच्छाई को जानो।'')
कोई कानून नहीं है।	2 नफी 2:5 (''मनुष्यों को नियम दिए गए हैं।'')
कोई मसीह नहीं है।	2 नफी 2:6 (''मुक्ति पवित्र मसीहा के द्वारा आती है।'')
जीवन के बाद कोई आस्तित्व नहीं है।	2 नफी 2:10 (''सभी मनुष्य [परमेश्वर] के सम्मुख खड़े [होंगे], तुम्हारा न्याया होगा।'')
कोई परमेश्वर नहीं है।	2 नफी 2:14 (''परमेश्वर है।'')
जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।	2 नफी 2:25 (''मनुष्य है, कि उन्हें आनन्द की प्राप्ति हो।'')
हमारे कार्य जनन विज्ञान और वातावरण द्वारा निर्धारित होते हैं।	2 नफी 2:26–27 (हम स्वतन्त्र हैं ''[स्वयं] कर्म करने में और न कि दूसरे के प्रभाव से कर्म करने में।'' हम ''स्वतन्त्रता से चुनने में और अनन्त जीवन...या कैंद और मृत्यु को चुनने में स्वतन्त्र हैं।'')

“मैं जानता हूं कि मेरा विश्वास किस पर है”

पाठ 7

2 नफी 3–5

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की जोसफ स्मिथ की उनकी गवाही को मज़बूत बनाने में सहायता करें और प्रभु में विश्वास और उन आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा आनन्द पाने में उन्हें प्रोत्साहित करें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 2 नफी 3। लेही ने अपने पुत्र यूसुफ को प्राचीन यूसुफ के विषय में शिक्षा दी, जिसने जोसफ स्मिथ के विषय में भविष्यवाणियां की थी। लेही यूसुफ को शिक्षा दी कि उसके वंशज भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ और मॉरमन की पुस्तक के द्वारा आशिषित होंगे।

   ख. 2 नफी 4। लेही अपने बच्चों और अपने पोते-पोतियों को अन्तिम सलाह देने के पश्चात मर गया। नफी ने अपने स्वयं के पापों का विलाप किया परन्तु परमेश्वर की अच्छाइयों की महिमा की थी।

   ग. 2 नफी 5। नफी के वर्षों लमान और लेमुएल का क्रोध और बढ़ा था। नफी के अनुयायी प्रभु की आज्ञा का पालन कर लमान के अनुयायियों से अलग हुए थे। नफायटी “आनन्दमय जीवन जीते हैं” और लमनायटी अपनी दुष्टता के लिए श्रापित होते हैं।

2. अतिरिक्त पढ़ना: Joseph Smith Translation, Genesis 50:24–38; Bible Dictionary, “Joseph, Son of Rachel,” 716–17.

3. आप चाहें तो कक्षा के एक सदस्य को 2 नफी 4:15–35 जोर से पढ़ने को तैयार होने के लिए कह सकते हैं। कक्षा के सदस्य को सूचित करें कि यह अंश किसी समय “नफी की भजन संहिता” कहलाता था और कि यह नफी के कुछ महसूस करने की गहराई को व्यक्त करता है।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या स्वयं की एक गतिविधि का प्रयोग करके पाठ की शुरूआत करें।

कक्षा के सदस्यों को बताये कि 2 नफी 3 में चार आदमियों का वर्णन है जिनका सामान्य नाम है। कक्षा सदस्य को इन चार आदमियों को 2 नफी 3:1–15 में ध्यान देने के लिए आमन्त्रित करें। कक्षा के सदस्यों के पास इन आयतों के देखने के बाद समय हो तो, उनसे पूछें कि उन्होंने किसे पाया। सही उत्तर की सूची नीचे दी गई है:

क. यूसुफ, लेही और सारा का आखिरी जन्मा पूत्र (2 नफी 3:1–3)
ख. मिस्र का यूसुफ (2 नफी 3:4–5)
ग. जोसफ स्मिथ जु. (2 नफी 3:6–15)
घ. जोसफ स्मिथ सीनियर (2 नफी 3:15)

इस संक्षिप्त गतिविधि के पश्चात, 2 नफी 3 की सीधी चर्चा करें।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंश को, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य समाग्री को चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती है। चर्चा करें दैनिक जीवन में चुने हुए धर्मशास्त्र को कैसे लागू करें। कक्षा सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र सिद्धान्तों से संबंधित हैं।

1. लेही ने शिक्षा दी कि उसके वंशज भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ और मॉरमन की पुस्तक के द्वारा आशिषित होंगे।

2 नफी 3 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

- लेही ने अपने पुत्र यूसुफ को यूसुफ जो याकूब और राहेल का पुत्र था जिसे "मिस्र में बन्धी" बना लिया गया था के द्वारा की गई भविष्यवाणी को सीखाया था (2 नफी 3:4, उत्पत्ति 30:22–24; 37:1–3, 23–28 भी देखें)। मिस्र के यूसुफ ने प्रभु के साथ महत्वपूर्ण लेही के परिवार के लिए अनुबंध क्यों बनाया था? (देखें 2 नफी 3:4–5; याकूब 2:25; उत्पत्ति 45:7 भी देखें।)

- मिस्र के यूसुफ ने जिसे दिव्यदर्शन में देखा था वो चुना हुआ दिव्यदर्शी कौन था? (देखें 2 नफी 3:6–15। भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ।) जोसफ स्मिथ ने किस तरह "[प्रभु] के शब्दों को लाया" था? (देखें 2 नफी 3:11 और नीचे दिए गए उद्धरण)। आप प्रभु के वचन जिसे जोसफ स्मिथ द्वारा लाया गया था कैसे आशिषित हुए?

  एल्डर लेग्रन्ड रिचर्ड ने कहा थाः "भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा हमारे लिए लाई गई मॉरमन की पुस्तक, सिद्धान्त और अनुबंध, अनमोल मोत्ती, और बहुत से अन्य लेख थे। जहां तक हो सके हमारा लेखा दर्शाता है, उसने हमें अधिक सच्चाइयाँ प्रकट की किसी अन्य भविष्यवक्ता से ज्यादा जो इस पृथ्वी पर कभी रहे थे" (in Conference Report, Apr. 1981, 43; or *Ensign,* May 1981, 33)।

- मिस्र के यूसुफ को प्रभु ने बाइबल के विषय में बताया था, जिसमें यहूदा के वंशज द्वारा लिखे शब्द होंगे, और मॉरमन की पुस्तक, जिसमें यूसुफ के वंशज द्वारा लिखे शब्द होंगे (2 नफी 3:12)। बाइबल और मॉरमन की पुस्तक "एक साथ कैसी उन्नति" करेंगी? क्या आशीषें प्रभु ने कहीं थी कि बाइबल और मॉरमन की पुस्तक "एक साथ उन्नति" करने से आएंगी? (देखें 2 नफी 3:12)

- प्रभु ने वादा किया कि मिस्र के यूसुफ के वंशज की "एक नेक शाखा" "टूट जाएगी" परन्तु "प्रभु के अनुबंध में स्मरण की जाएगी" (2 नफी 3:5)। जोसफ स्मिथ और मॉरमन की पुस्तक का इन अनुबंधों को पूरा करने में क्या भूमिका है? (देखें 2 नफी 3:12–13, 18–21; 30:3–6) यह वादे आजकल कैसे पूरे हो रहे हैं? मॉरमन की पुस्तक कैसे आपको प्रभु के साथ किये हुए अनुबंधों को स्मरण करना और पूरा करने में सहायता करती है?

- मिस्र का यूसुफ, लेही का पुत्र यूसुफ और जोसफ स्मिथ, का उनके नामों के अतिरिक्त क्या संबंध है? (देखें 2 नफी 3:4–7, 11–12, 18–21। उत्तर में शायद वंशावली, अनुबंध, और मॉरमन की पुस्तक शामिल हो।)

2. नफी ने अपने पापीपन होने के प्रति शोक प्रकट किया परन्तु परमेश्वर की अच्छाइयों की महिमा की।

2 नफी 4 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि लेही की मृत्यु से पूर्ण, उसने अपने बच्चों और पोते-पोतियों को सलाह और आशीष दी थी (2 नफी 4:3–12)।

लेही की मृत्यु के तुरन्त बाद, "लमान और लेमुएल और इस्माइल के पुत्र [नफी] पर प्रभु की चेतावनी के कारण क्रोधित हुए थे" (2 नफी 4:13)। जैसे नफी लगातार इन परेशानियों को लिख रहा था, उसने अपने अहसासों का एक अंश में लेखा रखा था उसे किसी समय "नफी का भजन संहिता" कहते थे। जैसे एक परिचय को चर्चा में नफी की भजन संहिता व्याख्या करती है कि भजन संहिता एक कविता है या स्तुति गीत, किसी हद तक आज के स्तुति गीत की तरह। आप कक्षा सदस्य से उनके कुछ पसिन्दा स्तुति गीत के नाम पूछना चाहेंगे और संक्षेप में उनके विषय में वार्तालाप करना कि क्यों वे स्तुति गीत उनके लिए अर्थपूर्ण है।

अगर आप कक्षा के एक सदस्य को नफी का भजन संहिता पढ़ने की तैयारी करने को पूछते हैं आमन्त्रित करें उसे अभी करने को। अन्य कक्षा सदस्यों को शान्तिपूर्वक उस पर ध्यान देने को आमन्त्रित करें।

- नफी ने कहा, "मेरी आत्मा प्रभु की बातों में आनन्दित है; और उन पर मेरा हृदय लगातार चिन्तन कर रहा है" (2 नफी 4:16)। क्या विशेष बातें थी नफी के आनन्दित होने में? (देखें 2 नफी 4:15–16) चिन्तन करने का अर्थ

इसमें क्या है? हम प्रभु की बातों पर चिन्तन करने में क्या समय लगा सकते हैं? प्रभु की बातों पर चिन्तन करना हमारी कैसे सहायता कर सकता है?

- नफी का वर्णन करने के लिए आप किन शब्दों का प्रयोग करेंगे? (उत्तर में *नेक, आज्ञाकारी,* और *विनम्र* शामिल हो सकते हैं।) नफी ने क्यों कहा था वह एक "अभागा मनुष्य" था, जिसकी "आत्मा दुःखी थी उसके दुष्कर्मो के कारण"? (देखें 2 नफी 4:17, 27; देखें 1 नफी 10:6 भी ।) यह क्यों आवश्यक है परमेश्वर के सामने अपने पत्तन को महसूस करना?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था, "सिर्फ एक मनुष्य होने से भोजन की इच्छा नहीं होती जब तक वह भूखा न हो, तो वह मसीह का उद्धार का इच्छुक नहीं होगा जब तक वह नहीं जानेगा क्यों उसे मसीह की ज़रूरत है। कोई भी पर्याप्त रूप से और उचित रीति से नहीं जानता कि क्यों उसे मसीह की ज़रूरत है जब तक वह समझता और पत्तन के सिद्धान्त को और उसका प्रभाव सारी मानव जाति पर होगा मान नहीं लेता" (in Conference Report, Apr. 1987, 106; or *Ensign,* May 1987, 85)।

- नफी को आशा कैसे प्राप्त हुई जबकि वह लालच और पाप के द्वारा "घिरावा" महसूस करता था? (देखें 2 नफी 4:18–19) प्रभु ने अतीत में नफी की सहायता कैसे की थी? (इस प्रश्न के उत्तर जानने के लिए कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 4:20–25 पढ़ने दें। उनके उत्तर की सूची चॉकबोर्ड पर लिखें। कुछ संभावित उत्तर नीचे दिये गए हैं।)

  प्रभु:

  क. नफी का सहारा रहा था (2 नफी 4:20)।
  ख. ने नफी का वीरानभूमि पर कष्टों में पथ-प्रदर्शन किया था (2 नफी 4:20)।
  ग. ने उसे अपने प्रेम में भर दिया था (2 नफी 4:21)।
  घ. ने उसके शत्रुओं को पराजित किया था (2 नफी 4:22)।
  ङ. ने उसकी पुकार सुनी थी (2 नफी 4:23)।
  च. ने दिव्यदर्शन के द्वारा उसे ज्ञान दिया था (2 नफी 4:23)।

- कब आपने प्रभु से सामान्य आशीषें प्राप्त की थी? अतीत में प्राप्त आशीषें याद करना कैसे परेशानियों के समय आपकी सहायता करता है?

- नफी ने अपने आप से पूछा, क्यों उसने दुःखों और पाप को समपर्ण किया जबकि उसने वे तिरस्कार की बातें देखी थीं और उन बातों को जानता था (2 नफी 4:26–27)। हम बहुत बार दुःखों और लालच के साथ क्यों संघर्ष करते हैं जबकि हमारे पास सुसमाचार का ज्ञान है? नफी का भजन संहिता हमें दुख और लालच से ऊपर उठने के विषय में क्या सीखा सकता है?

- भजन संहिता के पहले भाग में, नफी के शब्द उसी की तरफ निर्देशन करते हैं (2 नफी 4:15–30)। भजन संहिता की समाप्ति एक प्रार्थना है (2 नफी 4:30–35)। नफी ने स्वर्गीय पिता से इस प्रार्थना में क्या मांगा था? (देखें 2 नफी 4:31–33। कक्षा सदस्यों को नफी की प्रार्थना पर चर्चा करन के लिए आमन्त्रित करें जो कि उनके लिए अर्थपूर्ण हो। आप नीचे दिये गये कुछ प्रश्नों का प्रयोग कर चर्चा को प्रोत्साहित कर सकते हो।)

  क. प्रभु "[हमें] [हमारे] शत्रुओं के हाथों से कैसे बचाता है"? (देखें 2 नफी 4:31–33)।
  ख. "पाप से कांपना" इसका अर्थ क्या है? (देखें 2 नफी 4:31; मुसायाह 5:2; अलमा 13:12)।
  ग. आप "इससे नीची तराई से होकर चलना" और "सत्य के पथ पर दृढ़ता से चलना" के अर्थ से क्या सोचते हैं (2 नफी 4:32)।
  घ. आप प्रभु के इस "[हमें] [अपनी] धार्मिकता के वस्त्र में घेर लेगा" से क्या अर्थ सोचते हैं? (2 नफी 4:33)।

- अपनी इस प्रार्थना में, नफी ने क्या करने का वादा किया था? (देखें 2 नफी 4:30, 34–35। उसने परमेश्वर पर भरोसा और हमेशा उसकी स्तुति करने का वादा किया था।) नफी ने जब यह कहा का अर्थ क्या था, "मैं मानव

बाहुबल पर विश्वास नहीं करूंगा?" (देखें 2 नफी 4:34; 28:31) लोगों के कुछ रास्ते कौन-से हैं जब लोग "मानव बाहुबल पर विश्वास करते हैं"? इससे क्या खतरा होता है? हम ऐसा क्या कर सकते हैं कि प्रभु पर विश्वास बढ़े?

3. लमान और लेमुएल का नफी के विरूद्ध क्रोध बढ़ा, और प्रभु ने नफी के अनुयाइयों को लमान के अनुयाइयों से अलग होने की आज्ञा दी।

2 नफी 5 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- लमान और लेमुएल नफी के प्रति क्रोधित क्यों थे? (देखें 2 नफी 4:13; 5:3) लमान और लेमुएल क्या करना ढूंढते थे कि परिणाम स्वरूप उनका क्रोध और बढ़े? (देखें 2 नफी 5:2, 4। उनके क्रोध का नफी का अपना क्रोध रोकने के प्रयत्न के साथ तुलना करें, जैसे 2 नफी 4:27–29 में लिपिबद्ध है।) क्रोध बढ़ने की कुछ हानियां क्या हैं? हम घरों में, जाति, और गिरजाघर में शान्ति बनाये रखने के लिए क्या कर सकते हैं?

  अध्यक्ष हावर्ड डबल्यू. हन्टर ने सीखाया था: "हमें एक ज्यादा शान्तिपूर्वक दुनिया की, ज्यादा शान्तिपूर्वक परिवारों पड़ोसियों और समुदायों की ज़रूरत है। ऐसी शान्ति को बचाये और उन्नति के लिए, हमें दुसरे से, यहां तक अपने दुश्मनों से अपने मित्रों के समान प्रेम करने की ज़रूरत है। हमें मित्रता का हाथ बढ़ाने की ज़रूरत है। हमें दयालू, अधिक विनम्र, अधिक क्षमा करने वाले, और क्रोध में धीमे होने की आवश्यकता है। हमें एक दुसरे से प्रेम करना मसीह के शुद्ध प्रेम के साथ की ज़रूरत है। यही हमारी आकांशा और हमारी इच्छा होनी चाहिए" (in Conference Report, Apr. 1992, 87; or *Ensign,* May 1992, 63)।

- क्योंकि अपने भाइयों के क्रोध से, नफी ने सहायता के लिए प्रार्थना की (2 नफी 5:1)। प्रभु ने उसकी प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया था? (देखें 2 नफी 5:5)

- जब नफी और उसके लोगों को जाना पड़ा था, वे "तब आनन्दपूर्वक रहने लगे" (2 नफी 5:27)। उन्होंने क्या किया था जो उनके आनन्द का भागीदार हुआ? (देखें 2 नफी 5:10–17। उत्तर में शामिल हो सकता है कि वे आज्ञाओं का पालन करें, अभिलेख रखें जो कि पीतल की पट्टियों पर है, मन्दिर बनायें, और एक साथ काम करें।) नफायटियों का उदाहरण कैसे हमारी सहायता "आनन्दपूर्वक रहने में" हमें प्रबल करता है?

निष्कर्ष

आत्मा के निर्देशन द्वारा, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की साक्षी दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री पाठ का अतिरिक्त रूपरेखा का सुझाव देती है।

"मेरी आत्मा, जागो!...हे मेरे हृदय, आनन्द मानाओ"

व्याख्या करें कि हम नफी के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं जब हम हताश महसूस करते हैं। 2 नफी का अध्याय 4 और 5 बहुत से उदाहरण उन बातों के देते हैं जिससे हम हताश होने के भावों से ऊपर उठ सकते हैं। निम्नलिखित उदाहरण की चर्चा कक्षा के सदस्यों के साथ करें:

क. धर्मशास्त्र का अध्ययन करना (2 नफी 4:15)।
ख. प्रभु की बातों में आनन्दित हों और चिन्तन करें (2 नफी 4:16)।
ग. प्रभु पर विश्वास किया और उस पर सहायता के लिए देखूंगा (2 नफी 4:20–21, 34)।
घ. गंभीर प्रार्थना की (2 नफी 4:24)।
ङ. कार्य; मेहनती होना (2 नफी 5:15, 17)।
च. मन्दिर में सेवा करना (2 नफी 5:16)।

“हमारे ऊपर परमेश्वर की कितनी बड़ी कृपा है”

पाठ 8

2 नफ़ी 6–10

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की सहायता उनकी यीशु मसीह के प्रायश्चित की ज़रूरत को समझने में करें और उन्हें शिक्षा दें कि कैसे प्रायश्चित की सारी आशीषें प्राप्त होगी।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 2 नफी 9:1–26, 39–54। याकूब ने साक्षी दी कि उद्धारक के प्रायश्चित के द्वारा, हम पार्थिव मृत्यु से और आत्मिक मृत्यु से मुक्ति पा सकते हैं। उसने उन नियमों की चर्चा की जो कि हमें प्रायश्चित की सारी आशीषें पाने में हमारी सहायता करते हैं।

   ख. 2 नफी 9:27–38। याकूब ने उन व्यवहारों और कर्मों की चर्चा की जिस से कि हमें प्रायश्चित की सारी आशीषें पाने में बाधा आती है।

   ग. 2 नफी 10। याकूब ने भविष्यवाणी की थी कि मुक्तिदाता मसीह कहलाया जाएगा। याकूब ने भविष्यवाणी की कि नफी के वंशज अविश्वास के कारण नष्ट हो जाएंगे और यरूशलेम में यहूदी उद्धारक को सूली पर चढ़ाएंगे और तितर-बितर होंगे जब तक वे उस पर विश्वास न करेंगे। याकूब ने प्रभु के अनुबंधों की साक्षी अपने लोगों के साथ दी थी और लोगों को सावधान किया था कि परमेश्वर की इच्छा के साथ पुनर्मिलाप कर लो।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: यशायाह 49–52। आप चाहें तो यशायाह 49:22–26 के साथ 2 नफी 6:6–7, 16–18; यशायाह 50 के साथ 2 नफी 7; यशायाह 51 के साथ 2 नफी 8:1–23; और यशायाह 52:1–2 के साथ 2 नफी 8:24–25 की तुलना कर सकते हैं।

3. अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करें, निम्नलिखित चित्रों को कक्षा में लाएं: पहाड़ पर उपदेश (62166; सुसमाचार कला चित्र किट 212); यीशु अन्धे को चंगा करता है (62145; सुसमाचार कला चित्र किट 213); तुफान को रोकना (62139; सुसमाचार कला चित्र किट 214); यीशु यारद की पुत्री को आशीष देता है (62231; सुसमाचार कला चित्र किट 215); मसीह बच्चों के साथ (62467; सुसमाचार कला चित्र किट 216); गतसमनी में यीशु की प्रार्थना (62175; सुसमाचार कला चित्र किट 227); और सूली पर चढ़ाया जाना (62505; सुसमाचार कला चित्र किट 230)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या स्वयं की एक गतिविधि का प्रयोग पाठ आरम्भ करने के लिए प्रयोग करें।

“तैयारी” भाग में दिए गए चित्रों को दिखाएं। कक्षा के सदस्यों को चित्र देखने के लिए आमन्त्रित करें और विचार करें कि यीशु मसीह ने उनके लिए क्या किया। तब उन से कुछ बातें जो वे उसके बारे में सोचते हैं बांटने को कहें। उनके जवाबों की सूची चॉकबोर्ड पर बनाएं।

निम्नलिखित आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए कक्षा के सदस्यों से पूछें: 2 नफी 6:17; 7:2; 8:3–6, 12। उन आयतों से शब्दों को देखने के लिए कहें जो कि उद्धारक ने हमारे लिए किए थे की बातों का संदर्भ करते हो। शब्दों की सूची चॉकबोर्ड पर बनाएं। सूची में निम्नलिखित शब्द शामिल हो सकते हैं: छुड़ा लेना (2 नफी 6:17; 7:2),

उद्धार (2 नफी 7:2), शान्ति दी, शान्ति देता हूं (2 नफी 8:3, 12), ज्योति (2 नफी 8:4), न्याय व्यवस्था, न्याय (2 नफी 8:4–5), और उद्धार (2 नफी 8:5–6)।

व्याख्या करें कि यह पाठ प्रायश्चित की चर्चा करता है, और यह महान कार्य यीशु मसीह ने हमारे लिए किया था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य सामग्री को चुनाव करें जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरत को से मेल रखती हो। चर्चा करें कि कैसे चुनी हुई आयतों दैनिक जीवन में अपनाई जाती हैं। कक्षा सदस्यों को प्रोत्साहित करें उचित अनुभवों को बांटने को जोकि धर्मशास्त्र नियमों से मिलता है।

1. उसके प्रायश्चित द्वारा, यीशु मसीह ने पार्थिव मृत्यु से और आत्मिक मृत्यु से मुक्ति दी है।

व्याख्या करें कि 2 नफी 9 में याकूब द्वारा दिए गए प्रवचन हैं, नफी का एक छोटा भाई, यीशु मसीह के प्रायश्चित के विषय में, जोकि उद्धार की योजना का बहुत महत्वपूर्ण घटना है। इस अध्याय की शिक्षा को समझने में, यह जानना मददगार होगा कि कैसे याकूब ने पार्थिव मृत्यु और आत्मिक मृत्यु का संदर्भ कियाः

पार्थिव मृत्यु भौतिक शरीर की मृत्यु है और इसमें शरीर से आत्मा अलग होती है। जैसे आदम के पत्तन के परिणाम स्वरूप, सारे लोग सांसारिक रूप में मरते हैं (2 नफी 9:6)। 2 नफी 9 में, याकूब ने निम्नलिखित शब्दों और वाक्यांश का प्रयोग पार्थिव मृत्यु से संदर्भ करने के लिए किया थाः "मृत्यु" (आयत 6), "शरीर की मृत्यु" (आयत 10), और "कब्र" (आयत 11)।

आत्मिक मृत्यु परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना है। आदम के पत्तन के परिणाम स्वरूप हम सब परमेश्वर से अलग हो गए (2 नफी 9:6)। हम आगे भी अपने आप को परमेश्वर से अलग करते हैं जब हम पाप करते हैं (रोमियों 3:23; अलमा 12:16; इलामन 14:18)। 2 नफी 9 में, याकूब ने निम्नलिखित शब्दों और वाक्यांश का प्रयोग आत्मिक मृत्यु, या परमेश्वर से अलग, संदर्भ करने को किया थाः "हमें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर देता है" (आयत 9), "आत्मा की मौत" (आयत 10), "आत्मिक मृत्यु" (आयत 12), "नर्क" (आयत 12), और "मृत्यु" (आयत 39)।

2 नफी 9:1–26, 39–54 चर्चा करें। कक्षा के सदस्य को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

- उद्धारक ने पार्थिव मृत्यु और आत्मिक मृत्यु से ऊपर उठने के लिए क्या किया था? (देखें 2 नफी 9:5–7, 12, 21–22; देखें लूका 22:44 भी; मुसायाह 3:7; सि. और अनु. 19:16–19।)
- यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा, सभी लोगों का पुनरूत्थान होगा—पार्थिव मृत्यु से बचाये जाएंगे (2 नफी 9:12–13, 22)। हमारा क्या होगा मसीह की पुनरूत्थान की शक्ति के बिना? (देखें 2 नफी 9:6–9। पार्थिव और आत्मिक मृत्यु स्थिर हो जाएगी। हम परमेश्वर की उपस्थिति से हमेशा के लिए अलग हो जाएंगे, और हमारी आत्मा शैतान के न्याय में ही जाएगी। हम "झूठ के पिता के साथ रह जाएंगे, दुर्गति में।") यह कैसे दर्शाता है कि पार्थिव मृत्यु और आत्मिक मृत्यु एक भंयकर राक्षस हैं? (2 नफी 9:10)।
- यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, सभी लोग परमेश्वर की उपस्थिति में न्याय के लिए पुनःस्थापित होंगे (2 नफी 2:10; 9:15)। इसलिए, सभी लोग "परमेश्वर के राज्य में बचाये" नहीं जाएंगे या परमेश्वर की उपस्थिति में हमेशा के लिए होंगे (2 नफी 9:23; मॉरमन 7:7)। याकूब के अनुसार, "परमेश्वर के राज्य में बचे" रहने के लिए हमें क्या कुछ बातें करनी पड़ेगी? (कक्षा के सदस्यों को पढ़ने दें 2 नफी 9:18, 21, 23–24, 39, 41, 50–52 इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने दें। संक्षिप्त करें उनके उत्तर को चॉकबोर्ड पर। नीचे दिए उत्तरों पर चर्चा करें।)

  क. यीशु मसीह में विश्वास करना, इस्राएल का पवित्र प्रभु, और उसके पास आना (2 नफी ९:18, 23–24, 41)। प्रायश्चित की सारी आशीषों को प्राप्त करने के उद्देश्य से यीशु मसीह पर विश्वास करना क्यों आवश्यक है?

ख. जगत के क्रोध को सहा और उसके अपवादों की ओर ध्यान नहीं दिया (2 नफी 9:18)। दुनिया के क्रोध को सहा का अर्थ क्या है? (देखें मत्ती 16:24, नीचे दी गई पृष्ठ के नीचे की टिप्पणी 24ङ; 3 नफी 12:29–30) दुनिया के अपवादों का तिरस्कार करने का अर्थ क्या है? (देखें 2 नफी 9:49)।

ग. प्रभु की आवाज को सुनना (2 नफी 9:21)। हम प्रभु की आवाज को कैसे सुन सकते हैं? (देखें सि. और अनु. 1:38; 18:33–36; 88:66)

घ. पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, और अन्त तक सहनशील बने रहना (2 नफी 9:23–24)।

ङ. आध्यात्मिक मन होना (2 नफी 9:39; रोमियों 8:5–8 भी देखें)। आपके लिए आध्यात्मिक मन होने का अर्थ क्या है? आध्यात्मिक मन "अनन्त जीवन" तक मार्गदर्शन कैसे करता है? कामुक मन होने का क्या अर्थ है? कामुक मन आत्मिक मृत्यु की ओर कैसे ले जाता है? हम ऐसा क्या कर सकते हैं जो आत्मिक मन की ओर ले जाए?

च. वह खाओ जो कभी नष्ट नहीं होता (2 नफी 9:50–51)। कुछ चीज़ें क्या है जोकि कभी नष्ट नहीं होती हैं? हम कैसे इन चीज़ों को ले सकते हैं?

छ. परमेश्वर के शब्दों को याद रखो (2 नफी 9:52)। परमेश्वर के शब्दों को याद रखना आप को प्रायश्चित की सारी आशीषें प्राप्त करने में सहायता करता है? (देखें 3 नफी 15:1)

ज. लगातार प्रार्थना करो और धन्यवाद दो (2 नफी 9:52)। स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करना और आभार प्रकट करना कैसे उसके और उसके पुत्र के करीब ले जाता है?

2. अमोध स्थिति और व्यवहार हमें प्रायश्चित की सारी आशीषों को पाने से रोकते हैं।

2 नफी 9:27–38 पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि प्रायश्चित की सारी आशीषों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त वार्ता की आवश्यकता होती है। याकूब ने स्थिति और व्यवहार के बारे में कहा थी कि वे हमें प्रायश्चित की आशीषें पाने के लिए रोकती है।

- कुछ स्थिति और व्यवहार क्या हैं जोकि हमें प्रायश्चित की सारी आशीषों को प्राप्त करने से रोकती हैं? (कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 9:27–38 पढ़कर इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने दें। संक्षिप्त में उनके उत्तर को चॉकबोर्ड पर लिखें। नीचे दिए गए उत्तरों की चर्चा करें।)

  क. आज्ञाओं का उल्लंघन करना और हमारी परीक्षा के दिनों को बर्बाद करना (2 नफी 9:27)। मॉरमन की पुस्तक के अर्न्तगत, भविष्यवक्ता ने हमारे जीवन को पृथ्वी पर एक "परीक्षा की स्थिति", जैसा या समय की परीक्षा से लगातार संदर्भ करते हैं (2 नफी 2:21; देखें 2 नफी 2:30 भी; मॉरमन 9:28)। किस तरह कुछ लोग अपनी परीक्षा के दिनों को बर्बाद करना चाहते हैं? (देखें 2 नफी 9:38; अलमा 34:31–33; इलामन 13:38)

  ख. विद्वान समझना, धन, और अन्य मूर्तियों को परमेश्वर से ऊपर रखना (2 नफी 9:28–30, 37)। ज्ञान का अनुसरण और धनी हमें कैसे प्रायश्चित की सारी आशीषों की प्राप्ति से दूर रखते हैं? (देखें 2 नफी 9:28, 30, 42) किन परिस्थितियों में धनी और ज्ञानी होना अच्छा है? (देखें 2 नफी 9:29; याकूब 2:18–19)

  ग. आत्मिकता से बहरे और अंधे होना (2 नफी 9:31–32)। आत्मिकता से बहरे और अंधे होने का क्या अर्थ है? हम अपनी आँखें और कानों को सुसमाचार के लिए कैसे खुला रख सकते हैं?

  घ. "बिना संस्कार के हृदय" वाले (2 नफी 9:33)। प्राचीन इस्राएल में, जो व्यक्ति बिना संस्कार का होता था वह परमेश्वर के साथ अनुबंध तोड़ता था (उत्पत्ति 17:11, 14)। इस समझ के साथ, "बिना संस्कार के हृदय" इससे क्या अर्थ है?

  ङ. झूठे और हत्यारे और व्यभिचारी (2 नफी 9:34–36)।

3. प्रभु अपने अनुबंधों को अपने लोगों के साथ स्मरण करता है

2 नफी 10 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- याकूब ने भविष्यवाणी की थी कि नफायटियों के वंशज अपने "अविश्वास के कारण शरीर में नाश हो जाएंगे" और यरूशलेम में यहूदी उद्धारक को सूली पर चढ़ाएंगे और अपने पापों के कारण तितर-बितर हो जाएंगे (2 नफी 10:2–6)। प्रभु ने इन लोगों के लिए क्या किया जब उन्होंने उस पर विश्वास किया और अपने पापों से पश्चाताप किया था? (देखें 2 नफी 10:2, 7–8, 21–22; 1 नफी 21:15–16; 2 नफी 9:1–3, 53; 30:2 भी देखें।) व्यक्तिगत रूप से हम इसे कैसे लागू कर सकते हैं? (देखें मुसायाह 26:22)

  एल्डर बोएड के. पैकर ने सीखाया थाः "उत्साहीन सुझाव जोकि एक गलती (या उसकी तरह हो) उसे नित्य बहुत तरहे हैं, प्रभु की ओर से नहीं होते हैं। उसने कहा था *अगर* हम पश्चाताप करेंगे, वह सिर्फ हमारे उल्लंघनों को माफ ही नहीं करेगा, बल्कि वह उन्हें भूला देगा और हमारे पापों को कभी भी स्मरण नहीं करेगा (देखें यशायाह 43:25; इब्रानियों 8:12; 10:17; अलमा 36:19; सि. और अनु. 58:42)" (in Conference Report, Apr. 1989, 72; or *Ensign,* May 1989, 59)।

- याकूब ने कहा था कि उसके लोग अपने हृदय में हर्षित हों क्योंकि प्रभु अपने अनुबंधी लोगों का स्मरण करता है (2 नफी 10:22–23) हम कैसे ज्ञान में आराम ढूंढ सकते हैं कि प्रभु अपने अनुबंधी लोगों का स्मरण करता है?

- जैसे याकूब के अपने लोगों को संदेश की समाप्ति में, उसने उन्हें क्या स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित किया था? (देखें 2 नफी 10:23–24) हम वे क्या रास्ते चुन सकते हैं जो नित्य मौत या नित्य जीवन की ओर ले जाते हों? (देखें 2 नफी 2:26–27) परमेश्वर की इच्छा को संतुष्ट करना इसका अर्थ क्या है? यह स्मरण करना क्यों महत्वपूर्ण है कि "परमेश्वर की कृपा के द्वारा ही [हम] बचेंगे?"

निष्कर्ष

कक्षा का एक सदस्य 2 नफी 10:25 को ज़ोर से पढ़े, जिसमें याकूब का उत्साहीन समाप्ति का संदेश है। यीशु मसीह के प्रायश्चित के लिए अपना आभार प्रकट करें, और कक्षा के सदस्यों को "अनन्त जीवन का रास्ता—चुनने के लिए प्रोत्साहित करें" (2 नफी 10:23)।

जैसे आत्मा के निर्देशन के द्वारा, पाठ के दौरान सच्चाई की साक्षी की चर्चा करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. इस्राएल का एकत्रित होना

- इस्राएल कैसे एकत्रित होंगे? (देखें 2 नफी 10:8–9)

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया थाः

  "इब्राहिम के वंशज की जिम्मेदारियां, जो हम हैं, प्रचार होंगे इस शासन को और सारे राष्ट्रों में पौरोहित्य होगा (इब्राहिम 2:9)। मूसा ने जोसफ स्मिथ को कर्टलैंड मन्दिर में इस्राएल के एकत्रित होने की कुंजी प्रदान की थी (देखें सि. और अनु. 110:11)।

  अब, परमेश्वर ने इसके एकत्रित होने के क्या औज़ार का नमूना बनाया है? यह वही औज़ार जो कि दुनिया को प्रमाण देता है कि यीशु ही मसीह है, कि जोसफ स्मिथ उसके भविष्यवक्ता हैं, और अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर ही सच्चा है। यह वही धर्मशास्त्र है जो कि हमारे धर्म का मूल पत्थर है" (in Conference Report, Apr. 1987, 107–8; or *Ensign* May 1987, 85)।

“यशायाह की वाणी से मेरी आत्मा आनन्दित होती है”

पाठ 9

2 नफी 11–25

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यशायाह की भविष्यवाणियां पढ़ने की प्रेरणा देना और उन्हें समझने में सहायता करना कि कैसे इन भविष्यवाणियों को उनके जीवन में लागू कर सहायता करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 2 नफी 11; 25:1–7। नफी ने यशायाह के लेखन के महत्व की गवाही दी और शिक्षाओं की कुंजियों की जोकि उसे समझने में हमारी सहायता करे।

   ख. 2 नफी 12:1–12। यशायाह ने अन्तिम दिन के मन्दिर और इस्राएल का एकत्रित होना देखा।

   ग. 2 नफी 15:26–29; 21:12। यशायाह की भविष्यवाणियां कि प्रभु एक प्रतीक खड़ा करेगा और इस्राएल को एकत्रित करेगा।

   घ. 2 नफी 16; 22; 25:19–30। यशायाह और नफी ने उद्धारक की मुक्ति की शान्ति की गवाही दी।

3. अगर निम्नलिखित चित्र उपलब्ध है, पाठ के दौरान उनका उपयोग करें: यशायाह मसीह के जन्म का लेख लिखता है (62339; सुसमाचार कला चित्र किट 113); साल्ट लेक मन्दिर (62433; सुसमाचार कला चित्र किट 502); और यीशु ही मसीह है (62572; सुसमाचार कला चित्र किट 240)।

4. यशायाह लेखन पर आपकी समझ को बढ़ना, आप पाठ 36–40 पुराना नियम सुसमाचार सिद्धान्त शिक्षक निर्देशिका का फिर से अनुसरण करना चाहेंगे (35570)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, निम्नलिखित या स्वयं की एक गतिविधि का प्रयोग पाठ का आरंभ करने के लिए करें।

मुसायाह 8:17–18 पढ़ें। तब कक्षा के सदस्य से निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- दिव्यदर्शी क्या देख सकते हैं? (भूतकाल, वर्तमान काल, और भविष्यकाल की घटनाएं।) हमारे लिए दिव्यदर्शी इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं?

व्याख्या करें कि क्योंकि वे एक दिव्यदर्शी था, यशायाह ने स्वर्ग में युद्ध, उद्धारक की मृत्यु के पश्चात यरूशलेम का नष्ट होना, अरमागदोन के युद्ध, और उद्धारक का हजार वर्ष का शासन जैसी घटनाएं देखी थी।

बहुत सा यशायाह का लेखन समझने में कठिन लगता है क्योंकि वह बहुत हद तक भूतकाल और भविष्यकाल घटनाओं का वर्णन प्रतीकात्मक भाषा में सन्दर्भ करते हैं। इसलिए, हम उसे समझ सकते है जैसे हम एक अनुकूल, प्रार्थनापूर्वक उसे पढ़ने और उसका अध्ययन करने का परिश्रम करें। यह पाठ यशायाह के महत्वपूर्ण लेखन की चर्चा करता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंश, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चुनाव करें जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हो। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू किये जाते हैं। उचित अनुभवों को बांटने के लिए कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र नियम से मिलता हो।

1. नफी ने यशायाह लेखन की गवाही दी और उन्हें समझने के लिए कुंजियां दी।

2 नफी 11; 25:1–7 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्य को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। अगर आप प्रथम अतिरिक्त शिक्षा सुझाव प्रयोग कर रहे हैं, नियुक्त किये हुए कक्षा के सदस्य की एक संक्षिप्त रिपोर्ट यशायाह और उसके समय के विषय में देने को आमन्त्रित करें।

- नफी ने यशायाह के शब्दों को अपने लेख के लिए महत्वपूर्ण क्यों पाया था? (देखें 1 नफी 19:23; 2 नफी 11:2–6, 8; 25:3। कक्षा के अन्य सदस्यों को इन प्रत्येक अंशों को ज़ोर से पढ़ने के लिए कहें। जब तक प्रत्येक अंश पढ़ लिया न जाये, कक्षा का एक सदस्य को चॉकबोर्ड पर संदर्भ और यशायाह के उदाहरण के कारण को लिखने के लिए कहें। एक उदाहरण नीचे दर्शाया गया है।)

नफी ने यशायाह का उद्धरण क्यों दिया था	
1 नफी 19:23	"उन्हें पूरी तरह से प्रभु पर विश्वास को उकसाने के लिए''
2 नफी 11:2–4	यीशु मसीह की एक अन्य साक्षी देने को
2 नफी 11:5–6, 8	हमें (उसके पढ़ने वालों को) आनन्दित होने में सहायता करने के लिए
2 नफी 25:3	परमेश्वर के न्याय का प्रकटीकरण करने को

- यह कारण हमारे लिए आज क्यों महत्वपूर्ण हैं? यशायाह के शब्दों को समझना हमारी प्रसन्नता का कारण कैसे है?

व्याख्या करें कि नफी ने अनेक कुंजियां दी जिससे कि यशायाह के अभिलेख को अच्छे से समझने में हमारी सहायता हो। जैसे समय आज्ञा दे, इन कुंजियों को कक्षा के सदस्यों के चर्चा करें।

कुंजी 1: "हम सभी धर्मशास्त्रों पर विश्वास करते हैं" (1 नफी 19:23; 2 नफी 11:2, 8 भी देखें)। बहुत सी यशायाह की भविष्यवाणियां अन्तिम दिनों की घटनाओं से जुड़ी हैं। जैसे-जैसे हम इन भविष्यवाणियों का पूरा होता देखते हैं, हम यशायाह के लेख को अच्छे से समझ सकते और उन्हें अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, 2 नफी 15 में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि प्रभु "राष्ट्रों की पताका को ऊपर उठा लेगा" इस्राएल के एकत्रित करने में (2 नफी 15:26)। यह भविष्यवाणी हमारी सहायता पुनःस्थापित सुसमाचार को बांटने की महत्वता को अच्छे से समझने में—पताका, या आदर्श, सारे राष्ट्रों को प्रभु का मार्गदर्शन देने में सहायता करती है।

कुंजी 2: "जानो—यहूदियों में किस रीति से भविष्यवाणी की जाती थी" (2 नफी 25:1)। यशायाह की भविष्यवाणियां एक तरीके से लिखी गई कि यहूदी पढ़ने और सुनने का अभ्यास करते थे। हम यशायाह के लेख को अच्छे से समझ सकते हैं अगर हम स्मरण करें कि वह कल्पना और प्रतीकों का प्रयोग करता था जोकि यहूदी लोगों से उसके समय में सामान्य हुआ करते थे। उदाहरण के लिए, 2 नफी 12:1–3 में, यशायाह ने पहाड़ शब्द का उपयोग उच्च धार्मिक स्थानों के प्रतीक में किया, प्रकटीकरण और परमेश्वर के साथ नज़दीक होने के लिए एक स्थान, जैसे कि मन्दिर।

कुंजी 3: "परमेश्वर के न्याय को जानना" (2 नफी 25:3; आयत 6 भी देखें)। यशायाह ने भविष्य में देखा इस्राएल का राज्य और यहूदी अपनी दुष्टताओं के कारण कैसे सताये जाएंगे, परन्तु उसने यह भी भविष्यवाणी की थी कि उनकी आशीषों का पुनःस्थापन होगा जब वे पश्चाताप करेंगे और यीशु मसीह के अनुयायी होंगे। यशायाह के लेखा में से इस्राएल और यहूदियों का क्या हुआ, और उसकी भविष्य की भविष्यवाणियों में इस्राएल के घराने की

पुनःस्थापना, हम बेहतर समझ सकते हैं कैसे परमेश्वर हमारी जिन्दगियों में कार्य करता है और राष्ट्रों को उनके नेक होन पर आशीष देता है।

कुंजी 4: "(यरूशलेम) के चारों तरफ के प्रदेशों को जानने का विचार" (2 नफी 25:6)। इस्राएल का भूगोल और स्थानों के नाम जानने से हम यशायाह की भविष्यवाणियों से इस्राएल का राज्य और यहूदियों और राष्ट्र जो उनको युद्ध की धमकी देते हैं को अच्छे से समझने में हमारी सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, 2 नफी 20:28–34 में, यशायाह ने उन शहरों का नाम लिया था जिन्हें अश्शूर सेना खत्म कर देगी और यह कैसे यरूशलेम पहुँचने से इन्हें रोका जाएगा। घटना वैसी ही घटी जैसे उसने भविष्यवाणी की थी।

कुंजी 5: "भविष्यवाणी की आत्मा के साथ भरे होते हैं" (2 नफी 25:4)।

- भविष्यवाणी की आत्मा से भरे होने का अर्थ क्या है? (देखें प्रकाशितवाक्य 19:10) हम इसे कैसे पा सकते हैं? यशायाह की शिक्षा उद्धारक के बारे में समझने में भविष्यवाणी की आत्मा हमारी कैसे सहायता कर सकती है?

2. यशायाह ने अन्तिम दिन का मन्दिर और इस्राएल का एकत्रित होना देखा।

2 नफी 12:1–12 पढ़ें और चर्चा करें। अगर आप साल्ट लेक मन्दिर का चित्र प्रयोग कर रहे हैं, तो अभी दिखाइए।

- कैसे साल्ट लेक मन्दिर ने यशायाह की भविष्यवाणी के अभिलेख का भाग जो 2 नफी 12:2–3 में है को पूरा किया? आपके विचार से क्यों यशायाह ने मन्दिर का वर्णन "प्रभु के पहाड़" से किया था? (प्राचीन भविष्यवक्ता अकसर प्रभु से बात करने पहाड़ पर जाया करते थे और उससे प्रकटीकरण प्राप्त करते थे।) कैसे सारे मन्दिर हमारी आराधना के लिए "पहाड़" होंगे?

  ज़ोर दें कि अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर पहाड़ की ऊंची चोटी पर स्थापित किया गया और कि मन्दिरों को बनाया गया जहां लोग आए और प्रभु के विषय में सीख सकें।

- यशायाह ने व्याख्या की मन्दिर एक "आश्रय" का स्थान धूप की गर्मी और आंधी पानी से बचने का होगा (2 नफी 14:6)। कुछ आत्मिक परेशानी का उदाहरण क्या है जोकि हम इस जीवन में झेलते हैं? मन्दिर हमें कैस इन परेशानियों से बचा सकता है?

- हम अन्तिम-दिनों के सन्त कैसे परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर स्थापित कर सकते हैं, जैसे 2 नफी 12:3–5 में वर्णन किया गया है? (देखें सि. और अनु. 133:7–14)

- यशायाह ने याकूब के घराने को उत्साहित किया "प्रभु के प्रकाश में चले" बल्कि "सब भटक गए हो अपने दुष्टकर्मों के पथ पर चलने से" (2 नफी 12:5)। कुछ विशेष पाप क्या हैं 2 नफी 12:7–12 में बताये गये? आज भी इन पापों के कैसे किया जा रहा है? हम इन पापों से दूर होकर कैसे "प्रकाश में चल" सकते हैं?

3. यशायाह ने भविष्यवाणियां की, कि प्रभु पताका को ऊँचा उठाएगा और इस्राएल को एकत्रित करेगा।

2 नफी 15:26–29; 21:12 पढ़ें और चर्चा करें।

- यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि प्रभु "राष्ट्रों की पताका को ऊंचा उठाएगा" (2 नफी 15:26; 2 नफी 21:12 भी देखें)। पताका क्या है? (पताका या झण्डा; एक उच्च आदर्श।) यशायाह ने क्या होने वाला है कहा था जब यह पताका ऊपर उठाई जाएगी? (देखें 2 नफी 15:26–29)

- स्वर्गदूत मरोनी जब जोसफ स्मिथ के सम्मुख उपस्थित हुआ, उसने कहा कि यशायाह अध्याय 11 (2 नफी 21 में उद्धरण) लगभग पूरा होने वाला है (जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:40)। यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना कैसे सारे राष्ट्रों की एक पताका होगी? (देखें सि. और अनु. 64:41–43; 105:39; 115:4–6)

- भविष्यवाणी कि सारे राष्ट्र "एक साथ एकत्रित" होंगे कैसे आज पूरी हो रही है? (देखें 2 नफी 21:12। प्रचारक सारी दुनिया में जाकर सुसमाचार की शिक्षा दे रहे हैं और लोगों को सच्चाई में एकत्रित कर रहे हैं।) हम प्रत्येक इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए क्या मदद कर सकते हैं?

4. यशायाह और नफी ने यीशु मसीह की उद्धार शक्ति की गवाही दी।

2 नफी 16; 22; 25:19–30 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। अगर आप यशायाह मसीह के जन्म का लेख लिखते हुए का चित्र और यीशु मसीह का चित्र प्रयोग कर रहे हैं, अभी उन्हें दिखाइए।

- 2 नफी 16 में यशायाह का दिव्यदर्शन का अभिलेख है जिस में वह प्रभु को देखता है। यशायाह कैसे दिव्यदर्शन के वातावरण की व्याख्या करता है? (देखें 2 नफी 16:1–4) यशायाह प्रभु की उपस्थिति में कैसा महसूस करता है? (देखें 2 नफी 16:5)

- दूत द्वारा यशायाह के होठों का जलते हुए कोएले से छुने का प्रतीक क्या था? (देखें 2 नफी 16:6–7। यशायाह के पाप क्षमा हुए।) यशायाह ने जवाब कैसे दिया जब प्रभु की वाणी उसने सुनी? (देखें 2 नफी 16:8) अन्य और किस धर्मशास्त्र अभिलेख में आप सामान्य भाषा का प्रयोग पाते हैं? (देखें इब्राहिम 3:37) कब हमें प्रभु की सामान्य जवाब देने की ज़रूरत पड़ सकती है?

- कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 22:1–6 पढ़ने दें। व्याख्या करें कि इन आयतों में यशायाह वर्णन करता है कि कैसे हजारों वर्षो के दौरान सारे लोग उद्धारक की स्तुति करेंगे। इन आयतों में आपने विशेषकर क्या ध्यान दिया? उद्धारक ने हमारे लिए क्या "अच्छे अच्छे काम" किए (2 नफी 22:5) है?

- कक्षा के सदस्यों 2 नफी 25:19–30 जल्दी से पढ़ने को और नफी की गवाही उद्धारक के लिए चर्चा करने को आमन्त्रित करें। नफी की गवाही के विषय में आपको किसने प्रभावित किया है? हम कैसे, नफी की तरह, "परिश्रम से—हमारे बच्चों को—मसीह में विश्वास करने को प्रोत्साहित करने में मेहनत कर सकते हैं"? (2 नफी 25:23; आयत 26 भी देखें)।

- नफी ने सीखाया कि "हम जो कुछ कर सकते हैं, उन्हें कर लेने पर भी हम उसी की कृपा से बच सके हैं" (2 नफी 25:23)। यह बयान यीशु मसीह की कृपा और हमारे कार्यों के बीच के रिश्ते के बारे में क्या शिक्षा देता है? (देखें 2 नफी 10:24–25; सि. और अनु. 20:29–31) यहा बयान आपको अच्छा कार्य करने में कैसे प्रोत्साहित करता है?

- कक्षा के एक सदस्य को 2 नफी 25:29 को ज़ोर से पढ़ने दें। आप इस सप्ताह क्या करना पूरी तरह से स्वीकार करेंगे नफी के प्रभु के आराधना में "अपने सारे बल, दिमाग, और शक्ति, और अपने सारी आत्मा" के साथ? आप चाहें कक्षा के सदस्यों को आमन्त्रित करें इस प्रश्न पर विचार करने के लिए या इसका उत्तर ज़ोर से देने को।)

निष्कर्ष

ध्यान दें कि उद्धारक ने अपनी स्वीकृति इस अकेले बयान में यशायाह की शिक्षा को दी थीः हां, मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूं कि तुम इन बातों को परिश्रम के साथ ढूंढो; क्योंकि यशायाह के शब्द महान हैं (3 नफी 23:1)।

जैसे आत्मा द्वारा निर्देशन में, सच्चाई की गवाही की पाठ के दौरान चर्चा करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. स्तुति गीत

2 नफी 15:26 चर्चा के भाग पर, एक कक्षा सदस्य को (स्तुति गीत संख्या 5) "ऊँचे पर्वत की चोटी पर" गाने या शब्दों को पढ़ने दें। आप कक्षा के सदस्यों के साथ चर्चा करना चाहते हैं कि कैसे यह स्तुति गीत यशायाह की सुसमाचार की पुनस्थापना की भविष्यवाणी को पूरा कर आनन्द मनाता है।

2. "बुरे को भला, और भले को बुरा" बुलाना (2 नफी 15:20)

- हम किस तरह से, प्राचीन इस्राएल के समान, "बुरे को भला, और भले को बुरा" कहते हुए गलती कर सकते हैं? (2 नफी 15:20)। हम कैसे भले को भला और बुरे को बुरा पहचान कर निश्चित हो सकते हैं? (देखें मरोनी 7:12–17)

3. मॉरमन की पुस्तक ने कैसे यशायाह की ओर हमारी समझ को बढ़ाया है

मॉरमन की पुस्तक एक महान मार्गदर्शक है हमारी यशायाह के अभिलेख को समझने में सहायता करने के लिए। कक्षा के सदस्यों के साथ निम्नलिखित तरीके मॉरमन की पुस्तक हमारी सहायता यशायाह को समझने में करती है को बांटें।

क. मॉरमन की पुस्तक का उद्धरण, या तो उनकी सम्पूर्णता में या अंश में, यशायाह की पुस्तक में 66 अध्ययायों में से 22 में, और इस में उन अध्ययायों का अतिरिक्त व्याख्या के विषय में है। क्योंकि मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता यशायाह के समय के निकट रहा करते थे, उनकी व्याख्या हमें उसकी शिक्षा को समझने में सहायता कर सकती हैं।

ख. यशायाह का अभिलेख जिसकी मॉरमन की पुस्तक में शब्दों, अशों और व्याख्या का उदाहरण शामिल है जो कि किसी अन्य यशायाह की पुस्तक की प्रतियों में नहीं है।

ग. दुनिया की सब से पुरानी जाने जाने वाली यशायाह की पुस्तिका को मृत सागर में लिपटा हुए में खोजा गया था। "यशायाह लिपटा हुआ" की पिछली तिथि 200 ई. पू. से है (Bible Dictionary, "Dead Sea," 654)। इसलिए, मॉरमन की पुस्तक में यशायाह के अध्याय में नफी के समय की पिछली तिथि लगभग 600 ई. पू. है। जोसफ स्मिथ की अनुवादित मॉरमन की पुस्तक संसार को यशायाह के अभिलेख की एक पुस्तिका उपलब्ध करती है जो कि मृत सागर स्क्रोल 400 वर्षो से भी पुरानी है।

घ. क्योंकि यशायाह के पहले 33 अध्याय आखिर के 33 अध्ययायों के लेखों के ढंग से भिन्न है बहुत से लोगों का विश्वास है कि यशायाह की पुस्तक दो भिन्न-भिन्न पुरूषों द्वारा लिखी गई थी। मॉरमन की पुस्तक पहले और आखिर का यशायाह के दोनों में से और यशायाह का लेखक के रूप में पहचान का उदाहरण देती है, अतः उसके लेख की सच्चाई की गवाही और महानता को प्रमाणित करती है।

पाठ
10

"वह सभी को अपने पास बुलाता है"

2 नफी 26–30

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को समझने में सहायता करना कि सुसमाचार की पुनःस्थापना और मॉरमन की पुस्तक की शिक्षाओं के द्वारा, प्रभु बुराई के ऊपर सच्चाई को विजयी करना चाहता है।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

क. 2 नफी 26। नफी ने नफायटियों के बीच उद्धारक के सेवा की भविष्यवाणियां की थी। नफी ने आने वाले घमण्ड और पौरोहित्य छल और उसके लोगों को होने वाले नाश को भी देखा था।

ख. 2 नफी 27। नफी ने आनेवाली मॉरमन की पुस्तक को सुसमाचार के पुनःस्थापन का भाग के रूप में भी गवाही दी थी।

ग. 2 नफी 28। नफी ने भविष्यवाणी की थी कि शैतान अन्तिम–दिनों में झूठे सिद्धान्त फैलाएगा।

घ. 2 नफी 29–30। नफी ने मॉरमन की पुस्तक की महत्ता के बारे में और आशीषें जो कि उनको मिलेगी जो उस प्राप्त करेंगे की शिक्षा दी थी।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्याना गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग पाठ की शुरूआत करने के लिए करें।

एल्डर जीन आर. कुक द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ें:

"पिछले ग्रीष्म ऋतु में एक अकेले सुनसान लम्बी सी सड़क पर, हमने सामने क्या देखा कि पूरी सड़क पानी से भरी हुई थी। मेरे बच्चों ने शर्त लगाई कि वहां पर बहुत पानी होगा। परन्तु कुछ मिनटों में हम कुछ दूरी तक गये और एक भी पानी की बूंद नहीं देखी। क्या यह एक भ्रम था!

"इस जिन्दगी में बहुत सी बातें हैं जो कि एक रास्ते से सामने आती है और एकाएक चली भी जाती है—इस रास्ते को शैतान चलता है। वह भ्रम का स्वामी होता है। वह भ्रम को विपथन, दुर्बल और मन बहला की शक्ति को बनाने का प्रयास करता और अन्तिम-दिनों के सन्तों को परमेश्वर की शुद्ध सच्चाई से ध्यान हटाता है" (in Conference Report, Apr. 1982, 35–36; or *Ensign,* May 1982, 25)।

- भ्रम क्या है? (कुछ ऐसी बातें जोकि धोखा या भटकाती हैं।) कुछ भ्रम क्या हैं जो कि शैतान लोगों का पथभ्रष्ट करने में प्रयोग करता है? हम कैसे इन भ्रमों और सच्चाई के बीच में भेद कर सकते हैं?

व्याख्या करें कि इस अध्याय चर्चा के अर्न्तगत पाठ शक्तिशाली भविष्यवाणियाँ रखता है अन्तिम दिनों का विचार करने में। नफी ने उन लोगों के बारे में भविष्यवाणी की जो शैतान द्वारा धोखा खाएंगे और सच्चाई से दूर हो जाएंगे। इसलिए, उस सुसमाचार का पुनःस्थापन का होना देखा था और आशीषें भी जो नेकों को दी जाएंगी। यह पाठ इन भविष्यवाणियों की चर्चा करता है और हमारी सहायता समझने में करता है कि कैसे शैतान के झूठे धोखों से बचा जाए और सच्चाई में निरन्तर विश्वासी बने रहें।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों की, प्रश्नों और अन्य पाठ सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल रखती हो। चर्चा करें कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने को प्रोत्साहित करें जोकि धर्मशास्त्र नियमों से मिलता हो।

1. नफी ने उद्धारक का नफायटियों के बीच शासन की भविष्यवाणियां की थी।

2 नफी 26 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करें। बताएं कि नफी ने अनुमान लगाया था कि उद्धारक का नफायटियों के भेंट से पूर्व, वहां पर "भयंकर युद्ध और कलह" कई पीढ़ियों तक होगा (2 नफी 26:1–2)। उसने भविष्यवाणी की थी कि मसीह की मृत्यु का समय और उसके शासन के दौरान के बीच में, दुष्ट हो जाएंगे (2 नफी 26:3–7)।

- नफी ने उनका वर्णन कैसे किया था जो उद्धारक के आगमन तक सुरक्षित होंगे? (देखें 2 नफी 26:8) यहा सामान्य गुण हमारे आज के लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं। कैसे नेक नफायटी और उनके वंश आशीषित हुए थे? (देखें 2 नफी 26:9)
- नफी ने भविष्यवाणी की कि चार नेक और शक्ति की पीढ़ियों के पश्चात, उसके लोगों का शीघ्रता से सर्वनाश होगा (2 नफी 10)। इस नाश का कारण क्या होगा? (देखें 2 नफी 26:10–11) घमण्ड गंभीर पाप क्यों है? हमें अपने जीवन में अपने साथ प्रभु की आत्मा को रखने के लिए क्या करना होगा?
- नफी ने वर्णन किया कि कैसे शैतान लोगों को विनाश के ओर ले जायेगा? (देखें 2 नफी 26:22। आप समझना चाहेंगे कि एक सन की डोरी पतली हल्की रस्सी से बनी है।) कौन से कुछ रास्ते शैतान लोगों को "मज़बूत डोरी" से बन्धन से पहले "सन की डोरी" का उपयोग करता है?
- नफी ने उद्धारक का लोगों की मुक्ति की ओर जाने वाले रास्ते का कैसे वर्णन किया था? (देखें 2 नफी 26:23–27, 33) हम अन्यों को "उसकी मुक्ति" लेने के लिए कैसे सहायता कर सकते हैं? (2 नफी 26:24)।
- नफी ने पौरोहित्य छल के विरूद्ध चेतावनी दी थी। पुरोहिती छल क्या है? (देखें 2 नफी 26:29; अलमा 1:16) आज की दुनिया में पौरोहित्य छल के सबूत के उदाहरण क्या हैं? हम कैसे इस परिस्थितियों के खिलाफ हो सकते हैं? (देखें 2 नफी 26:30–31; 3 नफी 18:24; मरोनी 7:45–47)

2. नफी ने मॉरमन की पुस्तक के आगमन की गवाही दी।

2 नफी 27 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अध्याय 27 अन्तिम-दिनों के बारे में और ज्यादा भविष्यवाणियां रखता है। कौनसी घटनाओं का वर्णन 2 नफी 27 में हैं जो इस युग मे पूरा हो रहा है? (कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 27:6–35 को कुछ मिनटों में दोहराने दें। आप कक्षा को दो समूह में बांट सकते हैं और प्रत्येक समूह अंश में से भिन्न-भिन्न आयतों पर ध्यान दे सकता है। उनके उत्तरों को संक्षिप्त में चॉकबोर्ड पर लिखें। कुछ उत्तर नीचे दिये गये हैं, प्रश्नों की चर्चा के साथ भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।)

  क. एक प्रचीन पुस्तक एक आदमी को अनुवाद करने के लिए दी जाएगी (2 नफी 27:9)। यह पुस्तक क्या थी? (देखें 2 नफी 27:6) प्रभु ने एक युवक को चुनने का, अनपढ़ आदमी को मॉरमन की पुस्तक का अनुवाद करने का क्या कारण दिया था? (देखें 2 नफी 27:19–23)

  ख. पुस्तक के शब्दों का एक भाग विद्धान व्यक्ति को दिखाएगा, जो पुस्तक देखने को कहेगा (2 नफी 27:15)। इन आयतों में घटना की क्या भविष्यवाणी थी? (देखें जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:63–65) विद्धान व्यक्ति पुस्तक क्यों देखना चाहता था? (देखें 2 नफी 27:16) मॉरमन की पुस्तक किस तरीकों से मुहरबंद हो सकती थी उनसे जो सांसारिक महिमा खोज रहे थे?

ग. गवाह मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई की साक्षी देंगे (2 नफी 27:12–14)। गवाहों का पट्टियों को देखना महत्वपूर्ण क्यों था? (देखें एथर 5:2–4; देखें 2 कुरिन्थियों 13:1)

घ. मॉरमन की पुस्तक की शक्ति लोगों के जीवन में प्रत्यक्ष होगी (2 नफी 27:26, 29–30, 35)। मॉरमन की पुस्तक की शक्ति से आप ने अपने जीवन में या अन्यों के जीवन में क्या परिवर्तन देखा?

3. नफी ने भविष्यवाणियां की कि शैतान अन्तिम दिनों में झूठे सिद्धान्तों को फैलाएगा।

2 नफी 28 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- नफी ने भविष्यवाणी की कि अन्तिम–दिनों में लोग परमेश्वर की शक्ति को नक्कारेंगे और झूठे, निरर्थक और मुर्ख सिद्धान्तों की शिक्षा देंगे (2 नफी 28:3–9; देखें 2 नफी 26:20–21 भी देखें)। यह परिस्थिति कैसे जोसफ स्मिथ के समय में प्रचलित थी? (देखें जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:5–6, 19, 21) आज यह कैसे प्रचलित है?

- नफी ने कैसे गलत शिक्षा का वर्णन किया था कि लोग पाप करने में समर्थन का प्रयोग करेंगे? (देखें 2 नफी 28:7–9) लोग कुछ कौन-सी बुद्धिसंगत व्याख्या का इस्तेमाल पाप से बचाने को करते हैं? "एक छोटा सा पाप करना" के बारे में चिन्ता न करने की हानियां क्या हैं? (देखें 2 नफी 28:8)।

- नफी ने दूरदर्शी में भी देखा कि लोग अन्तिम दिनों में घमण्ड से भर जाएंगे (2 नफी 28:12–15)। नफायटियों के घमण्ड का अन्तिम परिणाम क्या हुआ था? (देखें 2 नफी 26:10–11) कैसे हमारी आत्मिक उन्नति में घमण्ड रास्ते का रोड़ा होता है? हम घमण्ड से कैसे ऊपर उठ सकते हैं?

- नफी ने सीखाया था कि घमण्ड बहुतों का "गरीबों को ठगने" में नेतृत्व करेगा (2 नफी 28:13)। कैसे अच्छे कपड़ों या अन्य एश्वर्य चीज़ों की एक अभिलाषा हमें गरीबों को नज़रादाज करने का करण हो सकती है? हम किस तरह से जो कम भाग्यशाली, शारीरिक और आत्मिक दोनों हैं की सहायता कर सकते हैं?

- नफी के अनुसार, अन्तिम दिनों में प्रभु के शब्दों पर लोगों की प्रतिक्रिया कैसी होगी? (देखें 2 नफी 28:20, 28) परमेश्वर के शब्द निरन्तर [बहुतों को] जोकि अच्छे हैं के प्रति कोप विरोध गतिशील क्यों करते हैं?

- नफी ने भविष्यवाणी की कि शैतान लोगों को शान्त कर देगा और "सांसारिक सुरक्षा में लाकर शान्त कर देगा" (2 नफी 28:21)। सांसारिक सुरक्षा क्या है? (सांसारिक शब्द मांस को संदर्भ करता है। सांसारिक सुरक्षा का होना निम्नलिखित सुरक्षा मांस की भूख का पता चलता है या सांसारिक बातों में या सुझावों में विश्वास का।) सांसारिक सुरक्षा का संतोष हमें कैसे पश्चाताप से दूर रख सकता है? क्या यह छन्द "चतुराई से दूर ले जाएगा" (2 नफी 28:21) शैतान की योजना के बारे में सुझाव देता है?

  एल्डर जेम्स ई. फास्ट ने निम्नलिखित समानता बांटीः "थोमस आर. रोवन—ने कहाः लेखक और भाषाकार मलकम मुर्गरिच ने कभी कुछ कछुओं की एक कहानी बताई थी जिन्हें बिना विरोध के पानी के बड़े बर्तन में जिन्दा ही उबाल कर मार डाला गया था। उसे रोका क्यों नहीं गया था? क्योंकि जब उसे बर्तन में डाला गया था, पानी गुनगुना था। तब तापमान धीरे-धीरे से बढ़ रहा था—तब कुछ थोड़ा और गर्म हो जाता, और होता, और होता और होता जा रहा था। परिवर्तन बहुत थोड़ा था, लगभग पहचानने योग्य नहीं था, और कछुआ उसमें आराम से था अपने नये वातावरण में—जब तक बहुत देर हो गई थी। बात जोकि श्रीमान मुर्गरिच ने बताई वह कछुओं के विषय में नहीं थी परन्तु हमारे लिए थी और कैसे हम बुराई को ग्रहण करते जब तक यह हमें एक छटका ने दे दे जोकि जोरदार धक्का हमें बिना किसी चेतावनी का होता है। हम कुछ नैतिक दृष्टि से गलत के अनुकूल को स्वीकारते हैं यदि यह सिर्फ थोड़ा ज्यादा गलत है उससे जिसे हमने स्वीकार कर लिया है"(*National Press Club Forum*)।

  "इस समानता बांटने के पश्चात, एल्डर फॉस्ट ने कहा था, यह धीमी गति वाला चलन प्राचीन भविष्यवक्ताओं द्वारा बताया गया था" (in Conference Report, Apr. 1989, 40; or *Ensign,* May 1989, 32)।

- नफी ने कैसे शैतान के तरीकों का वर्णन किया था कि कुछ लोग को बरगलाएगा? (देखें 2 नफी 28:22) आपके विचार से शैतान हमें क्या विश्वास दिलाना चाहता है कि यहां कोई शैतान नहीं है और न ही नर्क होगा? मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन करना कैसे हमारी आत्मिकता से चौंकना रहने में और सियोन में आराम से रहने में सहायता कर सकती है? (2 नफी 28:24)।

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था: "मॉरमन की पुस्तक में मसीह के शत्रुओं को प्रदर्शित किया है। यह गलत सिद्धान्त को मिश्रित और तर्क विषय रख देता है (देखें 2 नफी 3:12) यह मसीह के अनुयाइयों का बुरे नमुनो से छल से, और हमारे दिन के शैतान सिद्धान्तों के विरूद्ध नम्रता से दृढ़ करता है। जिस तरह का स्वधर्मत्याग मॉरमन की पुस्तक में है उसी तरह का हमारे पास आज है। परमेश्वर, अपने अनन्त पूर्वज्ञान में मॉरमन की पुस्तक को मोड़ा है कि हम गलती देखें और गलत शिक्षा, राजनिति, धर्म, और अपने समय के विवेकी विचार को कैसे जान सकते हैं"(in Conference Report, Apr. 1975, 94–95; or *Ensign,* May 1975, 64)।

4. नफी ने मॉरमन की पुस्तक की महत्ता के विषय में शिक्षा दी।

2 नफी 29–30 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अन्तिम दिनों में कुछ लोग मॉरमन की पुस्तक को क्यों अस्वीकार करेंगे? (देखें 2 नफी 29:3; 2 नफी 28:29 भी देखें।) बाइबल के अतिरिक्त मॉरमन की पुस्तक का हमें क्यों अध्ययन करना चाहिए? (देखें 2 नफी 29:4–14; 2 नफी 28:30 भी देखें।)
- नफी ने भविष्यवाणी की थी कि मॉरमन की पुस्तक को सफलतापूर्वक अन्यजातियों में लाया जाएगा (2 नफी 30:3), लेही के वंश (2 नफी 30:3–6), और यहूदियों (2 नफी 30:7) संक्षेप में यीशु मसीह ही उद्धारक है यह भविष्यवाणियां कैसे पूरी होनी आरंभ करती हैं?

निष्कर्ष

व्याख्या करें कि मॉरमन की पुस्तक और सुसमाचार में जीना के अध्ययन द्वारा, हमें शैतान के भम्र को नक्कारने की शक्ति मिलेगी और सीधे और संकरे मार्ग में रहने की कोशिश में मार्गदर्शन होगा। कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक व्यक्तिगत रूप से और अपने परिवारों के साथ अध्ययन करने की चुनौती दें ताकि वे आशीष प्राप्त कर सकें जो प्रभु ने नेकों से वादा किया था।

जैसे आत्मा के निर्देशन द्वारा, सच्चाई की साक्षी की चर्चा पाठ के दौरान करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. "लोगों के बीच में एक बड़ा विभाजन" (2 नफी 30:10)

- नफी ने भविष्यवाणी की कि प्रभु के हजार वर्ष पूर्व "लोगों के बीच में एक बड़ा विभाजन" होगा (2 नफी 30:10)। नफी ने इस विभाजन का वर्णन कैसे किया था? (देखें 2 नफी 30:10) कुछ आशीषें क्या हैं जिसका नेक लोग हजार वर्ष में आनन्द लेंगे? (देखें 2 नफी 30:12–18)

2. युवा गतिविधि

कक्षा के सदस्यों को तीन भ्रमित आकृति इस पृष्ठ पर हैं दिखायें (अगर संभव हो, आप चाहे कक्षा के प्रत्येक सदस्य के लिए भ्रमित आकृति की कॉपी बना कर दे सकते हैं।) कक्षा के सदस्यों के साथ नीचे दिये गये प्रश्नों की चित्र के

साथ चर्चा करें। (चित्र 1 में, रेखा क और ख में एक सी लम्बाई है। चित्र 2 और 3 में, मध्य शूल अन्य दो शूलों से जोड़ता नहीं है।) आपके इस भ्रम के बारे में कुछ मिनटों की वार्ता के पश्चात, निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- ये चित्र कैसे छल करते हैं? वो कुछ भ्रम क्या हैं शैतान हमें धोखा देने के लिए प्रयोग करता है? हम सच्चाई को देखने या समझने के लिए क्या कर सकते हैं?

चित्र 1

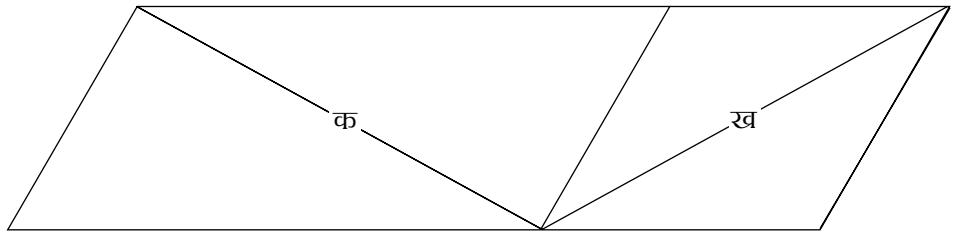

क या ख, में से लम्बा कौनसा है?

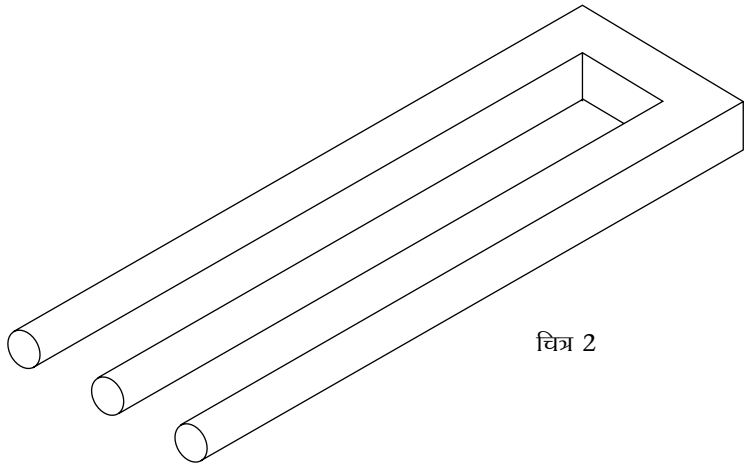

चित्र 2

कहां पर मध्य शूल जोड़ता है।

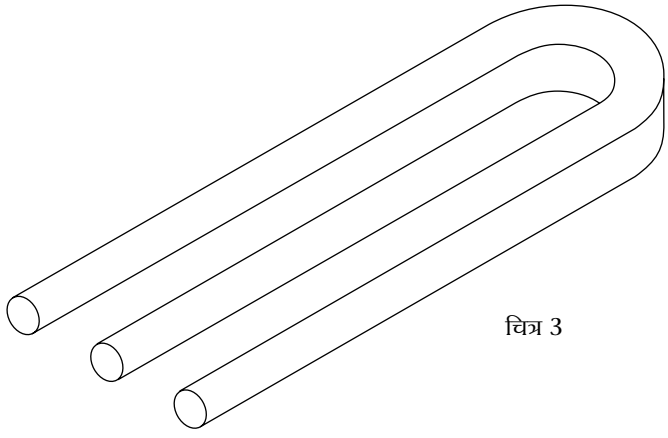

चित्र 3

“मसीह में दृढ़ विश्वास रखते हुए आगे बढ़ते चलो”

पाठ
11

2 नफी 31–33

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की मसीह के सिद्धान्त को समझने में सहायता करें और आगे बढ़ने, उसके शब्दों से पर्व में बढ़ने की अभिलाषा।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. 2 नफी 31:1–18। नफी ने मसीह के सिद्धान्त की शिक्षा दी थी। उसने शिक्षा दी कि यीशु ने बपतिस्मा “सारी नेकताओं को पूरा करने” के लिए किया था और हमें भी बपतिस्मा लेना और उसके पीछे चलना चाहिए। उसने आशीषें और पवित्र आत्मा की शक्ति के बारे में भी शिक्षा दी

   ख. 2 नफी 31:19–21। नफी ने शिक्षा दी कि हमें आगे बढ़ना चाहिए और अन्त में अनन्त जीवन मिलेगा।

   ग. 2 नफी 32। नफी ने मसीह के शब्दों की वाणी के महत्व और हमेशा प्रार्थना के बारे में बोला था।

   घ. 2 नफी 33। नफी ने घोषणा की कि लोग उसके शब्दों पर विश्वास करेंगे अगर वे मसीह पर विश्वास करते हैं। उसने चेतावनी दी कि हमारा न्याय उसके शब्दों से हमारे स्वीकार या अस्वीकार से होगा।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: मरोनी 7:13–17; सिद्धान्त और अनुबंध 20:37, 71–74।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्याना गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग पाठ का आरंभ करने के लिए करें।

कक्षा के सदस्यों को एक पर्व का वर्णन करने दें। किस तरह का भोजन मेज पर होगा? कैसे पर्व सामान्य भोज से भिन्न है? कुछ क्षणों की चर्चा के पश्चात आप कक्षा के एक सदस्य को 2 नफी 32:3 पढ़ने को कहें, आरंभ के साथ “किस कारणवश, मैंने तुमसे कहा था।” कक्षा से कहें कि प्रभु ने हमें पर्व के लिए आमन्त्रित किया–पहला कि हम अनन्त जीवन लें। यह पाठ नफी की शिक्षा की चर्चा करता है कि कैसे मसीह के सिद्धान्त और उसके शब्दों का पर्व पर जीये।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

नफी परमेश्वर के सारे पुत्रों में से एक बहुत बहादुर के रूप में खड़ा था। यद्यपि उसने परिवार का संघर्ष, संग्राम, और अन्य परिक्षाओं का अनुभव किया था, वह प्रभु को अपने सारे हृदय से प्रेम करता था। वह विश्वास से, जोश, और सम्पूर्णता से भरा हुआ था, और वह कभी भी अपनी ईमानदारी से डगमगाया नहीं था। जैसे आप दिये गये अध्यायों को पढ़ते है ध्यान रखिये कि यह नफी के अन्तिम शब्द थे।

1. नफी ने मसीह के सिद्धान्त की शिक्षा दी।

2 नफी 31:1–18 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। ध्यान दें कि नफी ने अपने आखिरी अभिलेख की शुरूआत यह करने के द्वारा की कि वह “मसीह के सिद्धान्तों के विचार में” बोलेगा (2 नफी 31:2) कक्षा के सदस्यों को इस अंश पर चिन्तन करने को कहें और जैसे वे अध्याय 31 की चर्चा करते हैं शायद उसका मतलब क्या होगा। बताएं कि पाठ के बाद में आप उनके विचार की “मसीह के सिद्धान्त” क्या है पूछेंगे।

- नफी ने लोगों को दोहराना शुरू किया कि उसने पहिले से यीशु के बपतिस्मे के विषय में बोला था (2 नफी 31:4)। यीशु का बपतिस्मा क्यों हुआ था? (देखें 2 नफी 31:4)। यीशु का बपतिस्मा क्यों हुआ था? (देखें 2 नफी 31:5) उसने "सभी धार्मिकता की पूर्ति" बपतिस्मा लेकर कैसे किया था? (देखें 31:6–7। आप शायद ध्यान देना चाहेंगे कि अध्यक्ष जोसफ स्मिथ ने कहा कि सभी धार्मिकता की पूर्ति करना "नियम को पूरा" करना है (in Conference Report, Apr. 1912, 9)।

- 2 नफी 31:9 के अनुसार, अन्य क्या कारण थे यीशु के बपतिस्मा लेने के? हमें क्यों बपतिस्मे की ज़रूरत है? (इस प्रश्न के उत्तर पता करने के लिए कक्षा के सदस्यों को 2 नफी 31:13, 17 और सिद्धान्त और अनुबंध 20:37, 71 पढ़ने दें। संक्षेप में उनके उत्तर चॉकबोर्ड पर लिखें। कुछ उत्तर नीचे दिये गये हैं।)

  क. पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करना (2 नफी 31:13)।
  ख. पापों की क्षमा प्राप्त (2 नफी 31:17)।
  ग. अनन्त जीवन के लिए द्वार के रास्ते प्रवेश करना (2 नफी 31:17)।
  घ. प्रभु के गिरजाघर में सदस्यता प्राप्त करना (1 सि. और अनु. 20:37, 71–74)।

- नफी ने अपने लोगों को उत्साहित किया, "पुत्र के अपने पूरे हृदय से बिना छल कपट के, बिना परमेश्वर को धोखा दिया पीछे चलोगे" (2 नफी 31:13)। बिना छल कपट के या बिना परमेश्वर को धोखा दिये से आप क्या मतलब समझते हैं? पुत्र का "पूरे हृदय के उद्देश्य से" हमारी सहायता छल कपट और धोखे से दूर करने में कैसे कर सकता है?

- हमें क्या उपहार मिलेगा जब हम पूरी इच्छा से "उद्धारक के पीछे नीचे पानी में" बपतिस्मा द्वारा जाएंगे? (2 नफी 31:13)। नफी ने वर्णन किया था कि एक व्यक्ति बपतिस्मे के और पवित्र आत्मा के उपहार के बाद कैसे बोल सकेगा? (देखें 2 नफी 31:13) "स्वर्गदूतों की भाषा बोलने" इसका क्या अर्थ है? (देखें 2 नफी 32:2–3। इसका अर्थ मसीह के शब्दों को पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा बोलना है।) हम किन परिस्थितियों में "स्वर्गदूतों की बोली" से आशिषित हो सकते हैं? (उत्तर में शामिल हो सकता है जब हम शिक्षा दे रहे हों, या मित्र और परिवार की गवाही, गिरजाघर में बोलने के दौरान, या जब हम प्रार्थना करते हैं।)

- नफी ने भी सीखाया था कि बपतिस्मे के बाद हम पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं "आग द्वारा और पवित्रात्मा द्वारा" (2 नफी 31:17)। आपके विचार से नफी ने "आग" शब्द का इस प्रणाली में प्रयोग क्यों किया है? (जैस कि आग शुद्ध और साफ, पवित्रात्मा पाप से साफ करती है उनको जो सच्चाई से पश्चाताप करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं।)

- नफी ने सीखाया था कि पवित्रात्मा "पिता और पुत्र की गवाही" देता है (2 नफी 31:18)। हमें क्यों आवश्यकता है कि पिता और पुत्र की गवाही पवित्रात्मा द्वारा प्राप्त करें?

- किन तरीकों से पवित्रात्मा में से गवाही हमारे पास आ सकती है? (देखें सि. और अनु. 8:2 और निम्नलिखित उदाहरण से) यह समझना क्यों आवश्यक है कि पवित्रात्मा हम से कैसे बात करता है? (देखें 2 नफी 32:5)

  अध्यक्ष बोएड के पैकर ने सीखाया थाः "पवित्र आत्मा एक वाणी के साथ बोलता है जिसे आप सुनने से ज्यादा महसूस करते हैं। इस "शान्त हल्की आवाज" के रूप में वर्णन करते हैं" (in Conference Report, Oct. 1994, 77; or *Ensign,* Nov. 1994, 60)।

सूचनाः कई बार गिरजाघर के सदस्य आत्मा के प्रभाव को महसूस करते हैं परन्तु उस अहसास के प्रति जागरूक नहीं होते, जिसे वे पवित्रात्मा में से अनुभव कर रहें होते हैं। सालभर के अवसर पर, जब आप पाठ के दौरान आत्मा का प्रभाव महसूस करते हैं, आप रोक कर कक्षा के सदस्यों के साथ आपने अहसास बांटना चाह सकते हैं। समझाएं कि वे शायद आत्मा के प्रभाव को उसी तरह से महसूस न करें जिस तरह से आप कर रहे हैं, परन्तु आत्मा का प्रभाव शान्ति और आनन्द लाता है।

2. नफी ने शिक्षा दी कि हमें आगे बढ़ना और अनन्त जीवन लेना चाहिए।

1 नफी 31:19–21 पढ़ें और चर्चा करें। कक्षा सदस्यों को समझाएं कि बपतिस्मा अनन्त जीवन में प्रवेश करने का सीधा और संकरे रास्ते का द्वार है। उसने यह भी सीखाया कि इस रास्ते पर चलने का अर्थ क्या है।

- नफी ने 2 नफी 31:19 में क्या प्रश्न पूछा था? इस प्रश्न का उत्तर क्या है? (देखें **2** नफी 31:19–20)। "आगे बढ़ने" का अर्थ आप क्या सोचते हैं? (संकल्प के साथ आगे बढ़ना, हैरानी और विपत्ति के बावजूद।) कुछ बातें क्या हैं जोकि हमें आगे बढ़ने से हैरान करती हैं? अनन्त जीवन में आगे बढ़ना एक महत्वपूर्ण भाग क्यों है?
- "मसीह में दृढ़ रहो" इसका क्या अर्थ है? (2 नफी 31:20)। मसीह के पीछे चलना हमें एक आशा की अखण्ड ज्योति लेने में सहायता कैसे कर सकता है? कुछ तरीकों से क्या हम एक दुसरे की सहायता आगे बढ़ने में अपने परिश्रम से कर सकते हैं? हम गिरजाघर के नये सदस्यों की सहायता उनके आरंभ रास्ते की यात्रा के साथ करने में क्या कर सकते हैं?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने सीखाया थाः "धर्मपरिवर्तियों की बढ़ती संख्या के साथ, हमें महत्वपूर्ण कोशिश को बढ़कर उनको उनका रास्ता पाने में सहायक होना चाहिए। उनमें से प्रत्येक को तीन बातों की ज़रूरत हैः एक दोस्त, एक जिम्मेदारी, और परमेश्वर के अच्छे शब्दों के साथ पोषण का (मरोनी 6:4)। इन बातों को देना यह हमारी जिम्मेदारी और कर्त्तव्य हैं"(in Conference Report, Apr. 1997, 66; or *Ensign,* May 1997, 47)।
- 2 नफी 31 नफी की शिक्षा पर आधारित है, आप "मसीह के सिद्धान्त" की परिभाषा कैसे करेंगे? (देखें 2 नफी 31:13, 15; 3 नफी 11:31–40 भी देखें। उत्तर में शामिल होना चाहिए मसीह में विश्वास, पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, पवित्रात्मा का उपहार प्राप्त करना और अनन्त जीवन तक।)

3. नफी ने मसीह की वाणी के प्याले के महत्व को बताया है।

2 नफी 32 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- 2 नफी 32 में, नफी ने अतिरिक्त निर्देशन कि हमें क्या करना चाहिए अनन्त जीवन की राह में प्रवेश करने के पश्चात के बारे में दिये थे (2 नफी 32:1–3)। आयत तीन में क्या विशेष निर्देशन दिये गये हैं? मसीह के शब्दों को पाने के लिए हमारे पास क्या स्रोत हैं?
- आप इन वाणी के प्याले इसका अर्थ क्या सोचते हैं? (नीचे दिये गये उदाहरण देखें।) "प्याला" पढ़ने या अध्ययन कैसे भिन्न है? हम दूसरों के प्याले से कैसे सहायता कर सकते हैं?

  एल्डर नील ए. मैक्सवल ने कहा थाः "हमें मसीह की वाणी का प्याले की ज़रूरत धर्मशास्त्रों में से और जैसे यह शब्द हमारे पास जीवित भविष्यवक्ताओं से आते हैं। छोटे कतरन कभी कभी भरपूर नहीं होते हैं (देखें 2 नफी 31:20 और 32:3) प्याले का मतलब है महान उत्साह और आनन्द और पूरी प्रसन्नता के साथ लेना—न कि बिना सोचे समझे भुखे के कभी कभार होने से, परन्तु आभारपूर्वक लेना, आनन्द के साथ लेना, एक अद्भुत भुख ध्यानपूर्वक और प्रेम की तैयारी से—वर्षों तक लेना" (Wherefore Ye Must Press Forward [1977], 28)।
- नफी ने मसीह के शब्दों के बारे में क्या वादें दिये थे? (देखें 2 नफी 32:3) आप इसे कैसे सच पाते हैं?
- नफी ने सीखाया था कि आत्मा शिक्षा, या प्रोत्साहित, करता है एक व्यक्ति को प्रार्थना करने के लिए (2 नफी 32:8)। यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हमें "कुछ भी प्रभु के देने" से पूर्व प्रार्थना करनी है? (2 नफी 32:9)। आप कैसे इस सलाह को मान कर आशिषित होंगे?

4. नफी ने घोषणा की कि लोग उसके शब्दों पर विश्वास करेंगे अगर वे मसीह में विश्वास करते हैं।

2 नफी 33 में से चुनी हुई आयातों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि इस अध्याय में नफी के शब्दों की सच्चाई की गवाही और उसकी महत्ता सभी लोगों में है।

- नफी के शब्द "की महान योग्यता" क्यों है? (देखें 2 नफी 33:3–5) हम कैसे इन शब्दों की योग्यता सीख सकते हैं? हम कैसे जान सकते हैं कि नफी के शब्द सच्चे हैं? (देखें 2 नफी 33:10; मरोनी 7:13–17 भी देखें।)
- नफी ने कहा कि हम उसके न्यायालय में "एक दूसरे के समक्ष" मिलेंगे (2 नफी 33:11)। नफी के शब्द हमें "अन्तिम दिन कैसे अपराधी ठहरा सकते हैं? (देखें 2 नफी 33:14। अगर हम इन शब्दों को अस्वीकार करें या उसकी शिक्षा के नियमों का पालन न करें, प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिये जाएंगे।)
- नफी के आखिरी लिखे शब्द के मध्य घोषणा है "क्योंकि प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है और मैं इसका पालन अवश्य ही करूंगा" (2 नफी 33:15)। क्यों यह नफी के लेख का उचित अन्त है? नफी के उदाहरण से आप क्या सीखते हैं कि अधिक आज्ञाकारी होने में हमारी सहायता हो सके?

निष्कर्ष

फिर से मसीह के सिद्धान्त को संक्षप्ति करें, जिसमें शामिल हो मसीह में विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा लेना, पवित्रात्मा का उपहार प्राप्त करना और अनन्त जीवन पाना।

जैसे आत्मा का निर्देशन हो, सच्चाई की साक्षी की पाठ के दौरान चर्चा करें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. समझ की बाधा को पार करना

- 2 नफी 32:7 पढ़ें और चर्चा करें। आत्मा ने नफी को बोलने से क्यों रोका था? इन आयतों में दी गई परेशानियाँ आज भी कैसे उपस्थित हैं? हम कैसे एक दुसरे को गिरने से बचाने में सहायता कर सकते हैं?

“तुम पहले परमेश्वर के राज्य को खोजो”

पाठ
12

याकूब 1–4

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को अपनी बुलाहट को पूरा करने, सदाचारता की एक महान इच्छा को पूरा करने में मदद करें और अन्यों को मसीह के पास आने का निमन्त्रण दें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. याकूब 1। याकूब ने अपनी बुलाहट को पूरा प्रभु की तरफ से लोगों को पश्चाताप का प्रचार करके की।

   ख. याकूब 2–3। याकूब ने धन के प्रति प्रेम, घमण्ड, और असदाचारिता के विरूद्ध चेतावनी दी। उन हृदय के शुद्ध लोगों से वादा किया कि परमेश्वर उन्हें उनकी पीड़ा में आराम देंगे जैसे वे उस पर विश्वास करते, उसके शब्द को प्राप्त करते, और विश्वास में प्रार्थना करते हैं?

   ग. याकूब 4। याकूब ने यीशु मसीह के प्रायश्चित की गवाही दी। उसने लोगों को लक्ष्य से अलग देखने के विरूद्ध चेतावनी दी।

2. अगर आप ध्यान गतिविधि इस्तेमाल कर रहे हैं, एक आवर्धकलेंस आतिशी शीशा (मग्निफाइंग गलास) कक्षा में लाएं (या एक चित्र कक्षा आरंभ होने से पहले चॉकबोर्ड पर बनाएं।)

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या आपकी स्वयं की एक गतिविधि का प्रयोग करके कक्षा शुरू करें।

एक आवर्धकलेंस आतिशी शीशा (मग्निफाइंग गलास) दिखाएं या एक चित्र कक्षा आरम्भ से पूर्व चॉकबोर्ड पर बनाएं।

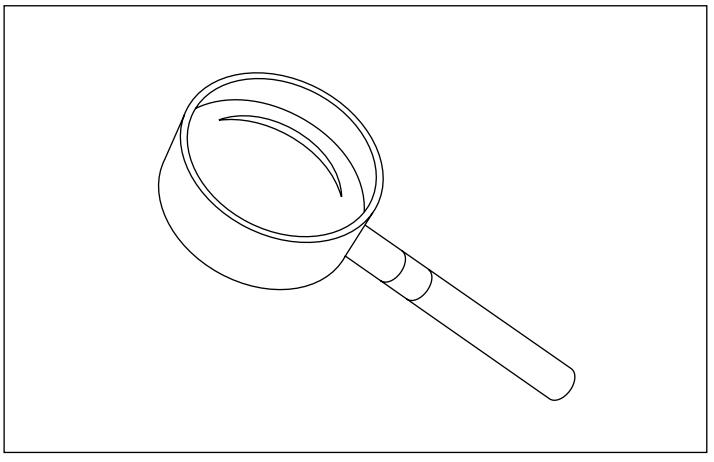

- एक आवर्धकलेंस आतिशी शीशा क्या करता है? आवर्धत (बढ़ाना) का अर्थ क्या है? (बढ़ाना, बढ़ाकर दिखाना, प्रेरणा या आदर को महान करना होता है।) अपनी बुलाहट को गिरजाघर में “बढ़कर पूरा” करने का अर्थ क्या है?

कक्षा के एक सदस्य को याकूब 1:17–19 ज़ोर से पढ़ने दें। कक्षा के अन्य सदस्यों को अंश पहचानने के लिए आमन्त्रित करें कि याकूब ने प्रभु की ओर से दी अपनी बुलाहट को कैसे पूरा किया था का वर्णन करें। आप शायद उनके दिये गये उत्तरों की सूची चॉकबोर्ड पर बनाना चाहें। सूची में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

क. प्रभु से अपना कर्तत्व प्राप्त करना (याकूब 1:17)

ख. पवित्र होना या नियुक्त करना (याकूब 1:18)।

ग. जिम्मेदारी लेना (याकूब 1:19)।

घ. परमेश्वर की वाणी की शिक्षा अपने पूरे परिश्रम से दी (याकूब 1:19)।

ङ. पूरे बल के साथ परिश्रम करना (याकूब 1:19)।

व्याख्या करें कि जब नफी अपने नश्वर जीवन के अन्त के निकट था, उसने अपने छोटे भाई, याकूब और यूसुफ को, नफायटियों के लिए आत्मिक कल्याण की जिम्मेदारी दी थी। याकूब ने अपनी बुलाहट को महान समझा और बढ़ते घमण्ड से दुःखी हुआ जिसने उसके लोगों को लालच और व्यभिचार के मार्ग पर डाला था उसने उनसे पश्चाताप करने को उत्साहित किया प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर से सुलह करना। कक्षा के सदस्यों को उनकी अपनी गिरजाघर की बुलाहट के बारे में विचार करने के लिए आमन्त्रित करें और किस प्रकार वे उसे अच्छे से बढ़ना चाहेंगे।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री को चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मिलता हो। चर्चा करें कि कैसे धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू करें। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र नियमों से मिलता हो।

1. याकूब ने प्रभु की दी अपनी बुलाहट को बढ़ाया।

याकूब 1 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। बताएं कि याकूब लेही और सारा का वीरानभूमि में जन्मा एक पुत्र था। उसने अपनी युवास्था में उद्धारक को देखा था, और उसे पौरोहित्य नियुक्त किया गया था (2 नफी 2:4; 6:2; 11:3)। वह नफी के शासन में सफलतापूर्वक पट्टियों का रखवाला बना था।

- जब नफी ने छोटी पट्टियां याकूब को दी, उसने याकूब को उचित निर्देशन भी दिये थे। नफी ने याकूब को इन पट्टियों के अभिलेख पर क्या निर्देश दिये थे? (देखें याकूब 1:1–4) इस अभिलेख की जानकारी का सुरक्षित रखना क्यों ज़रूरी था? (देखें याकूब 1:5–8) ये आयतें हमें कुछ बातें जिन्हें हमें अपने जीवन में अभिलेख रखना चाहिए के बारे में क्या शिक्षा देता है?

- याकूब ने लिखा था कि उसके लोग "नफी से अधिक प्रेम" करते थे (याकूब 1:10)। उनका यह महान प्रेम नफी के लिए क्यों था? (देखें 1 नफी 1:10) आप कैसा महसूस करते हैं उनके लिए जो आपकी सेवा करते हैं?

- याकूब का मतलब क्या था जब उसने कहा था कि वह "पहले प्रभु से अपने कर्त्तव्य प्राप्त करेगा" लोगों को शिक्षा देने से पहले? (याकूब 1:17–18)। हम कैसे प्रभु से अपना कर्त्तव्य प्राप्त करते हैं? (बुलाहट और नियुक्त होने के द्वारा।) हम कैसे पता कर सकते हैं कि प्रभु हमसे हमारी बुलाहट में क्या करवाना चाहता है?

- याकूब ने क्या कहा था कि होगा अगर वो और यूसुफ लोगों को परिश्रम से शिक्षा नहीं देंगे? (देखें याकूब 1:16) यह क्यों अति आवश्यक है कि हम अपनी बुलाहट को बढ़ाएं? (अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग नहीं करेंगे, एक क्षण लेकर चर्चा करें कि बुलाहट का बढ़ाने का क्या अर्थ है।

- क्या आप ने कुछ अच्छे उदाहरण लोगों के अपनी बुलाहट को बढ़ाने के देखें हैं? हम अपनी बुलाहट को अच्छे से कैसे बढ़ा सकते हैं? (देखें सि. और अनु. 58:26–28) आप कैसे आशिषित हुए हैं जैसे आप ने अपनी बुलाहट को पूरी तरह से पूरा किया है?

2. याकूब ने धन के प्रति प्रेम, घमण्ड, और व्यभिचार के विरूद्ध चेतावनी दी।

याकूब 2–3 चर्चा करें । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को पढ़ने को आमन्त्रित करें।

- जैसे उसने नफी के लोगों में प्रचार शुरू किया, याकूब ने कहा कि वह "उन्नति और आनन्द की इच्छा के बोझ से दब गया हूं" जितना पहले कभी नहीं था (याकूब 2:3)। क्यों याकूब की आत्मा पर "बोझ" था? (देखें याकूब 2:5–9; याकूब 1:15–16 भी देखें।) आपके विचार से क्यों याकूब ने पाप का "बोझ" जैसा का वर्णन किया? (याकूब 2:5)

- कैसे सांसारिक सम्पत्ति की खोज याकूब के दिनों में नफायटियों को भूल का कारण बन गयी थी? (देखें याकूब 2:12–16) कैसे सांसारिक सम्पत्ति की प्राप्ति घमण्ड की ओर ले जाती है? सम्पत्ति को सही तरह से कैसे उपयोग करते हैं? याकूब ने हमारी सहायता सम्पत्ति के दुरूपयोग से बचाने के लिए क्या सलाह दी थी? (देखें याकूब 2:17–21)

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल ने सीखाया थाः

  "सम्पत्ति का धनी होना पापी होना नहीं है। परन्तु पाप लाभ में से और सम्पत्ति के इस्तेमाल से उत्पन्न होता है—क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को अनेक प्रकार के दुःखों से छलनी बना दिया है। पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर। (1 तीमु. 6:10–11)

  मॉरमन की पुस्तक इतिहास वाकपटुता प्रकट घर सम्पत्ति के लिए भाव से नष्ट की गई—लोगों ने क्या सम्पत्ति का प्रयोग अच्छे उद्देश्य के लिए किया वे लगातार वंश में आनन्द उठा सके। परन्तु वे नियुक्त युग के लिए एक साथ धनी और नेक न रह पाए (The Miracle of Forgiveness [1969], 47–78)।

- लोगों को घमण्ड और धन के प्रेम की चेतावनी के बाद, याकूब ने उन्हें उनके अभद्र व्यवहार से पश्चाताप के लिए कहा था। नफायटियों ने अपने अभद्र व्यवहार को कैसे पहचाना था? (देखें याकूब 2:23–24) कैसे आज कई लोग अपने व्यभिचार के लिए बहाने बनाने की कोशिश करते हैं?

- नैतिक दृष्टि से शुद्ध होना क्यों महत्वपूर्ण है? (देखें याकूब 2:27–29; निर्गमन 20:14; 1 कुरिन्थियों 6:18–20 भी देखें।) कैसे यौन व्यभिचार पापी के परिवार और दोस्तों और सारे समाज पर प्रभाव डाल सकते हैं? (देखें याकूब 2:31–35; 3:10) याकूब ने क्या सलाह और आराम दिया उनकों जो दूसरों के व्यभिचार से पीड़ित थे? (देखें याकूब 3:1–2)

- एक व्यक्ति को व्यभिचार की क्षमा पाने के लिए क्या करना ज़रूरी है?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने पांच व्यभिचार की क्षमा पाने के क्रमशः सुझाये (in "The Law of Chastity," Brigham Young University 1987–88 *Devotional and Fire Side Speaches* [1988], 53–54)। इन क्रमशः की कक्षा के सदस्यों के साथ चर्चा करेंः

  "1. ऐसी किसी परिस्थिति से तुरन्त दूर चले जाना आप इस में हो तो आपको पाप करने का कारण देगी या शायद आप से पाप करवाये।"

  "2. प्रभु से उस पर विजयी होने की शक्ति मांगो।"

  "3. आपके पौरोहित्य मार्गदर्शकों से अपने उल्लंघन को ठीक करने और प्रभु के साथ पूरी तरह से वापस आने के लिए सहायता लें।"

  "4. पवित्र झरने से पीओ [धर्मशास्त्रों और भविष्यवक्ताओं की वाणी से] और अपने जीवन को सही स्त्रोत की शक्ति से भर लो।"

  "5. याद रखो कि सही तरह से पश्चाताप करने से आप फिर से शुद्ध हो सकते हैं।"

- याकूब के अनुसार, लमनाटी सदाचार से कैसे आशिषित हुए थे? (देखें याकूब 3:5–7) नैतिक शुद्ध होने से क्या आशीषें मिलती हैं?

3. याकूब ने यीशु मसीह के प्रायश्चित की गवाही दी।

याकूब 4 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अपने लोगों को पश्चाताप बताने के बाद, याकूब ने अपने उपदेश का अन्त प्रायश्चित के द्वारा क्षमा पाने की आशा की गवाही से किया था। कैसे धर्मशास्त्र और भविष्यवक्ता हमारी सहायता प्रायश्चित की गवाही को प्राप्त करने में करते हैं? (देखें याकूब 4:4–6) हम कैसे मसीह में आशा पा सकते हैं जो कि याकूब ने बोला था? (देखें याकूब 4:10–12)
- आप इससे क्या सोचते हैं कि यहुदियों ने "लक्ष्य से अलग" देखा था? (देखें याकूब 4:14। यहूदी धर्मशास्त्र के कठिन अंश की व्याख्या कर प्रसन्न थे, परन्तु बिना विश्वास और बिना पवित्रात्मा की सहायता के वे उसे समझ नहीं सके थे। उन्होंने धर्मशास्त्र के "शब्दों की शुद्धता" को तिरसकारा था और मुक्ति के लिए अन्य रास्ते की ओर देखा था न कि यीशु मसीह के द्वारा बताये रास्ते को।)
- हम कैसे कितनी बार अपने दैनिक जीवन में लक्ष्य से अलग देखते हैं? हम कैसे उद्धारक की महत्ता को अपने जीवन में प्रसन्न के साथ याद कर सकते हैं?

इस भाग की समाप्ति में, कक्षा के सदस्य को मरोनी 3:17 ज़ोर से पढ़ने दें।

निष्कर्ष

व्याख्या करें कि याकूब की शिक्षा ने हमारी मदद हमें हमारी बुलाहट को बढ़ने की महत्ता को समझने में और घमण्ड और व्यभिचार से बचने में की है। प्रायश्चित पर ज़ोर देने के द्वारा अपने उपदेश की समाप्ति में याकूब ने सीखाया था कि हमें उद्धारक पर निर्भर होना चाहिए।

जैसे आत्मा के निर्देशन के द्वारा, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. याकूब ने आधिकारीक रुप से अनेक विवाहों की निन्दा की

- नफायटियों ने किसे उदाहरण बना कर अपने व्यभिचार से दोषमुक्त होने का प्रयास किया था? (देखें याकूब 2:23–24) दाऊद और सुलेमान अयोग्य उदाहरण क्यों थे? (सि. और अनु. 132:32–39। प्रभु ने दाऊद और सुलेमान को कई पत्नियां और रखैल दी थी, परन्तु उन्होंने अनुबंध के बाहर अतिरिक्त विवाह करके पाप किये थे।) आप शायद इसकी व्याख्या प्राचीन में करें, एक रखैल एक नैतिक रखैल नहीं थी परन्तु एक कानूनी सामाजिक पत्नी का स्तर (See Bruce R. McConkie, Mormon Doctrine, 2nd ed. [1966], 154)।
- याकूब ने नफायटियों का कौन सा विवाह कानून की शिक्षा दी थी? (देखें याकूब 2:27–28)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सीखाया था, "मैं लगातार कह रहा हूं कि आदमी के पास एक समय पर एक पत्नी होनी चाहिए, जब तक कि प्रभु निर्देशन न दे तब तक" (Teachings of the Prophet Joseph Smith, Sel. Joseph Fielding Smith [1976], 324)।

  व्याख्या करें कि प्रभु ने ऐसे निर्देशन दिए थे (देखें सि. और अनु. 132), परन्तु उसके बाद में बहुत विवाह की रजामन्दी वापस ले ली जब स्थिति बदली थी (देखें आधिकारिक घोषणा 1)। ज़ोर देकर कि प्रभु का विवाह नियम आज भी वैसा ही है जैसा याकूब के दिनों में था।

2. अनादर (कुकर्म) को मान्यता देना और दूर रहना

याकूब ने नफायटी आदमियों की निन्दा उनको अपनी पत्नियों और बच्चों से कुकर्म करने के लिए की थी (देखें याकूब 2:9, 31–32, 35)। अन्तिम दिन के गिरजाघर के मार्गदर्शकों ने भी किसी भी प्रकार के कुकर्म के विरूद्ध कड़ी चेतावनी दी है। प्रथम अध्यक्षता और बारह की परिषद ने चेतावनी दी कि "व्यक्ति जो सदाचार के अनुबंध का उल्लंघन करे, जो अपनी दम्पत्ति का या सन्तान का अनादर करे, या जो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को पूरा करने में असफल होंगे" ("Family: A Proclamation to the World, *Ensign,* Nov. 19995, 102)।

अनादर की परिभाषा किसी का अनादर करना या किसी को गलत शब्द गलत तरीको से बोलना, या किसी को चोट पहुँचाना या गंभीरता से अपमान करना हो सकता है। जैसे उचित हो, निम्नलिखित विशेष परिभाषा और निर्देशन की चर्चा कक्षा सदस्यों के साथ करें:

बच्चे का अनादर तब होता है जब कोई जो भरोसे की स्थिति में हो या धमकियों से नियंत्रण करना हो या शारीरिक या भावनात्मक तरीके से बच्चे को चोट पहुंचाए। इसमें शामिल हैं शारीरिक अनादर या नज़रादज करना, भावनात्मक अनादर, और यौन अनादर।

दम्पत्ति अनादर भी शारीरिक, भावनात्मक, या यौन अनादर हो सकता है। भावनात्मक अनादार अपमानित नाम लेकर बुलाने से, अपमानित बयानों से, अयोग्यता से नियंत्रण करने या जर्बदस्ती करने से, धमकाने, अकेला छोड़ देने से, भय, या शोषण करने से भी हो सकता है। शारीरिक अनादर में शामिल हैं ज़रूरत की चीज़ों से वंचित रखने से और शारीरिक चोट जैसे धक्का मारना, गला घोटना, नोचना, चिकोटी काटना, बान्धना, या मारना। यौन अनादर में शायद भावनात्मक से या शारीरिक और यौनशोषण से, दर्द के साथ कष्ट देने से, और बल का प्रयोग करने या जर्बदस्ती करना भी शामिल है।

पौरोहित्य मार्गदर्शक का प्रत्येक प्रयास करना चाहिए, परिवार सदस्यों और अन्यों का अनादर से बचाना और अनादर व्यक्ति को चंगाई का साथ देकर करना चाहिए। मार्गदर्शकों और परिवार सदस्यों को अनादर करने वाले व्यक्ति का पश्चाताप करने की कोशिश में सहायता करनी चाहिए: गिरजाघर के अनुशासन की इस बारे में ज़रूरत हो सकती है।

- हम अनादर से बचने और पहचानने के लिए क्या कर सकते हैं? हम जिन का अनादर हुआ है कि सहायता कैसे कर सकते हैं?

अगर कक्षा के सदस्यों को विशेष सलाह बचाव और अनादर के जवाब की ज़रूरत हो, प्रोत्साहित करें उन्हें धर्माध्यक्ष के साथ बात करने के लिए।

3. याकूब ने जातिय पक्षपात के विरूद्ध चेतावनी दी

- क्यों बहुत से नफायटियों ने लमनायटियों को नीचता से देखा था? (देखें याकूब 3:5, 9) याकूब ने इस पक्षपात के बारे में क्या कहा था? (देखें याकूब 3:8–9) कैसे पक्षपात गिरजाघर का उसके पवित्र उद्देश्य को पूरा करने से रोकता है?

  अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर ने कहा था:

  "सुसमाचार की पुनःस्थापना का एक संदेश है पवित्र प्रेम का सभी जगह सभी लोगों के लिए, दृढ़ विश्वास पर आधारित कि सारी मानव जाति सामान्य परमेश्वर के बच्चे हैं...

  ". ...प्रबलता, हमारे विश्वास की शक्ति इतिहास राष्ट्रीयता, या संस्कृति द्वारा बांधी नहीं जा सकती है। यह किसी एक व्यक्ति की विशेष सम्पत्ति नहीं है या किसी एक युग की" (in Conference Report, Oct. 1991, 23–24; or *Ensign,* Nov. 1991, 19)।

पाठ
13

जैतून के वृक्ष का दृष्टान्त

याकूब 5–7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को जीनस के जैतून के वृक्ष के दृष्टान्त को अच्छी तरह समझने में सहायता करें और यह कैसे हमारे दिन में लागू होगा।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. याकूब 5। याकूब ने जीनस अच्छे और बुरे जैतून वृक्ष का दृष्टान्त का उदाहरण दिया, जिसमें इस्राएल के घराने का इतिहास और भाग्य का वर्णन है।

   ख. याकूब 6। याकूब ने अपने सुनने वालो को पश्चाताप और मसीह के पीछे होने को उत्साहित किया।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: 1 नफी 10:12–14; 22:3–5

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या आपकी स्वयं की एक गतिविधि को प्रयोग करके पाठ की शुरूआत करें।

चॉकबोर्ड पर एक जैतून का वृक्ष बनाएं, और कक्षा के सदस्यों से एक जैतून के वृक्ष की बहुत सी बातें जिसे वे एक मिनट में सोच सकते हैं पूछें। उनके उत्तर उदाहरण के साथ चॉकबोर्ड पर लिखें। अगर कक्षा सदस्यों को सहायता की ज़रूरत हो, नीचे दिये गये कुछ उत्तरों का या अतिरिक्त शिक्षा सुझाव की सूची में का सुझाव दें।

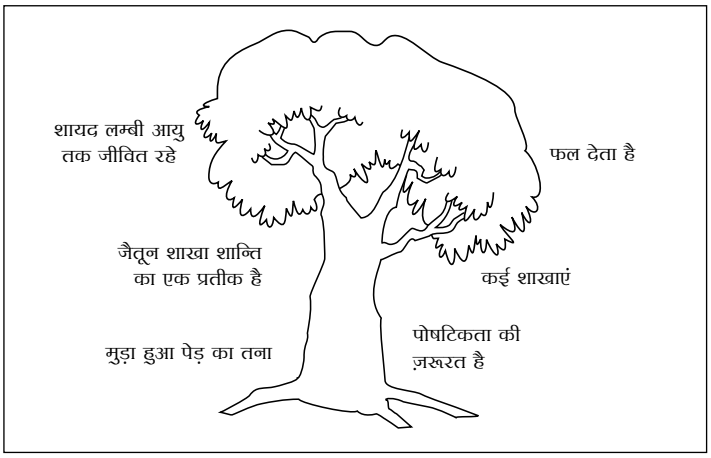

व्याख्या करें कि यह पाठ चर्चा करता है कि कैसे जैतून वृक्ष का प्रभु का इस्राएलियों के घराने के साथ व्यवहार के वर्णन को एक प्रतीक के रूप में उपयोग किया गया था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जो कि कक्षा सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हो। चर्चा करें कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होंगे। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभव बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से मेल रखता हो।

1. याकूब जैतून वृक्ष के जीनस के दृष्टान्त को उद्धरित करता है।

याकूब 5 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करें। बताएं कि इस अध्याय में याकूब ने जीनस में एक दृष्टान्त का उदाहरण दिया, एक इब्रानी भविष्यवक्ता का मॉरमन की पुस्तक में कई बार जिक्र किया गया। एक दृष्टान्त एक साहित्यकार का उपाय है जिसमें एक धातु या घटना का वर्णन या अन्य तरह से बताने में प्रयोग करते हैं। जीनस का दृष्टान्त इस्राएली इतिहास और उसके आने वाले भाग्य की समीक्षा जैतून वृक्ष से प्रयोग किया गया है।

- जीनस ने इस दृष्टान्त में प्रतीक का प्रयोग क्यों किया था? इन प्रतीकों के अर्थ क्या हैं?

  कक्षा के सदस्यों को जितना हो सके उतना सहयोग देने की इज़ाजत दें, दृष्टान्त में से मुख्य प्रतीक और उनके अर्थो को पहचाने। चॉकबोर्ड पर एक चार्ट में इनकी सूची बनाएं। पूरा किया हुआ चार्ट कुछ इस तरह से दिखेगाः

जीनस दृष्टान्त

प्रतीक	अर्थ
वाटिका	संसार
वाटिका का स्वामी	यीशु मसीह
सूखा जैतून वृक्ष	इस्राएल का घराना, प्रभु के अनुबंधित लोग
जंगली जैतून वृक्ष	अन्यजातियां (लोग जो इस्राएल घराने में जन्मे नहीं)
शाखाएं	लोगों का समूह
सेवक	भविष्यवक्ता और अन्यों को सेवा करने को बुलाया गया
फल	लोगों के जीवन या कार्य हल6

  इस चार्ट को चॉकबोर्ड पर पूरे पाठ के होने तक रहने दें।

- दृष्टान्त की शुरूआत स्वामी के वाटिका के विषय में यह पता करने के साथ होती है कि उसका उगाये जैतून वृक्ष मुर्झाना शुरू हो गया है याकूब 5:3–4)। यह मुर्झाना क्या दिखाता है? (धर्मत्याग।) वाटिका का स्वामी क्या करता है जब उसे मालूम होता है कि उसका उगाया जैतून वृक्ष मुर्झाने लगा है? (देखें याकूब 5:4–14। आपको व्याख्या करने की आवश्यकता है कि कलम बांधना एक तरीका है जिसमें दूसरे पौधे के भाग को पहले पौधे से इस तरह से जोड़ा जाता है कि वह पहले पौधे का एक अटूट हिस्सा बन जाता है।) स्वामी ने सेवक को कुछ जंगली शाखाओं में कलम बांधने को क्यों कहा था? (देखें याकूब 5:11, 18)

- इस दृष्टान्त में कलम बांधना क्या दिखाता है? (अन्यजातियों को बपतिस्मे द्वारा इस्राएल घराने में लाना।) पहली बार सुसमाचार अन्यजातियों के पास कब ले जाया गया था? (देखें प्रेरितों के काम 10)

- सूखी शाखाओं को वाटिका के कुछ भाग में दुबारा पौधा लगाना क्या प्रदर्शित करता है? (देखें 1 नफी 10:12–13) यह सूखी हुई शाखाएं किस विशेष समूह को दिखाती है? (देखें 1 नफी 2:19–20; 22:3–4) इस्राएल बिखर क्यों गया था? (देखें अमोस 9:8–9)

- वाटिका के स्वामी ने अपने सेवकों के साथ अपने वृक्ष को छाटने, आस-पास खोदने, और पोषण करने के लिए लगातार कार्य किया। यह यीशु मसीह के बारे में उसके लोगों के जीवन में शामिल होने में क्या सुझाव देता है?

- जब स्वामी दूसरी बार वाटिका में देखभाल करने आया, उन जंगली शाखाओं के बारे में क्या पाया था कि सूखे वृक्ष में कलम बांध कर? (देखें याकूब 5:15–18) अच्छे फल लाना क्या दिखाता है? नये परिवर्तित कैसे जीवन जोड़ते और शान्ति दे सकते हैं?

- स्वामी ने क्या पाया था जब उसने वाटिका में प्रकृति शाखाओं को देखा जो उसने वाटिका के कई स्थानों में चारों ओर लगाई थी? (देखें याकूब 5:19–25। ध्यान दें कि शाखाएं जो बुरी भूमि पर लगाई थी उनमें अच्छे फल आये, यद्यपि शाखाएं अच्छी भूमि लगाई वो अच्छे और जंगली फल दोनों लाये।) इन परिस्थितियों में से हम क्या लागू कर सकते हैं?

- जब स्वामी वाटिका में तीसरी बार आया, सारे फलों को क्या हो गया था? (देखें याकूब 5:29–32, 37–42) बहुत तरह के भ्रष्ट फल क्या दिखाते हैं? (विश्व धर्मत्याग।) धर्मत्याग का कारण क्या था? (देखें याकूब 5:37, 40, 48) वाटिका की "उन्नति" का क्या प्रतीक हो सकता है? हमारी अपनी उन्नति, या घमण्ड, हमें अच्छे फल लगाने से कैसे रोक सकते हैं?

- स्वामी का अपने भ्रष्ट वाटिका के प्रति क्या जवाब हमें परमेश्वर का अपने लोगों के लिए अहसास के बारे में बताता है? (देखें याकूब 5:41, 47) आपको कैसा लगेगा कि प्रभु का आप से प्रेम जीवन में भिन्नता लाता है?

  आप शायद अन्य आयतों को भी अंकित करना चाहें जो प्रभु का हमारे लिए प्रेम दर्शाती हैं। कुछ सुझाव नीचे दिये गये हैं:

  क. "मैं इसकी सूखी डालियों को काट दूंगा, जड़ के आस-पास की मिट्टी खोद कर खाद पानी डालूंगा, कि...यह मरे नहीं" (याकूब 5:4)।
  ख. "उस वृक्ष को खोने से मुझे कष्ट हो रहा है" (याकूब 5:7)।
  ग. "हम इस वृक्ष का क्या करें जिससे इसके अच्छे फलों को मैं फिर से अपने लिए प्राप्त कर सकूं? (याकूब 5:33)।
  घ. "पुनः अपने बगीचे के फलों से मुझे आनन्द प्राप्त हो" (याकूब 5:60)।

- स्वामी ने अपनी भ्रष्ट वाटिका को बचाने के लिए क्या निर्णय लिया था? (देखें याकूब 5:49–54, 58, 62, 64। उसने एक बार फिर से वाटिका को पोषण और छांटने का और कुछ शाखाओं को असली वृक्ष पर कलम लगाने का निर्णय लिया था।) यह आखिरी पोषण, छांटना और कलम लगाना क्या प्रतिनिधित्व करता है? (देखें 1 नफी 10:14; 2 नफी 29:14; सि. और अनु. 33:3–6। सुसमाचार की पुनःस्थापना और बिखरे हुए इस्राएल का एकत्रित होना।)

- याकूब 5:61, 70 में किन "अन्य सेवकों के बारे में बतलाया गया है? (देखें सि. और अनु. 133:8) हालांकि ये सेवक कम हैं, उनके परिश्रम का क्या नतीजा हुआ? (देखें याकूब 5:71–75) हम प्रभु की वाटिका में आखिरी पोषण, छांटने, और कलम लगाने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

2. याकूब ने अपने सुनने वालों को पश्चाताप और मसीह की अगुवाई करने को प्रोत्साहित किया।

याकूब 6 में से चुनी हुई आयतें पढ़ें और चर्चा करें।

- जीनस दृष्टान्त बताने के पश्चात याकूब ने क्या भविष्यवाणी की थी? (देखें याकूब 6:1) याकूब 6:2 में याकूब ने किस समय काल का संदर्भ किया था? (अन्तिम दिनों का।) यह हमें जीनस दृष्टान्त से हमारे बारे में क्या विशेषता बताता है?

- कक्षा के सदस्यों को याकूब 6:4–5 ज़ोर से पढ़ने को कहें। ये आयतें उद्धारक अन्तिम दिनों में इस्राएल को कैसे एकत्रित करेगा के बारे में क्या शिक्षा देती हैं?

- सुसमाचार नियम में याकूब क्या महत्व देता है गवाही के पश्चात कि जीनस दृष्टान्त में की सारी घटनाएं पूरी होंगी? (देखें याकूब 6:3–13) उनकी क्या जिम्मेदारियां हैं जिन्हें "पमेश्वर के अच्छे शब्दों द्वारा पोषण दिया गया है"? (देखें याकूब 6:11–12; मरोनी 6:3–4) कुछ क्या विशेष रास्ते हैं जिनसे हम यह जिम्मेदारियां पूरी कर सकते हैं? (उत्साहित करें कि प्रत्येक गिरजाघर सदस्य यह जिम्मेदारियां पूरी कर सकता है। उदाहरण के लिए, जो सदस्य नहीं है मित्रों को प्रचारकों के साथ वार्ता के लिए आमन्त्रित कर सकते हैं, घर शिक्षक और भेंट करने वाली शिक्षिका जैसे परिश्रमिक सेवा कर सकते हैं, और दम्पति मिलकर पूरे समय का मिशन सेवा कर सकते हैं।)

निष्कर्ष

अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने कहा था, "आज अन्तिम-दिनों के सन्त संसार के सभी जगहों पर जा रहे हैं जैसे वाटिका के सेवक इन फलों को एकत्रित करते और बचाकर रखते हैं स्वामी के लिए आने के समय तक" (*Answers to Gospel Questions,* Comp. Joseph Fielding Smith Jr., 5 vols. [1957–66], 4:142)। ज़ोर दें कि हमें इस महान एकत्रित में भाग लेना चाहिए। क्योंकि हमारे प्रभु द्वारा पोषण हुआ, हम दुसरे को उनके पोषण प्राप्त करने में सहायता करने के लिए बाध्य हैं।

जब आत्मा द्वारा नेतृत्व हो, सच्चाई की गवाही दे जिसकी पाठ के दौरान चर्चा की गई थी।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. सीरम की झुठी शिक्षाएं

याकूब 7:1–23 में पाये, सीरम के लेख पर चर्चा करें।

- सीरम कैसे बहुत से लोगों को सच्चाई से दूर ले गया था? (देखें याकूब 7:1–7) आप क्या सबूत देखते हैं कि आज कुछ लोग सामान्य तरीका इस्तेमाल कर अन्यों को मसीह से दूर करते हैं?

- याकूब ने सीरम का कैसे खण्डन किया था? (देखें याकूब 7:8:22) हम कैसे अपने आप को मसीह विरोधी के धोखे से बचा सकते हैं? (देखें याकूब 7:23; रोमियों 16:17–18; इफिसियों 4:11–15)

  अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने कहा थाः "इस दुनिया में कुछ भी इतना महान महत्वपूर्ण नहीं जैसे यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारी होना। आइये हम यह धर्मशास्त्र खोजें। आइये हम जाने कि प्रभु क्या प्रकट करता है। हम अपने जीवन को उसकी सच्चाई की शान्ति में रखें। तब हम धोखा नहीं खाएंगे" (*Doctrine of Salvation,* comp. Bruce R. McConkie, 3 vols. [1954–56], 1:30)।

2. जैतून वृक्ष के बारे में अतिरिक्त जानकारी

जितना ज्यादा हम जैतून वृक्ष के बारे में जानते हैं, हम बेहतर समझ सकते हैं क्यों जीनस इस वृक्ष से प्रेरित होकर इस्राएल दर्शाने के लिए प्रयोग किया था। निम्नलिखित जानकारी को जैसे पाठ के दौरान उचि हो बांटे (अगर ज़रूरत हो, इनमें से कुछ जानकारियों का ध्यानपूर्वक गतिविधि के भाग के रूप में प्रयोग करें):

क. जैतून वृक्ष एक जीवित वस्तु है जो कि अधिक फल देता है। इसे लगातार जीने के लिए पोषण की आवश्यता होती है।
ख. जैतून शाखाएं परम्परीक एक शान्ति का चिन्ह है।
ग. वृक्ष को ध्यानपूर्वक छांटना चाहिए ताकि फलवन्त और उपजाऊ हो।
घ. एक जंगली जैतून वृक्ष सौम्य और उपजाऊ होने के लिए, उसके मुख्य जड़ को पूरी तरह से काट देना चाहिए, और एक शाखा एक सौम्य जैतून वृक्ष में से एक जंगली के जड़ के भीतर कलम कर देनी चाहिए।

ङ. एक जैतून वृक्ष शताब्दियों तक फल उत्पन्न कर सकता है। कुछ वृक्ष अब इस्राएल में 400 वर्षो से अधिक समय से बहुतायत के साथ उपजाऊ रूप से बढ़ रहे हैं।

च. जैसे एक वृक्ष बूढ़ा होता और मरने लगता है, उसकी जड़ों में नया अंकूरण होता है, जो, अगर अनत्र लगा दी जाये और सौम्य हो, बड़ा और पूरी तरह जैतून वृक्ष होगा। यहां तक, वृक्ष की जड़ें नये वृक्षों को उत्पन्न और कई हजारों वर्षो तक के लिए फल दे सकती है।

3. युवा गतिविधि

जैतून वृक्ष का दृष्टान्त युवा को समझने के लिए कठिन हो सकता है। आप शायद कक्षा के सदस्यों को दृष्टान्त समझने के लिए चॉकबोर्ड पर चित्र बनाएं जैसे आप उसकी चर्चा करते हो। या आप कक्षा को बना सकते हैं जैसे कि यदि वह वाटिका हो (संसार) और कक्षा के सदस्य दृष्टान्त द्वारा चल रहे हों जैसे आप उसकी चर्चा करते हैं जैसे नीचे दिया गया है:

एक पोस्टर पर जैतून वृक्ष का एक चित्र बनाएं और उस पर नाम लिखें यरूशलेम (इस्राएल का घराना)। इस पोस्टर को कक्षा के मध्य फर्श पर रखें। एक जैतून वृक्ष की एक शाखा को प्रत्येक अन्य कई पोस्टर पर बनाएं। इन पोस्टरों पर नाम लिखें जैसे इस्राएल के घराने के निवासी तितर- बितर हुए हो (अमेरिका, युरोप, अफ्रीका, एशिया, और अन्य कई)। इन पोस्टर को फर्श के चारों ओर कक्षा की परिसीमा पर रखें। कक्षा के सदस्यों को उचित समय पर दृष्टान्त की चर्चा पर हिलते रहें। उदाहरण के लिए, कुछ सदस्यों को इस्राएल के घराने का प्रतिनिधित्व करने दें (नीरस, या प्रकृति, शाखाएं) और कुछ अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते हो (जंगली शाखाएं)। जब आप वाटिका के स्वामी को जंगली शाखाओं में कलम लगाते हुए की चर्चा करें, कक्षा के सदस्य जो अन्यजाति का प्रतिनिधित्व करते हो को पोस्टर के केन्द्र में आने दें। जब आप वाटिका के स्वामी के बारे में बात करते हो प्रकृति शाखाओं को लो और वाटिका के सभी जगहों पर लगा दो, कक्षा के सदस्य जो इस्राएल के घराने का प्रतिनिधित्व करते हों को पोस्टर के कक्ष के परिसीमा पर चलने दें।

एक विवेकमय उद्देश्य के लिए

पाठ
14

इनोस, जराम, ओमनी, मॉरमन की वाणी

उद्देश्य

ज़ोर दें कि धर्मशास्त्र हमें मार्गदर्शन और निर्देशन के लिए तैयार किए और रखे गए हैं।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. इनोस। अपने पिता की शिक्षा से प्रभावित हुआ था, इनोस क्षमा पाने के लिए प्रार्थना करता है। क्षमा पाने के बाद, इनोस अपने लोगों के लिए प्रार्थना करता है, नफायटी और उनके शत्रुओं के लिए, लमनायटी। वह प्रभु से नफाटियों के लेख को बचाने के लिए मांगता है।

   ख. जराम। जराम लेखा रखता है कि लमनायटी अक्सर नफायटियों के विरूद्ध जंग करन आते हैं। नफायटी सफलतापूर्वक लमनायटियों से अपनी रक्षा करते हैं और भूमि में उन्नति करते हैं क्योंकि भविष्यवक्ता और शिक्षक उन्हें लगातार पश्चाताप करने के कहते, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना, और मसीहा के आगमन की ओर ध्यान करना।

   ग. ओमनी। ओमनी, अमरोन, चेमिस, अवितदोम और अमलेकी लेखा रखते हैं। नफायटियों का अनुभव शान्ति की ऋतु और युद्ध की ऋतु, और उनके "अधिक दृष्टान्त का भाग" नष्ट करता था। मुसायाह और उसके अनुयाई ज़राहेमला के लोगों की (मलाकायटियों) से मुठभेड़ हुई।

   घ. मॉरमन की वाणी। मॉरमन ने नफी की छोटी पट्टियों का सारांश को नफी की बड़ी पट्टियों को अपने से जोड़ा, यह जानते हुए कि वह यह सब कुछ "एक विवेकमय उद्देश्य के लिए" कर रहा है।

2. अगर आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, एक कक्षा सदस्य को एक घटना या भावना को बांटने के लिए तैयार होने को कहें जिसे वह भूला चुका हो अगर कक्षा सदस्य ने लेख को अपनी दैनिकी में नहीं रखा हो। या तो अपनी दैनिकी में से कोई भी एक घटना या भावना को बांटने के लिए तैयार करें।

3. निम्नलिखित चार्ट को चॉकबोर्ड पर उतारे या एक बड़े से कागज पर:

मॉरमन और मरोनी द्वारा लेख को संक्षिप्त और संकलन करना

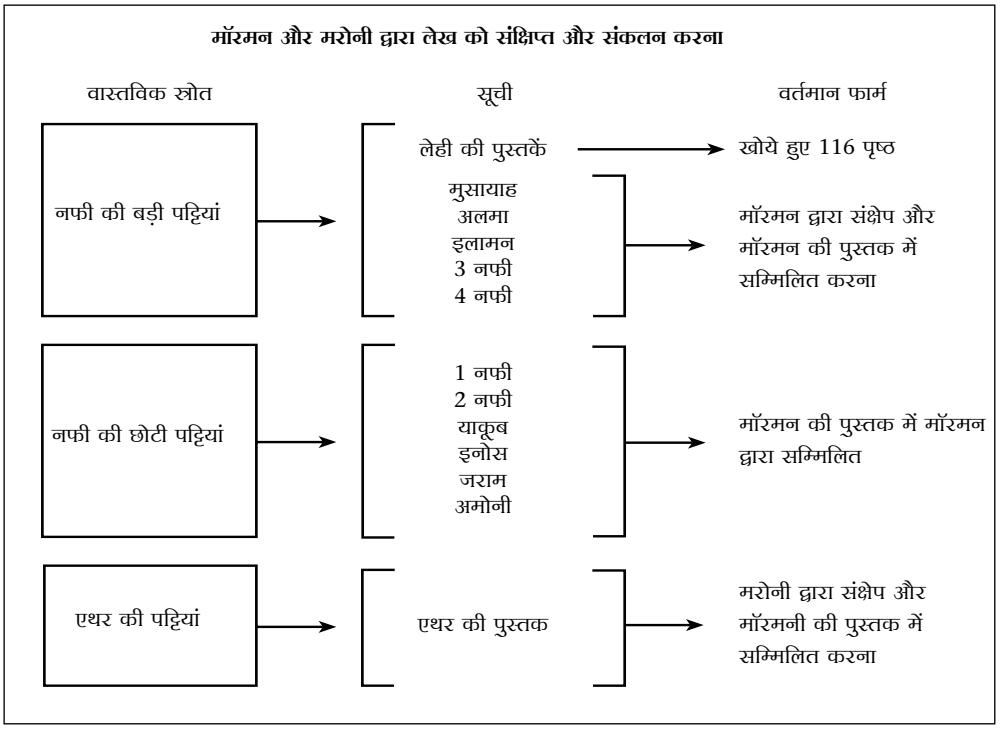

4. अगर मॉरमन पट्टियों को सम्मिलित करता है का चित्र उपलब्ध है, पाठ के दौरान उपयोग करने की तैयारी करें (62520; सुसमाचार कला चित्र किट 306)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या आपके स्वयं की एक गतिविधि का प्रयोग करके पाठ की शुरूआत करें।

नियुक्त कक्षा के सदस्य को एक घटना या भावना के बारे में बताने को कहें जो कि भूला दी गई हो अगर उसने उसे अपनी दैनिकी में लिखा नहीं हैं (या अपने आपसे बताने के बारे में)। कक्षा के सदस्य को निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने दें:

- आपने क्यों इस घटना (या अनुभव) के बारे में लिखा था? यह आपको अपने दैनिकी में लिखित जानकारी से कैसे लाभ पहुंचाती है?

तब सारी कक्षा निम्नलिखित प्रश्नों की चर्चा करें:

- नफी ने अपने लिखित लेख को रखने के लिए कौनसे कुछ महत्वपूर्ण कारण दिये थे? (देखें 1 नफी 6:4; 9:5; 19:3; 2 नफी 25:26)

व्याख्या करें कि लेख रखने वाला जो कि मॉरमन की पुस्तक प्रभु के वचन को बचा कर रखने में और उसके लोगों का आज्ञा का पालन कराना सीखाने के अनुभव में महान परिश्रम किया था। उन्होंने इस जानकारी को भविष्य के लिए रखने के महत्व को पहचाना था। क्योंकि उनके लेख को सीखने में परिश्रम और क्योंकि परमेश्वर का लेख को बचाकर सुरक्षा पूवर्क रखने में हाथ, हम आत्मिक सफलता को समझने में सक्शय होते हैं और विफलता उनकी जो हम से पूर्व आकर चले गये।

ध्यान दें कि चार पुस्तक आज के पाठ में चर्चित हुई थीं—इनोस, जराम, अमोनी, और मॉरमन की वाणी—आठ व्यक्तियों द्वारा लिखी गई थीं जो, नफी के समान ही, पवित्र लेख को रखने के महत्व को समझते थे।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंश, प्रश्नों, और अन्य पाठय सामग्री जोकि कक्षा सदस्यों की ज़रूरतों से मेल रखती हो को चुनें। चर्चा करें कि चुने हुए धर्मशास्त्र को दैनिक जीवन में कैसे लागू करें। कक्षा सदस्यों को उचित अनुभवों जो कि धार्मिक नियमों से मिलता हो को बांटने दें।

1. इनोस अपने, नफायटियों, और लमनायटियों के लिए प्रार्थना करता है।

इनोस की पुस्तक की चर्चा करें। चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए कक्षा सदस्य को आमन्त्रित करें।

- इनोस अपने साथ सुसमाचार की शिक्षा का श्रेय किसको देता है? (देखें इनोस 1:1) इनोस का पिता कौन था? (देखें याकूब 7:27) बच्चों की शिक्षा "में पोषण और प्रभु की चेतावनी" इसका क्या अर्थ है? (नीचे दिये उदाहरण को देखें।) नेक माता-पिता का उदाहरण और शिक्षा कैसे बच्चों का उद्धारक में विश्वास उत्पन्न करने में सहायता कर सकता है?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने माता-पिका के नेक उदाहरण अपने बच्चों के लिए बनाने की सलाह दी, जैसे इनोस का पिता उसके लिए था: "अपने बच्चों के साथ परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के समान व्यवहार करें। कृपालू रहें। उनसे प्रेम करें। उनका आदर करें। उनके साथ सलाह करें। उनको शिक्षा दें। उनके लिए प्रार्थना करें। उनका मार्गदर्शन करें और परमेश्वर आप दोनों को आशिषित करेगा" (in *Church News,* 1 Nov. 1997, 2)।

- याकूब की शिक्षा ने इनोस को क्या करने का प्रभाव डाला था? (देखें इनोस 1:3–4) इनोस ने प्रभु से अपनी प्रार्थना का वर्णन कैसे किया था? (देखें इनोस 1:2) आपके विचार से क्यों इनोस अपने अनुभव को "कुश्ती" कहता है? उसका क्षमा खोजना हमें पश्चाताप की क्या शिक्षा दे सकता है?

- इनोस को कैसे पता चला की उसके पाप क्षमा हो गये? (देखें इनोस 1:5–6) हमें कैसे पता लगता है कि हमारे पाप क्षमा हुए? (नीचे दिये उदाहरण देखें) इनोस को अपने पापों की क्षमा कैसे संभव हुई? (देखें इनोस 1:7–8) मसीह में विश्वास हमारे पश्चाताप और क्षमा प्राप्ति के लिए क्यों आवश्यक है?

  अध्यक्ष हार्लड बी. ली ने कहा था: "यदि समय आये जब आप अपने पापों का पश्चाताप करने के लिए सब कुछ कर सकते...और अपनी अच्छी योग्यता से प्रतिफल और पुनःस्थापित कर सकते हैं,....तब आप को प्रमाणित उत्तर चाहिए कि प्रभु ने आपको स्वीकार किया है कि नहीं। आपके पश्चाताप काल में, अगर आप अपनी अर्न्तरआत्मा की शान्ति खोज रहें हैं और आप पाते हैं, उस चिन्ह के द्वारा जानते हैं कि प्रभु ने आपका पश्चाताप स्वीकार कर लिया है" (*Stand Ye in Holy Places* [1974], 185)।

- इनोस के जानने के बाद कि उसके पाप क्षमा हो गए, उसने किस के लिए प्रार्थना की थी? (देखें इनोस 1:9, 11–13) इनोस क्यों निश्चित करना चाहता था कि लेख सुरक्षित होंगे? (देखें इनोस 1:13–15)

- इनोस की प्रार्थना के बारे हम क्या सीख सकते हैं?

- इनोस ने अपने समय के नफायटियों का वर्णन एक "हठी लोगों" के रूप में किया जो सिर्फ "घोर कठोरता" और "भय दिलाने वाली बातों" से चलते थे (इनोस 1:22–23)। आप इनोस के समय के नफायटियों और आज के कुछ लोगों के बीच में क्या सामानता देखते हैं?

- इनोस का विश्वास और गवाही का विषय आप पर क्या प्रभाव डालता है? (विशेष रूप से देखें इनोस 1:15–18, 26–27)

2. नफायटी लगातार पश्चाताप के द्वारा सफल होते हैं।

जराम की पुस्तक में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- जराम ने क्या कहा था कि उसका अभिलेख में जोड़ने का क्या उद्देश्य था? (देखें जराम 1:1–12) जराम ने भविष्यवाणियां और प्रकटीकरण जो उसने प्राप्त किये थे को अंकित क्यों नहीं किया था?

- जराम ने अपने लोगों, नफायटियों का कैसे वर्णन किया था? (देखें जराम 1:3–4, अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को भी देखें।) कैसे वे देश में सफल हुए और लमनायटियों पर विजय पाई थी? (देखें जराम 1:5, 7–12)

- नफायटियों की सफलता में भविष्यवक्ताओं, याजकों, और शिक्षकों ने क्या भूमिका निभाई थी? (देखें जराम 1:11–12) "वाणी द्वारा उनका हृदय निस्सन्देह प्रभावित किया" इस का क्या अर्थ है? (जराम 1:12)। कब आप का हृदय भविष्यवक्ता या अन्य गिरजाघर मार्गदर्शक या शिक्षक की वाणी के द्वारा निसन्देह प्रभावित होता है?

- नफायटी मार्गदर्शक लोगों की उसकाते हैं कि "मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करें और विश्वास करें कि वह जैसे मानों अतीत में था" (जराम 1:11; मुसायाह 3:13 भी देखें)। हम कैसे इस सलाह का मान सकते है जब हम उद्धारक के द्वितीय आगमन के लिए तैयारी करते हैं?

3. ओमनी, अमरोन, चेमिस, अविनदोम, और अमलेकी अभिलेख रखते हैं।

ओमनी में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। ध्यान दें कि ओमनी की पुस्तक लगभग 200 सालों का लेखा रखती है और पांच अभिलेखों के लेखक द्वारा लिखी गई थी, तौभी यह सिर्फ 30 आयत लम्बी है।

- यद्यपि ओमनी की पुस्तक के लेखकों ने थोड़ा लिखा था, प्रत्येक लेखक ने पट्टियों को रखने और बचाने की आज्ञा का पालन किया था। अभिलेखों को रखना क्यों महत्वपूर्ण था?

व्याख्या करें कि ओमनी की पुस्तक के दुसरे आधे को अमलेकी द्वारा लिखा गया था, यह दिखाते हुए कि उन लोगों का क्या होता है जो अपने अभिलेखों को बचा कर नहीं रखते हैं अभिलेखों को सुरक्षित रखने की महत्वपूर्णता को प्रदर्शित करें।

- अमलेकी ने मुसायाह और उसके अनुयाइयों की कहानी को अंकित किया था, जिन्हें प्रभु द्वारा नफी की भूमि छोड़ देने की आज्ञा मिली थी। मुसायाह और उसके अनुयाई कहां को गये थे? (देखें ओमनी 1:13) ज़राहेमला की भुमि में उन्होंने किसे पाया था? (देखें ओमनी 1:14) यह लोग कहां से आये थे? (देखें ओमनी 1:15–16; 1 नफी 1:4 भी देखें, जिसमें व्याख्या है कि सिदकियाह यरूशलेम का राजा उस समय था जब कि लेही और उसका परिवार वीरानभूमि में चले गये थे।)

- ज़रोहेमला के लोग (मलाकायटी) मुसायाह और उसके अनुयाइयों को देख का बहुत आनन्दित क्यों थे? (देखें ओमनी 1:14) अमलेकी के क्या परिणाम सुझाव मलकायटियों को मिले क्योंकि जब उन्होंने यरूशलेम छोड़ा था वे कोई अभिलेख नहीं लाये थे? (देखें ओमनी 1:17। उनकी भाषा भ्रष्ट हो गई और उनका यीशु मसीह और उसकी शिक्षा का ज्ञान खो गया था।) हम पर कैसा प्रभाव पड़ेगा अगर हमारे पास धर्मशास्त्र नहीं होते? (देखें मुसायाह 1:3:5) हम पर कैसा प्रभाव होगा जब हमारे पास धर्मशास्त्र हों परन्तु हम उसका अध्ययन न करें?

व्याख्या करें कि मलकायटियों द्वारा रखे गए पत्थर पर खुदी लिपि का अनुवाद करने के द्वारा मुसायाह ने अन्य सभ्यता सीखी थी, यारदाई, जोकि प्रदेश में रहते थे (ओमनी 1:20–22)। यारदाई बाबूल की मीनार के समय देशान्तरगमन से आये थे। कोरण्टमूर, यारद राष्ट्र का अन्तिम उत्तरजीवि, मलकायटियों के समय के साथ तक जीया था। ध्यान दें कि यारदाइयों का अभिलेख एथर की पुस्तक में संक्षेप में है, और उसकी आने वाले पाठ में चर्चा की जायेगी।

- ओमनी 1:25–26 में से अमलेकी के बारे में हम क्या सीख सकते हैं? हम कैसे (अपनी) पूरी आत्मा उद्धारक को भेंट कर सकते हैं, जैसे अमलेकी ने सलाह दी थी?)

4. मॉरमन अपनी बड़ी पट्टियों में नफी की छोटी पट्टियों को संक्षेप से जोड़ता है।

मॉरमन की वाणी में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। ध्यान दें कि 1 नफी से लेकर ओमनी तक, मॉरमन की पुस्तक में सीधे कालक्रम के अनुसार लेखा रखा है। मॉरमन की वाणी, तथापि, अमलेकी द्वारा ओमनी पुस्तक को पूरा करने के 500 वर्षों से ज्यादा लिखी गई थी। अगर आप मॉरमन के पट्टियों को संक्षिप्त करते हुए का चित्र उपयोग कर रहे हैं, तो इसे अभी दिखाएं।

- मॉरमन में कब मॉरमन की वाणी लिखी थी, और क्यों? (देखें मॉरमन की वाणी 1:1–5)

  व्याख्या करें कि मॉरमन नफी की बड़ी पट्टियों को संक्षेप करने के पश्चात, उसने नफी की छोटी पट्टियों को पाया था और अपने अभिलेख में सम्मिलित किया था (मॉरमन की वाणी 1:3–5)। मॉरमन की पुस्तक की प्रथम छः पुस्तकें, 1 नफी से लेकर ओमनी तक, यह छोटी पट्टियों का एक अनुवाद है। पुस्तक का शीर्षक मॉरमन की वाणी मॉरमन की व्याख्या है कि क्यों उसने छोटी पट्टियों को सम्मिलित किया। यह छोटी पट्टियों में से अभिलेख और बड़ी पट्टियों से अभिलेख के बीच परिवर्तन के रूप में सेवा करता है।

- मॉरमन का छोटी पट्टियों पर क्या प्रभाव था? (देखें मॉरमन की वाणी 1:4, 6) उसने छोटी पट्टियों को अपने अभिलेख में शामिल करने का निर्णय क्यों लिया था? (देखें मॉरमन की वाणी 1:7) “विवेकमय उद्देश्य” क्या था जिसका मॉरमन ने संदर्भ किया था?

अभिलेखों का चार्ट दिखाएं जिस में कि मॉरमन और मरोनी संक्षेप और संग्रह करते हैं (देखें;"तैयारी," विषय 4)। ध्यान दें पुस्तक जिसकी चार्ट पर सूची नहीं है (मॉरमन की वाणी, मॉरमन, और मरोनी) मॉरमन और मरोनी द्वारा लिखी गई थी।

व्याख्या करें कि नफी की छोटी पट्टियों लगभग वही समय काल तय करती है (600 से 200 ई. पू.।) जैसे बड़ी पट्टियां का प्रथम अभिलेख इसमें मॉरमन को प्रत्यक्ष ज़रूरत नहीं है अपने दोनों सार सम्मिलित करने की। परन्तु प्रभु जानते थे कि बड़ी पट्टियों में से प्रथम अभिलेख अन्तिम शताब्दी में खो जायेंगे, जब मार्टिन हेरिस मॉरमन की पुस्तक की हस्तलिपि के 116 पृष्ठ अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों को दिखाने ले जायेगा। इस अनुवाद के 116 पृष्ठ खो जाने के पश्चात, प्रभु ने जोसफ स्मिथ को उसी अभिलेख को दुबारा अनुवाद न करने का निर्देश दिया था (देखें सि. और अनु. 10:8–14)। ये अभिलेख आज की मॉरमन की पुस्तक में पाये नहीं जाते हैं। बदले में, उसी समयकाल का वर्णन छोटी पट्टियों के लेख में से लिया गया।

- मॉरमन ने पूरे पवित्र अभिलेख का उद्देश्य क्या कहा था जिसे उसने संक्षेप किया था? (देखें मॉरमन की वाणी 1:2, 8; मॉरमन की पुस्तक का शीर्षक पृष्ठ भी देखें।) यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम मॉरमन की पुस्तक इस उद्देश्य को दिमाग में रखकर पढ़ें?

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को याद दिलाये कि मॉरमन की पुस्तक के लेखक ने अपने लोगों का अभिलेख बचा कर रखा था ताकि आने वाली पट्टियां प्रभु की उसके लोगों के साथ आचरण को जानेंगे। कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि उन्हें मार्गदर्शन मिल सकें और प्रभु के वचन उसमें जो हैं के द्वारा निर्देशन पा सकें।

जब आत्मा के द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

आत्मा के उत्साह को महसूस करना

कक्षा के सदस्य को जराम 1:3 ज़ोर से पढ़ने को कहें।

- जराम ने वो चार परिस्थितियां क्या बताई थी जो हमें आत्मा के उत्साह को महसूस करने से दूर रखती हैं? (एक कठोर हृदय, बहरे कान, एक अंधा दिमाग, और अकड़।)

कक्षा के सदस्यों के साथ चर्चा करें कि ये चार प्रतीक परिस्थितियां क्या प्रतिनिधित्व करती हैं और कैसे हमें आत्मा के उत्साह को महसूस करने से दूर रखती हैं?

- क्या आशीषें मिलती है उनको जो इन परिस्थितियों का त्याग करते हैं? (देखें जराम 1:4)

पाठ 15

"अपने स्वर्गीय पिता के अनन्त ऋणी होंगे"

मुसायाह 1–3

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों के उनके परमेश्वर से ऋणी होने की समझ को बढ़ाता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है "स्वाभाविक मानव को दूर रखने के लिए... प्रभु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा" (मुसायाह 3:19)।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्र के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 1। राजा बिन्यामिन पीतल की पट्टियों में लिखी सच्चाई के महत्व से अपने बच्चों को शिक्षा देता है। वह अपने पुत्र मुसायाह को अपने बदले राजा चुनता है और मुसायाह को लोगों को एकत्रित करने का आदेश देता है।

   ख. मुसायाह 2। राजा बिन्यामिन लोगों को शिक्षा देता है कि जब वे दूसरों की सेवा करते हैं वे परमेश्वर की सेवा में होते हैं। वह उन्हें याद कराता है कि वे अपने "स्वर्गीय पिता के ऋणी हैं, [उनके] पास जो कुछ भी है उसे दे दो।"

   ग. मुसायाह 3। राजा बिन्यामिन यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित के बारे में एक स्वर्गदूत की भविष्यवाणी को दोहराता है।

2. अगर निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध हो, उन्हें पाठ के दौरान प्रयोग करने की तैयारी करें:

   क. राजा बिन्यामिन का चित्र (62298; सुसमाचार कला चित्र किट 307)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसे उचित हो, निम्नलिखित या अपनी स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करके पाठ को आरम्भ करें।

1. कक्षा के सदस्यों को इस पाठ निदेर्शिका के मुख पृष्ठ में दिये गए चित्र देखने को आमन्त्रित करें। बताएं कि कक्षा के सदस्य अध्ययन निदेर्शिका के मुख पृष्ठ पर वही चित्र है। तब निम्नलिखित जानकारी को बांटें:

क. मॉरमन की पुस्तक में 238 अध्याय हैं।
ख. सिर्फ उन 50 (लगभग 21 प्रतिशत) अध्यायों में उन घटनाओं का लेख है जो यीशु के जन्म के बाद घटी थीं।
ग. सिर्फ उन 18 (लगभग 8 प्रतिशत) अध्यायों में नफायटी लोगों में यीशु के दौरे का लेखा है।

कक्षा के सदस्यों को शान्ति से विचार करने को कहें कि कैसे वे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देंगे:

- आपके विचार से इस चित्र को हमारी मॉरमन की पुस्तक के अध्ययन का प्रतिनिधित्व करने के लिए क्यों चुना गया था?

कक्षा का एक सदस्य मुसायाह 3:13 ज़ोर से पढ़े। जोर दें कि मॉरमन की पुस्तक में यीशु मसीह केन्द्रीय बिन्दु है। उसका प्रायश्चित उन लोगों पर उसी तरह से लागू होता है जो उसके नश्वर सेवा के पहले जीवित थे, जितना कि यह उन पर लागू होता है जो उसकी नश्वर सेवा के दौरान जीवित थे और आज यह उसी तरह हम पर भी लागू होता है। बताएं कि आज का पाठ और अगले हफ्ते का पाठ राजा बिन्यामिन, एक भविष्यवक्ता-मार्गदर्शक के शब्दों पर केन्द्रीत है जिसने अपने लोगों की यीशु मसीह में उसके नश्वर सेवकाई और प्रायश्चित के हजारो सालों पहले विश्वास का उपयोग करने में सहायता की थी।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंश, प्रश्न और अन्य पाठय सामग्री चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से अच्छे से मेल रखती हों। जब आप पाठ की तैयार करते हैं और इसे प्रस्तुत करते हैं, ध्यान से मुसायाह 3 पर चर्चा का पर्याप्त समय दें, जिसमें यीशु मसीह के प्रायश्चित की शक्ति शाली शिक्षाओं के बारे में है।

1. राजा बिन्यामिन अपने पुत्रों को शिक्षा देता है और मुसायाह को लोगों को एकत्रित होने के लिए बुलाने को कहता है।

मुसायाह 1 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

- मुसायाह की पुस्तक के अन्तर्गत, बिन्यामिन के प्रथम उल्लेख में राजा के रूप में उसके शासन के बारे में नहीं बल्कि एक पिता के रूप में उसकी शिक्षाओं के बारे में है (मुसायाह 1:2–8)। यह राजा बिन्यामिन के बारे में क्या शिक्षा देता है? इस उदाहरण से माता-पिता क्या सीख सकते हैं?

- राजा बिन्यामिन ने अपने पुत्रों को क्या शिक्षा दी थी? (देखें मुसायाह 1:2–7। ध्यान दें कि आयत 3 और 5 शब्द *रहस्य* आत्मिक सच्चाई को संदर्भ करता है जो सिर्फ प्रकटीकरण के द्वारा ही जाना जाता है।) नफायटी, जो धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते थे, और लमनायटी जो नहीं करते थे के बीच क्या अन्तर था? (देखें मुसायाह 1:5) आप आधुनिक समाज में इस अन्तर का कैसे प्रतिबिंब देखते हैं? कैसे माता-पिता अपने बच्चों में धर्मशास्त्रों के प्रति प्रेम उत्पन्न कर सकते हैं?

- राजा बिन्यामिन "[मुसायाह] को पीतल की पट्टियों पर...अभिलेखों के बारे में अधिकार देता है" (मुसायाह 1:16)। यह देखने के लिए कि धर्मशास्त्र "सुरक्षित रखा" गया है प्रभु ने आज के भविष्यवक्ताओं, दिव्यदर्शियों, और प्रकटकर्ताओं को आदेश दिया है (देखें सि. और अनु. 42:56)। यह क्यों ज़रूरी है कि धर्मशास्त्रों को "सुरक्षित रखा जाए"? (देखें मुसायाह 1:3–5)

- राजा बिन्यामिन ने अपने पुत्र मुसायाह को लोगों को एकत्रित करने को क्यों कहा था? (देखें मुसायाह 1:10–12। ध्यान दें कि नाम जिसका राजा बिन्यामिन ने संदर्भ किया था वह मसीह का नाम था। अपनी वार्ता के अन्त में, राजा बिन्यामिन ने लोगों को मसीह के नाम को अपने ऊपर लेने की शिक्षा दी थी। आप इस शिक्षा को पाठ 16 के भाग में चर्चा करेंगे।)

2. राजा बिन्यामिन लोगों को परमेश्वर से उनके अनन्त ऋणी होने की शिक्षा देता है।

मुसायाह 2 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- लोगों ने अपने आप को कैसे पहचाना जब वे मन्दिर में राजा बिन्यामिन को सुनने आये थे? (देखें मुसायाह 2:5–6; प्रथम अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को भी देखें।) राजा बिन्यामिन ने क्या किया जब उसने देखा कि सभी लोग उसके शब्दों को सुन नहीं सकते? (देखें मुसायाह 2:7–8) अगर आप राजा बिन्यामिन का चित्र का प्रयोग कर रहे हैं, तो उसे अभी दिखाएं।) यह एकत्रित होना कैसे आज के जनरल सम्मेलन के समान है?

- राजा बिन्यामिन ने लोगों को बतलाया था कि उसने उन्हें आज्ञा नहीं दी थी कि वे एकत्रित होकर उसके शब्दों का तिरस्कार करें (मुसायाह 2:9; ध्यान दें कि किसी के शब्दों का तिरस्कार करना उसके शब्दों को हल्के रूप से लेना होता है)। उसने उन्हें उसकी शिक्षा को सुनने और वैसा करने की सलाह क्यों दी थी? (देखें मुसायाह 2:9) इसका क्या अर्थ है कि अपने कान, हृदय, और दिमाग जीवित भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं के लिए खुला रखें?

- आप पर क्या प्रभाव पड़ता है जिस तरह से बिन्यामिन ने राजा के रूप में सेवा की थी? (देखें मुसायाह 2:10–16) राजा बिन्यामिन का मार्गदर्शन उसके लोगों पर क्या प्रभाव डालता था? (देखें मुसायाह 1:1; 6:7)

- राजा बिन्यामिन ने सेवा के विषय में क्या शिक्षा दी थी? (देखें मुसायाह 2:17–19) हमारी दुसरों के प्रति सेवा कैसे परमेश्वर के प्रति हमारा आभार व्यक्त करती है? किस तरह की सेवा अन्यों को [उनके] स्वर्गीय राजा को

"धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करती है"? (ऐसे उदाहरण के लिए, देखें मुसायाह 18:8–10; सि. और अनु. 18:10–16)

- कक्षा के एक सदस्य को मुसायाह 2:20–21 ज़ोर से पढ़ें। एक निरर्थक सेवक होने का क्या अर्थ है? हम क्यों परमेश्वर के निरर्थक सेवक हैं यहां तक हम उसकी उपासना और सेवा अपनी पूरी आत्मा के साथ करते हैं? (देखें मुसायाह 2:22–25; नीचे दिये गये उदाहरण और अतिरिक्त शिक्षा सुझाव भी देखें।) यह हमें हमारे लिए स्वर्गीय पिता के प्रेम के बारे क्या शिक्षा देता है?

  अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने कहा था: "क्या आप सोचते हैं कि हम में से किस के लिए यह संभव होगा, कोई बात नहीं हम कितना भी कड़ा परिश्रम करें,...हमारे पिता और यीशु मसीह की आशीषों के लिए मुल्य चुकाने का, जो हमें उनसे मिली है? महान प्रेम, उसकी आशीषों के साथ, सूली पर चढ़ाने के द्वारा हमारे अवसर तक पीड़ा, यीशु मसीह का पुनः जीवित होना हमारे नश्वर ज्ञान से परे है। हम कभी भी भुगतान नहीं कर सकते हैं" (in Conference Report, Apr. 1966, 102; or *Improvement Era,* June 1966, 538)।

- निरर्थक सेवक के समान, हम [हमारे] "स्वर्गीय पिता के अनन्त ऋणी हैं, और [हमारे] पास जो कुछ है, और रहेगा उसे दें" (मुसायाह 2:34) । हम कैसे यह कर सकते हैं? (देखें मुसायाह 2:17, 22; 4:10) स्वर्गीय पिता हमें क्या देंगे जब हम उन्हें "[हमारे] पास जो कुछ है" देंगे? (देखें मुसायाह 2:22, 41; सि. और अनु. 84:38 भी देखें।)

- आज्ञाओं के पालन को अस्वीकार करना और उनके सीखाएं जाने के बाद क्या परिणाम होंगे? (देखें मुसायाह 2:36–39) राजा बिन्यामिन के अनुसार, पीड़ा का कारण क्या था जैसे कि न बुझने वाली आग हो? (देखें मुसायाह 2:38; मुसायाह 3:23–27 भी देखें।)

3. राजा बिन्यामिन यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित के बारे में एक स्वर्गदूत की भविष्यवाणियां को दोहराता है।

मुसायाह 3 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि उसके लोगों को भाषण से पहले, राजा बिन्यामिन की एक स्वर्गदूत द्वारा भेंट हुई जिसने "यह घोषणा की थी कि तुम आनन्द मनाओं" (मुसायाह 3:1–4)। मुसायाह 3 में स्वर्गदूत का संदेश है।

- कक्षा का एक सदस्य मुसायाह 3:5–10 ज़ोर से पढ़े। यीशु ने क्यों लालच, दर्द, भुख, प्यास, और थकान झेला था? (देखें अलमा 7:11–12) उसने क्यों शारीरिक अथवा मानसिक तीव्र वेदना लोगों की दुष्टता के लिए झेली थी? (नीचे दिये गये उदाहरण इस प्रश्न के उत्तर के अथवा निम्नलिखित तीन प्रश्नों के लिए देखें।) यह जानना क्यों महत्वपूर्ण है कि वह परमेश्वर और मरियम का पुत्र था? उसने अपना जीवन क्यों दिया था? किस तरह से यह एक संदेश "महान आनन्द" देता है? (मुसायाह 3:3)।

  एल्डर रोबर्ट डी. हेल्स ने कहा था: "हमें उद्धारक के बारे में क्या याद करना है कि उसके और उसके अकेले के पास ही अपनी जिन्दगी लेने और फिर से जी उठने की शक्ति थी। उसमें अपनी नश्वर माता मरियम में से मरने की योग्यता थी, और अपने अमर पिता में से मृत्यु पर विजय पाने की योग्यता थी। हमारा उद्धारक यीशु मसीह, इच्छानुसार और विचारपूर्वक अपनी मुत्यु में गया था, अपने अनुयाइयों को बतला कर कि ऐसा होगा। क्यों? कोई पूछ सकता है। उत्तरः अमरत्व सभी मानवजाति को देने के लिए और उन्हें अनन्त जीवन को वादा करने के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं (देखें यूहन्ना 3:15), अपने खुद के प्राण बहुतों को फिरौती के रूप में देने के लिए (देखें मत्ती 20:28), शैतान की शक्ति पर विजय पाने के लिए, और पापों की क्षमा को संभव बनाने के लिए। यीशु के प्रायश्चित के बिना, एक रूकावट परमेश्वर तथा नश्वर आदमी और औरत के बीच हो। जब हम प्रायश्चित समझते हैं, हम उसे श्रद्धायुक्त भय से और आभार के साथ याद करते हैं" (in Conference Report, Oct. 1997, 34; or *Ensign,* Nov. 1997, 26)।

- स्वर्गदूत के अनुसार, यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा कौन उद्धार पायेंगे? (नीचे दी गई सूची देखें।) यह प्रायश्चित शक्ति कैसे दर्शाती और आश्वासन देती है "कि जिससे मानव-वंश में धार्मिक न्याय आ सके"? (मुसायाह 3:10)।

  क. लोग "जो बिना अपने विषय में परमेश्वर की इच्छा जाने ही मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं; अथवा अनजाने में पाप कर बैठे हैं" (मुसायाह 3:11; ध्यान दें कि सिद्धान्त और अनुबंध 137:7–9 में से हम सीखते हैं कि लोग जो सुसमाचार के ज्ञान के बिना ही मर गये थे परन्तु जिन्होंने सुसमाचार को अपने पूरे हृदय से प्राप्त किया होता सिलेस्टियल राज्य के वारिस होंगे)।

  ख. सुसमाचार के ज्ञान के साथ लोग जो पश्चाताप करते और यीशु मसीह में विश्वास बनाये रखते हैं (मुसायाह 3:12–13)।

  ग. छोटे बच्चे जो अपनी शिशु अवस्था में मरते हैं (मुसायाह 3:16, 18, 21; सि. और अनु. 137:10 भी देखें)।

- छोटे बच्चे "परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष" क्यों होते हैं? (देखें मुसायाह 3:16, 21; मरोनी 8:12; सि. और अनु. 29:46। यद्यपि "प्रकृति द्वारा, उनका पतन हो," वे "परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष" होंगे क्योंकि वे "मसीह में जीवित हैं" प्रायश्चित द्वारा।)

- स्वर्गदूत ने कहा कि "स्वभाविक आदमी परमेश्वर का शत्रु है" (मुसायाह 3:19)। "स्वभाविक आदमी" के मुहावरे का क्या अर्थ है? (अलमा 42:6–10 और नीचे उदाहरण देखें।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा था: "आदम के पत्तन के बाद, मनुष्य सांसारिक विषय-वासनाओं में, इन्द्रिय लिप्सा में लीन होने से शैतानी स्वभाव के हो गए, वह *पत्तन* मनुष्य बन गया...पृथ्वी पर सारे उत्तरदायी मनुष्य इस पत्तन स्थिति, इस परीक्षाकाल की अवस्था, यह स्थिति जिसमें सांसारिक बातें दुनियावी विषय वासनाओं प्रकृति की इच्छुक नजर आती है के वारिस बन जाते हैं। इस स्थिति में रहने से, "स्वभाविक आदमी परमेश्वर का शत्रु है," जब तक वह उद्धार की महान योजना के अनुरूप और दुबारा नेकता में जन्मा है। (मुसायाह 3:19) तथापि पूरी मानवजाति निरन्तर नष्ट रहती और हमेशा पत्तन में हमारे प्रभु के प्रायश्चित में नहीं। (अलमा 42:4–14)" (Mormon Doctrine, 2nd ed. [1966], 267–68)।

- हम कैसे "स्वभाविक आदमी" को दूर रख सकते हैं? (देखें मुसायाह 3:19। नीचे दिये गये उत्तरों की चर्चा करें।)

  क. सुनो और अनुसरण करो "पवित्रात्मा के प्रलोभन को"। यह हमारी कैसे सहायता करेगा "स्वभाविक आदमी को दूर रखने में"? (देखें 2 नफी 32:5; मुसायाह 5:2; 3 नफी 28:11)

  ख. "प्रभु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा एक सन्त" बने। एक सच्चा सन्त बनना इसका अर्थ क्या है? (आप केन्द्रीत कर सकते हैं कि शब्द सन्त पवित्र करने या शुद्धता के अर्थ को प्रकट करता है। मॉरमन की पुस्तक में, यह शब्द प्रभु के गिरजाघर के निष्ठावान सदस्यों को संदर्भ करता है। उदाहरण के लिए, देखें, 1 नफी 14:12 और 2 नफी 9:18 में शब्द सन्तों का उपयोग हुआ है।) प्रायश्चित हमें सच्चे सन्त बनने में कैसे सहायता करता है?

  ग. "एक बच्चे जैसा" बनें। हम कैसे "मसीह में जीवित," रह सकते हैं एक बच्चे की नाई? (देखें मुसायाह 3:17–19, 21; 2 नफी 25:23–26 भी देखें; मरोनी 8:10)

- कहां पर स्वर्गदूत ने कहा है कि उद्धारक का ज्ञान फैलेगा? (देखें मरोनी 3:20) यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई? कैसे यह लगातार पूरी होती रहेगी?

निष्कर्ष

यदि आप ने अभी तक नहीं किया है, तो पाठ के भाग के रूप में, कक्षा के एक सदस्य को मुसायाह 3:19 ज़ोर से पढ़ने को कहें।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री की शेषपूर्ति प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा में करें। आप एक या दोनों का प्रयोग पाठ के सुझाव के रूप में कर सकते हैं।

1. "उन्होंने अपने तम्बुओं को...मन्दिर की ओर खड़ा किया" (मुसायाह 2:6)

जब लोग राजा बिन्यामिन का भाषण सुनने गये, "उन्होंने अपने अपने तम्बुओं को मन्दिर के चारों ओर खड़ा किया, और हर एक व्यक्ति ने अपने तम्बू का द्वार मन्दिर की ओर किया" (मुसायाह 2:6)। इन लोगों को लोट के साथ अन्तर करें, जिसने"अपना तम्बू सदोम की ओर खड़ा किया था" (उत्पत्ति 13:12)। बताएं कि लोट पहले सिर्फ दुष्टता के शहर सदोम के निकट रहता था, परन्तु अन्त में वह और उसका परिवार सदोम शहर में रहने लगे (उत्पत्ति 14:12)।

- हम क्या कार्य कर सकते हैं कि अपने तम्बू सदोम की ओर अनुरूप खड़ा करें? हम क्या चीज़ें कर सकते हैं कि अपना तम्बू मन्दिर की ओर के अनुरूप खड़ा करें? हम अपने घर कैसे अधिक मन्दिर की ओर करें ना कि सांसारिक स्थानों की ओर?

2. "अनन्त ऋणी" (मुसायाह 2:34)

एक तराजू चॉकबोर्ड पर बनाएं, जैसे नीचे दर्शाया गया है:

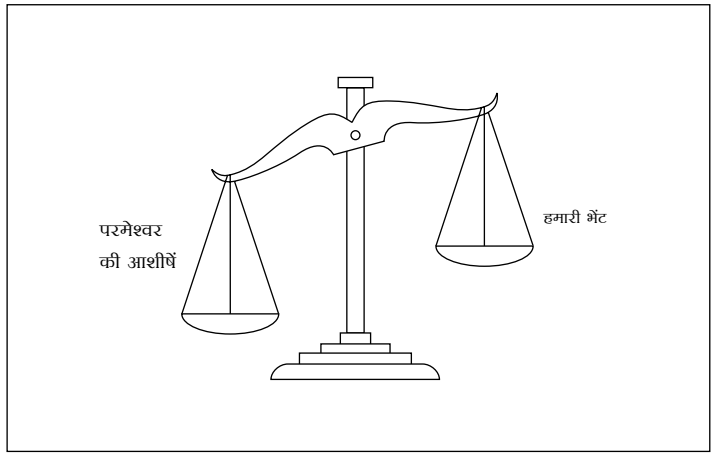

- क्यों यह तराजू एक समान नहीं है?

कक्षा के सदस्य मुसायाह 2:20–25 ज़ोर से पढ़ें। जैसे वे पढ़ते हैं, उन्हें उन भेंटो को जो हम प्रभु को दे सकते हैं और और उन आशीषों को देखने के लिए जो वह हमें देता है। तराजू के एक तरफ जहां *हमारी भेंटे* लिखा है वहां हमारी भेंटों की सूची बनाएं। तराजू की दूसरी तरफ जहां *परमेश्वर की आशीषों* लिखा है वहां परमेश्वर की आशीषों की सूची बनाएं। कक्षा के सदस्यों को जानने में सहायता करें कि हम हमेशा परमेश्वर के ऋणी रहेंगे।

“तुम मसीह की सन्तान कहलाओगे”

पाठ 16

मुसायाह 4–6

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को खोजने और हृदय के “महान बदलाव” को कायम रखने के लिए प्रोत्साहन दें जो कि यीशु मसीह में लगातार विश्वास द्वारा आता है।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 4:1–12। राजा बिन्यामिन के लोग उसके शब्दों के द्वारा नम्रता से अपने पापों की क्षमा प्राप्ति खोजते हैं।

   ख. मुसायाह 4:13–30। राजा बिन्यामिन अपने बच्चों को सुसमाचार सीखाने, जिनके पास कुछ नहीं है उनको देने और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की सलाह देता है।

   ग. मुसायाह 5–6 । राजा बिन्यामिन के सारे लोगों एक महान बदलाव का अनुभव करते हैं और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए और सारी बातों में उसकी इच्छा करने के लिए एक अनुबंध में प्रवेश करते हैं। राजा बिन्यामिन लोगों से कहता है कि क्योंकि उनको जो अनुबन्धित है मसीह की सन्तान कहा जाएगा।

2. यदि राजा बिन्यामिन का चित्र उपलब्ध है, उसे पाठ के दौरान प्रयोग करने के लिए तैयारी करें (62298; सुसमाचार कला चित्र किट 307)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

निम्नलिखित रूपरेखा को चॉकबोर्ड पर लिखें:

परमेश्वर का बांया हाथ *परमेश्वर का दांया हाथ*

- परमेश्वर के दांए हाथ में बैठने का क्या अर्थ है? (उत्कर्ष प्राप्त करना और परमेश्वर के साथ दुबारा रहना।) परमेश्वर के बांए हाथ पर बैठने वाले किस तरह के लोग होंगे? परमेश्वर के बांए हाथ पर? (देखें मत्ती 25:33–46; सि. और अनु. 29:27। उचित रूपरेखा के अर्न्तगत कक्षा के सदस्यों के इन दो प्रश्नों के उत्तर की सूची चॉकबोर्ड पर बनाएं।)

व्याख्या करें कि अपने संदेश के अन्त में, राजा बिन्यामिन ने अपने लोगों से कहा था कि उन्हें परमेश्वर के दांए हाथ में बैठने के लिए क्या करने की ज़रूरत है। हम राजा बिन्यामिन के शब्दों से सीख सकते हैं क्योंकि हमारे लिए ज़रूरते एक जैसी हैं।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा सदस्यों की आवश्यकताओं से मेल खाती है। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू करें। कक्षा के सदस्यों के उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से जुड़े हों।

1. राजा बिन्यामिन के लोग अपने पापों की क्षमा को खोजते हैं और प्राप्त करते हैं।

मुसायाह 4:1–12 पढ़ें और चर्चा करें। अगर आप राजा बिन्यामिन का चित्र प्रयोग कर रहे हैं, इसे पाठ के दौरान दिखाएं।

- राजा बिन्यामिन के अपने लोगों को उद्धराक के उद्देश्य के विषय में सीखाने के बाद (देखें पाठ 15), उसने देखा कि "वे धरती पर गिर गए थे?"(मुसायाह 4:1)। लोग धरती पर क्यों गिर पड़े थे? (देखें मुसायाह 4:1–2) हम किस तरह "धरती की धुल से भी कम हैं"? (देखें इलामन 12:4–8; मूसा 1:9–10) आपके विचार से क्यों राजा बिन्यामिन ने अपने लोगों के "आभाव" और अयोग्यता पर ज़ोर दिया था? (देखें मुसायाह 4:5–8, 11–12।) हमारे लिए यह जानना क्यों आवश्यक है कि हम प्रभु पर निर्भर हैं?
- उनके "वासनाओं में लिप्त" की समझ राजा बिन्यामिन के लोगों को क्या करने की ओर ले गई थी? (देखें मुसायाह 4:2) उनके "आनन्द से भर उठने" का क्या कारण था? (देखें मुसायाह 4:3) उनके पापों की क्षमा के लिए क्या उन्हें सामर्थ्य देता है? उन्होंने कैसे जाना था कि उनके पाप क्षमा हो गए थे? हम कैसे जान सकते हैं कि हमारे पश्चाताप के बाद हमें क्षमा मिल गई है? (इस प्रश्न के उत्तर की सहायता के लिए, आप अध्यक्ष हैरॉल्ड बी. ली के बयान को संदर्भ कर सकते हैं देखें पृष्ठ (63)
- राजा बिन्यामिन ने किस बारे में शिक्षा दी थी कि कैसे हम अपने पापों की क्षमा ले सकते हैं? (देखें मुसायाह 4:9–10) उसने हमें किस बारे में शिक्षा दी थी कि हम अपने पापों की क्षमा को सदैव प्राप्त करें? (देखें मुसायाह 4:11–12, 26) अपने पापों की क्षमा सदैव प्राप्त करने का क्या अर्थ है?
- अपने लोगों राजा बिन्यामिन के शब्द कैसे हमें आशा दे सकते हैं जब हम अपनी कमजोरियों के द्वारा निराश होते हैं?

2. राजा बिन्यामिन अपने लोगों को शिक्षा देता है कि कैसे मसीह समान जीवन जीयें।

मुसायाह 4:13–30 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। आप कक्षा के सदस्यों को तीन समूह में विभाजित करके यह चर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रत्येक समूह को नीचे दिये धर्मशास्त्र अंश नियुक्त करें, और उन्हें एक साथ पढ़ने के लिए कहें और उसको एक अकेले वाक्य में संक्षेप करने दें। प्रत्येक संदर्भ के बाद एक संभव संक्षिप्त वाक्य दिया गया है; कक्षा के सदस्यों को वैसा का वैसा बयान प्रयोग करने की ज़रूरत नहीं है।)

समूह 1: मुसायाह 4:13–15 (बच्चों को शिक्षा दें।)
समूह 2: मुसायाह 4:16–26 (गरीबों के साथ बांटें।)
समूह 3: मुसायाह 4:27–30 (अपने विचारों, शब्दों, और कार्यो पर नजर रखें।)

जब तीनों समूह पढ़ना और संक्षिप्त करना समाप्त कर चुके हों, चॉकबोर्ड पर शीर्षक *राजा बिन्यामिन की सलाह* लिखें। प्रत्येक समूह में से हर व्यक्ति चॉकबोर्ड पर इस शीर्षक के अर्न्तगत समूह का सारांश वाक्य लिखे।

- राजा बिन्यामिन के अनुसार, माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति क्या कर्त्तव्य है? (देखें मुसायाह 4:14–15) संसार में आज कौनसी परिस्थितियां राजा बिन्यामिन की सलाह को माता-पिताओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनाती हैं? यह क्यों इतना महत्वपूर्ण है कि माता-पिता अपने बच्चों को सुसमाचार की शिक्षा दें?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था, "किसी भी समाज का स्वास्थ्य, उसके लोगों का आनन्द, उसका वैभव, और उनकी शान्ति सभी उनकी जड़ों में पाई गई माता और पिता द्वारा बच्चों को शिक्षा में है" (in Conference Report, Oct. 1993, 79; or *Ensign,* Nov. 1993, 60)।
- हम कैसे बच्चों को एक दुसरे से प्रेम और सेवा करने की शिक्षा दे सकते हैं? (युवा के शिक्षक चर्चा करना चाहें कि से कक्षा के सदस्यों के उदाहरण युवा बच्चों पर कैसे प्रभाव डाल सकते हैं।)

- राजा बिन्यामिन ने अपने लोगों को ज़रूरतमन्दों की देखभाल करने का भी निर्देशन दिया था (मुसायाह 4:16)। राजा बिन्यामिन के अनुसार, क्यों कुछ लोग ज़रूरतमन्दों की सहायता के लिए मना करते हैं? (देखें मुसायाह 4:17, 22) अगर हमारे पास ऐसा स्वभाव है तो हमारे पास क्यों "पश्चाताप करने का महान कारण" है? (देखें मुसायाह 4:18–23) किस तरह से हम सब भिखारी हैं? (देखें मुसायाह 4:19–20)

- दानशील सेवा मसीह के गिरजाघर के सदस्यों का एक महत्वपूर्ण चरित्र क्यों है?

- हम स्वर्गीय पिता के उदाहरण पर कैसे चलते हैं जब हम ज़रूरतमन्दों को देते हैं? (देखें मुसायाह 4:16, 20–21) हम कैसे निश्चित करते हैं कि जब हम ज़रूरतमन्दों को देते हैं, हम सही तरह से सही सहयोग देते हैं?

  आप व्याख्या करना चाहेंगे कि यहां ज़रूरतमन्दों की सहायता का कोई सही मूल्य नहीं है। हमें राजा बिन्यामिन के सीखाये नियमों को याद रखना चाहिए और प्रत्येक परिस्थिति में आत्मा का मार्गदर्शन खोजना चाहिए। आप यह भी बताना चाहें कि प्रभु ने रास्ते तैयार किये हैं जिससे हम ज़रूरतमन्दों की सहायता कर सकें। जब हम गिरजाघर को उपवास की भेंटें या पैसे, समान, समय, या अन्य सेवा देते हैं, हम भरोसा रख सकते हैं कि हमारा योगदान अच्छे से इस्तेमाल होगा।

- राजा बिन्यामिन ने गरीबों को जो अपनी चीज़ें नहीं दे सकते थे क्या सलाह दी थी? (देखें मुसायाह 4:24–25) अपनी वित्तिय स्थिति की परवाह किये बिना हम कैसे एक उदार हृदय विकसित कर सकते हैं?

- आपके विचार से अन्यों की सेवा करना क्यों हमारी हमारे पापों की क्षमा को बचाये रखने में सहायता करता है? (देखें मुसायाह 4:26)

- कक्षा के एक सदस्य मुसायाह 4:27 ज़ोर से पढ़ें। सारी चीज़ें "बुद्धि और क्रम" में करने का क्या अर्थ है? इस सलाह से कैसे आपकी सहायता हो सकती है?

- राजा बिन्यामिन ने अपने लोगों को शिक्षा दी थी कि पाप से दूर रहो और परमेश्वर से अपनी वचनबद्धता को बनाए रखो, उन्हें अपने विचारों, वाणी, और कर्म पर ध्यान देना चाहिए (मुसायाह 4:29–30)। आपके विचार, वाणी, और कर्म आपस में कैसे जुड़ते हैं? हमारे शब्दों और कर्म पर कैसा प्रभाव पड़ेगा जब हम अपने विचारों पर ध्यान देंगे?

3. राजा बिन्यामिन के लोग महान बदलाव का अनुभव करते हैं और सभी बातों में परमेश्वर की इच्छा करने का अनुबंध करते हैं।

मुसायाह 5–6 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें।

- लोग कैसे जानते थे कि राजा बिन्यामिन की वाणी सच्ची थी? (देखें मुसायाह 5:2) प्रभु की आत्मा का प्रभाव लोगों पर क्या था? (देखें मुसायाह 5:2–5) हमारे जीवन और रिश्तों में कैसा प्रभाव पड़ना चाहिए अगर हम में "पाप करने की कोई मनोवृति नहीं है"?

- यह हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है कि लोग जिन्होंने राजा बिन्यामिन का संदेश सुना और हृदय के महान बदलाव का अनुभव किया था वे गिरजाघर के सदस्य पहले से ही थे?

- एक बार हम "हृदय के महान बदलाव...का अनुभव करते हैं" (मुसायाह 5:2), इस बदलाव को कायम रखने में हमें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा? हम इन चुनौतियों को कैसे पूरा कर सकते हैं?

- मसीह की सन्तान बनने का क्या अर्थ है? (देखें मुसायाह 5:2, 5–7) "[अपने] ऊपर मसीह का नाम लेने" का क्या अर्थ है? (देखें मुसायाह 5:8–11; अगले पृष्ठ (75) पर दिये उदाहरण भी देखें।) प्रत्येक दिन क्या करने से हमारी सहायता होगी कि मसीह का नाम अपने दिलों में लिखा रहे? (देखें मुसायाह 5:11–15)

एल्डर डेलिन एच. ओक्स ने बताया थाः “यीशु मसीह का नाम अपने ऊपर लेने की हमारी इच्छा वो सब करने की हमारी वचनबद्धता को कायम करता है जो हम उन लोगों में गिने जाने के लिए कर सकते हैं जिन्हें वे अपने दाएं हाथ की तरफ खड़ा करने के लिए चुनेगा और अन्तिम दिनों में उसके नाम से बुलायेगा। इस पवित्र भाव में, हमारी साक्षी कि हम इच्छा से यीशु मसीह का नाम अपने ऊपर ले रहे हैं सिलेस्टियल राज्य में उत्कर्ष के लिए उम्मीदवारी की हमारी घोषणा को स्थापित करती है। उत्कर्ष अनन्त जीवन है, परमेश्वर के सारे उपहारों से महान’ (सि. और अनु. 14:7)” (in Conference Report, Apr. 1985, 105; or *Ensign,* May 1985, 83)।

- राजा बिन्यामिन के लोगों के द्वारा बनाये अनुबंध हमारे बपतिस्मे में बनाये अनुबंधों के समान क्यों हैं और प्रत्येक बार प्रभुभोज लेते समय हम दोहराते हैं? (देखें मुसायाह 5:5, 7–8; सि. और अनु. 20:37, 77, 79) यह क्यों महत्वपूर्ण है कि इस अनुबंध को निरन्तर हम दोहराये?
- राजा बिन्यामिन ने देखा कि उसके सभी लोग (सिवाय उनके जो बहुत युवा थे) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के अनुबंध में प्रवेश किया था (मुसायाह 6:1–2)। उनके नामों का लेखा रखना क्यों महत्वपूर्ण था?
- लोगों पर शिक्षक और याजक नियुक्त करना यह क्यों महत्वपूर्ण था? (देखें मुसायाह 6:3) कैसे हमारे शिक्षक और गिरजाघर मार्गदर्शक हमारी सहायता अनुबंध और वादों को याद रखने में जो हमने बनाये थे में करते हैं?

निष्कर्ष

पढ़ें या कक्षा के सदस्यों को मुसायाह 5:15 पढ़ने दें, कि यह आशीह हम में से प्रत्येक के लिए उपलब्ध है। कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि हृदय के महान बदलाव को खोज़े और उसे कायम रखें जिससे कि वे मसीह की सन्तान हो पाएंगे।

जब आत्मा का निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित परिशिष्ट सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. “इस नेतृत्व के अर्न्तगत तुम स्वतन्त्र किए गए हो” (मुसायाह 5:8)

- अपने लोगों को मसीह की सन्तान बुलाने में, राजा बिन्यामिन ने कहा था, “इस नेतृत्व के अर्न्तगत तुम स्वतन्त्र किए गए हो” (मुसायाह 5:8) । प्रभु के प्रति आज्ञाकारी होना स्वतन्त्रता कैसे लाता है?

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सीखाया था कि “आज्ञाकारिता में आनन्द और न खत्म होने वाली शान्ति, शुद्धता है; और जैसे परमेश्वर ने हमारे आनन्द का नमूना बनाया,...उसने कभी नहीं...वह कभी भी नहीं एक धर्मविधि का नियम या अपने लोगों का एक आज्ञा देगा जिसकी उस आनन्द के प्रकृति में गणना न हो” (Teaching of the Prophet Joseph Smith, sel. Joseph Fielding Smith [1976], 256–57)।
- आपने कैसे देखा है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना आपके और उनके जो आपके आस-पास रहते हैं जीवन में आनन्द लाता है?

2. “एक आदमी अपने स्वामी को कैसे जानेगा जिसकी सेवा उसने पहले न की हो?” (मुसायाह 5:13)

- राजा बिन्यामिन ने पूछा था, “एक आदमी अपने स्वामी को कैसे जानेगा जिसकी सेवा उसने पहले न की हो?” (मुसायाह 5:13)। आप मसीह को अच्छे से उसकी सेवा करने के द्वारा कैसे जानेंगे?

“एक दिव्यदर्शी...अपने साथी लोगों के लिए भारी सहायक सिद्ध होता है”

पाठ 17

मुसायाह 7–11

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को गिरजाघर मार्गदर्शकों की सलाह पर चलने को प्रोत्साहित करना, खास तौर से जिन्हें प्रभु ने बुलाहट दी जैसे कि भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी और प्रकटीकर्ता।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 7–8। आमोन उन लोगों के बारे में जानने के लिए जो सालों पहले ज़राहेमला छोड़ नफी के देश वापस गये थे एक अभियान का नेतृत्व करता है। आमोन और उसके भाई लिमही और उसके लोगों को पाते हैं। आमोन लिमही के लोगों को शिक्षा देता है, लोगों के अभिलेख को प्राप्त करता है, और लोगों द्वारा खोज़ी 24 यारदाई पट्टियों के बारे में जान पाता है। वह बताता है कि मुसायाह, जो एक दिव्यदर्शी है, पट्टियों पर खुदाई का अनुवाद कर सकता है।

   ख. मुसायाह 9–10। जनीफ, लिमही के दादा, के अभिलेख का एक भाग, जनीफ के लोग कैसे नफी के देश में पहुंचे थे के बारे में एक संक्षिप्त इतिहास बताता है। यह यह भी बताता है कि कैसे प्रभु ने लमनायटियों के विरूद्ध युद्धों में उनकी मज़बूती दी थी।

   ग. मुसायाह 11। जनीफ का पुत्र नूह दुष्टता में शासन करता है। अभिनन्दी की चेतावनी के बावजूद भी, लोग नूह और उसके याजकों की दुष्टता में अंधे हो जाते हैं।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

निम्नलिखित चित्र चॉकबोर्ड पर बनाएं:

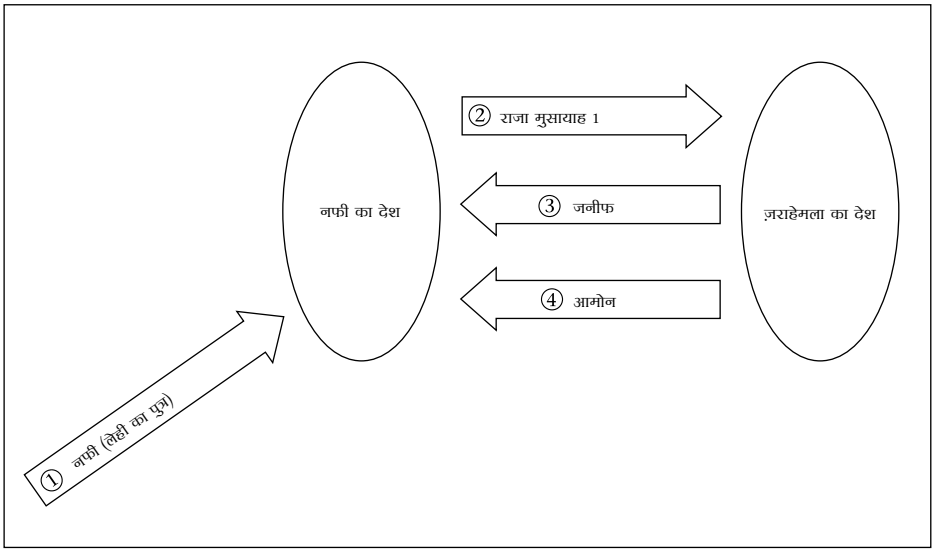

व्याख्या करें कि मुसायाह की पुस्तक में प्रभु के अपने लोगों के साथ आचरण को समझने के उद्देश्य में, 2 नफी 5, ओमनी की पुस्तक, और मुसायाह 7 और 9 में बताई घटनाओं को समझने के लिए मददगार है। कक्षा के सदस्यों को बताएं कि उन घटनाओं को संक्षिप्त में बताने के लिए आप चॉकबोर्ड पर दिये चित्र का प्रयोग करेंगे। नीचे दी गई जानकारी को पढ़ें या अपने स्वयं के शब्दों में बांटें (संख्या का चित्र पर संख्या के साथ अनुरूप करें):

1. लेही की मृत्यु के बाद, प्रभु ने नफी के अनुयाइयों को लमान के अनुयाइयों से अलग होने की आज्ञा दी थी। नफायटी एक देश में जा बसे उसे वे नफी का देश कहते थे (2 नफी 5:5–8)। देश बाद में "लेही-नफी के देश" के रूप में भी जाना जाने लगा था (मुसायाह 7:1)।

2. लगभग 400 वर्षों बाद नफायटियों का नेतृत्व एक राजा द्वारा हुआ था जिसका नाम मुसायाह था। प्रभु ने मुसायाह को नफी के देश "जितने लोग प्रभु की बातों को मानेंगे" उनको साथ लेकर भाग जाने की आज्ञा दी थी। मुसायाह और उसके लोगों ने एक समूह के लोगों को खोज़ा जिन्हें ज़राहेमला के लोग कहा जाता था। ये दो समूहों के लोग एक हुए और अपने आप को नफायटी कहलाने लगे। मुसायाह को उनका राजा नियुक्त किया गया (ओमनी 1:12–19)।

3. नफायटियों के एक समूह ने नफी के देश का एक हिस्सा प्राप्त करने के लिए ज़राहेमला छोड़ा था (ओमनी 1:27)। उन्होंने जनीफ नाम के एक व्यक्ति के नेतृत्व में वहां एक स्थान को प्राप्त किया, जो उनका राजा बना था (मुसायाह 9:1–7)

4. लगभग 79 वर्षों बाद राजा मुसायाह 2, पहले राजा मुसायाह का पौता, "की उन लोगों के बारें में जानने की इच्छा हुई जो लेही-नफी के देश में रहने के लिए गये थे। इस उद्देश्य के लिए उसने आमोन नाम के एक व्यक्ति को एक अभियान का नेतृत्व करने की अनुमति दी (ध्यान दें कि यह आमोन मुसायाह का लड़का नहीं था जिसने बाद में लमनायटियों के बीच सुसमाचार का प्रचार किया था)। आमोन और उसके बन्धुओं ने राजा लिमही और उसके लोगों को पाया। लिमही जनीफ का पौता था (मुसायाह 7:1–11)।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री को चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हों। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। उचित अनुभवों को बांटने के लिए कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से संबंधित हों।

1. आमोन और उसके बन्धु लिमही और उसके लोगों को पाते हैं। आमोन लिमही को एक दिव्यदर्शी के महत्व के बारे में शिक्षा देता है।

मुसायाह 7–8 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। मुसायाह 7:1–11 की व्याख्या के लिए ध्यान गतिविधि में विषय 4 देखें।

- लिमही ने आमोन और उसके साथियों को बन्दी क्यों बनाया था? (देखें मुसायाह 7:8–11) लिमही आनन्दित क्यों हुआ जब उसे पता चला कि आमोन कौन था? (देखें मुसायाह 7:12–15। व्याख्या करें कि पाठ के अन्त में आप चर्चा करेंगे कि लिमही के लोगों को कैसे बन्दी बनाया गया था।) लिमही ने आमोन से वार्ता करने के बाद क्या संदेश अपने लोगों के साथ बांटा? (देखें मुसायाह 7:17–20, 29–33) यह लिमही के गुण एक मार्गदर्शक के रूप में क्या प्रकट करते हैं?

- लिमही ने आमोन को बताया कि एक बार उसने 43 लोगों को उसके बन्धुओं की खोज़ में ज़राहेमला भेजा था (मुसायाह 8:7)। इस समूह ने बदले में क्या पाया था? (देखें मुसायाह 8:8–11; एथर 1:1–2 को भी देखें। उन्होंने यारदाई समाज के अंश को पाया था। यारदाई वहां पर कई शताब्दियों से बसे हुए थे नफायटियों के आगमन से पूर्व।)

- लिमही ने आमोन से यारदाइयों की 24 स्वर्ण पट्टियों के बारे में जानने का आग्रह क्यों किया था? (देखें मुसायाह 8:11–12) लिमही के लोगों के लिए यह...और हमारे लिए...यारदाइयों के नाश का कारण जानना क्यों सहायक होगा?

- आमोन ने लिमही के आग्रह पर कैसे प्रतिक्रिया दी थी? (देखें मुसायाह 8:13–14) उसने कहा कि मुसायाह, ज़राहेमला में राजा, एक दिव्यदर्शी है जो अभिलेखों का अनुवाद कर सकता है।) आमोन ने अन्य क्या शीर्षक दिव्यदर्शी के शीर्षक से जोड़े थे? (देखें मुसायाह 8:16) हम आज भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी, और प्रकटीकर्ता के रूप में किसका समर्थन करते हैं? प्रथम अध्यक्षता के सदस्य और बारह प्रेरितों की परिषद का।)

- एक दिव्यदर्शी की क्या भूमिकाएं हैं? (देखें मुसायाह 8:13, 17–18) कैसे अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी, और प्रकटकर्ता इन कामों को पूरा करते हैं? (देखें नीचे दिये गये उदाहरण। आप चाहें तो कक्षा के सदस्यों को अन्य सम्मेलन संबोधनों, घोषणाओं, या घटनाओं पर चर्चा करने दें जो दिखातें हैं कि कैसे प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों की परिषद के सदस्यों ने दिव्यदर्शियों के रूप में कार्य किया है।) कैसे अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी, और प्रकटीकर्ता आपके लिए "एक महान लाभ" है?

  एल्डर बोएड के. पैकर ने कहा थाः

  "धर्मशास्त्र भविष्यवक्ताओं के बारे में बोलते हैं जैसे मीनार पर पहरेदार 'जो दुश्मनों को दूर से ही आते देखता है' और जिसने उन सब बातों को भी देखा है जो प्रकृतिक आंखों से नहीं देखी जाती...[क्योंकि] एक दिव्यदर्शी को प्रभु अपने लोगों के लिए उठाता है।'

  "[बहुत वर्षो पहले] बन्धुओं ने हमें परिवार के विश्लेषण की चेतावनी दी थी और तैयार रहने को कहा था...साप्ताहिक पारिवारिक घरेलू संध्या का परिचय प्रथम अध्यक्षता द्वारा हुआ था....। माता-पिता को श्रेष्ठ सामग्री उनके बच्चों को शिक्षा देने के लिए उपलब्ध कराई गई, इस वादे के साथ कि विश्वासी आशिषित होंगे।

  "जबकि सिद्धान्त और प्रकटी संस्था लगातार बदलती नहीं है, पूरे गिरजाघर की एजेन्सी एक दुसरे के साथ और घर के साथ अपने संबंध में दुबारा बनाई गई हैं...गिरजाघर के सारे पाठ्य पुस्तक की जांच...धर्मशास्त्रों पर आधारित है और वर्षो से बाइबल, मॉरमन की पुस्तक, सिद्धान्त और अनुबंध, और अनमोल मोती के नये प्रकाशन की तैयारी पर व्यतीत करते हैं।

  "हम सिर्फ कल्पना कर सकते हैं कि हम कहां होंगे यदि हम अभी परिवार की परिभाषा दुबारा भय से तय करेंगे। परन्तु यह बात नहीं है। हम उन्मत्ता के बारे में देखते नहीं, और निर्णय लेने की कोशिश करते हैं कि क्या करना है। हम जानते हैं क्या करना है और क्या सीखना है...

  "पथ जिस पर हम चलते हैं अपना बनाया हुआ नहीं है। उद्धार की योजना, महान आनन्द की योजना, हम पर प्रकट की गई, और भविष्यवक्ता और प्रेरित लगातार गिरजाघर और उसके सदस्यों की अधिक ज़रूरतों के लिए प्रकटीकरण प्राप्त करते हैं" (in Conference Report, Apr. 1994, 24–25; or *Ensign,* May 1994, 20)।

2. जनीफ का अभिलेख जनीफ के लोगों के संक्षिप्त इतिहास को बताता है।

मुसायाह 9–10 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। बताएं कि मुसायाह पुस्तक का अध्याय 9–22 लोगों का एक इतिहास रखता है जो ज़राहेमला छोड़ नफी के देश लौटे थे। इतिहास जनीफ, लिमही का दादा के विवरण आरम्भ होता है।

- जनीफ नफायटियों के एक समूह का एक सदस्य था जो लमनायटियों से नफी के देश का कुछ हिस्सा वापस लेना चाहता था (मुसायाह 9:1)। लमनायटियों का नफायटियों के प्रति कैसा व्यवहार था? (देखें मुसायाह 10:11–17। वे बहुत "क्रोधित" थे क्योंकि उन्हें लगता था कि लमान और लेमुएल, उनके पूर्वजों के साथ "उनके भाइयों द्वारा ग़लत किया गया था।" इसी कारण, उन्होंने अपने बच्चों को नफायटियों से घृणा करने की शिक्षा दी थी।) अतित

की परम्परा कैसे कभी-कभी लोगों को आगे भी घृणा करने के लिए उकसाती है? (आप कक्षा के सदस्यों को समुदायों, राष्ट्रों, या दुनिया में परिस्थितियों के समान उदाहरणों को बांटने के लिए आमन्त्रित करना चाहें।) क्यों ऐसी परम्परा बार-बार स्थिर रहती है?

- नफरत के अहसासों पर विजय पाने के बारे में हम जनीफ से क्या सीख सकते हैं? (देखें मुसायाह 9:1। जनीफ को जासूस बना कर यह जानने के लिए भेजा गया था कि लमनायटियों को कैसे नाश किया जाये। इसलिए, जब उसने देखा "जो कि अच्छा था" लमनायटियों के बीच, वह उन्हें नष्ट नहीं करना चाहता था।) हम क्या कर सकते हैं दुसरों में अच्छी ईमानदारी देख कर?

- "[अपने] पैतृक का देश लेने" के लिए अपने प्रयास में जनीफ ने क्या ग़लती की थी? (देखें मुसायाह 7:21–22; 9:3) जनीफ के अतिउत्साहित होने के क्या परिणाम थे? (देखें मुसायाह 9:3–12; 10:18) अतिउत्साही होने के कुछ खतरे क्या थे, यहां तक कि अच्छे कारणों में भी? हम कैसे प्रभु के कार्य में बिना किसी अतिउत्साह के उत्साही बन सकते हैं?

- नफी के देश को प्राप्त करने के इरादे में, जनीफ और उसके लोग "[अपने] प्रभु परमेश्वर को याद करना भुल गये थे" (मुसायाह 9:3)। उन्हें आखिरकर क्या प्रभु की ओर ले आया था*? (देखें मुसायाह 9:13–17) वे कैसे आशिषित हुए जब उन्होंने प्रभु का स्मरण किया और अपनी स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना की? (देखें मुसायाह 9:18; 10:19–21) गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, हम प्रभु को "हमेशा याद करने का" अनुबंध बनाते हैं (सि. और अनु. 20:77, 79)। हम कुछ बातें क्या कर सकते हैं जो हमें अनुबंध बनाये रखने में सहायता करें?

3. अभिनन्दी लोगों को चेतावनी देता है, लेकिन वे नूह की दुष्टता में अंधें होते हैं।

मुसायाह 11 से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- जनीफ के बाद कौन राजा बना था? (देखें मुसायाह 11:1) नूह किस तरह का शासक था? (देखें मुसायाह 11:1–19। आप चॉकबोर्ड पर उन कुछ रास्तों की सूची बनाना चाहेंगे जिस पर नूह "अपने स्वयं के हृदय की इच्छाओं पर [चला] था और राज्य के कार्यो को बदल दिया था।")

- नूह ने कैसे अपने लोगों के जीवन में प्रभाव डाला था? (देखें मुसायाह 11:2, 5–7) लोग और नूह अपने पापों की करनी के लिए कैसे जिम्मेदारियां बांटते थे?

- प्रभु ने भविष्यवक्ता अभिनन्दी को नूह और उसके लोगों को पश्चाताप करने को कहने के लिए भेजा था (मुसायाह 11:20)। अभिनन्दी के द्वारा प्रभु ने क्या चेतावनियां दी थी? (देखें मुसायाह 11:20–25। आप शायद चर्चा करना चाहेंगे कि कैसे अभिनन्दी ने एक दिव्यदर्शी की भुमिका निभाई थी, जैसे पाठ के शुरू में चर्चा की थी।)

- नूह और उसके लोगों ने कैसे अभिनन्दी की चेतावनियों का जवाब दिया था? (देखें मुसायाह 11:26–28; मुसायाह 12:13–15 भी देखें।) लोग अभिनन्दी से क्रोधित क्यों थे और नूह से नहीं, किसने उन पर लगान लगाया था और उनका अपनी दुष्टता में उसका साथ देने के लिए कारण बना था? (देखें मुसायाह 11:7, 29)

- क्यों आज कुछ लोग नूह जैसे लोगों का पक्ष लेकर, अभिनन्दी जैसे प्रभु के सेवकों को अस्वीकार करते हैं? परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को पहचानना और उनका अनुगमन करना क्यों महत्वपूर्ण है? (देखें मुसायाह 8:16–18; सि. और अनु. 1:38; 84:36–38)

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को नेक मार्गदर्शकों की सलाह पर चलने के लिए प्रोत्साहित करें, विशेषकर उनका जिन्हें प्रभु ने भविष्यवक्ताओं, दिव्यदर्शियों, और प्रकटकर्ता के रूप में बुलाया है।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दें।

“स्वयं परमेश्वर...अपने लोगों को मुक्त करेगा”

पाठ 18

मुसायाह 12–17

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की सहायता करना कि यीशु मसीह के प्रायश्चित के महत्व को समझे और अपनी प्रायश्चित की गवाही में स्थिर रहें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 12–13। अभिनन्दी राजा नूह और उसके याजकों को पश्चाताप करने को कहता है। वह उन्हें आज्ञा का पालन करने को उत्साहित करता है। वह उन्हें शिक्षा देता है कि मूसा के कानून की सम्पन्नताएं और धर्मविधियां यीशु मसीह के प्रायश्चित के तरीके, या प्रतीक हैं।

   ख. मुसायाह 14–16। अभिनन्दी यशायाह का उदाहरण देता है। वह प्रायश्चित की गवाही देता है और नूह के याजकों को लोगों को यह शिक्षा देने के लिए उत्साहित करता है कि मुक्ति मसीह के द्वारा आती है।

   ग. मुसायाह 17। अलमा, नूह का एक याजक, पश्चाताप करता है और अभिनन्दी की वाणी का अभिलेख रखता है। अभिनन्दी अपने जीवन के साथ उद्धारक की अपनी गवाही को मुहरबंद करता है।

2. यदि राजा नूह के सामने अभिनन्दी का चित्र उपलब्ध है, इसे पाठ के दौरान प्रयोग करने के लिए तैयार रहें (62042; सुसमाचार कला चित्र किट 308)।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करते हैं, गतिविधि में लिखे कुछ या सारे चित्र कक्षा में लायें।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

व्याख्या करें कि बहुत से प्रभु के आत्मिक लेख हैं जिसमें वह लोगों को मुश्किल उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आज्ञा देता है।

- धर्मशास्त्रों में कौन से कुछ मुश्किल उद्देश्य या बुलाहटें अंकित हैं? (कुछ संभव जवाबों की सूची नीचे दी गई है, चित्रों की क्रमसंख्या के साथ जो कुछ घटनाओं को चित्रित करती है।)

  क. नूह लोगों को प्रचार करते हुए (62053; सुसमाचार कला चित्र किट 102)
  ख. मूसा मिश्र से बाहर इस्राएलियों का नेतृत्व करते हुए (62100)
  ग. यरूशलेम में लेही लोगों को चेतावनी देते हुए (62517; सुसमाचार कला चित्र किट 300)
  घ. एस्तर राजा अशुररस के सामने जाते हुए (सुसमाचार कला चित्र किट 125)
  ङ. अभिनन्दी राजा नूह को प्रचार करते हुए (62042; सुसमाचार कला चित्र किट 308)
  च. शमुएल ज़राहेमला में प्रचार करता हुआ (62370; सुसमाचार कला चित्र किट 314)
  छ. जोसफ स्मिथ पुनःस्थापना के भविष्यवक्ता के रूप में अपना मिशन पूरा करता हुआ (62470; सुसमाचार कला चित्र किट 403)

- ये मिशन क्यों कठिन थे? आपके विचार से क्यों ये लोग अपने मिशन को पूरा करने के इच्छुक थे यहां तक कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद?

राजा नूह के सामने अभिनन्दी का चित्र दिखाएं, और बताएं कि यह पाठ अभिनन्दी की शिक्षा की चर्चा करता है। प्रोत्साहित करें कि कक्षा के सदस्य कारण देखें कि क्यों अभिनन्दी लोगों को प्रचार करने में अपना जीवन देने का इच्छुक था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य समाग्री को चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेंल खाती हों। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू करें। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभव बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से संबंधित हों।

1. अभिनन्दी नूह और उसके याजकों को पश्चाताप करने को कहता है, उन्हें आज्ञाओं का पालन करने के लिए उत्साहित करता है, और प्रायश्चित के बारे में शिक्षा देता है।

मुसायाह 12–13 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। यदि आप राजा नूह के सामने अभिनन्दी का चित्र प्रयोग कर रहे हैं, तो इसे पूरे पाठ के दौरान दिखाएं।

- दो वर्षों के बाद अभिनन्दी ने नूह के लोगों को वास्तविकता में प्रचार किया था, वह उन्हें बताने वापस आया क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया था, वे पीड़ा उठाएंगे और गुलामी में लाए जाएंगे (मुसायाह 12:1–7)। उसने यह भी कहा था कि अगर वे पश्चाताप नहीं करेंगे वे नष्ट हो जाएंगे (मुसायाह 12:8)। लोगों ने इस संदेश पर कैसे प्रतिक्रिया दिखाई थी? (देखें मुसायाह 12:9–16) आपके विचार से क्यों उन्होंने नूह का बचाव किया था?
- अभिनन्दी के याजकों के प्रतिरोध के बाद एक याजक ने उससे एक प्रश्न धर्मशास्त्र अंशों के बारे में पूछा (मुसायाह 12:20–24; कक्षा के सदस्यों को इन आयतों को ज़ोर से पढ़ने दें)। याजक इस धर्मशास्त्र अंश को क्यों नहीं समझ पाये थे (देखें मुसायाह 12:25–27। ध्यान दें कि इस अंश के अर्थ की पाठ के अन्त में चर्चा की जाएगी।) अपने हृदय में समझ को लागू करने का क्या अर्थ है? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हमारे हृदय लागू करें जब हम सुसमाचार का अध्ययन करते हैं और शिक्षा देते हैं? (देखें सि. और अनु. 8:2–3)
- क्या अभिनन्दी का प्रकट करना याजकों के साथ परेशानी थी कि वह मूसा के कानून सीखाता था? (देखें मुसायाह 12:28–37) यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम उन सच्चाइयों द्वारा जीयें जिनकी हम शिक्षा देते हैं?
- अभिनन्दी के लिए उसका संदेश बांटने के को ऐसा क्या संभव हुआ था? (देखें मुसायाह 13:1–9। ध्यान दें कि प्रभु ने यह किया कि अभिनन्दी को यीशु मसीह के प्रायश्चित की गवाही देने में सहयोग मिलेगा। यह प्रायश्चित के संदेश के महत्व को दर्शाता है।)
- अभिनन्दी ने नूह और उसके याजकों के लिए दस आज्ञाएं क्यों पढ़ी थी? (देखें मुसायाह 13:11) आज्ञाओं को "[अपने] दिलों में लिखने" का क्या अर्थ है? आज्ञाओं को अपने दिलों में लिखना उनका पालन करने का प्रयत्न हम पर कैसा प्रभाव डाल सकता है?
- नूह और उसके याजकों को पश्चाताप कराने के लिए मूसा के कानून को न रखने के बुलाने के बाद, अभिनन्दी ने कहा, "मुक्ति केवल कानून द्वारा ही नहीं आती है" (मुसायाह 13:28)। मुक्ति कैसे आती है? (देखें मुसायाह 13:14, 28, 32–35; विश्वास के अनुच्छेद 1:3)
- मूसा के कानून का क्या उद्देश्य था? (देखें मुसायाह 13:29–33। बताएं कि मूसा के कानून आने वाली बातों की धर्मविधियाँ और करने के तरीके थे, या प्रतीक थे। उन्हें लोगों को मसीह की ओर देखने में सहायता के लिए दिया गया था।)

2. अभिनन्दी यशायाह का उद्धरण करता है, प्रायश्चित की गवाही देता है, नूह के याजकों को उत्साहित करता है कि वे लोगों को शिक्षा दें कि मुक्ति मसीह के द्वारा आती है।

मुसायाह 14–16 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें अथवा चर्चा करें।

- यीशु मसीह की अपनी गवाही के एक भाग रूप में, अभिनन्दी ने भविष्यवक्ता यशायाह को उद्धरित किया था। हम कुछ बातें उद्धारक के बारें में मुसायाह 14 में से उद्धरित भविष्यवाणी में से क्या सीखते हैं? (कक्षा के सदस्यों को एक एक करके इस अध्याय में से इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने दें। उनके उत्तरों को चॉकबोर्ड पर संक्षिप्त करें। कुछ संभव उत्तर नीचे दिये गये हैं।)

  क. उद्धारक दीनता और नम्रता से जीया था (मुसायाह 14:2)।
  ख. बहुत से लोगों ने उसे अस्वीकार किया था (मुसायाह 14:3)।
  ग. उसने हमारे पीड़ाओं और दुःखों को उठाया था (मुसायाह 14:4)।
  घ. उसने सारे लोगों के पापों को अपने ऊपर लिया था (मुसायाह 14:5–6, 10–12)।
  ङ. उसने इच्छा से अपने आप को अत्याचार और मृत्यु का विषय बनाया था (मुसायाह 14:7–9)।
  च. वह बिना पाप के था (मुसायाह 14:9)।

- अभिनन्दी ने कहा था कि उद्धारक "न्याय की मांग को तृप्त करता है" (मुसायाह 15:9)। न्याय की मांग को तृप्त करना क्या है? (देखें अलमा 42:11, 14) उद्धारक ने न्याय की मांग को तृप्त करने के लिए क्या किया था? (देखें मुसायाह 15:9; अलमा 42:12–13, 15)

- अभिनन्दी ने यीशु मसीह के, वंश, या पुत्रों और पुत्रियों के बारे में बोला था (मुसायाह 15:10; मुसायाह 14:10 भी देखें)। उद्धारक के पुत्र और पुत्रियां होने का क्या अर्थ है? (देखें मुसायाह 15:11–15; मुसायाह 5:5–7 भी देखें। व्याख्या करें कि यीशु मसीह सदा काल का उद्धार है। उसके साथ पिता और पुत्र के बीच का, और उनके जो उसके सुसमाचार को ग्रहण करते हैं का रिश्ता है। हम उसके वंश हैं, या उसके पुत्र और पुत्रियां, जब हम उस में विश्वास करते हैं, अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, और उसकी इच्छा को करने का अनुबंध करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।)

- कक्षा के सदस्यों को स्मरण करायें कि नूह के एक याजक ने अभिनन्दी से यशायाह के बयान का अनुवाद करने को पूछा था "पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ सुसमाचार लाता है" (मुसायाह 12:20–24)। ये शुभ समाचार क्या हैं? (देखें मुसायाह 15:19–25; सि. और अनु. 73:40–42) यह संदेशवाहक कौन था जिसने शुभ समाचार बांटे थे? (देखें मुसायाह 15:13–18। स्वयं उद्धारक, भविष्यवक्ता, अन्य जिन्होंने सुसमाचार बांटा था।) हम कैसे दुसरों के ये शुभ समाचार दे सकते हैं?

- हम हमारे मरने के बाद कैसे आशिषित होंगे यदि हमारा मसीह में विश्वास है, उसका अनुसरण करते हैं, और उसके प्रायश्चित को स्वीकार करते हैं? (देखें मुसायाह 15:21–23; 16:8–11) हमारा क्या होगा यदि हम मसीह को उसके प्रायश्चित को अस्वीकार करते हैं? (देखें मुसायाह 15:26–27; 16:2–3, 5, 10–12)

- उसके उपदेश के अन्त में, अभिनन्दी ने नूह और उसके याजकों को क्या करने के लिए उत्साहित किया था? (देखें मुसायाह 16:13–15) हम इस सलाह को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं?

3. अभिनन्दी अपने जीवन के साथ उद्धारक की गवाही मुहरबंद करता है।

मुसायाह 17 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें:

- क्या अभिनन्दी अपने उद्देश्य में राजा नूह और उसके लोगों में सफल हुआ था? क्यों या क्यों नहीं? अभिनन्दी की शिक्षाओं से कौन धर्मपरिवर्तित हुआ था? (देखें मुसायाह 17:2–4; अलमा 5:11–12; चौथा अतिरिक्त सुझाव भी देखें।)

- अभिनन्दी के अपने संदेश देने के पश्चात, राजा नूह और न्यायाधीशों ने उसके साथ क्या करने का निर्णय लिया था? (देखें मुसायाह 17:1, 7) अभिनन्दी क्या कर सकता था मृत्यु से बचने के लिए? (देखें मुसायाह 17:8) क्यों उसने अपने कहे शब्दों को याद करने से इन्कार किया था? (देखें मुसायाह 17:9–10, 20) यद्यपि हमें अपने विश्वास के लिए मरने की आवश्यकता नहीं होगी, हम किन तरीकों से अभिनन्दी के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं?

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः “मसीह मनुष्यों को बदलता है, बदला हुआ मनुष्य संसार को बदल सकता है। बदले हुए मनुष्यों के लिए मसीह मार्गदर्शक है।...मनुष्य जो मसीह द्वारा मार्गदर्शित होते हैं मसीह में मिल जाएंगे....उनकी इच्छा उसकी इच्छा में होगी। (देखें यूहन्ना 5:30) वे हमेशा वो कार्य करते हैं जो कि प्रभु को प्रिय हैं। (देखें यूहन्ना 8:29) ना ही सिर्फ वे प्रभु के लिए मरते हैं परन्तु अधिक महत्वपूर्ण हैं कि वे उसमें जीना चाहते हैं” (in Conference Report, Oct. 1985, 5–6; or *Ensign,* Nov. 1985, 6)।

निष्कर्ष

ध्यान दें कि अभिनन्दी और अलमा की प्रतिक्रिया हमारी प्रायश्चित के महत्व को देखने में सहायता करती है। अभिनन्दी गा जीवन प्रभु द्वारा सुरक्षित किया गया कि वह प्रायश्चित की गवाही दे सके (मुसायाह 13:1–9)। अभिनन्दी के इस संदेश को बांटने के बाद, “अपने शब्दों की सच्चाई पर अपनी मौत से मुहर लगाई” (मुसायाह 17:20)। अलमा ने “सारे शब्द जो अभिनन्दी ने कहे थे” लिखा था (मुसायाह 17:4)। उसने तब अभिनन्दी की आज्ञा का पालन किया “शिक्षा...कि उद्धार प्रभु मसीह द्वारा आता है” (मुसायाह 16:15)। कक्षा के सदस्यों को उनकी सच्ची गवाही में रहने और प्रायश्चित के संदेश को बांटने में प्रोत्साहित करें।

जब आत्मा से निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

1. स्तुतिगीत

कक्षा के सदस्यों के साथ, स्तुतिगीत के शब्दों को पढ़ें या गायें यीशु मसीह के प्रायश्चित के बारे में, जैसे कि “मैं आश्चर्य में हूं” (स्तुतिगीत संख्या 193)। या प्रायश्चित के बारे में स्तुतिगीत की रिकार्डिंग को बजायें।

2. “पिता और पुत्र” (मुसायाह 15:2)

निम्नलिखित जानकारी का प्रयोग करें अभिनन्दी की शिक्षाएं मुसायाह 15:1–9 में की व्याख्या करें:

जब अभिनन्दी ने यीशु को “पिता और पुत्र” के रूप में बताया था, उसने यह शिक्षा नहीं दी थी कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह एक समान हैं। स्वर्गीय पिता, यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा तीन अलग और निश्चित श्रेष्ठ पुरूष हैं (सि. और अनु. 130:22)।

जब प्राचीन भविष्यवक्ता परमेश्वर के या प्रभु के बारे में बोलते थे, वे अक्सर यहोवा को संदर्भ करते थे, पहले का मसीहा (मुसायाह 13:33–34; 14:6)। तथापि, अभिनन्दी ने यीशु मसीह के बारे में सीखाया था जब उसने कहा, “स्वयं परमेश्वर मानव समाज में आकर अपने लोगों को मुक्त करेगा” (मुसायाह 15:1; मुसायाह 7:27–28 भी देखें)। अभिनन्दी की शिक्षा मुसायाह 15:1–9 में यीशु को पिता की भूमिका और परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी भूमिका को संदर्भ करती हैं।

यीशु की भूमिका पिता के रूप में शामिल है *(क)* उसका कार्य जैसे “स्वर्ग और पृथ्वी का पिता, आरम्भ से सारी चीज़ों का रचायिता” (मुसायाह 3:8); *(ख)* उसका उद्देश्य उनके पिता के रूप जिन्होंने उसके सुसमाचार को स्वीकार किया और उसका अनुगमन किया था (मुसायाह 5:7; 15:10–13; एथर 3:14); और *(ग)* उसका स्वर्गीय पिता के आधार पर बोलने का कार्य करने का अधिकार, जिसे कहा जाता है “पवित्र पुष्टीकरण का अधिकार।” यीशु की भूमिका परमेश्वर के पुत्र के रूप में शामिल हैं *(क)* संसार के पापों के लिए उसका प्रायश्चित (मुसायाह 15:6–9) और *(ख)* उसकी सेवा हमारे मध्यस्थ और स्वर्गीय पिता के साथ वकील के रूप में (याकूब 4:10–11; सि. और अनु. 45:3–5)।

अभिनन्दी ने कहा कि यीशु पुत्र कहलाया गया था “क्योंकि वह हाड़-मांस के शरीर पुत्र और पिता क्योंकि उसे परमेश्वर की शक्ति के बल पर लाया गया था” (मुसायाह 15:2–3; सि. और अनु. 93:3–4)। जब अभिनन्दी ने कहा

था “कि पुत्र की इच्छा पिता की इच्छा में लीन हो जाएगी” (मुसायाह 15:7), उसने यीशु को उसके मांस से उसकी आत्मा के आधार से संदर्भ किया था (मुसायाह 15:2–5; 3 नफी 1:14 भी देखें)। जब यीशु अपने मांस से अपनी आत्मा का आधार करता है, वह अपनी इच्छा को स्वर्गीय पिता की इच्छा से भी आधारित करता है (मत्ती 26:39; सि. और अनु. 19:16–19)।

4. प्रचारक कार्य के न दिखने वाले परिणाम

बताएं कि अभिनन्दी शायद बिना जाने ही मर जाएगा कि किसी ने उसकी शिक्षा पर विश्वास किया है। परन्तु अलमा में अभिनन्दी के प्रयास के कारण परिवर्तन आया था, और उसका और उसके वंश का नफायटियों पर कई पीढ़ी तक महान प्रभाव पड़ा था। अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली द्वार बताई गई निम्नलिखित कहानी को बांटें:

“आप नहीं जानते कितना अच्छा आप कर सकते हैं; आप अपने प्रयास जो आप ने किये थे के परिणाम को देख नहीं सकते हैं। कई वर्षो पहले, अध्यक्ष चार्लस ए. केलिस, तब बारह परिषद के एक सदस्य, परन्तु जो पहले दक्षिणी राज्य मिशन के पचीस वर्षो तक अध्यक्ष थे ने मुझे यह कहानी बताई थी। उन्होंने कहा था कि उनके पास एक प्रचारक दक्षिण [अमेरिका] में था जिसे अपने मिशन के समापन में सेवानिवृत होने जा रहा था। उसके मिशन अध्यक्ष ने उससे कहा, क्या तुम्हारा मिशन अच्छा रहा था?

“उसने कहा, ‘नहीं।’

“यह कैसे?’

“मेरे कार्य में से कोई परिणाम नहीं निकला। मैंने अपना समय और अपने पिता के पैसे व्यर्थ किए है। यह समय की बरबादी थी।’

“भाई केलिस ने कहा, ‘क्या तुमने किसी को बपतिस्मा नहीं दिया?’

“उसने कहा, ‘मैंने अपने दो वर्षो में सिर्फ एक व्यक्ति को बपतिस्मा दिया है। जोकि टेनीसिस के गरीब गांव का बारह वर्ष का एक लड़का था।’

“वह घर अपनी असफलता लेकर जा रहा था। भाई केलिस ने कहा, ‘मैंने निर्णय लिया कि उस बपतिस्मा लेने वाले लड़के का पीछा करूंगा। मैं जानना चाहता था कि वह क्या बना...

“...‘मैंने साल भर उसका पीछा किया। वह रविवार विद्यालय का अध्यक्ष बन गया, और अन्त में वह शाखा अध्यक्ष बना। उसने विवाह किया। वह छोटे से किराये के फार्म में चला गया उसके रहने से पहले उसके माता-पिता और वह वहां रहा करते थे और अपने आपसे एक भूमि का टुकड़ा लिया और उसे फलदार बनाया। वह जिला अध्यक्ष बना। उसने टेनीसिस में भूमि के टुकड़े को बेच दिया और आएडाहो चला गया और स्नेक नदी के किनारे एक खेत लिया और वहां उन्नति की। उसके बच्चे बढ़ने लगे। वे मिशन पर गये। वे घर आये। उनके अपने खुद के बच्चे हुए जो मिशन पर गये।”

“भाई केलिस ने जारी रखा, ‘मैंने लगभग एक सप्ताह आएडाहो में प्रत्येक उस परिवार के सदस्य के देखने में बिताया कि मैं पता कर सकूं और उनसे बात करूं उनके प्रचारक सेवा के विषय में। मैंने खोजा कि, एक प्रचारक द्वारा टेनीसिस के पिछड़े गांव में उस एक लड़के के बपतिस्मे का परिणाम जिसने सोचा था कि वह असफल रहा था, 1,100 से भी ज्यादा लोग गिरजाघर में आयें हैं।’

“आप अपने कार्य के परिणाम के बारे में पहले से नहीं कह सकते, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, जब आप प्रचारक के रूप में सेवा करते हो” (Teaching of Gordon B. Hinckley [1997], 360–61)।

पाठ
19

“प्रभु को छोड़ कर दूसरा कोई उन्हें दासता से मुक्त नहीं कर सकता”

मुसायाह 18–24

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उनके बपतिस्मा अनुबंध आदर और प्रभु में विश्वास करने की उनकी निश्चिता को नया करने के लिए प्रोत्साहित करें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 18। अलमा बपतिस्मा अनुबंध की शिक्षा देता है, लोगों के समूह को बपतिस्मा देता है, और लोगों के बीच गिरजाघर बनाता है।

   ख. मुसायाह 19। राजा नूह अपने लोगों को धोखा देता है और आग से जल कर मर जाता है। नूह का पुत्र लिमही राजा बनता है।

   ग. मुसायाह 20–22। लिमही के लोगों को लमनायटियों द्वारा बंदी बनाया जाता है। अपने आपको दासता से मुक्त करने की कोशिशों के बाद, वे पश्चाताप करते हैं और प्रभु के पास लौटते हैं। अन्त में प्रभु उन्हें दासता से मुक्त करता है।

   घ. मुसायाह 23–24। अलमा के लोग लमनायटियों द्वारा बंदी बनाये जाते हैं। अमुलोन, जो नूह का एक याजक हुआ करता था उन पर शासन करता है। अलमा के लोग प्रभु की ओर लौटते हैं, और वह उनके बोझ को हल्का करता है और उन्हें दासता में से मुक्त करता है।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, कक्षा में अलमा मॉरमन के पानी में बपतिस्मा देते हुए का चित्र लायें (62332; सुसमाचार कला चित्र किट 309) आप पाठ के दौरान इस चित्र का प्रयोग करना चाहेंगे।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

कक्षा के सदस्यों से पूछें:

- आपने अब तक कौनसी सबसे अधिक खुबसूरत जगहें देखी हैं? वे जगहें आप के लिए इतनी खुबसूरत क्यों हैं?

अलमा को मॉरमन के पानी में बपतिस्मा देते हुए का चित्र दिखाएं।

- यह स्थान अलमा के लोगों के लिये खुबसूरत क्यों था? कक्षा के एक सदस्य को मुसायाह 18:30 ज़ोर से पढ़ने दें। एक या दो कक्षा के सदस्यों को उनके के लिए एक आत्मिक विशेषता के स्थान के बारे में अपने अहसासों को बांटने के लिए आमन्त्रित करें।

व्याख्या करें कि इस पाठ में आप एक अनुबंध की चर्चा करेंगे जोकि अलमा के लोगों ने “मॉरमन के स्थान” में बनाएं थे।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री को चुने जो कि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हों। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू करें। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभव को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो धार्मिक नियम से मेल खाता हो।

1. अलमा बपतिस्मे अनुबंध की शिक्षा देता है और बहुत से लोगों को बपतिस्मा देता है।

मुसायाह 18 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को याद कराये कि अलमा, राजा नूह का एक याजक था, अभिनन्दी की शिक्षाओं में विश्वास करता था। वह नूह के सेवकों से बच निकला और वीरानभूमि में छिप गया, जहां उसने वो "सारे शब्द लिखे थे जो अभिनन्दी ने कहे थे" (मुसायाह 17:2–4)। उसने तब "अपने पापों से पश्चाताप किया...और अभिनन्दी के शब्दों की शिक्षा शुरू की" (मुसायाह 18:1–3)। लोग जो अलमा में विश्वास करते थे उसे सुनने मॉरमन नामक एक स्थान में गये (मुसायाह 18:4–6)।

- अलमा ने "मॉरमन के स्थान" में क्या शिक्षा दी थी? (मुसायाह 18:7) लोगों की क्या इच्छा थी अलमा के उन्हें शिक्षा देने के बाद? (देखें मुसायाह 18:8) इसका क्या अर्थ है "परमेश्वर में आना, और...उसके लोग कहलाना?" (देखें मुसायाह 18:16–17; इब्रानियों 8:10 भी देखें; अलमा 5:60)

- लोगों ने "परमेश्वर के बाड़े" के सदस्य होने के नाते क्या करने की इच्छा रखी थी? (कक्षा के सदस्य इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए मुसायाह 18:8–9 पढें। चॉकबोर्ड पर उनके उत्तरों को लिखें। तब उत्तरों की चर्चा करें जैसा नीचे दिये गये हैं।)

  क. "एक दूसरे का बोझ उठाओ" (मुसायाह 18:8)। हम "एक दूसरे का बोझ कैसे उठा" सकते हैं? एक दूसरे का बोझ उठाना उन बोझों को कैसे हल्का करता है? आप कैसे आशिषित हुए जब अन्य ने आपके बोझ को उठाने में सहायता की थी?

  ख. "उनके साथ दुःखी हो जो दुःख में हैं" (मुसायाह 18:9) "उनके साथ दुःखी हो जो दुःखी हैं" यह सहायक क्यों होता है?

  ग. "जिनको सान्तवना की आवश्यकता है उन्हें आश्वासन दें" (मुसायाह 18:9)। हम कैसे दूसरों को उचित आश्वासन दे सकते हैं?

  घ. "परमेश्वर के साक्षी के रूप में खड़े होना" (मुसायाह 18:9)। सदैव सभी बातों में चाहे जहां भी तुम हो "परमेश्वर के साक्षी के रूप में खड़ें होने" का क्या अर्थ है? (मुसायाह 18:9)।

- अलमा को लोगों के प्रचार के बाद, उसने उन्हें क्या करने को आमन्त्रित किया था? (देखें मुसायाह 18:10। उसने उन्हें बपतिस्मा लेने को और प्रभु के साथ अनुबंध में प्रवेश करने के लिए आमन्त्रित किया था।) अनुबंध क्या है?

  अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने सीखाया थाः "दो जनों के बीच में एक करारनामें और समझौते को अनुबंध कहते हैं। सुसमाचार अनुबंध की स्थिति में, दो जनें, प्रभु स्वर्ग में और मनुष्य पृथ्वी पर होता है। मनुष्य आज्ञाओं का पालन करके एकमत होता है और प्रभु उसके अनुसार प्रतिफल देता है" (in Conference Report, Oct. 1970, 91; or *Improvement Era,* Dec. 1970, 26)।

- मुसायाह 18:8–13 से संदर्भ करें, अध्यक्ष मैरियन जी. रोमनी ने कहा था, "मेरे पास बपतिस्मा अनुबंध की कोई अच्छी व्याख्या नहीं है" (in Conference Report, Oct. 1975, 109; or *Ensign,* Nov. 1975, 73)। मुसायाह 18:8–13 के अनुसार, हमें क्या अनुबंध करते हैं जब हम बपतिस्मा लेते हैं? (मरोनी 6:2–3 भी देखें; सि. और अनु. 20:37) प्रभु ने क्या वादा किया जब हम बपतिस्मा लें और अपने बपतिस्मे अनुबंध का पालन करें? (देखें मुसायाह 18:10, 12–13; 2 नफी 31:17 भी देखें।)

- लोगों ने अलमा के बपतिस्मा आमन्त्रण का जवाब कैसे दिया था? (देखें मुसायाह 18:11। अगर आप अलमा बपतिस्मा देता हुआ का चित्र प्रयोग कर रहे हैं, इसे अभी दिखाएं।) हम दूसरों की इस महान आनन्द को पाने में सहायता करने के लिए क्या कर सकते हैं? (आप कक्षा के सदस्यों को उन लोगों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहेंगे जिनके साथ वे सुसमाचार बांट सकते हैं।)

- लोगों के बपतिस्मे के बाद, अलमा ने उन्हें आज्ञा दी कि "उनका हृदय एकता में और एक दूसरे के प्रेम में बन्धा होना चाहिए" (मुसायाह 18:21)। हम अपने घर में और अपने वार्ड या शाखा में इस आज्ञा के पालन में क्या कर सकते हैं? (देखें मुसायाह 18:19–21)

2. राजा नूह अपने लोगों को धोखा देता है और आग से जल कर मर जाता है।

मुसायाह 19 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। बताएं कि कुछ राजा के लोग उसके विरोधी होना शुरू हो गए थे (मुसायाह 19:2–3)। उनमें से एक व्यक्ति गिडियन था, जो नूह को लगभग मारने वाला था जब नूह ने एक लमनायटियों की सेना को अपनी ओर आते देखा था (मुसायाह 19:4–6)।

- राजा नूह ने क्या किया था जब उसने लमनायटियों को आते देखा था? (देखें मुसायाह 19:7) नूह को सबसे ज्यादा किसकी चिन्ता थी? (देखें मुसायाह 19:8) इसकी तुलना कैसे आज के लोगों से करें, जो, नूह के समान, प्रभु और उसके भविष्यवक्तओं से दूर ले जाने की कोशिश करते हैं?

- अभिनन्दी ने राजा नूह की मृत्यु के बारे में क्या भविष्यवाणी की थी? (देखें मुसायाह 12:3) यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई थी? (देखें मुसायाह 19:18–20। ध्यान दें कि लोगों ने जो नूह के जीवन का मूल्यांकन "जैसे एक वस्त्र एक गर्म भटठी" में करते हैं एक समय वह अपने दुष्टता में अंधा हुआ था, जैसे मुसायाह 11:29 में दिखाया गया है।)

3. लिमही के लोग प्रभु द्वारा विशुद्ध और आखिर में छुडाए जाते हैं।

मुसायाह 20–22 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें (ध्यान दें कि इस अध्याय में अमोन को अभिलेख और उसके बन्धुओं ने लिमही लोगों को खोजा था, जैसे अध्याय 17 में चर्चा की गई है।) बताएं कि नूह की हत्या के बाद, उसका पुत्र लिमही राजा बना। लिमही ने एक सौगन्ध ली कि वह और उसके लोग उन्होंने जो प्राप्त किया है उसकी आधा लमनायटियों के राजा को बदले में देंगे ताकि लमनायटी उन्हें मारे न (मुसायाह 19:25–26)।

- दो वर्षो की शान्ति के बाद, लमनायटियों ने लिमही लोगों के विरूद्ध युद्ध का साहस किया (मुसायाह 20:7–10)। लमनायटी लिमही लोगों को ढूंढ कर नष्ट करना क्यों चाहते थे? (देखें मुसायाह 20:1–6)

- जब लमनायटियों ने जाना कि उन्होंने लिमही लोगों को गलत समझा था, वे अपनी भूमि की ओर शान्ति से लौट गए (मुसायाह 20:17–26)। इसलिए, "कुछ दिनों के बाद, लमनायटी पुनःनफायटियों के विरूद्ध क्रोध से अशान्त हो उठे" (मुसायाह 21:2)। लमनायटी ने नफायटियों का क्या किया था अपने राजा की सौगन्ध तोड़ने के बजाय कि वे उन्हें मारेंगे नहीं? (देखें मुसायाह 21:3)

- कैसे लिमही लोगों ने बन्दी बनकर अभिनन्दी के द्वारा कही भविष्यवाणी को पूरा किया? (कक्षा के सदस्यों को मुसायाह 21:3–5, 14–15 की तुलना मुसायाह 11:20–25 और 12:2, 4–5 के साथ करें।) लिमही लोगों को दासता में क्यों लाया गया था? (देखें मुसायाह 7:25–32; 20:21। उन्होंने अभिनन्दी की शिक्षा और उनके पापों के परिणामों के बारे में उसकी चेतावनी को अस्वीकार किया था।) यह याद रखना क्यों महत्वपूर्ण है कि पाप का परिणाम मिलता है?

- तीन बार लमनायटियों से युद्ध में हराने में असफलता के पश्चात, लिमही लोगों ने आखिरकर क्या किया था? (देखें मुसायाह 21:13–14) प्रभु उनके विलाप के जवाब में धीरे क्यों था? (देखें मुसायाह 21:15; सि. और अनु. 101:1–9 भी देखें।) यद्यपि प्रभु उन्हें नहीं छुड़ाना चाहता था, उसने उनके लिए क्या किया? (देखें मुसायाह 21:15–16) प्रभु कभी-कभी हमें "स्थितियों द्वारा सफल" होने की आज्ञा कैसे देता है?

- लिमही लोग लमनायटियों से कैसे बचे थे? (देखें मुसायाह 22:3–12) ज़राहेमला में लोगों द्वारा उन्हें कैसे स्वीकार किया था? (देखें मुसायाह 22:13–14)

4. प्रभु अलमा के लोगों को दासता से मुक्त करता है।

मुसायाह 23–24 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों की सहायता बीच के अन्तर को देखने में करें कि प्रभु ने लिमही लोगों को किस तरह से आशिषित किया था, जिन्होंने तीन बार अपने आपको दासता से छुड़ाने का प्रयत्न उसकी तरफ से मोड़ने से पूर्व, और किस तरह अलमा लोग को उसने आशीष दी, जो उसकी तरफ पूरी तरह से मुड़े थे।

- जब अलमा और उसके लोग मॉरमन के स्थान में थे, राजा नूह "अपनी सेना को उन्हें नष्ट करने के लिए भेजा था" (मुसायाह 18:33)। प्रभु ने अलमा के लोगों को चेतावनी दी और उन्हें शक्ति दी कि वे बच सकें (मुसायाह 18:34–35; 23:1–5)। यह अन्तर लिमही के अनुभवों से भिन्न कैसे था? (देखें मुसायाह 19:6। ध्यान दें कि पहली बार लमनायटियों ने इन लोगों पर आक्रमण किया, जब नूह उनका राजा था लोगों को कोई चेतावनी नहीं मिली थी।)

- अलमा ने कैसे प्रतिक्रिया की जब लोगों ने उसे उनका राजा बनने को कहा था? (देखें मुसायाह 23:6–7) अलमा ने किस खतरे का ज्ञात किया "एक व्यक्ति अपने आप को दूसरे से ऊपर समझता है?" (देखें मुसायाह 23:8–14) हमें अलमा और उसके लोगों से क्या सीखने में सहायता मिल सकती है इस गलती से बचने में? (देखें मुसायाह 23:15)

- अलमा के मार्गदर्शन के अर्न्तगत, उसके लोग नेक और उन्नति में जीते थे (मुसायाह 23:15–20)। किन्तु, प्रभु ने उन्हें अमुलोन के अर्न्तगत दासता में आने की स्वीकृति दी थी, जो राजा नूह का एक याजक हुआ करता था (मुसायाह 23:23–39)। अलमा के लोगों का बन्दी होना अभिनन्दी के द्वारा की गई भविष्यवाणी को कैसे पूरा किया था? (देखें मुसायाह 12:2, 4–5) किन तरीकों से हमारे गलत चुनाव परिणामों के होने में देर करते हैं जबकि हमारे पाप क्षमा किये जा चुके होते हैं?

  एल्डर मारविन जे. ऐशटोन ने कहा था, "हमारी चुनने की आजादी हमें आचरण से दूर ले जाती है व्यक्तिगत आजादी नहीं देती है हमारी करनी के परिणामों में से। परमेश्वर का प्रेम हमारे लिये लगातार रहता है और कम नहीं होगा, परन्तु वह हमें पीड़ा भरे नतीजों से नहीं बचा सकता जो कि गलत चुनावों के कारण आते हैं" (in Conference Report, Oct. 1990, 24; or *Ensign,* Nov. 1990, 20)।

ध्यान दें कि इसलिए प्रभु अलमा के लोगों को उनके गुजरे हुए वक्त के पापों के परिणामों से बचा नहीं सकता है, वह उन्हें उनकी पीड़ा में शक्ति और आराम देता है, इस पाठ का बाकी हिस्सा चर्चा करता है कि कैसे वह उन्हें दासता से छुडवाता है।

- अलमा के लोग की दासता के संदर्भ में, मॉरमन ने कहा था, "प्रभु ने अपने लोगों को सुधारना उचित समझा" (मुसायाह 23:21) प्रभु ने अपने लोगों को सुधारना क्यों उचित समझा? (देखें मुसायाह 23:21; सि. और अनु. 95:1–2) हमें कैसे जवाब देना चाहिए जब प्रभु हमें सुधारना चाहता हो? (देखें मुसायाह 23:22)

- अलमा के लोगों ने क्या किया जब अमुलोन ने उन्हें मार डालने की धमकी दी थी अगर वे प्रार्थना करेंगे? (देखें मुसायाह 24:10–12) प्रभु ने उनकी शान्त प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया था? (देखें मुसायाह 24:13–16) यह कैसे उनकी मदद करता है प्रभु के लिए "गवाहों के रूप में खड़े होने में", जैसे उन्होंने मॉरमन के पानी में अनुबंध किया था? (देखें मुसायाह 24:14)

- हमारा बोझ उठाना आसान क्यों होता है जब हम "प्रसन्नतापूर्वक और धैर्य के साथ प्रभु की सारी इच्छा पूरी करते हैं?" (मुसायाह 24:14)। प्रभु किन तरीकों से आपको बलवान करता और आपकी सहायता करता है (आपके) बोझों को हल्का करने में"? यह आपको परमेश्वर के साक्षी के रूप में खड़ा होने में कैसे सहायता करता है?

- लिमही लोगों से अति शीघ्र और ढेर सारी आशीषें प्रभु ने अलमा के लोगों को क्यों दी थी जब वे दासता में थे? (मुसायाह 21:5–15 के साथ मुसायाह 23:26–27; 24:10–16 की तुलना करें।) यह कैसे हमारी जिन्दगियों में लागू हो सकता है?

- प्रभु ने उनको छुड़ाने से पूर्व, दोनों अलमा के लोग और लिमही के लोग दुष्ट शासकों की दासता में थे। अलमा ने ध्यान दिया था राजा नूह के दिनों में, लोगों को भी "पापों की रस्सियों से बान्धा गया था" (मुसायाह 23:12)। दुष्टता, या पाप, एक प्रकार की दासता में से निकलने के बारे में क्या सीख सकते हैं? (देखें मुसायाह 7:33; 21:14; 23:23; 29:18–20; सि. और अनु. 84:49–51 भी देखें। सिर्फ प्रभु ही हमें पाप की दासता में से छुड़वा सकता है। हमें उसकी ओर पश्चाताप, विश्वास, इन्सानियत, और अनन्त आज्ञाकारिता के द्वारा लौटना चाहिए।)

निष्कर्ष

संक्षिप्त में दोहराएं कि प्रभु ने बपतिस्मा अनुबंध में वादा किया था (मुसायाह 18:10, 13)। ध्यान दें कि ज्योति की आशीषें प्रभु ने हम से वादा किया था, अनुबंध रखना कठिन नहीं होना चाहिए "उसकी सेवा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना" (मुसायाह 18:10)। उत्साहित करें कि जब हम बपतिस्मे की धर्मविधि को प्राप्त करते हैं और नियमित रूप से पश्चताप, यीशु मसीह में विश्वास, विनम्रता, और आज्ञा-पालन में रहते हैं, हम पाप के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं और अनन्त जीवन की ओर पथ पर होते हैं (2 नफी 31:17–20)।

जब आत्मा का निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. "दोनों अलमा और हिलम ने पानी में डूबकी लगाई थी" (मुसायाह 18:14)

नीचे दिये गये बयान को यह बताने के लिए प्रयोग करें कि कैसे अलमा के पास बपतिस्मा देने का अधिकार था और दिखाएं कि अलमा ने अपने आपको बपतिस्मा नहीं दिया था जब उसने हिलम को बपतिस्मा दिया थाः

अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने सीखाया था, "अभिनन्दी के आने से पहले अलमा ने बपतिस्मा और पौरोहित्य लिया था, परन्तु वह अन्य याजकों के साथ मिल गया दुष्ट राजा नूह के शासन में, और जब उसने हिलम को बपतिस्मा दिया, उसे महसूस हुआ था कि उसे शुद्ध होने की ज़रूरत थी तो उसने पूर्ण पश्चाताप के एक चिन्ह के रूप में स्वयं पानी में डूबकी मारी" (*Doctrines of Salvation,* comp. Bruce R. McConkie, 3 vols. [1954–56], 2:336–37)।

2. नम्रता से प्रभु की सेवा करना

- अलमा के लोगों को बपतिस्मा देने से पहले, उसने प्रार्थना की, "हे प्रभु, अपनी आत्मा को अपने सेवक के ऊपर उंडेल दे, जिससे वह इस कार्य को अपने हृदय की पवित्रता के साथ करे" (मुसायाह 18:12)। हम कैसे आशीष पा सकते हैं जैसे हम अपनी सेवा को प्रभु में इस आत्मा से अनुरोध करें?

3. "सब्त दिन को माने, और उसे पवित्र रखें" (मुसायाह 18:23)

- यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम सब्त दिन को मानें? (देखें मुसायाह 18:23, 25) आपने कैसे आशिषित महसूस किया था जब आपने सब्त दिन को पवित्र रखा था? आपको कुछ बातें करने में क्या मदद होगी इस पवित्र दिन को रखने में?

4. उनकी सहायता करें जो ज़रूरतमन्द हैं

- अलमा ने ज़रूरतमन्दों को देने के बारे में कौनसे नियम की शिक्षा दी थी? (देखें मुसायाह 18:20–29) यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हम आत्मिक रूप के साथ साथ लौकिक रूप से भी दें? उदारता से देने में और कृपा से लेने में क्या आशीषें मिलती हैं?

“मेरी आत्मा को कोई दुःख नहीं है”

पाठ
20

मुसायाह 25–28; अलमा 36

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को लगातार पश्चाताप के नियम, परिवर्तन होना, और सुसमाचार को बांटने में प्रेरणा दें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. मुसायाह 25। लिमही के लोग और अलमा के लोग ज़राहेमला देश में मुसायाह लोगों के साथ इकट्ठे होते हैं। लिमही और उसके लोग बपतिस्मा लेते हैं। राजा मुसायाह अलमा को पूरे ज़राहेमला देश में परमेश्वर का गिरजाघर बनाने के लिए अधिकार देता है।

   ख. मुसायाह 26; 27:1–7। बहुत से गिरजाघर के सदस्य अविश्वासियों द्वारा पाप के मार्ग पर चले जाते हैं। परमेश्वर अलमा से कहता है कि जो कोई पश्चाताप करेगा उसे क्षमा किया जायेगा, परन्तु जो कोई पश्चाताप नहीं करेगा वे लोग गिरजाघर के लोगों में गिने नहीं जायेंगे। मुसायाह एक घोषणा जारी करता है कि कोई अविश्वासी विश्वासियों को नहीं सताये।

   ग. मुसायाह 27:8–31; अलमा 36:6–23। छोटा अलमा और मुसायाह के चार पुत्र परमेश्वर के गिरजाघर को नष्ट करने की कोशिश करते हैं। उनके पिता और अन्य गिरजाघर के सदस्यों की प्रार्थना के उत्तर में, एक स्वर्गदूत उनके समक्ष उपस्थित होता है। छोटा अलमा अपने परिवर्तन की गवाही देता है।

   घ. मुसायाह 27:32–28:20; अलमा 36:24। छोटे अलमा और मुसायाह के पुत्र अपने आपको सुसमाचार के प्रचार के लिए अर्पित करते हैं।

2. कक्षा के एक सदस्य को घटना के सांराश को संक्षिप्त में तैयार करने को कहें जो कि छोटे अलमा और मुसायाह के पुत्रों के परिवर्तन को दर्शातें हों (मुसायाह 27:8–24)।

3. अगर छोटे अलमा के परिवर्तन का चित्र उपलब्ध है, उसे पाठ के दौरान प्रयोग करने को तैयार रहें (सुसमाचार कला चित्र किट 321)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या आपके स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

कक्षा के सदस्यों से पूछें:

- आप में से कितने लोग धर्मपरिवर्तित हैं?

बताएं कि हम अक्सर *धर्मपरिवर्तन* शब्द का संदर्भ एक उस व्यक्ति से करते हैं जिसने आठ वर्ष की उम्र के बाद गिरजाघर में बपतिस्मा लिया हो। अन्य शब्दों में, तथापि, हम में से प्रत्येक एक धर्मपरिवर्ती होना चाहिए। हम में से प्रत्येक, कोइ फर्क नहीं पड़ता हमने कब बपतिस्मा लिया, उसे स्वयं ही यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही को प्राप्त करना चाहिए। कुछ लोगों के लिए यह धर्मपरिवर्तन अचानक और नाटकीय होता है, परन्तु बहुतों के लिए यह अति सुक्ष्म और धीमी प्रक्रिया होती है। कुछ लोग आसानी से धर्मपरिवर्तित हो जाते हैं, जबकि अन्यों को इसकी गवाही और वचनबद्धता को बनाने में संघर्ष करना पड़ता है। (ध्यान दें कि पाठ 22 आगे धर्मपरिवर्तित होने की प्रक्रिया की चर्चा करेगा।)

यह पाठ पांच युवा व्यक्तियों की चर्चा करेगा जो, गिरजाघर के विश्वासी और मज़बूत मार्गदर्शकों के पुत्र होने के बावजूद, यीशु मसीह के सुसमाचार में अपने स्वयं के धर्मपरिवर्तनों का अनुभव किया था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हो। यीशु मसीह के सुसमाचार में धर्मपरिवर्तित होने के महत्व की चर्चा करें और कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने को प्रोत्साहित करें जोकि चर्चा किए हुए नियमों से मिलता हो।

1. लिमही और अलमा के लोग ज़राहेमला देश में मुसायाह के लोगों से जा मिलते हैं।

मुसायाह 25 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। व्याख्या करें कि लिमही के लोग और अलमा के लोग राजा मुसायाह के लोगों से ज़राहेमला में जा मिलते हैं (मुसायाह 22:11–14; 24:20, 23–25)। कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करें कि वहां पर अभी चार समूह राजा मुसायाह के अर्न्तगत ज़राहेमला में एक साथ हुए थेः

क. लिमही लोग, जो जेनिफ के वंशज थे और अन्य जो नफी के देश ज़राहेमला से लौटे थे।
ख. अलमा के लोग, जो जेनिफ के वंशज समूह से बिछड़े थे नूह के शासन में।
ग. नफायटी जो ज़राहेमला में ही थे।
घ. मूलाकायटी ज़राहेमला के वास्तविक निवासी।

व्याख्या करें कि ये सारे लोग अब अपनेआप को नफायटी बुलाते थे (मुसायाह 25:12–13)।

- मुसायाह ने ज़राहेमला में लोगों को एकत्रित किया और उनके लिए लिमही लोगों और अलमा लोगों के अभिलेख को पढ़ा (मुसायाह 25:5–6)। ज़राहेमला के लोगों ने इसका जवाब कैसे दिया था? (देखें मुसायाह 25:7–11) उनके जवाब ने दानशीलता को कैसे दर्शाया था?
- आपको कैसे लाभ मिलेगा लिमही और अलमा के लोगों के लेख का अध्ययन करके?
- मुसायाह के अभिलेख को पढ़ाना खत्म करने के बाद, उसने अलमा को बोलने के लिए आमन्त्रित किया (मुसायाह 25:14)। अलमा ने किस के बारे में बोला था? (देखें मुसायाह 25:15–16) यह क्यों महत्वपूर्ण था कि लोग याद करे कि उन्हें किसने दासता से मुक्त कराया था? अलमा की शिक्षा का क्या असर लिमही और उसके लोगों पर हुआ था? (देखें मुसायाह 25:17–18)
- मुसायाह ने अलमा को "सारे ज़राहेमला देश में गिरजाघर की स्थापना करने" का अधिकार दिया (मुसायाह 25:19–20)। कैसे लोग विभिन्न समुदायों से इकट्ठा होने के बाद भी "एक ही गिरजाघर" में थे? (देखें मुसायाह 25:21–24) उनके उदाहरण कैसे हमारी समस्त दुनिया में गिरजाघर में "एक" बने रहने की चुनौती का सामना करने में सहायता आज करते हैं?

2. गिरजाघर के बहुत से सदस्य अविश्वासियों के द्वारा पाप में ले जाये जाते हैं।

मुसायाह 26; 27:1–7 की चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- क्यों बहुत से "उभरते हुए वंश" गिरजाघर जाने को अस्वीकार करते थे? (देखें मुसायाह 26:1–4) कैसे बुजूर्ग पीढ़ी युवाओं को यीशु मसीह और उसके सुसमाचार की गवाही को पाने में सहायता कर सकते हैं? कैसे बुजूर्ग पीढ़ी युवाओं को परमेश्वर का प्रेम और उसका उनसे रिश्ते को समझाने में सहायता कर सकते हैं?
- अविश्वासी बहुत से गिरजाघर के सदस्यों को पाप की ओर मार्गदर्शन करते थे। अलमा की क्या जिम्मेदारियां थी गिरजाघर के सदस्यों के लिए जिन्होंने पाप किया था? (देखें मुसायाह 26:6–8) प्रभु ने आज के गिरजाघर के मार्गदर्शकों को कौनसी जिम्मेदारियां दी हैं सदस्यों की मदद करने के लिए जिन्होंने गंभीर पाप किये हैं?

- अलमा ने किस से सलाह की जब मुसायाह ने लोगों का न्याय करने से इन्कार कर दिया जिन्होंने पाप किया था? (देखें मुसायाह 26:10–14) आप कैसे निर्देशन अपनी जिम्मेदारियों में प्राप्त करते जब आप परमेश्वर से प्रार्थना करने को लौटते हैं?

- प्रभु ने अलमा को उनके साथ क्या करने को कहा था जिन्होंने पाप किया था? (देखें मुसायाह 26:29–30, 32) पश्चाताप की प्रक्रिया में दोष स्वीकार करना एक महत्वपूर्ण कदम क्यों है? "एक दूसरे को क्षमा करना" क्यों महत्वपूर्ण है? (मुसायाह 26:31)। आप किसी अन्य को क्षमा करने के द्वारा या आपको किसी ने क्षमा किया हो के द्वारा कैसे आशिषित हुए?

- यद्यपि गिरजाघर "दुबारा शान्ति से आरम्भ हुआ और उन्नति की," गिरजाघर के सदस्यों को अक्सर अविश्वासियों द्वारा उत्पीड़ना हुई (मुसायाह 26:37–38; 27:1)। राजा मुसायाह ने क्या जब गिरजाघर के सदस्यों ने इस उत्पीड़ना के बारे में शिकायत की? (देखें मुसायाह 27:1–5) किन तरीकों से आज भी गिरजाघर के सदस्यों को उत्पीड़ना मिल सकती है? कुछ उत्पदित तरीके उत्पीड़ना से निपटने ने क्या है?

3. छोटा अलमा और मुसायाह के पुत्रों का एक स्वर्गदूत द्वारा दौरा किया जाता है।

मुसायाह 27:8–31; अलमा 36:6–23 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि यहां तक मुसायाह के उत्पीड़न को मना करने की एक घोषणा के बाद, कुछ अविश्वासी गिरजाघर को नष्ट करने की कोशिश को जारी रखे थे। इन अविश्वासियों में खुद मुसायाह के चार पुत्र और अलमा का एक पुत्र शामिल थे (मुसायाह 27:8–9)।

नियुक्त कक्षा के सदस्य को घटना को संक्षिप्त में करने को कहें जो कि छोटे अलमा और मुसायाह के पुत्रों की वार्ता की ओर ले जाते हैं मुसायाह 27:8–24)। अगर आप छोटे अलमा का चित्र प्रयोग कर रहे है, उसे अभी दिखाएं।

- प्रभु ने एक स्वर्गदूत को छोटे अलमा और उसके सहकर्मियों से बात करने को क्यों भेजा था? (देखें मुसायाह 27:14) प्रार्थना हमारी सहायता कैसे कर सकती है जब कोई प्रिय सुसमाचार के नियमों पर जीना बन्द कर दें?

  जब वह शिक्षा के गिरजाघर आयुक्त थे जैफरी आर. हॉलैंड ने कहा था, "शायद मानव आत्मा का कोई दुःख माता या पिता के दुःख से मेल रखता हो जो एक बच्चे की आत्मा के लिए भय रखते हैं...[परन्तु] माता पिता कभी भी आशा का दामन या ध्यान रखना या विश्वास रखना नहीं छोड़ते हैं। निःसंदेह वे कभी प्रार्थना करना नहीं छोड़ सकते। वक्त में प्रार्थना ही सिर्फ कर्म का स्रोत है...परन्तु यह ही सर्वशक्तिशाली है उन सब पर" ("Alma, Son of Alma," *Ensign,* Mar. 1977, 80–81)।

- कौन से कुछ तरीके हैं प्रभु अपने प्रियों की प्रार्थना के जवाब में सहायता भेजता है जो भटक गये हैं? (कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करें कि प्रभु हमेशा स्वर्गदूत नहीं भेजता है, जैसे उसने अलमा के लिए किया था, परन्तु वह अन्य अनगिनत तरीकों से सहायता भेजता है। वह एक प्रभावी मार्गदर्शक या मित्र, समर्पित घर शिक्षक या दौरा शिक्षक, या प्रेरणापूर्ण संदेश उनके जीवन पर प्रभाव डालने के लिए भेज सकता है जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं।) आपने एक परिस्थिति में प्रार्थना की शक्ति कैसे देखी है जो कि अलग प्रतिकार उपायों से आती है?

- स्वर्गदूत ने छोटे अलमा से क्या कहा था? (देखें मुसायाह 27:13–17) स्वर्गदूत के जाने के बाद छोटा अलमा को क्या हुआ था? (देखें मुसायाह 27:18–19) अलमा ने कैसे जवाब दिया जब उसने अपने पुत्र का अनुभव स्वर्गदूत के साथ के बारे में सुना था? (देखें मुसायाह 27:20) वह क्यों आनन्दित था?

व्याख्या करें कि उस परिवर्तन के वर्ष के बाद, अलमा ने अपने पुत्र इलमान को अपने अनुभव के बारे में बताया था (अलमा 36:6–24)। मुसायाह 27 और अलमा 36 में अभिलेखों का प्रयोग करके, अलमा के क्षमा पाने के पहले की और बाद की भावनाओं को महसूस करने में कक्षा के सदस्यों की सहायात करें (कक्षा के कुछ सदस्यों को मुसायाह

27 में अभिलेख पर ध्यान देने पर विचार करें जब अन्य अलमा 36 में अभिलेख पर ध्यान दे रहे हों)। आप चर्चा को एक चार्ट जैसे नीचे दिया गया है संक्षिप्त करना चाहेंगेः

पहले	बाद में
सांसारिक और पतन, को निकल फैंकने के लिए (मुसायाह 27:25–27; अलमा 36:11)	परमेश्वर का उद्धार, आत्मा का जन्म (मुसायाह 27:24–25; अलमा 36:23)
भारी कष्टों के द्वारा डांट लगना (मुसायाह 27:28)	अनन्त जलते रहने से बचा लिया (मुसायाह 27:28)
कठोर पीड़ा और पापों की बेड़ियां (मुसायाह 27:29)	कठोर पीड़ा और पापों की बेड़ियों से बचा लिया गया (मुसायाह 27:29)
अन्दकारमय खोह में (मुसायाह 27:29)	परमेश्वर के आश्चर्यजनक प्रकाश को देखा था (मुसायाह 27:29)
अनन्त सन्ताप से पीड़ित (मुसायाह 27:29)	आत्मा को कोई दुःख नहीं है (मुसायाह 27:29)
अपने बहुत से पापों के स्मरण के कारण (अलमा 36:17)	पापों की स्मृति से और पीड़ित नहीं हुआ (अलमा 36:19)
अति आनन्द और अति दुःखदाई (अलमा 36:20–21)	अति दुःखी और अति आनन्दित (अलमा 36:20–21)
कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के विचार से ही मेरी आत्मा अवर्णनीय भय से व्याकूल हो उठी (अलमा 36:14–15)	परमेश्वर के सम्मुख आत्मा जाने को आकुल हो उठी (अलमा 36:22)

- अलमा को उसकी पीड़ा से किसने छुड़ाया? (देखें अलमा 36:17–18)
- अलमा के अनुभव की तुलना अपने धर्मपरिवर्तित होने के अनुभव से कैसे करेंगे? (एक संभव उत्तर के लिए निम्न को देखें।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा थाः “अलमा ने एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में सेवा की। पाप के लिए भय जो कि पूरी तरह से उभर आया था को राज्य के प्रत्येक सदस्य जो सुसमाचार में नहीं जीते को महसूस करना चाहिए; तब पश्चाताप आयेगा, जैसे वह हमारे नफायटी मित्रों के साथ था” (*A New Witness for the Articles of Faith* [1985], 229)।

4. अलमा और मुसायाह के पुत्र अपने आप को सुसमाचार प्रचार के लिए अर्पित करते हैं।

मुसायाह 27:32–28:20; अलमा 36:24 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- छोटा अलमा और मुसायाह के पुत्रों ने अपने धर्मपरिवर्तन के बाद किया था? (देखें मुसायाह 27:32–37) यह कैसे दर्शाता है कि उनका सचमुच में धर्मपरिवर्तित हुआ था? कैसे हमारी प्रतिक्रिया उदारता और गहरे धर्मपरिवर्तन का प्रतिबिंब है?
- मुसायाह के पुत्र और उनके सहपाठी क्यों लमनायटियों के मध्य सुसमाचार का प्रचार करना चाहते थे? (देखें मुसायाह 28:1–3 और नीचे दिये गये उदाहरण को।) प्रभु ने क्या वादा किया राजा मुसायाह के पुत्रों के प्रचार अभाव में? (देखें मुसायाह 28:6–7)

  एल्डर एल. टॉम पैरी ने कहा थाः “धर्मपरिवर्तन के बाद बांटने की इच्छा आती है—कर्त्तव्य के भाव से अति अधिक नहीं, यहां तक कि जिम्मेदारी पौरोहित्य पर होती है, परन्तु एक निष्कपट प्रेम के बाहर से और सराहना के लिए कि जो प्राप्त किया गया है। तब जैसे कि एक “अनमोल मोती” हमारी जिन्दगी में आये, हम सिर्फ उसे

अपने आप के द्वारा सराहना नहीं कर सकते हैं। इसे बांटना चाहिए।" (in Conference Report, May 1984, 106; or *Ensign,* May 1984, 79)।

- एक बार जब हम धर्मपरिवर्तित होते हैं, हम कैसे अपने सुसमाचार बांटने के वचन बढ़ा सकते हैं?

निष्कर्ष

व्याख्या करें कि हम में से प्रत्येक अपने धर्मपरिवर्तन को अनुभव करना चाहिए। यहां तक कि यह अधिक सूक्ष्म और धीरे है अलमा और मुसायाह के पुत्रों के धर्मपरिवर्तन द्वारा, इसका सामान्य परिणाम होगा।

मुसायाह 27:29 पढ़ें। प्रोत्साहित करें कि पश्चाताप और यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा, हम क्षमा प्राप्त कर सकते हैं ताकि हमारी आत्मा "और अधिक पीड़ा न ले।" तब हम दुसरों के जीवन को आशीष देने में प्रभु के हाथों में औजार बन जाते हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री पाठ रूपरेखा को सुझाव की शेषपूरक है। आप इस सुझाव को पाठ के भाग के रूप में प्रयोग करना चाहेंगे।

"इन्होंने अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से बहकाया" (मुसायाह 26:6)

- कैसे छोटा अलमा और मुसायाह के पुत्र, अन्य अविश्वासियों के साथ, गिरजाघर के बहुत से सदस्यों को पाप की ओर मार्गदर्शन करने में समर्थ थे? (देखें मुसायाह 26:6; 27:8–9) कैसे चिकनी चुपड़ी बातें हमें धोखा देती हैं और दूर ले जाती हैं? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हमें ध्यान रखना है कि हम किसके प्रभाव में आ रहे हैं? (देखें नीचे दिये उदाहरण को।) कैसे यीशु मसीह में विश्वास की नींव हमारी सहायता करती है अविश्वासी की चिकनी चुपड़ी बातों के अभाव से दूर रहने में?

  एल्डर एज़्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः "संसार की प्रशंसाध्वनि खोजना, हम संसार के व्यक्तियों द्वारा सम्मान पाना पसन्द करते हैं जिनका संसार सम्मान करता है। लेकिन उसमें वास्तविक खतरा होता है, बहुतायत के लिए, उन सम्मान को पाने के उद्देश्य में, हमें उन बलों के साथ जुड़ना चाहिए और सामान्य शैतानी अभावों और नीतियों का अनुसरण करते है जिसमें कुछ वो व्यक्ति नेतागिरी के पद में लाये जाते हैं।...आज हमें उन चिकनी सांसारिक व्यक्तियों के चुंगल से निकाला गया है" (in Conference Report, Oct. 1964, 57; or *Improvement Era,* Dec. 1964, 1067)।

पाठ
21

"अलमा...न्यायपूर्वक निर्णय किये थे"

मुसायाह 29; अलमा 1–4

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करें कि सरकार के नेक नियमों को और पौरोहित्य छल और घमण्ड से अलग रहने में।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

क. मुसायाह 29। मुसायाह अच्छी सरकार और अपने लोगों को राजा के खतरों की चेतावनी की शिक्षा देता है। लोग उसकी सलाह पर ध्यान देते हैं और न्यायाधीश का अपना राजनीतिक मार्गदर्शक, छोटा अलमा को मुख्य न्यायाधीश के रूप के साथ नियुक्त करते हैं।

ख. अलमा 1। छोटा अलमा मुख्य न्यायाधीश और उच्च याजक के रूप में सेवा करता है। वह लोगों के मध्य पौरोहित्य छल से संग्राम करता है।

ग. अलमा 2–3। अमलिकी का राजा बनने का प्रयास करता है। वह और उसके अनुयाई लमनाटियों के साथ मिल जाते हैं, अपने माथे पर लाल चिन्ह लगाते हैं, और विश्वासी नफायटियों के विरूद्ध युद्ध करते हैं।

घ. अलमा 4। गिरजाघर के सदस्य उन्नति करते हैं परन्तु घमण्डी बन जाते हैं। अलमा न्यायाधीश पद से इस्तीफा देकर शासन में अपने आप को समर्पित करता है।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

निम्नलिखित शब्दों की चॉकबोर्ड पर सूची बनाएं: *राजतन्त्र, प्रजातन्त्र राज्य, लोकतन्त्र, धर्म कानून।*

- इन शब्दों का क्या अर्थ है? (निम्नलिखित परिभाषाओं का कक्षा के सदस्यों की सहायता की ज़रूरत के रूप में प्रयोग करें।)

राजतन्त्र: सरकार एक शासक के मार्गदर्शक के अर्न्तगत, जैसे कि एक राजा, कभी-कभी वास्तविक शासक के पात्र के द्वारा

प्रजातन्त्र राज्य: चुने हुए समूह के प्रतिनिधियों द्वारा शासन

लोकतन्त्र: लोगों द्वारा सरकार, बहुमत शासक के साथ

धर्म कानून: परमेश्वर के निर्देशन द्वारा सरकार एक भविष्यवक्ता को प्रकटीकरण द्वारा

- नफायटियों की किस प्रकार की सरकार मुसायाह के अर्न्तगत थी?

व्याख्या करें बहुत वर्षो तक मुसायाह ने एक राजा और एक भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की थी जिसे लोगों का नेतृत्व करने के लिए परमेश्वर से प्रकटीकरण प्राप्त होते थे। उसके नेतृत्व में, सरकार दोनों पात्रों में थी एक राजतन्त्र और धर्म कानून। राजा मुसायाह के त्याग के पश्चात, छोटे अलमा को नफी लोगों के ऊपर मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया, अतः एक समय काल की शुरूआत में "न्यायाधीशों का शासन" कहा जाने लगा (मुसायाह 29:44), एक नई सरकार के रूप के साथ जिसमें एक प्रजातन्त्र, राजतन्त्र, और धर्म कानून सम्मलित था। यह पाठ बताता है कि कैसे न्यायाधीशों की प्रणाली का संगठन नेक नेतृत्व देने में हुआ था और कुछ चुनौतियों का वर्णन करता है जिनका अलमा ने लोगों के ऊपर मुख्य न्यायाधीश और अध्यक्षिक उच्च याजक के रूप में किया था।

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हो। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र नियमों से मिलते हों।

1. मुसायाह अच्छी सरकार के नियमों की शिक्षा देता है।

मुसायाह 29 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। बताएं कि जब राजा मुसायाह के पुत्रों ने राजा के रूप में उत्तराधिकारी होना अस्वीकार कर दिया था, राजा मुसायाह ने एक लिखित घोषणा लोगों के बीच भेजी, सरकार प्रणाली का राजा के शासन में उसकी मृत्य के बाद बदला जाये के परामर्श करने को।

- मुसायाह ने अपने लोगों को राजा होने के विषय में क्या सलाह दी थी? (देखें मुसायाह 29:13, 16) कौन से दो विभिन्न व्यक्तियों का वर्णन राजा के उदाहरण होने का मुसायाह ने दिया था? (देखें मुसायाह 29: 13; 18। आप संक्षिप्त में इन दो राजा का प्रभाव लोगों पर दोहराना चाहेंगे।) मुसायाह ने एक दुष्ट मार्गदर्शक होने के परिणामों का वर्णन कैसे किया था? (देखें मुसायाह 29:16–18, 21–23)
- मुसायाह ने सुझाव दिया कि लोग राजाओं के शासन के एवाज में न्यायाधीशों की प्रणाली स्थापित करें। क्या गुण मुसायाह ने कहा था इन न्यायाधीशों में होने चाहिए? (देखें मुसायाह 29:11; सि. और अनु. 98:10 भी देखें।) क्यों ये गुण आज के मार्गदर्शकों में महत्वपूर्ण हैं?
- कानून की नींव क्या थी जिसके द्वारा लोगों का न्याय होगा? (देखें मुसायाह 29:11; मुसायाह 29:12–14 भी देखें।) लोग किन आशीषों का आनन्द लेंगे जब वे कानून के द्वारा जीयेंगे जो कि नेक नियमों पर आधारित होगा?
- मुसायाह ने शक्ति को हद में रखने का प्रस्ताव क्यों रखा था जो कि दुष्ट व्यक्तिगत या समूह द्वारा प्राप्त किया जा सकता है? (देखें मुसायाह 29:24–26, 28–29। उसने प्रस्ताव रखा कि वे लोगों की आवाज द्वारा कार्य करें और न्यायाधीशों को लोगों का उत्तरदायी बनायें, और एक प्रणाली की मांग न्यायाधीशों के विरूद्ध करें जो कानून द्वारा न्याय नहीं करते हैं।)
- मुसायाह ने क्या कहा था कि होगा अगर ज्यादातर लोग दुष्टता को चुनेंगे? (देखें मुसायाह 29:27) कुछ तरीके क्या हैं जिनमें हम अन्यों को समझने में और नेकता का चुनाव करने में सहायता कर सकते हैं?

2. छोटा अलमा मुख्य न्यायाधीश के रूप में सेवा करता है और पौरोहित्य छल से संग्राम करता है।

अलमा 1 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि लोगों ने मुसायाह की सलाह का अनुसरण किया और पूरे देश में न्यायाधीश नियुक्त किये, छोटा अलमा के मुख्य न्यायाधीश के रूप में के साथ।

- न्यायाधीशों के शासन के प्रथम वर्ष में, अलमा के सम्मुख निहोर नामक एक व्यक्ति को न्याय के लिए लाया गया था (अलमा 1:1–2, 15)। निहोर लोगों को क्या शिक्षा दिया करता था? (देखें अलमा 1:3–4) उसकी शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ा था? (देखें अलमा 1:5–6) आपके विचार से क्यों निहोर की शिक्षा बहुत से लोगों से याचना कर रही थी? कौनसी कुछ सामान्य शिक्षाओं को आप आज भी सुनते हैं?
- जब निहोर लोगों को प्रचार कर रहा था, उसकी मुलाकात गिडियन से हुई, जो एक गिरजाघर का सदस्य था जो एक शिक्षक के रूप में सेवा करता था (अलमा 1:7–8; आप कक्षा के सदस्यों को याद दिलाना चाहेंगे कि गिडियन राजा लिमही के लिए एक कप्तान के रूप में ईमानदारी से कार्य करता था)। गिडियन ने निहोर की गलत शिक्षा का जवाब कैसे दिया था? (देखें अलमा 1:7) कैसे परमेश्वर के शब्दों के विरूद्ध खड़े रहने में सहायता करता है?

- निहोर गिडियन से क्रोधित हुआ और उसे तलवार से मार डाला (अलमा 1:9)। जब लोगों निहोर को अलमा के सम्मुख ले गये, दो गुनाह क्या अलमा ने उसे दोषी होने के लिए पाये थे? (देखें अलमा 1:10–13। पौरोहित्य छल और हत्या।) पौरोहित्य छल क्या है? (देखें अलमा 1:16; 2 नफी 26:29 भी देखें।) अलमा ने पौरोहित्य छल के प्रति क्या चेतावनी दी थी? (देखें अलमा 1:12) हमारे दिन में आप क्या पौरोहित्य छल का सबूत दे सकते हैं?

- इसलिए निहोर को उसके गुनाहों के लिए मृत्यु दी गई थी, पौरोहित्य छल और अन्य दुष्टता का पूरे देश में फैलना जारी रखा (अलमा 1:15–16)। उनके बीच में क्या हुआ जो गिरजाघर के थे और जो नहीं थे? (देखें अलमा 1:19–22) हम उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं जो हमारे विश्वास से संतुष्ट नहीं होत? (देखें सि. और अनु. 38:41)

- यह विवाद कैसे कुछ गिरजाघर के सदस्यों पर प्रभाव डालता था? (देखें अलमा 1:23–24) हम उनसे क्या सीख सकते हैं जो परमेश्वर के गिरजाघर में अभी भी हैं? (देखें अलमा 1:25) हम कैसे निरन्तर "स्थिर और अपरिवर्तनीय" हो सकते हैं परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में?

अलमा 1:26–30 गिरजाघर के लोगों के बीच शान्ति और उन्नति के एक समय का वर्णन करता है। आप इन आयतों को ज़ोर से पढ़ सकते हैं और तब कुछ निम्नलिखित प्रश्नों की चर्चा करें।

- याजक कैसे उन्हें जिनको उन्होंने सीखाया था पर गौर करते थे? (देखें अलमा 1:26) यह स्वभाव क्यों महत्वपूर्ण है जब हम अन्यों को शिक्षा देते हैं? आप कैसे शिक्षक से आशिषित हुए हैं जिसने इन्सानियत के साथ शिक्षा दी है?

- अलमा ने कैसे गिरजाघर के सदस्यों का जो ज़रूरतमन्द है के साथ व्यवहार का वर्णन किस तरह से किया था? (देखें अलमा 1:27) कैसे उनके उदाहरण हमारे जीवन में शान्ति लाते हैं?

3. अमलिकी राजा बनने का प्रयास करता है लेकिन लोगों की आवाज द्वारा अस्वीकार किया जाता है।

अलमा 2–3 से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- न्यायाधीशों के पाँचवे शासन में, एक अमलिकी नामक धूर्त व्यक्ति बहुत से अनुयाइयों के साथ मिल गया जो उसे देश के ऊपर राजा बनाना चाहते थे (अलमा 2:1–2)। अमलिकी राजा बनना क्यों चाहता था? (देखें अलमा 2:4) उसने क्या किया जब बहुत लोगों ने उसके विरूद्ध मत किया था? (देखें अलमा 2:7–10)

- नफायटियों और अमलिसायटियों के बीच के प्रथम युद्ध का क्या परिणाम हुआ था? (देखें अलमा 2:16–19) जब अलमा ने अमलिसायटियों का शेष भाग का पीछा करने के लिए जासूस भेजे थे, जासूसों ने क्या निरीक्षण किया था? (देखें अलमा 2:23–25) यहां तक वे गिनती में कम थे, नफायटी कैसे काबिल हुए थे अमलिसायटियों और लमनायटियों की मिली जुली सेना को हराने में? (देखें अलमा 2:27–28)

- अमलिसायटियों ने अपने आप को नफायटियों से विख्यात क्यों किया था? (देखें अलमा 3:4, 13) ये चिन्ह कैसे भविष्यवाणी को पूरा करते हैं? (देखें अलमा 3:14–19) यह हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है कि "देखें कि वे अपने ऊपर स्वयं श्राप लाये"? (अलमा 3:19)।

4. गिरजाघर उन्नति करता है लेकिन घमण्डी बन जाता है। अलमा सेवकाई के लिए स्वयं को सौंप देने के लिए न्यायाधीश की पदवी त्याग देता है।

अलमा 4 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- यद्यपि नफायटी को अमलिसाटियों और लमनायटियों के ऊपर युद्ध में विजय प्राप्त हुई, बहुत से नफायटी मारे गये थे, और वो जो बचे थे अपने पशुओं और अनाजों को खोने की पीड़ा उठाई थी (अलमा 4:1–2)। इन पीड़ाओं के कुछ परिणाम क्या हुए थे? (देखें अलमा 4:3–5) हमारी पीड़ायें हमें कैसे हमारे कर्त्तव्यों का स्मरण कराती हैं?

- कितनी देर लगी थी गिरजाघर के सदस्यों को अपने घमण्ड और सांसारिकता की ओर महान नेकता से लौटने में? (देखें अलमा 4:5–6। एक वर्ष।) आपके विचार से क्यों सौभाग्य लोगों के लिए घमण्ड और वास्तुविकता की बातों को अस्वीकार करना कठिन होता है? हम कैसे इस पाप से दूर रह सकते हैं?
- कैसे घमण्ड ने गिरजाघर के अन्दर और बाहर दोनों में गिरजाघर के लोगों का अन्यों से व्यवहार करने में प्रभाव डाला था? (देखें अलमा 4:8–12) कैसे इसने जो गिरजाघर के सदस्य नहीं थे उन पर प्रभाव डाला था? (देखें अलमा 4:10) गिरजाघर के प्रचारक कार्य के लिए गिरजाघर के सदस्यों का उदाहरण महत्वपूर्ण होता है? आपने कब देखा जब लोगों पर गिरजाघर के सदस्यों के उदाहरण द्वारा अच्छे के लिए प्रभाव पड़ा था?
- अलमा ने बढ़ते लोगों के घमण्ड और दुष्टता के जवाब में क्या किया था? (देखें अलमा 4:15–18) उसने यह क्यों किया था? (देखें अलमा 4:19) कैसे परमेश्वर के वचनों का प्रचार करना "[लोगों] को उनके कर्त्तव्यों को याद दिला सकता है"? कैसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करना "घमण्ड, छल और भेद भाव को नीचे गिरा" सकता है?
- वाक्यांश "शुद्ध साक्षी नीचे ले आती है" शक्ति के बारे में क्या सुझाव देता है जिसके साथ अलमा शिक्षा देता था? (अलमा 4:19)। आपका जीवन कैसे बदला अन्यों की सुसमाचार की शुद्ध गवाही को सुन कर? संसार की कौनसी समस्याएं सुसमाचार का प्रचार करने और जीने से सुलझ सकती हैं?

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को चिन्तन करने के लिए आमन्त्रित करें कि कैसे अलमा की चुनौतियों के समान चुनौतियां आज हम भी देखते हैं और कैसे इन समस्याओं को सुलझाना कितनी अतिसमान है।

व्याख्या करें कि आने वाले सप्ताह में, कक्षा के सदस्य अलमा के अन्य चुनौतियों के जवाब के बारे में अध्ययन करेंगे जिनका उसने लोगों के ऊपर एक उच्च याजक के रूप में सामना किया था। कक्षा के सदस्यों को यह देखने के लिए प्रोत्साहित करें कि कैसे अलमा ने हर स्थिति से निपटने के लिए जिसका उसने सामना किया परमेश्वर के वचनों का प्रचार किया था।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

पाठ
22

"क्या तुमने अपनी आकृति में उसकी किरणों को प्राप्त किया है?"

अलमा 5–7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करें कि एक हृदय परिवर्तन के अनुभव का और लगातार परिवर्तन की प्रतिक्रिया का करने का अर्थ क्या है।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

क. अलमा 5। अलमा ज़राहेमला में गिरजाघर के सदस्यों को इस तरह से जीने के लिए उत्साहित करता है कि वे हृदय के "महान परिवर्तन" का अनुभव करने की तैयारी करें।

ख. अलमा 6। ज़राहेमला में बहुत से लोग अपने आप में नम्र हो जाते हैं और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं। अलमा और लोग ज़राहेमला में गिरजाघर की व्यवस्था आरम्भ करते हैं।

ग. अलमा 7। गिडियन की घाटी में, अलमा यीशु मसीह की गवाही देता है। वह लोगों को निरन्तर उद्धारक का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

चॉकबोर्ड पर दो बड़े हृदय बनाएं। व्याख्या करें कि हृदय का अक्सर एक हमारी अभिलाषाओं और मनोभावों के चिन्ह के रूप में इस्तेमाल होता है। एक हृदय के ऊपर *घमण्ड* लिखें।

- घमण्डी लोगों का हृदय किस पर लगा रहता है? (कक्षा के दो सदस्यों को अलमा 4:8 और 5:53 को ज़ोर से पढ़ने दें।) "संसार की व्यर्थ वस्तुओं" के कुछ उदाहरण क्या हैं? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को हृदय में लिखें जिसके ऊपर *घमण्ड* लिखा हो।)

दूसरे हृदय के ऊपर *दीनता* लिखें।

- दीन लोगों की अभिलाषा क्या होती हैं? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को हृदय में लिखें जिसके ऊपर *दीनता* लिखा हो।)

व्याख्या करें कि जब हम परमेश्वर के सम्मुख अपने आप को दीन करते हैं, हम तैयारी करते हैं "परमेश्वर में जन्म" की और "अपने हृदय में महान परिवर्तन" का अनुभव करते हैं (अलमा 5:14)। यह पाठ उन परिस्थितियों की चर्चा करता है जिनके अर्न्तगत प्रभु हमारे हृदयों को परिवर्तित कर सकता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हो। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से जुड़े हो।)

1. अलमा लोगों को शिक्षा देता है कि वे हृदय के "महान परिवर्तन" का कैसे अनुभव कर सकते हैं।

अलमा 5 में से चुनी आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को स्मरण कराये कि अलमा लोगों की सरकार में मुख्य न्यायाधीश था। मुख्य न्यायाधीश के रूप में, उसके पास देश के कानून को लागू करने का अधिकार था।

वह गिरजाघर में नियुक्त उच्च याजक भी था। उच्च याजक के रूप में, उसकी परमेश्वर के वचन का प्रचार करने की जिम्मेदारी थी। जब उसने गिरजाघर के सदस्यों की दुष्टता को देखा, उसने मुख्य न्यायाधीश के पद से इस्तीफा दे दिया और "अपने आपको पूरी तरह से प्रधान पौरोहित्य की सीमा के अन्दर रखा..., वचन की गवाही के लिए" (अलमा 4:11–20)। अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने शिक्षा दी थी कि क्यों यह अलमा के लिए महत्वपूर्ण था कि यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें नाकि मुख्य न्यायाधीश के रूप में सेवा करें।

"प्रभु भीतर से बाहर की ओर कार्य करता है। संसार बाहर से भीतर की ओर कार्य करता है।....संसार व्यक्तियों को उनके आस-पास का वातावरण बदलने की प्रवृति देता है। मसीह व्यक्तियों को बदलता है जो बाद में अपने आस-पास के वातावरण को बदलते हैं। संसार मानव स्वभाव को रचता है, परन्तु मसीह मानव प्रवृति को बदला सकता है (in Conference Report, Oct. 1985, 5; or *Ensign,* Nov. 1985, 6)।

- अपने संबोधन के आरम्भ में, अलमा ने अपनी पूर्व पीढ़ी के बारे में बोला, जिनकों शारीरिक और आत्मिक दासता से छुड़ाया गया था (अलमा 5:3–9)। आपके विचार से क्यों लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वे अपने पिता के कारावास और मुक्ति को याद रखें? (जब कक्षा के सदस्य इस प्रश्न की चर्चा करें, आप उन्हें अलमा 5:5–7 पढ़ने को दे सकते हैं।) प्रभु के उनके "हृदय को परिवर्तन" करने के बाद अलमा ने उनके पिताओं का वर्णन कैसे किया था? (देखें अलमा 5:7–9)

- कक्षा के एक सदस्य को अलमा 5:10 में तीन प्रश्नों को पढ़ने दें। इन प्रश्नों के उत्तर क्या हैं? (देखें अलमा 5:11–13) संदेश क्या था जो अलमा के पिता के हृदय में "एक महान परिवर्तन" लाने की ओर ले गया था? (देखें मुसायाह 16:13–15) उन लोगों का क्या हुआ था जो बड़े अलमा पर विश्वास करते थे जब वह उन्हें सुसमाचार की शिक्षा देता था? (देखें अलमा 5:13; मुसायाह 18:1–11 भी देखें।) उद्धारक की दूसरों की गवाहियां हमारी हृदय परिवर्तन का अनुभव करने में कैसे सहायता कर सकती है?

- ज़राहेमला में लोगों को अपने पूरे संदेश में, अलमा ने हृदय के "महान परिवर्तन" और "परमेश्वर में जन्म" के अनुभवों को बोला था (अलमा 5:14)। हम अक्सर शब्द धर्मपरिवर्तन का प्रयोग करते हैं जब हम इस अनुभव को बोलते हैं। धर्मपरिवर्तन का क्या अर्थ है? (देखें मुसायाह 5:2; 27:24–26) धर्मपरिवर्तन क्या एक घटना है या एक प्रतिक्रिया है?

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने शिक्षा दी थीः "सिवाय...असमान्य परिस्थितियों में, जैसे अलमा के साथ थी (मुसायाह 27), आत्मिक दुबारा जन्म एक प्रतिक्रिया है। यह एक दम से नहीं आती है। यह धारे-धारे होती है। पश्चातापी व्यक्ति एक आत्मिक वास्तविकता में जीवित होता है एक के बाद दूसरे में, जब तक कि वह पूरी तरह से मसीह में जीवित नहीं होता और उसकी उपस्थिति में सदैव रहने योग्य नहीं होता" (*Doctrinal New Testament Commentary,* 3vols. [1966–73], 3:401)।

  इस चर्चा के भाग के रूप में, आप कक्षा के सदस्यों के साथ अलमा 5:45–46 पढ़ना चाह सकते हैं। ध्यान दें कि यद्यपि अलमा, जिसने एक चमत्कारी तरह से धर्मपरिवर्तन का अनुभव किया था, ने "बहुत दिनों तक उपवास अथवा प्रार्थना की थी कि [उसे] इन बातों का पता चल सके।"

व्याख्या करें कि जैसे अलमा ज़राहेमला में लोगों को प्रचार करता था, वह उनसे श्रृंखला में प्रश्नों को पूछता था। हम इन प्रश्नों का प्रयोग अपनी परीक्षा में कर सकते हैं जैसे हम लगातार धर्मपरिवर्तन प्रतिक्रिया करते हो। कक्षा के सदस्यों का क्रंम से अलमा 5:14–21, 26–31 आयतों को पढ़ने दें। उनको इन आयतों से प्रश्नों की चर्चा करने के लिए आमन्त्रित करें जोकि उनकी विशेषता से अर्थपूर्ण हैं। आप निम्नलिखित प्रश्नों की चर्चा करना चाह सकते हैं हिस्सा लेने वालों को प्रोत्साहित करके और कक्षा के सदस्यों के चिन्तन करने में सहायता करके कि कैसे वे धर्मपरिवर्तन प्रतिक्रिया में लगातार कर सकते हैंः

- अलमा ने कहा था "तुम अपनी अकृति के ऊपर परमेश्वर की खुदी हुई आकृति को देख सकते हो" (अलमा 5:19)। शब्द *आकृति* संदर्भ करता है एक व्यक्ति के स्वभाव को या एक व्यक्ति के पात्र जिसे वह अनुभव करता है। कक्षा के सदस्यों को आमन्त्रित करें शान्तिपूर्वक कैसे वे अलमा के निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देंगेः "क्या आपने उसकी आकृति को अपनी आकृति में प्राप्त किया है?"

- यह कैसे सहायक हो सकता है कि हम अपने आप में प्रभु के द्वारा न्याय की कल्पना करें? (देखें अलमा 5:15–19)

- अलमा ने पूछा था, "अगर हृदय परिवर्तन का अनुभव तुम्हें है और अगर तुमने आनन्द दाई प्रेम के गीत को गाना महसूस किया है...क्या तुम ऐसा अभी महसूस कर सकते हो?" (अलमा 5:26)। कक्षा के सदस्यों को शान्तिपूर्वक विचार करने के लिए आमन्त्रित करें कि कैसे वे इस प्रश्न का उत्तर देंगे (एक बार एक व्यक्ति ने "आनन्द दाई प्रेम के गीत को गाना महसूस किया," क्या कारण हो सकता है उसके उसके अहसास को कम करने का? धर्मपरिवर्तन प्रतिक्रिया में जारी रहने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

- हम अपने आपको "परमेश्वर के सामने निर्दोष" कैसे रख सकते हैं? (देखें अलमा 5:27, 50–51)

- घमण्ड और जलन हमें परमेश्वर से मिलने में तैयार होने कैसे नहीं देती है? (देखें अलमा 5:28–29) हम परमेश्वर से मिलने को तैयार क्यों नहीं होते हैं अगर हम दूसरों का मजाक उड़ाते हैं या तिरस्कार करते हैं, जैसे आयत 30 और 31 में अंकित है?

- अलमा ने इन प्रश्नों को पूछने के बाद, उसने लोगों से अपने पापों का पश्चाताप करने की विनति की (अलमा 4:31–32)। तब उसने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा माफ किया जा सकेगा (अलमा 5:33–35)। उद्धारक ने हमें क्या निमन्त्रण दिया है? (देखें अलमा 5:33–35) यह निमन्त्रण हमें कैसे आशा दे सकता है?

- ज़राहेमला में अधार्मिक लोगों से, अलमा ने कहा था, "एक गड़रिये ने तुम्हें पुकारा और अब भी तुम्हें पुकार रहा है, लेकिन फिर भी तुम उसकी आवाज को नहीं सुन रहे हो!" (अलमा 5:37) अलमा ने गड़रिए का संदर्भ किसका दिया है? (देखें अलमा 5:38) कैसे उद्धारक हमें बुलाता है? हम उसकी आवाज़ को सुन कर क्या कर सकते हैं?

- अलमा 5:43–49 से हम एक भविष्यवक्ता की बुलाहट के बारे में क्या सीख सकते हैं?

- अलमा ने लोगों को चेतावनी दी कि उन्हें अपनी दुष्टता में स्थायी, या निरन्तर नहीं रहना चाहिए (अलमा 5:53–56; मुसायाह 16:5 भी देखें; सि. और अनु. 58:42–43)

- अलमा ने अपने लोगों को आज्ञा दी, "तुम पापियों में से निकल आओ, और अलग रहो" (अलमा 5:57)। हम अपने आपको दुष्टता से कैसे अलग कर सकते हैं जबकि हम संसार में जीते हैं?

2. अलमा और उसके लोग ज़राहेमला में गिरजाघर के आदर्श की स्थापना करते हैं।

अलमा 6 से चुनी आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अलमा के उपदेश के बाद, बहुत से लोगों ने अपने पापों से पश्चाताप किया और परमेश्वर के सम्मुख अपने आपको विनम्र किया (अलमा 6:1–2)। क्यों अन्य लोग अपने पापों से पश्चाताप के इच्छुक नहीं थे? (देखें अलमा 6:3। वे "अपने हृदय में घमण्ड से भरे हुए थे।)घमण्ड लोगों को पश्चाताप करने से कैसे रोकता है? हम अपने हृदयों में घमण्ड से कैसे निकल सकते हैं?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः "घमण्ड के विनाश के लिए इन्सानियत, विनम्र और विनीत बनो (देखें अलमा 7:23)....चलो हम विनम्रता को चुने। हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं अपने भाइयों और बहनों के प्रति नफरत पर विजय पाने के द्वारा, अपने आप में जैसे सम्मान करना, और उन्हें ऊपर उठाकर या

अपने से ऊंचा करके...हम अपने आप का विनम्र करना चुन सकते हैं सलाह प्रप्ति और उद्धार द्वारा...हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं उनको माफ करके जिन्होंने हमें सताया है...हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं बिना स्वार्थ के सेवा करके...हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं मिशन में जाने द्वारा और वचन का प्रचार करके जो कि दूसरों को विनम्र कर सकता है...हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं जल्दी जल्दी मन्दिर में अधिक जाकर।...हम अपने आप को विनम्र करन चुन सकते हैं अपने पापों को मन कर और परित्याग करने के द्वारा और परमेश्वर में जन्म लेकर..हम अपने आप में विनम्र होना चुन सकते हैं परमेश्वर से प्रेम करने के द्वारा, अपने आप को उसके हाथ में देकर, और अपने जीवन में उसे प्रथम रखकर" (in Conference Report, Apr. 1986, 6; or *Ensign,* May 1986, 6–7)।

- अलमा और ज़राहेमला में लोग "गिरजाघर के आदर्श की स्थापना की शुरूआत की" याजक और एल्डरों की नियुक्ति द्वारा, नये धर्मपरिवर्तित को बपतिस्मा देकर, और एक साथ एकत्रित होकर अक्सर उपवास और प्रार्थना करके (अलमा 6:1–6)। गिरजाघर में इस प्रकार के आदर्श कैसे हमारी परिवर्तन की प्रतिक्रिया को जारी रखने में सहायता करता है?

3. अलमा यीशु मसीह की गवाही देता है। वह गिडियन में लोगों को उद्धारक के पीछे चलने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अलमा 7 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि अलमा के ज़राहेमला में सीखने के बाद, वह गिडियन की घाटी में लोगों को प्रचार करने गया था (अलमा 6:8)।

- अलमा ने गिडियम में लोगों को बताया था कि वहां पर "बहुत सी बातें होने वाली है" परन्तु यीशु मसीह का आना बड़ा महत्वपूर्ण था (अलमा 7:7)। अलमा ने उद्धारक के धरती पर मिशन के बारे में क्या सीखाया था? (देखें अलमा 7:10–13) उद्धारक ने अपने ऊपर हमारे दर्द, पीड़ा बीमारी, और पाप क्यों लिये थे? (देखें अलमा 7:11–14। अगर उचित हो, कक्षा के सदस्यों को आमन्त्रित करें उनके उद्धारक की शक्ति के बारे में अपने एहसासों को बांटने में, उनकी ज़रूरतों में, परेशानियों, और दुःख और पापों को दूर करने में, समझने में।)
- किस तरह से अलमा का संदेश गिडियन के लोगों में विभिन्न था ज़राहेमला में उसके संदेश से? किस तरह से संदेश एक समान था? अलमा ने गिडियन में लोगों को पश्चाताप का प्रचार क्यों किया यहां तक कि वे नेकता में जीते थे? (देखें अलमा 7:9, 14–16; 22, 26)

निष्कर्ष

कक्षा के एक सदस्य को अलमा 7:23–25 पढ़ने दें। व्याख्या करें कि ये आयतें एक व्यक्ति का वर्णन करती हैं जिसने हृदय परिवर्तन का अनुभव किया था अलमा के बोलने के द्वारा और जिसने "आनन्दमई प्रेम के गीत गाये" (अलमा 5:26)। जैसे हम धर्मपरिवर्तन प्रतिक्रिया में जारी रहते हैं, हम आगे के दिन को देखने में सामर्थ्य होते हैं जब हम प्राप्त करेंगें "स्वर्ग के राज्य में जाएंगे, कभी बाहर नहीं होंगे" (अलमा 7:25)।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

पाठ
23

"एक से अधिक ने गवाही दी"

अलमा 8–12

उद्देश्य

कक्षा के सदस्य की उद्धार की योजना की समझ को बढ़ाना और सुसमाचार सच्चाई की एक से अधिक की गवाही की शक्ति का होना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्माशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. अलमा 8–9। मीलक में प्रचार के पश्चाताप, अलमा अमोनिहा के लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाता है, परन्तु वे उसे अस्वीकार कर देते हैं। वह वहां से चला जाता है परन्तु एक स्वर्गदूत उसे लौटने की आज्ञा देता है। अलमा का अमूलक द्वारा स्वागत किया जाता है, और दोनों को अमोनिहा में प्रचार करने की आज्ञा मिलती है।

   ख. अलमा 10। अमूलक अमोनिहा के लोगों को प्रचार करता है और अपने धर्मपरिवर्तन का वर्णन करता है। लोग चकित हो जाते हैं कि यहां पर अलमा की शिक्षा का एक और गवाह है। अमूलक अधर्मी वकीलों और न्यायाधीशों के साथ बहस करता है।

   ग. अलमा 11। अमूलक जीज़रोम के साथ बहस करता है और मसीह के आने की, दुष्टों का न्याय होगा, और उद्धार की योजना की गवाही देता है।

   घ. अलमा 12। अलमा आगे अमूलक के शब्दों की व्याख्या करता है, कठोर हृदय और दुष्टता के विरूद्ध चेतावनी देता है और उद्धार की योजना और पतन की गवाही देता है।

2. कक्षा के एक सदस्य से संक्षिप्त में अभिलेख तैयार करने को कहें कि कैसे अलमा और अमूलक मिले थे (अलमा 8:19–32)।

3. कक्षा के दो सदस्यों से अलमा 11:21–40 में से संवाद को पढ़ने की तैयारी करने को कहें, जब एक व्यक्ति अमूलक के शब्दों को और दूसरा व्यक्ति जीज़रोम को पढ़ें।

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहें हैं, किसी वस्तु को एक डिब्बे में या थैले में कक्षा में लाएं। ऐसी वस्तु लाएं, जिसे कक्षा के सदस्य सोच भी न सके या विश्वासा करें कि आपके पास हो सकती हैं। ध्यान रखें कि डिब्बा या थैला वस्तु को कक्षा के सदस्यों से छिपाये रखेगा।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या आपके स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

डिब्बा (या थैला) भीतरी वस्तु के साथ दिखाएं। (देखें "तैयारी," वस्तु 4)। कक्षा के सदस्यों से पूछें कि डिब्बे में क्या है, परन्तु वस्तु को उन्हें न दिखाएं। पूछे कि क्या वे विश्वास करते हैं कि ऐसी कोई वस्तु इस डिब्बे में वास्तव में है।

कक्षा के सदस्यों को जवाब देने के मौके के पश्चात, उनमें से एक को डिब्बें के भीतर देखने के लिए आमन्त्रित करें। इस व्यक्ति से अन्य कक्षा के सदस्यों को बताने को कहें कि डिब्बे के भीतर क्या है। तब कक्षा के सदस्यों से दुबारा पूछें कि उन्हें विश्वास है वस्तु इस डिब्बे में है।

- यह विश्वास करना क्यों आसान था कि वस्तु डिब्बें में है किसी एक के आकर उसमें देखने के पश्चात?

व्याख्या करें कि जैसे अलमा ने अमोनिहा के लोगों को पश्चाताप के प्रचार किया, उससे अमूलक आकर मिल गया था। यह पाठ चर्चा करता है कैसे अमूलक की गवाही के द्वारा अलमा की शिक्षा की शक्ति मिलती है।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हों। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से मिलते हों।

1. अलमा अमोनिहा के लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाता है, परन्तु वे उसे अस्वीकार कर देते हैं।

अलमा 8–9 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। कक्षा के सदस्यों को याद दिलाये कि अलमा ने न्याय आसन नफी को दे दिया था और उसने अपनी प्रचारक यात्रा की शुरूआत की। इसमें अमोनिहा का दुष्ट शहर की यात्रा भी सम्मलित थी।

- उसके गिरजाघर की स्थापना गिडियन और मीलक के लोगों के बीच करने के पश्चात, अलमा अमोनिहा देश में प्रचार करने के लिए गया था। उसने वहां कौनसी चुनौती का सामना किया था? (देखें अलमा 8:8–9) कौनसे अलमा 8:10 के शब्द अमोनिहा में अलमा के प्रयास के बल का वर्णन करते हैं? अमोनिहा के लोगों का अलमा के प्रचार के प्रति कैसा जवाब था? (देखें अलमा 8:11–13)
- क्या हुआ था जब अलमा ने अमोनिहा छोड़कर आरून के शहर की ओर यात्रा की थी? (देखें अलमा 8:14–17) स्वर्गदूत के अनुसार, अलमा के आनन्दित होने का कारण क्या था? (देखें अलमा 8:15) अलमा ने स्वर्गदूत के निर्देशन का जवाब कैसे दिया था? (देखें अलमा 8:18) उसके जवाब से हम क्या सीख सकते हैं?

कक्षा के नियुक्त सदस्य को अलमा और अमूलक कैसे मिले थे के बारे में संक्षिप्त में बताने दें (अलमा 8:19–32)। अगर आप कक्षा के सदस्य से ऐसा करने को नहीं कहा है, आप स्वयं इस अभिलेख के बारे में बतायें।

- प्रभु ने अमूलक को अलमा के साथ प्रचार करने के लिए कैसे तैयार किया था? (देखें अलमा 8:20, 27; 10:7–11) किसी व्यक्ति को प्रभु का कार्य करने के लिए तैयार करने के लिए कुछ तरीकें क्या हैं?
- अमोनिहा के लोग लगातार अलमा की चेतावनी को क्यों अस्वीकार करते रहे थे? (देखें अलमा 9:5) कौनसे विवाद उसके संदेश को अस्वीकार करते थे? (देखें अलमा 9:2, 6)
- अलमा ने कहा था कि अमोनिहा के दुष्ट लोग अपने पिता की नेकता की परम्परा को, परमेश्वर की आज्ञाओं, और दासता से प्रभु द्वारा उनको मुक्त कराना भूल गये थे (अलमा 9:8–11)। उनकी भूल कैसे उन्हें दुष्टता की ओर ले गई थी? कुछ कारण क्या है कि लोग भूल जाते हैं कि प्रभु ने उनके और अन्यों के लिए क्या किया है? आप कौन से प्रभावी तरीकें प्रभु की आशीषें अपने लिए स्मरण कराने के लिए पाते हैं?
- अलमा ने चेतावनी दी थी कि अगर अमोनिहा के दुष्ट नफायटी पश्चाताप नहीं करेंगे, न्याय के दिन लमनायटी जितना सहन करेंगे तुम उतना नहीं कर सकोगे (अलमा 9:15)। ऐसा क्यों होगा? (देखें अलमा 9:15–24; लूका 12:47–48 भी देखें; सि. और अनु. 82:3) प्रभु उनसे क्या अपेक्षा है जिन्होंने महान प्रकाश को प्राप्त किया है?
- अलमा ने "लमनायटियों के लिए कई वचन दिये गये हैं" के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (अलमा 9:16–17)। कैसे यह वचन आज पूरे हो रहे हैं?

2. अमूलक अमोनिहा के लोगों को प्रचार करता है।

अलमा 10 से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि अलमा के लोगों से बोलने के बाद, अमूलक खड़ा हुआ और उन्हें प्रचार करने लगा। अमूलक लेही का वंशज था और एक धनवान व्यक्ति था, समाज में "उसका बड़ा नाम" था (अलमा 10:2–4)।

- अमूलक ने कहा था कि उसे "बहुत बार बुलाया गया" लेकिन "सुना नहीं" और वह "इन बातों के विषय में जानता था" लेकिन "जान न सका" (अलमा 10:6)। कुछ किन तरीकों से प्रभु हमें बुलाते हैं? हम कई बार उसे जवाब देने में धीरे क्यों हो जाते हैं? हम कैसे उसके प्रति अधिक आदरणीय हो सकते हैं?

- अमूलक आखिरकार कब धर्मपरिवर्तित हुआ था? (देखें अलमा 10:7–11; आप कक्षा के एक सदस्य से इन पांचों आयतों को ज़ोर से पढ़ने को कहना चाह सकते हैं।)

- उन वकीलों के क्या इरादे थे जो अमूलक से प्रश्न कर रहे थे? (देखें अलमा 10:13–16, 31–32) क्यों वे उसे धोखा नहीं दे पाये थे? (देखें अलमा 10:17)

- अमूलक ने वकीलों को झिड़की और चेतावनी दी थी कि वे लोगों को नष्ट करने की नींव डाल रहे थे (अलमा 10:17–21, 27)। वे कैसे नींव डाल रहे थे? पहले से विनाश होने से लोगों को किसने बान्ध रखा था? (देखें अलमा 10:22–23) आप विचार से कैसे योग्य लोगों की प्रार्थना आज की दुष्टता के प्रभाव के विपरीत रहने में सहायक होती है?

- अमूलक के शब्दों से लोग चकित क्यों हुए थे? (देखें अलमा 10:21) एक से अधिख गवाह होने से क्या लाभ हैं जब सुसमाचार बांटते हैं? हम इन प्रयासों में एक दूसरे का सहयोग कैसे कर सकते हैं? (आप लोगों को गिरजाघर में बतला सकते हैं जो जोड़े में शिक्षा देते हैं, जैसे कि पूरे-समय के प्रचारक, घर शिक्षक, दौरा करने वाले शिक्षक, और माता-पिता।)

कक्षा के सदस्यों को बचे हुए पाठ पर ध्यान देने के लिए आमन्त्रित करें कि कैसे अलमा और अमूलक ने एक समान सिद्धान्तों का प्रचार करने के द्वारा निरन्तर एक दूसरे के प्रयासों में सहयोग दिया था। जब सिद्धान्तों की चर्चा होती है, आप उन्हें चॉकबोर्ड पर संक्षिप्त करना चाह सकते हैं। निम्नलिखित चार्ट एक उदाहरण देता है कि आप इसे कैसे कर सकते हैं।

सिद्धान्त	अमूलक की साक्षी	अलमा की साक्षी
प्रायश्चित	अलमा 11:40	अलमा 12:33–34
पश्चाताप	अलमा 11:40	अलमा 12:24
न्याय	अलमा 11:41	अलमा 12:14
पुनरूत्थान	अलमा 11:41–42	अलमा 12:24–25

3. अमूलक जीज़रोम से बहस करता है और मसीह की गवाही देता है।

अलमा 11 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि अध्याय 11 की शुरूआत नफायटियों के सिक्के और नाप के वर्णन के साथ होती है। अलमा 11:20 के शुरू में अमूलक से जीज़रोम के प्रश्नों द्वारा होती है, वह अमोनिहा शहर में एक धूर्त वकील था।

- अमोनिहा में न्यायाधीश पैसा कैसे कमाते थे? (देखें अलमा 11:1, 20) वे क्यों अलमा और अमूलक के साथ संघर्ष करना चाहते थे? (देखें अलमा 11:20)

दो नियुक्त कक्षा के सदस्यों को अमूलक और जीज़रोम के बीच की वार्त को पढ़ने दें (अलमा 11:21–40 में पाया जाता है)। या इन आयतों का परिचय देने के लिए पाठ के अन्त में अतिरिक्त शिक्षा सुझाव का प्रयोग करें। तब बचे हुए इस भाग में प्रश्नों की चर्चा करें।

- अमूलक ने जीज़रोम के पहले प्रश्न का जवाब कैसे दिया था? (देखें अलमा 11:21–22) हम कैसे अपने शब्द रख सकते हैं और प्रभु की आत्मा के अनुसार शिक्षा देते हैं?

- जीज़रोम ने अमूलक से पूछा थी कि यीशु लोगों को उनके पाप में बचायेगा (अलमा 11:34)। अमूलक ने यह कहने के लिए क्या कारण दिये कि हम हमारे पापों में बचाये नहीं जा सकते? (देखें अलमा 11:34, 37) अपने पापों में बचने के झुठे सुझाव और सच्चाई कि हम अपने पापों से बचाये जाते हैं के बीच क्या अन्तर है? (अगर हम पश्चाताप नहीं करते हैं और पाप में लगे रहते हैं, हम बचाये नहीं जा सकते हैं। अगर हम पश्चाताप करते हैं तो यीशु मसीह हमें हमारे पापों से बचा सकता है।)

- मसीह के प्रायश्चित से सभी लोगों को कौनसी आशीषें प्राप्त होंगी? (देखें अलमा 11:42–43) कौनसी आशीषें सिर्फ उनको मिलेंगी जो उस पर विश्वास रखते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं? (देखें अलमा 11:40–41)

- अमूलक ने पुनरूत्थान के विषय में क्या शिक्षा दी थी? (देखें अलमा 11:43–45) यह सच्चाई जानना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

4. अलमा आगे अमूलक के शब्दों की व्याख्या करता है और कठोर हृदयों के विरूद्ध चेतावनी देता है।

अलमा 12 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। ध्यान दें कि अमूलक के जीज़रोम के विवाद के उत्तर देने के बाद, जीज़रोम "कांपने लगा" था (अलमा 11:46)। इसे देखते हुए, अलमा ने "अमूलक के शब्दों को स्थापित" करने के लिए बोलना शुरू किया,...उसके आगे धर्मशास्त्र की बातों का भेद खोलने के लिए जो अमूलक ने समझाया था" (अलमा 12:1)।

- अलमा 12:3–6 में जीज़रोम को अलमा के शब्दों से, शैतान की क्या इच्छाएं हैं और कैसे वह काम करता है के बारे में हम क्या सीखते हैं? (ध्यान दें कि शैतान अक्सर एक व्यक्ति को धोखा देने की कोशिश करता रहता है जिसमें कई लोगों का नाश होता है।) हम कैसे अपने आप को शैतान की चतुर चालों से बचा सकते हैं?

- अलमा ने किस विषय के बारे में शिक्षा दी थी कि कैसे हमारे हृदयों की परिस्थिति हमारी परमेश्वर के शब्दों की समझ पर प्रभाव डालती है? (देखें अलमा 12:9–11) उन पर क्या आशीषें आती हैं जो अपना हृदय कठोर नहीं करते हैं? (देखें अलमा 12:10) हम कैसे हृदयों को बना सकते हैं जो कि पहचाने, समझे, और परमेश्वर के शब्दों को ग्रहण करे? (देखें 1 नफी 2:16; 15:11)

- अलमा ने सीखाया था कि लोग जो अपना हृदय परमेश्वर के शब्दों के विरूद्ध कठोर करते हैं उनको उनके शब्दों, कार्यो, और विचारों द्वारा दोषी ठहराया जाएगा (अलमा 12:13–14)। आपके विचार से क्यों प्रभु हमारा न्याय हमारे विचारों यहां तक हमारे शब्दों और प्रतिक्रिया के अनुसार करेगा?

- अलमा ने कैसे उनकी परिस्थिति का वर्णन किया था जो पश्चाताप नहीं करते हैं और इस प्रकार अपने पापों में मर जाते हैं? (देखें अलमा 12:14–18) क्यों ये लोग ऐसे रहेंगे "जैसे कि कोई मुक्ति ही नहीं है"? (देखें सि. और अनु. 19:16–18)
- अलमा 12:22–34 में आदम के पत्तन और मुक्ति की योजना का अलमा का वर्णन है। अलमा ने नश्वरता के उद्देश्य के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (देखें अलमा 12:24) इस नियम को समझना कैसे हमारी अधिक नेकता से जीने में सहायता कर सकता है?
- यह महत्वपूर्ण क्यों है कि "परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आज्ञा दी थी, उनके मुक्ति की योजना का ज्ञात हो जाने *के बाद*"? (अलमा 12:32; तिरछे लिखे शब्द जोड़े गये हैं)। कैसे मुक्ति की योजना को समझना हमें आज्ञाओं का पालन करने में सहायक है? कैसे माता-पिता और शिक्षक इस नियम को लागू कर सकते हैं जब वे आज्ञाओं के महत्व की शिक्षा देते हैं?
- हमारे लिए यह जानना क्यों ज़रूरी है कि परमेश्वर हमारी मुक्ति के लिए योजना की तैयारी कर रहा था? मुक्ति की योजना हमें परमेश्वर के न्याय और कृपा के बारे में क्या शिक्षा देती है?

निष्कर्ष

ध्यान दें कि जैसे अलमा और अमूलक ने एक साथ यीशु मसीह के सुसमाचार के साक्षी होने का कार्य किया था, उन्होंने एक दूसरे को बल दिया और मुक्ति की योजना के बारे में शक्तिशाली शिक्षा दी थी? कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे एक दूसरे को बल देकर सुसमाचार की साक्षी दें।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

जोज़रोम के प्रश्नों का उत्तर देना

उनके धर्मशास्त्र बन्द होने के साथ और आगे कोई चर्चा नहीं, कक्षा के सदस्यों को उन प्रश्नों के सही उत्तर देने की कोशिश करने दें जो जोज़रोम ने अमूलक से पूछे थे, जो अलमा 11:26–39 में अंकित किये गये थे। उनके उत्तरों की तुलना अमूलक के दिये उत्तरों से करें। तब चर्चा करें कि कैसे जोज़रोम विपरीत उत्तरों को देकर अमूलक को फांसने की कोशिश कर रहा था। बताएं कि यह सुसमाचार नियमों को समझना और पवित्र आत्मा के नेतृत्व को खोजना ज़रूरी है ताकि हम ऐसे प्रश्नों के लिए तैयार हो सकें।

“मसीह में...हमें विश्वासानुकूल शक्ति दे”

पाठ
24

अलमा 13–16

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की उनकी पहले से नियुक्त भूमिका, बुलाहट के महत्वपूर्ण आदर को पहचानने में सहायता करें और पौरोहित्य जिम्मेदारियाँ और उनकी समझने में सहायता करें कि निम्नलिखित भविष्यवक्ता की सलाह प्रभु के विश्राम गृह में प्रवेश करने में हमारी सहायता करती हैं।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करें:

   क. अलमा 13। अलमा एक शक्तिशाली उपदेश पौरोहित्य पर और पहले से नियुक्त के सिद्धान्तों पर देता है।

   ख. अलमा 14। अलमा, अमूलक, और अन्य विश्वासी उनकी नेकता के लिए सताये जाते हैं। प्रभु अलमा और अमूलक को बन्दीगृह से छुड़ाता है क्योंकि उनका मसीह में विश्वास था।

   ग. अलमा 15। जोज़रोम चंगा होता है और बपतिस्मा लेता है। सिदोम में बहुत से लोग बपतिस्मा लेते हैं।

   घ. अलमा 16। अलमा के शब्द पूरे होते हैं जब लमनायटी अमोनिहा का नाश कर देते हैं। प्रभु लोगों के हृदय को अलमा, अमूलक, और अन्य द्वारा प्रचार किये शब्द को स्वीकार करने के लिए तैयार करता है।

2. अतिरिक्त पाठन: Joseph Smith Translation, Genesis 14:25–40; Ether 12:12–13.

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, एक व्यक्ति पौरोहित्य प्राप्त करता हुए का चित्र कक्षा में लायें, जैसे मसीह प्रेरितों को नियुक्त करते हुए (62557; सुसमाचार कला चित्र किट 211) या मलकिसिदक पौरोहित्य की पुनःस्थापना (62371; सुसमाचार कला चित्र किट 408)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या आपके स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

कक्षा के सदस्यों को बतायें कि आप चॉकबोर्ड पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न लिखने जा रहे हैं। तब चॉकबोर्ड पर लिखें *कैसे*?

व्याख्या करें कि यह प्रश्न महत्वपूर्ण है जब यह हमारे व्यक्तिगत व्यवहार से जुड़ा होता है। इसे बताने के लिए, कक्षा के सदस्यों को निम्नलिखित की कल्पना करने को कहें:

क. एक युवक जानता है कि उसे एक निश्चित स्थान पर निश्चित समय पर होने की ज़रूरत है, परन्तु वह नहीं जानता कि वहां कैसे जाया जाये।

ख. एक स्त्री जानती है कि उसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, परन्तु वह नहीं जानती कैसे उसके बारे में किया जाये।

ग. एक आदमी जानता है कि यीशु उद्धारक है, परन्तु वह नहीं जानता कि उस पास कैसे आया जाये। (जब आप इस उदाहरण को बांटें, आप कक्षा के सदस्यों से 1 नफी 15:14 पढ़ने को कह सकते हैं।)

व्याख्या करें कि अलमा ने अमोनिहा में लोगों को सीखाया था, उसने एक रास्ता बताया था कि हम कैसे मसीह के पास आ सकते हैं। *कैसे* शब्द उपयोग करने के बदले, उसने वाक्य “किस प्रकार” का उपयोग किया था। कक्षा का एक सदस्य अलमा 13:1–2 पढ़े।

एक पौरोहित्य नियुक्ति का चित्र वर्णन के साथ दिखाएं (देखें “तैयारी,” विषय 3)। व्याख्या करें कि इस पाठ का एक भाग चर्चा करता है कि कैसे पौरोहित्य का पद हमारी सहायता करता है “कि किस प्रकार उसके पुत्र से उदार की आशा करें” (अलमा 13:2)।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र अंशों, प्रश्नों और अन्य पाठ्य सामग्री को चुने जोकि कक्षा के सदस्यों की ज़रूरतों से मेल खाती हों। चर्चा करें कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करें जो कि धार्मिक नियमों से मिलते हों।

1. अलमा पौरोहित्य और पहले से नियुक्ति पर एक शक्तिशाली उपदेश देता है।

अलमा 13 की चर्चा करें। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करें। व्याख्या करें कि अलमा के अमोनिहा में जोज़रोम और अन्यों को मुक्ति की योजना के बारे में शिक्षा देने के बाद, उसने पौरोहित्य और पहले से नियुक्ति के सिद्धान्त की गवाही दी थी। बताएं कि याजक जिनके बारे में अलमा ने इस उपदेश में बोला था वे मलकिसिदक पौरोहित्य में उच्च याजक थे (अलमा 13:10)।

- कब पुरूषों को पौरोहित्य की नियुक्ति के लिए पहली बार “बुलाया और तैयार” किया जाता है? (देखें अलमा 13:3)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा था, ” प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास संसार के निवासियों की सेवा करने की बुलाहट है वह इस उद्देश्य के लिए स्वर्ग की महान परिषद में इस संसार में आने से पहले नियुक्त किया गया था” (*Teachings of Prophet Joseph Smith,* sel. Joseph Fielding Smith [1976], 365)।

- पहले के जीवन में व्यक्तियों ने कैसे प्रदर्शन किया था कि वे मलकिसिदक पौरोहित्य प्राप्त करने के लिए पहले से नियुक्ति के योग्य थे? (देखें अलमा 13:3–5) इस जीवन में उनकी पहले से नियुक्ति के योग्य बने रहने को व्यक्तियों को क्या करना चाहिए? (देखें अलमा 13:8–10)

- पहले से नियुक्ति के बारे में अलमा की शिक्षाओं का उनको को समर्थन देने में किस तरह से हम पर प्रभाव डालना चाहिए जिन्हें हमारे ऊपर अध्यक्षिक की बुलाहट हो? यह शिक्षा कैसे हमारे जवाबों पर प्रभाव डालती है जब पौरोहित्य मार्गदर्शक हमें बुलाहट को या अन्य कामों को देते हैं?

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल ने कहा था: “हमारे यहां आने से पहले विश्वासी स्त्रियों को कुछ कार्य दिये गये थे जबकि विश्वासी पुरूषों को कुछ पहले से नियुक्त पौरोहित्य कार्य दिये गये थे। जबकि हमें अब याद नहीं है, यह महिमाभरी सच्चाई बदलती नहीं कि हम कभी क बार राजी हुए थे। हम उत्तरदायी है उन कामों के लिए जो बहुत पहले हमें सौंपें गये थे जब हम भविष्यक्ताओं और प्रेरितों को समर्थन देते हैं!” (“The Role of Righteous Women,” *Ensign,* Nov. 1979, 102)।

- अलमा ने कहा था कि पुरूष मलकिसिदक पौरोहित्य प्राप्त करते हैं तो वे “मनुष्यों के बच्चों को [परमेश्वर] की आज्ञाओं की शिक्षा दे सकते हैं, कि वे उसके विश्रामगृह में प्रवेश कर सकें” (अलमा 13:6; आयत 1 को भी देखें)। मलकिसिदक पौरोहित्य लेनेवालों के पास शिक्षा देने के क्या अवसर होते हैं? प्रभु के विश्रामगृह में प्रवेश करने का अर्थ क्या है? (नीचे दिये उदाहरण को देखें।) आपके विचार से प्रभु के विश्रामगृह में प्रवेश करने के उद्देश्य से क्यों हमें सुसमाचार की शिक्षा देने और उसे सीखने की ज़रूरत है?

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने शिक्षा दी थी: “प्रभु का विश्रामगृह, जिसका संबंध नश्वरता से है, महान अन्तिम-दिनों के कार्य की दिव्यता का ज्ञान परिपूर्ण प्राप्त करना है। [अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने कहा था,] ‘इसका मतलब ज्ञान और परमेश्वर के प्रेम में प्रवेश करना, उसके उद्देश्य में और उसकी योजना में विश्वास करना, इस हद तक कि हम जाने हम सही हैं, और कि हम किसी और दुसरी बात के नहीं खोज़ रहे हैं; हमें मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों के द्वारा परेशान नहीं होना है। यह विश्राम संसार की धार्मिक

दुविधाओं से है; आवाज जोकि आगे तक जाती है, यहां और वहां—देखो, मसीह यहां है, देखो, मसीह वहां है।' (Gospel Doctrine, 5th ed., pp. 58, 125–126.) प्रभु का विश्रामगृह, अनन्तता में, अनन्त जीवन प्राप्त करना है, प्रभु की महिमा की परिपूर्णता को प्राप्त करना है (सि. और अनु. 84:24) " (*Mormon Doctrine,* 2nd ed. [1966], 633)।

- हम कैसे शुद्ध होंगे ताकि हमें प्रभु के विश्रामगृह में जाने की अनुमति मिल सके? (देखें अलमा 13:11–12) हमें कैसे जीना चाहिए ताकि हम मेमने के लहू के द्वारा और पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्ध हों? (देखें अलमा 13:12–13, 16, 27–29; 3 नफी 27:19–20)

कक्षा के एक सदस्य को अलमा 13:2, 16 ज़ोर से पढ़ने दें। तब नीचे दी गई सूची की आयतों को जांच करें। कक्षा के सदस्यों की कुछ तरीकों को समझने में सहायता करें जिन में पौरोहित्य के अंश हमारी सहायता करेंगे कि उद्धारक को मुक्ति के लिए कैसे देखना है। तिरछे लिखें वाक्यांश के शब्दों को विशेष प्रोत्साहन दें।

क. अलमा 13:3–4। (जिन्होंने पहले से नियुक्त मलकिसिदक पौरोहित्य प्राप्त की है उनको "बुलाये और तैयार करें—उनके अति *विश्वास* और *अच्छे कार्य* के क्रम पर"।)

ख. अलमा 13:6। (वे "मनुष्यों के बच्चों को [परमेश्वर की] आज्ञाओं की शिक्षा देने के लिए...नियुक्त [पहले से नियुक्त] थे, ताकि वे भी उसके विश्रामगृह में प्रवेश कर सकें।")

ग. अलमा 13:8। (इस जीवन में, वे "एक *पवित्र धर्मविधि* के साथ नियुक्त हुए थे।")

घ. अलमा 13:10। (उन्होंने दिखाया कि नियमित *विश्वास* और *अच्छे कार्य* द्वारा और *पश्चाताप* द्वारा वे अपने पहले से नियुक्ति के लिए योग्य थे।)

- कैसे विश्वास और पश्चाताप मुक्ति पाने के लिए यीशु मसीह की ओर देखने में हमारी सहायता करता है? कैसे अच्छे कार्य और आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होना उसकी ओर देखने में हमारी सहायता करता है? कैसे पौरोहित्य धर्मविधियां उसकी ओर देखने में हमारी सहायता करती है?

- अलमा ने मलकिसिदक को महान उच्च याजक का एक उदाहरण बोला था (अलमा 13:14–15)। हम मलकिसिदक के उदाहरण से क्या सीख सकते हैं? (देखें अलमा 13:17–18; Joseph Smith Translation, Genesis 14:25–40. भी देखें)

- हम अलमा 13:27 से अमोनिहा के लोगों के लिए अलमा के प्रेम के बारे में क्या सीख सकते हैं?

- कक्षा के एक सदस्य को अलमा के निवेदन को पढ़ने के लिए कहें जिसका अभिलेख अलमा 13:27–29 में है। क्यों यह महत्वपूर्ण है कि पश्चाताप का विलम्ब न करें? (देखें अलमा 34:32–36) हमें क्या आशीषें मिलेंगी जब हम "जागते रहेंगे और लगातार प्रार्थना करते रहेंगे? (देखें अलमा 13:28) हमें कैसे "आशा होगी कि [हम] अनन्त जीवन पाएंगे"? (देखें अलमा 13:29; मरोनी 7:41)

2. अलमा, अमूलक, और अन्य विश्वासी उनकी नेकता के लिए सताये जाते हैं।

अलमा 14 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अमोनिहा में बहुत से लोग अलमा और अमूलक की शिक्षाओं में विश्वास रखते थे और पश्चाताप करना और धर्मशास्त्रों को खोज़ना शुरू कर दिया था (अलमा 14:1)। ज्यादा लोग, तथापि, क्रोधित हो उठे और अलमा और अमूलक को सताने लगे (अलमा 14:2–5)। क्यों कुछ लोग क्रोधित हो उठे थे जब उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाया गया था? (देखें 1 नफी 16:1–3))

- जोज़रोम ने क्या किया था जब उसने देखा "कि उसने लोगों के बीच क्या बूरा किया था"? (देखें अलमा 14:6–7) लोगों का जवाब कैसा था जब जोज़रोम ने अपने गुनाह को स्वीकार किया और अलमा और अमूलक का बचाव किया था? (देखें अलमा 14:7)

- अमोनिहा में दुष्ट लोगों ने उन लोगों के साथ क्या किया था जो परमेश्वर के वचन में विश्वास करते थे? (देखें अलमा 14:7–9) प्रभु ने ऐसा होना स्वीकार क्यों किया था? (देखें अलमा 14:10–11; 60:13) यह प्रभु की इच्छा क्यों थी कि अलमा और अमूलक के जीवन को बचाया जाये? (देखें अलमा 14:12–13)

- बहुत दिनों तक कैंद में अत्याचार सहने के बाद, अंतः अलमा और अमूलक कैसे मुक्त हुए थे? (देखें अलमा 14:26–29; एथर 12:12–13। "मसीह में उनके विश्वास के अनुसार" उनको बल और शक्ति दी गई थी।) कौनसी कुछ चीज़ें हैं जिनसे हमें मुक्त होने की आवश्यकता है? हमें छुड़ाने के लिए हमारा विश्वास मसीह में क्यों केन्द्रीत होना चाहिए? (मुसायाह 3:17; मरोनी 7:33)

3. जोज़रोम चंगा होता और बपतिस्मा लेता है।

अलमा 15 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें। व्याख्या करें कि प्रभु के उन्हें बन्दीगृह से छुड़ाने के पश्चात, अलमा और अमूलक सिदोम शहर को गये। वहां वे उन व्यक्तियों से मिले जिन्हें अमोनिहा से निकाल दिया गया था और पत्थर मारे गये थे क्योंकि उनका विश्वास परमेश्वर के वचन में था (अलमा 15:1; अलमा 14:7 भी देखें)। जोज़रोम उनमें से एक था (अलमा 15:3)।

- जोज़रोम अपनी दुष्टता के कारण आत्मिक और शारीरिक दोनों तरह से पीड़ित था, लेकिन "उसके हृदय ने हिम्मत करनी शुरू की" जब उसने सुना कि अलमा और अमूलक सिदोम में हैं (अलमा 15:3–4)। उसने अलमा और अमूलक से क्या पूछा था? (देखें अलमा 15:5) यह क्या प्रकट करता है उसका उनमें विश्वास के बारे में? और चंगा होने के लिए किस में उसे अपना विश्वास रखने की ज़रूरत थी? (देखें अलमा 15:6–10)

- उसके चंगा होने के बाद, जोज़रोम की प्रतिक्रिया से हम क्या सीख सकते हैं? (देखें अलमा 15:11–12)

- उन लोगों से भिन्न जो अमोनिहा में ही थे, सिदोम के लोगों ने अलमा और अमूलक द्वारा सीखाये गये सन्देश पर विश्वास किया था और बपतिस्मा लिया था (अलमा 15:12–15)। अलमा ने देखा कि वे "हृदयों के अहंकार को वश में करते गये" (अलमा 15:17; ध्यान दें कि शब्द *वश में* का अर्थ धीरे या रोक देना है)। लोग क्या करते थे जब वे अधिक नम्र होते थे? (देखें अलमा 15:17) यह हमारे लिये क्यों कर ज़रूरी है कि उसकी सच्चाई से उपासना करने के उद्देश्य में परमेश्वर सामने हमें नम्र होना है?

- अमूलक ने सुसमचार के जीने और एक प्रचारक के रूप में सेवा करने का चुनाव करने के द्वारा क्या छोड़ दिया था? (देखें अलमा 15:16) उसे क्या मिला था? (देखें अलमा 8:30; 34:1, 8; एथर 12:12–13) आप सुसमाचार को जीने और इसकी शिक्षा देने का चुनाव करके क्या बलिदान करते हैं? आप इसके लिए कैसे आशिषित हुए?

- एक बार सिदोम में गिरजाघर की स्थापना होने के बाद अलमा ने अमूलक के लिए क्या किया था? (देखें अलमा 15:18) यह कार्य अलमा के बारे में क्या बताता है? हम किस तरह से दूसरों का प्रबन्ध कर सकते हैं और उन्हें प्रभु में शक्ति दे सकते हैं?

4. अलमा के शब्द पूरे होते हैं जब लमनायटी अमोनिहा का नाश कर देते हैं।

अलमा 16 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ें और चर्चा करें।

- अलमा और अमूलक के अमोनिहा में प्रचार करने के एक वर्ष बाद, लमनायटियों ने नफायटियों के शहरों पर आक्रमण कर दिया था (अलमा 16:1–2)। अमोनिहा में नफायटियों का क्या हुआ था? (देखें अलमा 16:2–3, 9–11) कैसे यह अलमा की भविष्यवाणियों का पूरा होना था? (देखें अलमा 9:4–5, 12, 18)

- जोरम और उसके अनुयाई लमनाटियों को बिखराने में और अपने भाइयों को बचाने में जिन्हें बन्धी बना लिया गया था समर्थ क्यों हुए थे? (देखें अमला 16:4–8) हम अमोनिहा के नाश से जोरम सेना की सफलता की तुलना में क्या सीख सकते हैं? (अलमा 9:1–8 और 15:15 की तुलना अलमा 16:4–6 के साथ करें; 2 नफी 4:34 को भी देखें। प्रोत्साहित करें कि हमें परमेश्वर में और उसके भविष्यवक्ताओं पर विश्वास होना चाहिए ना कि सांसारिक ज्ञान, शक्ति, या अधिकारों पर।)

- अमोनिहा के नष्ट होने के पश्चात, प्रभु ने लोगों के हृदयों को अलमा, अमूलक, और अन्यों जिन्हें इस कार्य को करने के लिए चुना गया था के प्रचार किये शब्दों को सुनने के लिए तैयार किया था (अलमा 16:13–21)। प्रभु कैसे लोगों के हृदयों को अपने शब्द सुनने के लिए तैयार करता है? (देखें अलमा 16:16) हम कैसे निश्चित करते हैं कि हम परमेश्वर के शब्द का प्रचार "उसकी शुद्धता से करते" हैं? (देखें अलमा 16:21; मुसायाह 18:18–20 भी देखें; सि. और अनु. 52:9)

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को दूरदृष्टि और संस्करण को जो उन्होंने प्राप्त किये हैं को बांटने के लिए आमन्त्रित करें जब वे अलमा 13–16 की चर्चा करें।

मत्ती 11:28–30 और अलमा 13:27:29 पढ़ें। ज़ोर दें कि संसार शंकाओं और सन्देह से भरा हुआ है, यह जानना आरामदायक है कि पौरोहित्य के द्वारा हम "जान सकते हैं कि किस तरह से पुत्र की ओर मुक्ति के लिए देखें" (अलमा 13:2) जब हम प्रभु की ओर देखते हैं, उसमें विश्वास करते हैं, और उसके भविष्यवक्ताओं की सलाह पर चलते हैं, हम उसके विश्रामगृह में प्रवेश कर सकते हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशन मिले, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाई की गवाही दें।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

"परमेश्वर के भविष्यज्ञान के अनुसार" (अलमा 13:3)

कक्षा के सदस्यों की अपने पहले से नियुक्त होने की समझ को मज़बूत बनाने के लिए अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ें:

"परमेश्वर ने तुम्हें पीछे रखा था कि तुम आखरी दिनों में आ सको प्रभु के द्वितीय आगमन से पूर्व...परमेश्वर ने अपने कुछ मज़बूत बच्चों को [आखरी दिनों] के लिए बचा कर रखा था, जो राज्य को विजयी होकर उठाने में सहायता करेंगे। तभी आप यहां हैं आपके लिए वह वंश है जो कि तैयार होगा अपने परमेश्वर से मिलने को....

"सभी युग के भविष्यवक्ता हमारे समय को भविष्य में देखते हैं। करोड़ों जो मर गये और जो पैदा होने वाले हैं उनकी आंखें हम पर है। इसके बारे में कोई गलती न करें—तुम्हारा वंश ही तुम्हारी पहचान है। हमारे समय के मुकाबले यहां पर इतने कम समय में अत्याधिक विश्वासी की आशा नहीं की गई" (*The Teachings of Ezra Taft Benson* [1988], 104–5)।

पाठ
25

“उन्होंने परमेश्वर की शक्ति और अधिकार के साथ शिक्षा दी”

अलमा 17–22

उद्देश्य

कक्षा के सदस्य को सुसमाचार बांटने और दुसरों की सेवा करने के द्वारा मुसायाह के पुत्रों के उदाहरण का अनुगमन करने को प्रेरित करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिन्तन, और प्रार्थना करोः

   क. अलमा 17:1–18। मुसायाह के पुत्रों ने लमनायटियों को सुसमाचार का प्रचार किया।

   ख. अलमा 17:19–39; 18; 19। आमोन राजा लमोनी की सेवा करता है और शिक्षा देता है। राजा और रानी और कई लमनायटी धर्मपरिवर्तित हुए।

   ग. अलमा 20–22। आमोन का अपने भाइयों का कैंद से छुड़ाने के लिए आत्मा द्वारा नेतृत्व हुआ। लमोनी के पिता धर्मपरिवर्तित हुए।

2. कक्षा के एक सदस्य को अलमा 17:19–39 संक्षेप करने को कहो। उसे सिद्धान्त या व्यक्तिगत अनुकूलता के बजाय लेख में घटनाओं पर रिपोर्ट देने के लिए कहो, जिसकी रिपोर्ट के बारे में कक्षा में चर्चा होगी।

3. यदि चित्र अमोन राजा के पशुओं की रक्षा करते हुए है, उसे कक्षा के दौरान उपयोग करने को तैयार रहो (62535; सुसमाचार कला चित्र किट 310)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, निम्नलिखित या स्वयं की कोई गतिविधि पाठ आरम्भ करने को उपयोग करो।

निम्नलिखित वाक्यांशों को चॉकबोर्ड पर लिखोः जानना, महसूस करना, करना।

- ये वाक्यांश कैसे प्रचार कार्य से संबंधित हो सकते हैं?

एल्डर कारलोस ई. असय ने निम्नलिखित अनुभव वर्णित किया थाः

“अधिक दिन नहीं हुए, मैंने एक नए धर्मपरिवर्तित की गवाही को सुना—एक युवक स्पष्ट रूप से आत्मा द्वारा छुआ हुआ। अन्य बातों के बीच, उसने सूचित किया कि यह उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी कि वह पुनःस्थापित सुसमाचार को अपने परिवार और मित्रों के साथ बांटे। अपनी आंखों में आंसुओं और आवाज में कपकपाहट के साथ, वह बोलाः

“मैं चाहता हूँ वे वो जाने जो मैं जानता हूँ।

“मैं चाहता हूँ वे वो महसूस करे जो मैं करता हूँ

“मैं चाहता हूँ वे वो करें जो मैंने किया है।

“एक प्रचारक आत्मा है—एक आत्मा जो हमें अपने आप से बाहर जीने और दुसरों के कल्याण के लिए चिन्तित होने को प्रेरित करती है। और कोई जिसने समानजनक प्रचारक कार्य में सेवा की है, मित्र के धर्मपरिवर्तन में सहायता की है, प्रचारक क्षेत्र में पुत्र या पुत्री को समर्थन दिया है, या प्रचारकों के साथ नज़दीकी संबंधों का आनन्द लिया है इसकी वास्तविकता की गवाही देंगे” (in Conference Report, Oct. 1976, 58; or *Ensign,* Nov. 1976, 42)।

समझाओ कि मुसायाह के पुत्रों के धर्मपरिवर्तित होने के बाद, उन्होंने दुसरों के साथ सुसमाचार बांटने की महान अभिलाषा को महसूस किया। उनके अनुभवों ने धर्मशास्त्रों में प्रचारक सेवा के कुछ महानतम उदाहरणों को उपलब्ध कराया है। यह पाठ चर्चा करता है कि कैसे वे लमनायटियों की सच्चाई के ज्ञान में लाने को परमेश्वर के हाथों में साधन बनाए गए।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र अनुच्छेदों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से पूरा कर सके। चर्चा करो कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्रीय नियमों से हो।

1. मुसायाह के पुत्र लमनायटियों को सुसमाचार का प्रचार करते हैं।

समझाओ कि जब अलमा ने मण्टी की यात्रा की, वह राजा मुसायाह के पुत्रों से मिला, जो लमनायटियों के अपने 14 वर्ष के प्रचारक कार्य से लौट रहे थे। अलमा 17–26 मुसायाह के पुत्रों का उनके प्रचारक कार्य के दौरान अनुभवों और प्रचार का अभिलेख लिखता है। अलमा 17:1–18 को पढ़ो और चर्चा करो।

- क्यों मुसायाह के पुत्र इतने शक्तिशाली और प्रभावी शिक्षक थे? (देखो अलमा 17:2–4। चॉकबोर्ड पर शीर्षक सफल प्रचारक कार्य की कुंजियां लिखो। शीर्षक के अन्दर, अध्ययन, उपवास, और प्रार्थना लिखो।) कैसे हमारी व्यक्तिगत योग्यता और तैयारी प्रभु के लिए प्रभावी साधन बनने की हमारी क्षमता पर प्रभाव डालती है? कैसे तुमने एक प्रचारक या किसी और को व्यक्तिगत तैयारी के कारण आशीषित होते देखा है?

- मुसायाह के पुत्रों ने अपना प्रचारक कार्य करने के लिए कौनसे बलिदान दिए? (अलमा 17:5–6 देखो।) उन्हें ऐसा करने की इच्छा क्यों थी? (अलमा 17:9, 16 देखो; मुसायाह 28:1–3 भी देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो परमेश्वर से और अन्यों से प्रेम करो।) हम दुसरों के लिए चिंता और प्रेम कैसे विकसित कर सकते हैं, जैसा मुसायाह के पुत्रों द्वारा दिखाया गया था?

- मुसायाह के पुत्र "कठोर और निर्दयी लोगों को प्रचार करने गए थे" (अलमा 17:14)। प्रभु ने उन्हें उनके प्रचारक कार्य के लिए तैयार होने की सहायता को क्या सांत्वना और निर्देशन दिए थे? (अलमा 17:10–11 देखो।) प्रभु से आराम और निर्देश प्राप्त करने के बाद, मुसायाह के पुत्रों ने कैसा महसूस किया था? (अलमा 17:12 देखो।) ये आयते कैसे हमें सहायता कर सकते हैं जब हम अपनी बुलाहटों में चुनौतियों का सामना करते हैं?

2. आमोन राजा लमोनी की सेवा करता है और उसको शिक्षा देता है, और कई लोगों धर्मपरिवर्तित होते हैं।

कक्षा के चुने हुए सदस्य को अलमा 17:19–39 में वर्णित घटनाओं को संक्षेप करने को कहो। तब अलमा 17:19–39; 18; 19 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। यदि आप राजा के पशुओं की रक्षा करते हुए आमोन का चित्र उपयोग कर रहे हैं, उसे अभी दिखाओ'ज।'

- आमोन का हृदय "आनन्द के साथ...क्यों फूल गया" जब राजा के पशु बिखर गए? (अलमा 17:29 देखो।) आमोन ने इसे सकारात्मक अनुभव में कैसे बदला? (अलमा 17:30–39 देखो।)

- राजा ने कैसा व्यवहार किया जब उसके सेवकों ने उसे बताया कि आमोन ने उसके पशुओं को कैसे बचाया? (अलमा 18:2–5 देखो।) आमोन क्या कर रहा था जब राजा ने पुछा कि वह कहा है? (अलमा 18:8–9 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो सेवा दो और भरोसा विकसित करो।) इसने कैसे राजा लमोनी को सीखने के लिए तैयार होने में सहायता की? (अलमा 18:10–11 देखो।)

- राजा के सेवकों ने आमोन का सम्बोधन कैसे किया जब वह राजा को देखने आया था? (अलमा 18:13 देखो।) कैसे राजा लमोनी को आमोन के शब्दों ने दिखाया था कि आमोन अब भी एक विनम्र सेवक था? (अलमा 18:14–16 देखो।)

- आपके विचार से क्यों आमोन के लिए यह ज़रूरी था कि राजा को शिक्षा देने की कोशिश से पहले उसकी सेवा करे? कैसे दुसरों के साथ सेवा करना और भरोसे के सम्बन्ध को विकसित करना हमें उन्हें सुसमाचार संदेश प्रस्तुत करने में सहायता करता है? किन तरीकों में हम उनकी सेवा कर सकते हैं जिन्हें हम शिक्षा देते हैं?

- जब आमोन ने राजा लमोनी को शिक्षा देना आरम्भ किया, उसने कैसे उसे परमेश्वर और स्वर्ग के बारे में समझदारी प्राप्त करने में सहायता की? (अलमा 18:24–33 देखो। उसने उस तरीके से शिक्षा दी कि राजा समझ सके।) हम इस उदाहरण का अनुगमन कैसे कर सकते हैं जब सुसमाचार सीखाते हैं?

- राजा लमोनी के साथ समझदारी का स्तर स्थापित करने के बाद, आमोन ने उसे कौनसे ज़रूरी सिद्धान्तों की शिक्षा दी थी? (अलमा 18:34–39 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो धर्मशास्त्रों से मुक्ती की योजना की शिक्षा दो।) इन सच्चाइयों की शिक्षा देने में मॉरमन की पुस्तक आज एक ज़रूरी उपकरण क्यों है?

- राजा लमोनी ने आमोन के वचनों को सुनने और विश्वास करने के बाद क्या किया था? (अलमा 18:40–41 देखो।) लोगों के लिए यह क्यों ज़रूरी है कि वे क्षमादान को खोजें जब उन्हें सुसमाचार के नियमों की शिक्षा दी जाती है? धर्मान्तरण प्रक्रिया में प्रार्थना ज़रूरी क्यों है?

- प्रार्थना करने के बाद, राजा लमोनी धरती पर गिर गया। रानी कैसे अपना विश्वास दिखाया जब लमोनी मृत प्रतीत हुआ? (अलमा 19: 1–5, 8–9 देखो।)

- लमोनी ने किस पर जोर दिया जब उसने अपने धर्मपरिवर्तन के बाद रानी से बात की थी? (अलमा 19:12–13 देखो।)

- रानी से बात करने के बाद, लमोनी दुबारा धरती पर गिर गया, और रानी और सारे सेवक भी सिर्फ अबिश को छोड़कर (अलमा 19: 13, 15–16)। अबिश कौन थी? (अलमा 19:16–17 देखो। जब कक्षा के सदस्य अबिश की चर्चा करें, आप यह बताना चाहेंगे कि कैसे वह प्रभु के प्रति धर्मपरिवर्तित रहने के उदाहरण के नाते सेवा करती है यहां तक कि जब भी जब हमारे आस-पास लोग ऐसे न हों।) अबिश ने क्या किया जब उसने जाना कि क्या हुआ था? (अलमा 19:17 देखो।) हम सुसमाचर बांटने के अवसरों को अच्छी तरह कैसे पहचान और उपयोग कर सकते हैं?

- लोगों के कुछ विभिन्न जवाब क्या थे जब वे राजा के निवास पर आए थे? (अलमा 19:28–29 देखो।) राजा और रानी ने अपने धर्मान्तरण का उठने के बाद किसा प्रकार प्रदर्शन किया? (अलमा 19:29–31; 33 देखो।)

- आपके विचार से मॉरमन हमें अमोन और राजा लमोनी और उसके लोगों के अनुभवों से क्या सीखाना चाहता है? (अलमा 19:36 देखो। उत्तरों में यह सम्मलित हो सकता है कि प्रभु की बांहें "उन सब लोगो तक पहुंचती हैं जो पश्चाताप करेंगे और उसके नाम पर विश्वास करेंगे।")

3. आमोन का अपने भाइयों को बचाने के लिए आत्मा द्वारा निर्देशन किया जाता है लमोनी का पिता धर्मपरिवर्तित होता है।

अलमा 20–22 से चुनी हुई आयते पढ़ो और चर्चा करो।

- अपने राज्य में गिरजाघर स्थापित होने के बाद लमोनी क्या करना चाहता था? (अलमा 20:1 देखो।) नये धर्मपरिवर्तियों को अपने गवाही दुसरों के साथ बांटना क्यों महत्वपूर्ण है? हम ऐसा उत्साह रखना कैसे जारी रख सकते हैं?

- लमोनी और उसके पिता के बीच हुई बातचीत लमोनी के धर्मान्तरण की गहराई को कैसे दिखाती है? (अलमा 20:13–15 देखो।)

- आमोन के बारे में राजा लमोनी के पिता को किसने चकित किया था? (अलमा 20:26–27 देखो।) क्यों प्रेम और गवाही किसी व्यक्ति के हृदय को अधिक दयालु बनाने में इतने शक्तिशाली हैं? (कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए आमन्त्रित करो कि कैसे दुसरों के प्रेम और गवाही ने उनके हृदयों या उनके परिवार या मित्रों के हृदयों को दयालु किया है।)

समझाओं कि अलमा 21 आमोन के भाई आरून और उसके साथी सेवकों के अभिलेख को आरम्भ करता है। उन्होंने येरूशलेम में अमलकायटियों और अमूलनायटियों को सुसमाचार का प्रचार किया था परन्तु ये स्वधर्मत्यागी नफायटी बहुत कठोर हृदय के थे और उन्होंने सुनने से मना कर दिया था। आरून और उसके भाई चले गये और मिदोनी के राज्य में प्रचार करना आरम्भ किया, जहां उन्हें कैद में डाल दिया था और बुरा व्यवहार किया गया था।

- आरून और उसके भाइयों ने कैद से रिहा होते ही और भोजन कपड़े पाते ही क्या किया था? (अलमा 21:14–15 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो कठिनाईयों के बावजुद आगे चलते रहो।) हमारे लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के राज्य में अपना कार्य करना जारी रखें चाहे हम दुःख और कष्टों का सामना ही क्यों न करें?

- आरून और उसके भाइयों ने कैसे जाना था कि उन्हें सुसमाचार की शिक्षा देने के लिए कहां जाना चाहिए? (अलमा 21:16 देखो।) वे आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित होने पर कैसे आशिषित हुए? (अलमा 21:17 देखो।) आप आत्मा की प्रेरणा को सुनने से कैसो आशिषित हुए हैं?

- आरून राजा लमोनी के पिता के घर को आत्मा द्वारा निर्देशित हुआ था (अलमा 22:1) कैसे आमोन के उदाहरण ने लमोनी के पिता को शिक्षा लेने को तैयार होने में सहायता की थी? (अलमा 22:2–3 देखो। चॉकबोर्ड पर *एक अच्छे उदाहरण बनो* लिखो।) तुमने कैसे देखा है गिरजाघर के सदस्यों के उदाहरणों ने दुसरों को अच्छा करने के लिए प्रेरित किया है?

- कैसे लमोनी के पिता को आरून की शिक्षा लमोनी को आमोन की शिक्षा के समान है? (अलमा 18:24–39 की तुलना अलमा 22:7–14 के साथ करो।) आरून ने क्या कहा था जब लमोनी के पिता ने पूछा कि उसे मुक्ति की आशा को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? (अलमा 22:16 देखो। कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखो। उनमें नीचे दिये गए उत्तर भी सम्मलित हो सकते हैं।)

  क. "परमेश्वर के समाने झुको।"
  ख. "अपने सारे पापों का पश्चाताप करो।"
  ग. "[परमेश्वर के] नाम को विश्वास में बुलाओ।"

- राजा परमेश्वर को जानने के लिए क्या बलिदान करने की इच्छा रखता था? (अलमा 22:15, 17–18 देखो।) हम राजा के उदाहरण से क्या सीख सकते हैं?

  अलमा 22:15, 18 को संदर्भ करते हुए अध्ययक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः "हम सबको अपने पापों को त्यागना चाहिए यदि हमें वास्तव में मसीह को जानना है। क्योंकि हम उसे तब तक नहीं जान सकते जब तक हम उसके जैसे नहीं बन जाते। कुछ है, राजा के समान, जो तब तक प्रार्थना करते हैं जब तक पूरी आत्मा उनसे अलग न हो जाए ताकि वे वैसा ही आनन्द प्राप्त कर सके" (in Conference Report, Oct. 1983, 63; or *Ensign*, Nov. 1983, 43)।

- अपने बेटे लमोनी की तरह, राजा आत्मा द्वारा शारीरिक तौर पर उभर सका। राजा के उठने के बाद उसने अपनी गवाही घोषित की, और इस अनुभव के द्वारा बहुत से धर्मपरिवर्तित हुए (अलमा 22:18–26)। अपने धर्मान्तरण के बाद राजा ने क्या किया जिसने प्रचारकों को हजारों को प्रभु के ज्ञान तक लाने में सहायता की थी? (अलमा 22:26; 23:1–6 देखो।) तुम्हें कौनसे अनुभव हुए हैं या सुने हैं जहां एक व्यक्ति के धर्मान्तरण में कई अन्यों पर सकरात्मक प्रभाव डाला है?

निष्कर्ष

बताओं कि प्रचारक कार्य को हमारा वर्तमान संदर्भ आमोन और आरून के समान हैः प्रचारक भरोसे के रिश्ते बनाने, आत्मा का अनुगमन करने, और धर्मशास्त्रों से मुक्ति की योजना सीखाने को प्रोत्साहित किए जाते हैं।

जैसा आत्मा द्वारा मार्गदर्शन किया जाए, पाठ के दौरान चर्चा की गई सच्चाइयों की गवाही दो।

पाठ
26

"प्रभु के समक्ष परिवर्तित"

अलमा 23–29

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को अपने धर्मान्तरण को मज़बूती देने और दुसरों को परिवर्तित होने में सहायता करने की उनकी अभिलाषा को प्रोत्साहित करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ें, चिंतन करें और प्रार्थना करें:

   क. अलमा 23–24। मुसायाह के पुत्रों द्वारा सीखाए जाने के बाद हजारों लमनायटी धर्मपरिवर्तित हुए थे। धर्मपरिवर्तित लमनायटी अपने आपको एण्टी-नफी-लेही बुलाते थे। परमेश्वर को गवाही के नाते कि वे कभी भी दुबारा खून बहाने के द्वारा पाप नहीं करेंगे, एण्टी-नफी-लेही ने अपनी तलवारे दफना दी और उन्हें लेने से मना कर दिया जब लमनायटी सेना आक्रमण करती थी।

   ख. अलमा 27:28। आमोन एण्टी-नफी-लेही का नफायटियों के बीच सुरक्षा खोजने को मार्गदर्शन करता है। नफायटी एण्टी-नफी-लेही को जरसन का देश देते हैं और उन्हें उनके शत्रुओं के विरूध रक्षा करने का वादा करते हैं। लमनायटी दुबारा नफायटियों के विरूध युद्ध लड़ने आते हैं और पराजित किये जाते हैं।

   ग. अलमा 26, 29। आमोन प्रभु में प्रतापी होता है जब वह लमनायटियों को प्रचार करने में अपनी और अपने भाइयों की सफलता की समीक्षा करता है। अलमा कामना करता है कि सबको पश्चाताप और मुक्ति की योजना के द्वारा आनन्द मिल सके।

2. यदि चित्र एण्टी-नफी-लेही अपनी तलवार दफनाते हुए उपलब्ध है, इसे पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयारी करे (62565; सुसमाचार कला चित्र किट 311)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, निम्नलिखित या स्वयं की कोई गतिविधि पाठ आरम्भ करने के लिए उपयोग करो।

कक्षा के सदस्यों से पूछो:

- कौनसे गुण या बर्ताव उनको अलग करते हैं जो लोग वास्तव में धर्मपरिवर्तित होते हैं?

समझाओ कि यह पाठ उन लोगों के समूह की चर्चा करता है जो प्रभु में बड़ी गहराई तक धर्मपरिवर्तित थे कि धर्मशास्त्र बताता है कि वे "कभी भी पथ भ्रष्ट न हुए" (अलमा 23:6)।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखांश, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जोकि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने को प्रोत्साहित करो जिनका सम्बन्ध धर्मशास्त्रीय नियमों से हो।

1. एण्टी-नफी-लेही प्रभु में धर्मपरिवर्तित होते हैं।

अलमा 23–24 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो। कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि लमोनी का पिता, जो सार लमनायटियों का राजा था, आरून की शिक्षाओं द्वारा धर्मपरिवर्तित हुआ था (अलमा 22)।

- लमनायटियों के राजा ने धर्मपरिवर्तित होने के बाद क्या किया था? (अलमा 23:1–2 देखो।) उसने ऐसा क्यों किया था? (अलमा 23:3 देखो।) इस घोषणा और आरून और उसके भाइयों के कार्य का क्या परिणाम हुआ था? (अलमा 23:4–7 देखो।)

- धर्मपरिवर्तित लमनायटियों के कौनसे कार्यों ने दिखाय कि उनका धर्मान्तरण सच्चा और निष्कपट था? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर संक्षेप करो। कुछ उत्तर नीचे दिए गए हैं, चर्चा को प्रोत्साहित करने के प्रश्नों के साथ।)

  क. वे "प्रभु में धर्मपरिवर्तित हुए थे" (अलमा 23:6)। यह क्यों ज़रूरी है कि यीशु मसीह हमारे धर्मान्तरण के केन्द्र पर हो? किन अन्यों कारणों से लोग गिरजाघर की ओर आकर्षित होते हैं? (उत्तरों में सम्मलित हो सकते हैं प्रचारकों के व्यक्तित्व, मित्रों की प्रेरणा, या समाजिक कार्यक्रमों का आकर्षण।) क्यों ये सब बातें अकेले धर्मान्तरण को लाने में असफल होती है?

  ख. वे "अभिलाषी थे...कि उन्हें अपने भाइयों से अलग पहचाना जा सके" (अलमा 23:16)। किन तरीकों में धर्मान्तरित लमनायटियों ने अपने भाइयों से अलग पहचाने जाने को चुना जो बूरे बने रहे थे? (अलमा 23:16–18; 27:27–30 देखो।) किन तरीकों में हम दुनिया से अलग पहचाने जाते हैं जब हम धर्मपरिवर्तित होते हैं? अपने आपको इन तरीकों में अलग पहचाना जाना क्यों महत्वपूर्ण है?

  ग. उन्होंने परमेश्वर का परिक्षा और दुःख की घड़ी में भी आभार व्यक्त किया था (अलमा 24:6–10, 23)। एण्टी-नफी-लेही अपने धर्मान्तरण के परिणाम स्वरूप किन दुःखों का सामना किया था? (अलमा 24:1–2, 20–22; 1–3 देखो।) इन दुःखों के बावजूद, वे किसके लिए आभारी थे? (अलमा 24:7–10 देखो।) कैसे परमेश्वर का आभार मानना हमें परीक्षाओं और दुखों का सामना करने में सहायता करता है?

  घ. "उन्होंने अपनी तलवारें ली—और उन्होंने उन्हें धरती में गहरा दफना दिया" (अलमा 24:15–17)। यदि आप एण्टी-नफी-लेही का चित्र उपयोग कर रहे हैं, उसे अभी दिखाओ। क्यों एण्टी-नफी-लेही ने अपनी तलवारे और अन्य हथियार दफना दिए थे? (अलमा 23:7; 24:11–13, 18–19 देखो।) यह क्यों आवश्यक था कि वे अपने हथियारों को दफनाए बजाय साधारण तौर पर उन्हें उपयोग न करने का वादा करें? कैसे हम कभी-कभी "परमेश्वर के विरूद्ध विरोध करते हैं"? हम अपने "विरोध के हथियार" दफनाने के लिए क्या कर सकते हैं?

  च. उन्होंने अपने भाइयों के प्रति "महान प्रेम" दिखाया था (अलमा 26:31)। कैसे एण्टी-नफी-लेही के अपने हथियारों को दफनाने के निर्णय ने अपने भाई-बन्धुओं के प्रति और परमेश्वर के प्रति प्रेम दिखाया था? (अलमा 24:18; 26:32–34 देखो।) किन तरीकों में धर्मान्तरण दूसरों के लिए एक व्यक्ति का प्रेम बढ़ाता है?

- अधर्मान्तरित लमनायटियों ने कैसा बर्ताव किया जब उन्होंने एण्टी-नफी-लेही को उनके विरूद्ध हथियार उपयोग नहीं करते देखा था? (अलमा 24:20–27 देखो।) मॉरमन के अनुसार, हम इस अभिलेख से क्या सीख सकते हैं? (अलमा 24:27 देखो; नोट करें मॉरमन का अवलोकन वाक्यांश "हम देखते हैं" के साथ आरम्भ होता है।)

2. एण्टी-नफी-लेही नफायटियों के बीच सुरक्षा खोजते हैं।

अलमा 27–28 से चुनी हुई आयतें पढ़ो और चर्चा करो।

- आमोन और उसके भाइयों ने एण्टी-नफी-लेही को जराहेमला के देश जाने को क्यों प्रेरित किया था, जहां नफायटी रहते थे? (अलमा 27:1–5 देखो।) राजा अपने लोगों को जराहेमला ले जाने से क्यों झिझक रहा था? (अलमा 27:6 देखो।) किसने राजा को जराहेमला जाने के लिए उकसाया था? (अलमा 27:7–14 देखो।) कैसे प्रभु में हमारा विश्वास हमारी सहायता करता है जब हम भयभीत स्थितियों का सामना करते हैं?

- नफायटियों ने क्या किया था जब आमोन ने उन्हें एण्टी-नफी-लेही को उनके देश में लेने को पूछा था? (अलमा 27:20–26 देखो।) नफायटियों ने एण्टी-नफी-लेही को प्रभु के साथ उनके अनुबन्ध को रखने में कैसे सहायता की थी? हम दुसरों की सहायता प्रभु में धर्मान्तिरित रहने में कैसे कर सकते हैं?

बताओ कि उस समय से जब एण्टी-नफी-लेही ने जारसन में डेरा डाला था, उन्हें आमोन के लोग के नाते जाना जाता था (अलमा 27:26)। पूरी शेष मॉरमन की पुस्तक के दौरान, उन्हें या तो आमोन के लोग या आमोनायटी के नाते संदर्भ किया जाता है।

- आमोन के लोगों के जारसन देश में डेरा डालने के बाद कौनसी बड़ी दुर्घटना हुई थी? (अलमा 28:1–3 देखो।) इस महान युद्ध के बाद, बहुत से लोगों ने उनके लिए शोक किया जो युद्ध में मारे गए थे (अलमा 28:4–6)। क्यों कुछ शोक करने वाले डर रहे थे जबकि कुछ खुश हो रहे थे? (अलमा 28:11–12 देखो।) हम इन जवाबों से क्या सीख सकते हैं? (अलमा 28:13–14 देखो।)

3. आमोन और अलमा प्रभु के कार्य के पूरा होने में हर्षित होते हैं।

अलमा 26 और 29 से चुनी हुई आयतें पढ़ों और चर्चा करो। बताओ कि अलमा 26 आमोन की भावनाओं के बारे में अंकित करता है जो सफलता उसने और उसके भाइयों ने लमनायटियों को सुसमाचार लाने में अनुभव की थी। अलमा 29 आमोन और उसके भाइयों की सफलता के बारे में अलमा की भावनाओं को अंकित करता है और अलमा की अभिलाषा व्यक्त करता है कि सब लोगों के पास सुसमाचार सुनने और अपनाने के अवसर हों।

- आमोन और उसके भाइयों को प्रभु न कौनसी "महान आशीषें" दी थी? (अलमा 26:1–9 देखो।) "हम परमेश्वर के हाथों में [उसके] महान कार्य को पूरा करने में प्रभावी स्त्रोत कैसे बन सकते हैं"? (अलमा 26:22 देखो।)

- आमोन ने कैसा जवाब दिया जब आरून ने अहंकार के लिए उसकी निंदा की थी? (अलमा 26:10–16, 35–37 देखो।) [हम] "अपने परमेश्वर का गर्व" और "प्रभु में महिमा" कैसे कर सकते हैं? किन तरीकों में प्रभु ने अपने कार्य को पूरा करने में तुम्हारी क्षमता से अधिक सहायता करके आशीष दी है?

- जराहेमला के लोगों ने कैसा व्यवहार किया जब आरून और उसके भाइयों ने पहली बार लमनायटियों को अपने प्रचारक कार्य की घोषणा की थी? (अलमा 26:23–25 देखो।) हम इस परिस्थिति से सुसमाचार के प्रति लोगों के व्यवहार का पूर्वानुमान करने के बारे में क्या सीखते हैं बजाय इसके कि उन्हें अपने आप स्वीकारने या मना करने दिया जाए? हम इस स्वभाव से कैसे उभर सकते हैं?

- हम आमोन और उसके भाइयों से हमें दुःखों से कैसा व्यवहार करना चाहिए के बारे में क्या सीख सकते हैं? (अलमा 26:27–30 देखो।) कैसे प्रभु में धैर्य और भरोसे ने तुम्हें एक कठिन परिस्थिति से अच्छी तरह बाहर आने का अनुभव होने में सहायता की है?

- अलमा ने एक स्वर्गदूत बनने की अभिलाषा क्यों की थी? (अलमा 29:1 देखो।) अलमा ने क्या कहा था कि परिणाम होगा यदि "प्रत्येक आत्मा" पश्चातापी हो और परमेश्वर के पास आए? (अलमा 29:2 देखो; असमा 28:14 भी देखो।) तुम्हें किन अनुभवों ने सीखाया है कि सुसमाचार जीना हमारे जीवन में आनन्द लाता है?

- अलमा ने क्यों महसूस किया था कि उसने एक स्वर्गदूत बनने की अपनी अभिलाषा में पाप किया था? (अलमा 29:3, 6–7 देखो।) हम उससे सन्तुष्ट कैसे हो सकते हैं जो प्रभु ने हमें दिया है जबकि हम लगातार अपनेआप को आगे बढ़ाने और सुधारने की कोशिश करते हैं?

- अलमा ने कहा था कि परमेश्वर "मनुष्य को उनकी इच्छानुसार देता है चाहे वह इस जीवन में हो या मरणोपरान्त" (अलमा 29:4)। इसका क्या अर्थ है? (2 नफी 2:27 देखो।)

- अलमा उसमें खुश हुआ था जो प्रभु ने उसके और उसके पूर्वजों के लिए किया था (अलमा 29:10–13)। प्रभु ने तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए क्या किया है जो तुम्हारी खुशी का कारण बना? (कक्षा के सदस्यों को इस प्रश्न पर शान्ति से चिन्तन करने दो यदि वे अपने विचारों को कक्षा के साथ बांटना नहीं चाहते हैं।)

निष्कर्ष	उन तरीकों की समीक्षा करो जिससे एण्टी-नफी-लेही ने दिखाया था कि वे वास्तव में धर्मपरिवर्तित थे जैसे आत्मा द्वारा निर्देशित किया जाये, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाईयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा देने के सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप शायद इस सुझाव को पाठ के हिस्से के रूप में उपयोग करना चाहें।

प्रचारक कार्य प्रेम और आनन्द को बढ़ाता है

आमोन ने उस प्रेम और आनन्द पर ज़ोर दिया जिन्हें प्रचारकों और उनके बीच बांटा जाता है जिन्हें वे शिक्षा देते हैं (अलमा 26:1–4, 9, 11, 13, 30–31, 35)। कक्षा के सदस्यों को उस प्रेम को व्यक्त करने को आमन्त्रित करो जिसे वे उन लोगों के लिए महसूस करते हैं जिन्होंने उन्हें सुसमाचार की शिक्षा दी थी वह आनन्द जो उन्हें दुसरों के साथ सुसमाचार को बांटने में अनुभव हुआ है।

पाठ 27 “सारी वस्तुएं सूचित करती हैं कि परमेश्वर है”

अलमा 30–31

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यह सीखने में सहायता करना कि झुठी शिक्षाओं को कैसे पहचाने और खंडन करें और अपनी यीशु मसीह की गवाही के प्रति सत्यनिष्ठ रहें।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिंतन करो, और प्रार्थना करोः

   क. अलमा 30:1–18। कोरिहर, एक मसीह-विरोधी, जराहेमला में अनेकों के हृदय को फिरा देता है यह प्रचार करते हुए कि “कोई मसीह नहीं होगा” और कि “जो कुछ आदमी ने किया था वह कोई जुर्म नहीं था”।

   ख. अलमा 30:19–60। कोरिहर जरसन और गिडियन के देशों में प्रचार करने की कोशिश करता है लोग सुनने से मना कर देते हैं, और वे उसे अपने मार्गदर्शकों के सामने ले जाते हैं। तब कोरिहर को अलमा के सामने ले जाया जाता है जो मसीह के आने और परमेश्वर के आस्तित्व की गवाही देता है। कोरिहर चिन्ह की मांग करता है और गुंगा हो जाता है।

   ग. अलमा 31। अलमा धर्मत्याग जोरमायटियों को पुनःसुधारने के प्रचार कार्य का मार्गदर्शन करता है, जिन्होंने झूठे विश्वास और उपासना के घमण्ड भरे आचरण को अपनाया था।

2. कक्षा के एक सदस्य को अलमा 31:15–18 ज़ोर से पढ़ने को तैयार रहने और कक्षा के दुसरे सदस्य को अलमा 31:26–35 ज़ोर से पढ़ने को कहो।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या स्वयं की कोई गतिविधि का उपयोग करो।

कक्षा के सदस्यों को उस स्थान के बारे में सोचने को कहो जो है परन्तु वे कभी वहां गए नहीं है।

- आप क्यों विश्वास करते हैं कि यह स्थान है?

समझाओ कि यह पाठ उस आदमी की चर्चा करता है जिसने दावा किया था कि हम उन बातों के बारे में नहीं जान सकते जो हमने नहीं देखी है। कोरिहर ने वाद-विवाद किया था कि जिस आदमी ने परमेश्वर को नहीं देखा है वह उसके आस्तित्व को नहीं जान सकता। परन्तु वैसे ही जैसे हमारे पास उन स्थानों के बारे में जानने में हमारी सहायता करने के लिए अन्य अभिलेख हैं जो हमने नहीं देखे हैं, हमारे पास भविष्यवक्ताओं की गवाही, धर्मशास्त्र, और पवित्र आत्मा का उपहार है हमें यह जानने में सहायत करने को कि परमेश्वर है और कि उसका सुसमाचार सच्चा है।

बताओ कि कोरिहर की शिक्षाएं आज की दुनिया में समान्य हैं यह समझना कि कैसे लोगों ने उसकी झुठी शिक्षाओं का जवाब दिया था हमारी सहायता कर सकता है जब हम उसी तरह के झूठे तत्वज्ञान और सुझावों का सामना करते हैं।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखांशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जोकि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्रीय नियमों से हो।

1. कोरिहर जराहेमला में अनेकों के हृदयों को फिरा देता है।

अलमा 30:1–18 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो। समझाओ कि आमोन के लोगों को जारसन के देश में स्थापित करने के बाद युद्ध करने वाले लमनायटियों को देश से बाहर निकलने के बाद, नफायटी न्यायाधीशों के शासनकाल की 16 वीं वर्ष और 17 वीं वर्ष के अधिकतर समय के दौरान शान्ति से रहे।

- 16 वें वर्ष के अन्त में लोगों की शान्ति को भंग करने को क्या हुआ था? (अलमा 30:6, 12 देखो।) मसीह-विरोधी क्या है? (Bible Dictionary, "Antichrist," 609 देखो, जो कहता है कि मसीह-विरोधी "कोई भी वह व्यक्ति या बात है जो सच्चे सुसमाचार या उद्धार की योजना को बनावटी बनाता है और खुले या गुप्त रूप से मसीह के विरूद्ध रखा गया है।")

- कौनसी झूठी शिक्षाएं थी जो कोरिहर ने जराहेमला के लोगों के बीच फैलाई थी? (कक्षा के सदस्यों को अलमा 30:12–18 इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए पढ़ने दो। कुछ उत्तर नीचे दिखाये गये हैं।)

  क. "मसीह नहीं होगा....जिन बातों को तुम देखते नहीं उनके विषय में तुम कुछ जान नहीं सकते इस कारण तुम नहीं जानते कि कोई मसीह होगा" (अलमा 30:12–15)। यदि आप ने ध्यान गतिविधि को उपयोग किया है, उसको संदर्भ करें और संक्षेप में कुछ बातों की चर्चा करें जो हम जानते हैं कि है परन्तु हमने देखी न हो।

  ख. "कोई भी मनुष्य भविष्य में होने वाली बातों को नहीं जानता" (अलमा 30:13)। बताओं कि कोरिहर का यह परस्पर विरोधी था कि कोई भी होने वाली बातों के बारे में नहीं जानता सकता परन्तु यह भी घोषणा करने का कि कोई मसीह नहीं होगा।

  ग. प्रायश्चित में विश्वास "उत्तेजित मन का प्रभाव है" (अलमा 30:16)।

  घ. "प्रत्येक आदमी अपनी कुशलता के अनुसार उन्नति करता है, और....प्रत्येक आदमी अपनी शक्ति के अनुसार जीतता है (अलमा 30:17)।

  ङ "जो कुछ भी मनुष्य करता है कोई जुर्म नहीं है" (अलमा 30:17)।

  च. "जब आदमी मर जाता है, वह उसका अन्त होता है" (अलमा 30:18)।

- कोरिहर की शिक्षाओं ने उन लोगों पर क्या प्रभाव डाला जिन्होंने उसको सुना था? (अलमा 30:18 देखो।) इन शिक्षाओं ने क्यों लोगों को पाप करने को निदेर्शित किया था? किन तरीकों में हमारे दैनिक चुनाव यीशु मसीह, प्रायश्चित, और प्रभु के बाद जीवन के हमारे ज्ञान द्वारा प्रेरित होते हैं?

2. कोरिहर को अलमा के सामने ले जाया जाता है, जो मसीह के आने की गवाही देता है।

अलमा 30:19–60 से चुनी हुई आयतें पढ़ो। समझाओ कि जराहेमला में अपनी झुठी शिक्षाओं को फैलाने के बाद, कोरिहर ने वो ही बातें जारसन और गिडियन के लोगों के बीच में प्रचार करने की कोशिश की थी। जराहेमला में लोगों के विपरित, इन लोगों ने अच्छा उदाहरण दिया था कि हम कैसे कोरिहर जैसे लोगों को जवाब दें जब हम उनका सामना करते हैं। चॉकबोर्ड पर लिखो शीर्षक "आधुनिक दिन के कोरिहर के साथ व्यवहार"। इसके नीचे इस भाग में उपलब्ध कराए गए सुझावों को लिखो जब आप उनकी चर्चा करते हो।

- आमोन के लोगों ने क्या किया था जब कोरिहर ने अपनी झुठी शिक्षाओं को उनके समक्ष फैलाने की कोशिश की थी? (अलमा 30: 19–21 देखो।) कैसे उनके कर्म दिखाते हैं कि वे जराहेमला में नफायटियों से "अधिक बुद्धिमान" थे? (जराहेमला के लोगों ने कोरिहर की झुठी शिक्षाओं को सुना था; आमोन के लोगों और गिडियन के लोगों ने नहीं।) हम समान्य परिस्थितियों में कैसे बुद्धिमान हो सकते हैं और सूझ-बूझ का उपयोग कर सकते हैं? (चॉकबोर्ड पर शीर्षक के नीचे, लिखो *बुद्धिमान हो।*)

- गिरजाघर मार्गदर्शकों के विरूद्ध कोरिहर ने कौनसे झूठे आरोप लगाए थे? (अलमा 30:23–24, 27–28, 31 देखो।) आपके विचार से उसने ऐसा क्यों किया था? कैसे हमारे मार्गदर्शकों का पालन करना हमें बंधन में बन्धने की बजाय स्वतन्त्र करता है, जैसा कोरिहर ने दावा किया था?

- अलमा ने गिरजाघर के मार्गदर्शकों के विरूद्ध कोरिहर के आरोपों का जवाब कैसे दिया था? (अलमा 30:32–35 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो सच्चाई को जानो।) सच्चाई को जानना कैसे हमें झूठी शिक्षाओं का सामना करने में सहायता करता है?

- कोरिहर के दावे का कि यहां कोई परमेश्वर नहीं है अलमा ने कैसे जवाब दिया था? (अलमा 30:36 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो व्यक्तिगत गवाही दो।) हम कैसे आशिषित होते हैं जब हम यीशु मसीह की गवाही देते हैं?

- अलमा कोरिहर के बारे में क्या समझ पाया था? (अलमा 30:42 देखो।) हम सच्ची और झूठी शिक्षाओं को कैसे स्पष्ट समझ सकते हैं? (मरोनी 10:5 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखो पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन खोजो।)

- जब कोरिहर ने परमेश्वर के आस्तित्व का चिन्ह मांगा, तो अलमा ने प्रमाण के नाते कौनसे चिन्ह रखे कि परमेश्वर जीवित है? (अलमा 30:44 देखो। अलमा ने "इन सारे भाइयों, भविष्यवक्ताओं, धर्मशास्त्रों, और "सब बातों की गवाही दी। चॉकबोर्ड पर लिखो भविष्यवक्ताओं और धर्मशास्त्रों से सच्चाई की शिक्षा दो।) इन प्रमाणों ने तुम्हारे विश्वास को मज़बूत करने में कैसे सहायता की है?

- अलमा की गवाही के बाद भी, कोरिहर ने चिन्ह दिखाने की मांग को जारी रखा (अलमा 30:45)। कोरिहर ने कौनसे चिन्ह को प्राप्त किया था? (अलमा 30:49–50 देखो।) यहा चिन्ह क्यों दिया गया था? (अलमा 30:47 देखो।) कोरिहर के जानने के बाद कि वह मात खा चुका था, उसने क्या कहा कि क्या कारण था कि उसने शैतान का अनुगमन किया था? (अलमा 30:53 देखो।)

- कोरिहर को अन्ततः क्या हुआ था? (अलमा 30:54–56, 58–59 देखों।) आपके विचार से मॉरमन की पट्टियों के अपने संग्रह में कोरिहर के अभिलेख को सम्मिलित क्यों किया था? यह अभिलेख हमें उनके अंजाम के बारे में क्या सीखाता है जो प्रभु के मार्ग को दूषित करते हैं? (अलमा 30:60 देखो।)

3. अलमा धर्मत्यागी ज़ोरामायटियों को पुनःसुधारने के प्रचार कार्य का मार्गदर्शन करता है।

अलमा 31 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो।

- अलमा ने ज़ोरामायटियों को पुनःसुधारने के लिए प्रचार कार्य पर जाने का निर्णय क्यों लिया? (अलमा 31:1–6 देखो। वह उनकी मूर्ति पूजा से दुःखी था। इसके अतिरिक्त, नफायटी चिन्तित थे कि ज़ोरामायटी लमनायटियों के साथ मिल जाएंगे।) अलमा ने क्यों विश्वास किया कि उसे और उसके भाइयों को परमेश्वर के वचन का प्रचार करना चाहिए? (अलमा 31:5 देखों।) तुमने कैसे देखा है किपरमेश्वर का वचन लोगों के जीवन में बदलाव लाया है?

- जोरामायटी गिरजाघर के सदस्य रहे थे, परन्तु वे बड़ी गलतियों में पड़ गये थे (अलमा 31:8–9)। वे धर्मत्याग में क्यों गिरे? (अलमा 31:9–11 देखो।) हम व्यक्तिगत धर्मत्याग से बचने के लिए क्या कर सकते हैं?

- अलमा उसके भाइयों ने ज़ोरामायटियों के उपासना करने के तरीके बारे में क्या सीखा था? (अलमा 31:12–23 देखो। आप शायद बताना चाहेंगे कि उपासना के ग़लत तरीके रखने के अतिरिक्त, ज़ोरामायटी "अपने घरों को लौटते, दुबारा अपने परमेश्वर के बारे में तब तक नहीं बोलते थे जब तक कि वे फिर दुबारा इकट्ठे नहीं होते थे।") अलमा और उसके भाइयों ने क्या जवाब दिया जब उन्होंने इस झूठी उपासना को देखा? (अलमा 31:19, 24 देखो।)

समझाओं कि अध्याय 31 दो प्रार्थनाओं को सम्मिलित करता है—एक ज़ोरामायटियों द्वारा और एक अलमा द्वारा। कक्षा के निर्धारित सदस्यों को इन प्रार्थनाओं को पढ़ने दो (देखो "तैयारी," विषय 2)। कक्षा के सदस्यों को दोनों

प्रार्थनाओं के बीच अन्तर के बारे में सोचने को कहो जब वे पढ़ी जाती हैं। प्रत्येक प्रार्थना के कुछ ज़रूरी हिस्से अगले पृष्ठ पर दिये गये हैं।

ज़ोरामायटियों की प्रार्थना

परमेश्वर एक आत्मा था, है, और हमेशा रहेगा (अलमा 31:15)।
"हम अपने बन्धुओं की परम्परा में विश्वास नहीं रखते हैं" (अलमा 31:16)।
"कोई मसीह नहीं होगा" (अलमा 31:16)।
"हम बचा लिये जाएंगे," परन्तु बाकी सारे "नर्क में धकेले जाएंगे" (अलमा 31:17)।
अन्य "मूर्ख परम्पराओं द्वारा बन्धे हैं" (अलमा 31:17)।
"हम चुने हुए हैं और पवित्र लोग हैं" (अलमा 31:18)।

अलमा की प्रार्थना

"मुझे शक्ति दे, ताकि मैं अपनी कमजोरियों को सह सकूं" (अलमा 31:30)।
"क्या मसीह में मेरी आत्मा को तुम आराम दोगे" (अलमा 31:31)।
"मुझे सफलता दो, और मेरे सह कर्मीयों को भी" (अलमा 31:32)।
"क्या [मेरे सहकर्मियों] की आत्मा को मसीह में तुम आराम दोगे" (अलमा 31:32)।
हमारी ज़ोरामायटियों को "तेरे पास" लाने में सहायता कर (अलमा 31:34–35)।
"[ज़ोरामायटियों] की आत्मा बहुमूल्य है" (अलमा 31:35)।
"हमें शक्ति और ज्ञान दे" (अलमा 31:35)।

- अलमा की प्रार्थना ज़ोरामायटियों की प्रार्थना से भिन्न कैसे थी? (आप शायद ज़ोरामायटियों के घमण्ड, स्वार्थ, और अविश्वास की तुलना अलमा की विनम्रता, दूसरों के लिए प्रेम और विश्वास के साथ करना चाहें।)
- जोरामायटियों के कौनसे व्यवहार मसीह में उनके विश्वास होने की बड़ी रूकावटें थी? (अलमा 31:24–29 देखो।) घमण्ड हमारी उपासना पर कैसे प्रभाव डालता है? (अलमा 15:17; 34:38; सि. और अनु. 59:21 देखो।) घमण्ड उद्धार के लिए एक रूकावट क्यों है?
- अलमा का हृदय ज़ोरामायटियों की दुष्टता के कारण दुःखी था। उसने परिश्रम से प्रार्थना की ताकि वो और उसके भाई उन्हें "मसीह के पास दुबारा ला सकें" (अलमा 31:24, 34)। हमारे पास आज उन्हें सहायता करने के लिए क्या जिम्मेदारी है जो यीशु मसीह की शिक्षाओं से भटक गये हैं? (3 नफी 18:32) देखो।) प्रार्थना हमें कैसे सहायता करती है जब हम प्रचारक सेवा करते हैं या जब हम अपनी विभिन्न बुलाहटों को करते हैं?
- अलमा और उसके भाई कैसे आशिषित हुए थे? (अलमा 31:38 देखो।) प्रभु हमें कैसे सहायता करेगा यदि हम विश्वास में उसके लिए प्रार्थना करेंगे जो सही है? (कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए आमन्त्रित करो जिसमें प्रभु ने उन्हें आशिषित किया है जब उन्होंने विश्वास में प्रार्थना की है।)

निष्कर्ष

बताओ कि कोरिहर और ज़ोरामायटियों के तत्त्वज्ञान आज भी प्रचलित हैं। कक्षा से लेकर कार्यस्थल तक, माध्यम में, पुस्तकों में, और कभी-कभी घरों में, ये वे लोग हैं जो कोरिहर के झूठे सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं "हमारी खुशियों में बाधा पहुंचाने को" (अलमा 30:22)। और ज़ोरामायटियों की तरह, भी, अनेक आज दुनिया की व्यर्थ बातों पर अपना हृदय लगाते हैं" (अलमा 31:27)। कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक के परिश्रमी अध्ययन, दैनिक प्रार्थना, और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निरन्तर आज्ञा-पालन करने के द्वारा मज़बूत बनाने को प्रोत्साहित करो।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

पाठ
28

“मसीह में उद्धार का वचन है”

अलमा 32–35

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की यह समझने में सहायता के लिए कि परमेश्वर का वचन उनका यीशु मसीह तक मार्गदर्शन करेगा और उन्हें अपने हृदयों में “वचन का पोषण” करने को प्रोत्साहित करेगा (अलमा 32:40)।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. अलमा 32:1–27। अलमा विनम्र ज़ोरामायटियों को विश्वास उपयोग करने और परमेश्वर के वचन के लिए अपने हृदयों में स्थान रखने को प्रोत्साहित करता है।

   ख. अलमा 32:28–43। अलमा परमेश्वर के वचन की तुलना उस बीज से करता है जो लोगों के हृदयों में लगाया गया है। वह लोगों को सीखता है कि उन्हें बड़ी सावधानी के साथ वचन का पोषण करना चाहिए ताकि वो एक दिन अनन्त जीवन प्राप्त कर सकें।

   ग. अलमा 33। अलमा भविष्यवक्ताओं की यीशु मसीह की गवाहियों को कहता है और लोगों को अपने हृदयों में परमेश्वर के वचन लगाने का अनुरोध करता है।

   घ. अलमा 34। अमूलक यीशु मसीह के प्रायश्चित की गवाही देता है। वह लोगों को पश्चाताप के लिए प्रार्थना करने और विश्वास का उपयोग करने की आज्ञा देता है।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग कर रहे हैं, कक्षा में एक बीज लाओ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या स्वयं की कोई गतिविधि का उपयोग करो।

उस बीज को दिखाओ जो आप कक्षा में लाए हो। कक्षा के सदस्यों को कल्पना करने दो कि किसी ने उन्हें बीज दिया है और उन्हें कहा है कि वह एक पेड़ बनेगा जो कि स्वादिष्ट फल देगा।

- तुम पता करने के लिए क्या करेगो यदि बीज वास्तव में स्वादिष्ट फल उत्पन्न करेगा?

समझाओ कि यह पाठ अलमा 32 की चर्चा के साथ आरम्भ होता है। इस अध्याय में एक भाषण सम्मिलित है जिसमें अलमा परमेश्वर के वचन की तुलना एक बीज से करता है। वह विनम्र ज़ोरामायटियों के समूह को “स्थान बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, कि [इस] बीज को वे अपने हृदयों में लगा सकें (अलमा 32:28)। वह वादा करता है यदि वे इस बीज का पोषण करेंगे, वह तब तक बढ़ेगा जब तक यह जीवन का वृक्ष न बन जाए, यह फल उन सभी से “सबसे कीमती” और मीठा है जो मीठे हैं” (अलमा 32:40–42)।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. अलमा विनम्र ज़ोरामायटियों को विश्वास उपयोग करने और अपने हृदयों में परमेश्वर के वचन को स्थान देने की शिक्षा देता है।

अलमा 32:1–27 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि अलमा, अमूलक, और उनके भाइयों ने ज़ोरामायटियों के आराधनालय में प्रवेश किया था। वहां उन्होंने ज़ोरामायटियों को घोषणा करते सुना कि "कोई मसीह नहीं होगा" (अलमा 31:16–17)। इस झूठी शिक्षा को सुनने के बाद, अलमा, अमूलक, और उनके भाई परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और मसीह की गवाही देने को अलग-अलग हो गए (अलमा 31:36–37; 32:1)।

- जब अलमा प्रचार कर रहा था, ज़ोरामायटियों का एक बड़ा समूह उसके पास आया। अलमा को बहुत आनन्द क्यों हुआ जब ये ज़ोरामायटी उसके पास आये? (अलमा 32:6–8 देखो।) इन लोगों को परमेश्वर का वचन सुनने को तैयार करने के लिए क्या हुआ था? (अलमा 32:2–5 देखो।)

- इन ज़ोरामायटियों के लिए यह आशीष क्यों थी कि वे विनम्र होने को विवश किए गए थे? (अलमा 32:12–13 देखो।) विनम्र होने को विवश होने की बजाय अपने आप विनम्र होना क्यों बेहतर है? (अलमा 32:14–16 देखो।) परमेश्वर का वचन हमें कैसे विनम्र होने को निर्देशित करता है?

- अलमा ने ज़ोरामायटियों को विश्वास होने के अर्थ के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (अलमा 32:17–18, 21 देखो।) अलमा ने क्या कहा था कि परमेश्वर में विश्वास विकसित करने के लिए हमें किस प्रथम बात को करने की आवश्यकता है? (अलमा 32:22 देखो।) हम किन तरीकों से परमेश्वर के वचन प्राप्त कर सकते हैं? (अलमा 17:2; 32:23; सि. और अनु. 1:38; 18:33–36 देखो।)

- अलमा ने अपने सुनने वालों को क्या करने को प्रोत्साहित किया था ताकि वे जान पायें कि उसके वचन सच्चे हैं? (अलमा 32:26–27 देखो।) "जागो और [हमारी] आंतरिक शक्तियों को जागृत करो" का क्या अर्थ है? हम परमेश्वर के वचन पर "प्रयोग" कैसे कर सकते हैं? (यूहन्ना 7:17 देखो।) तुम्हें कौनसे अनुभव हुए हैं जब तुमने वचनों पर प्रयोग किये?

2. अलमा लोगों को अपने हृदयों में परमेश्वर के वचन का पोषण करने की शिक्षा देता है।

अलमा 32:28–43 को पढ़ो और चर्चा करो।

- परमेश्वर के वचन की तुलना एक बीज से करके, अलमा ने ज़ोरामायटियों को "स्थान देने" की सलाह दी, ताकि उनके हृदयों में बीज को लगाया जा सके (अलमा 32:28)। परमेश्वर के वचन को हमारे हृदयों में "स्थान देने" के लिए हमें क्या करना चाहिए?

- अलमा के अनुसार, लोग क्या अनुभव करना आरम्भ करते हैं जब परमेश्वर के वचन उनके हृदयों में लगाए जाते हैं? (अलमा 32:28–31, 33–35 देखो। आप शायद कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेंगे।) वचनों को "[हमारी] छाती के अन्दर फैलने" आप क्या अर्थ समझते हैं? धर्मशास्त्र कैसे हमारी आत्माओं को बढ़ाते हैं, हमारी समझ को प्रकाशमय करते हैं, और हमारे मन को फैलाते हैं? (अलमा 37:8–9 देखो।) किन तरीकों में परमेश्वर का वचन तुम्हें स्वादिष्ट लगा है?

- हमें क्या करना जारी रखना है जब परमेश्वर की वचन हमारे हृदयों में बढ़ना आरंभ करता है? (अलमा 32:37 देखो।) हम "बहुत सावधानी के साथ [वचन] को कैसे पोषण" कर सकते हैं? (अलमा 32:41 देखो।) आपके विचार से वचन को हमारे हृदयों में "जड़ पकड़ने" और बढ़ने का क्या अर्थ है? (अलमा 32:37)।

- क्या होगा जब हम वचन को नज़रअंदाज करेंगे और इसका पोषण नहीं करेंगे इसके हमारे हृदयों में बढ़ने के बाद? (अलमा 32:38–40 देखो।) हम क्या कर सकते हैं जो हमारी भूमि, या हमारे हृदय को अनउपजाऊ होने का कारण बने?

- अपने भाषण के अन्त में, अलमा ने वचन की तुलना एक वृक्ष से की थी जो एक बीज से बड़ा हुआ था (अलमा 32:40–42 देखो।)

  लेही और नफी द्वारा देखे गए जीवन के वृक्ष के दिव्यदर्शन को संक्षेप में संदर्भ करो। कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि जीवन का वृक्ष यीशु मसीह का प्रतिरूप है (इस निर्देशिका में पृष्ठ 12 देखो)। बताओ कि परमेश्वर को वचन का, उस दिव्यदर्शन में लोहे की छड़ द्वारा और अलमा के भाषण में बीज द्वारा प्रदर्शित किया गया था, उद्धारक की ओर ले जाता है जिसका जीवन के वृक्ष द्वारा प्रदर्शित किया था।

  अलमा 32 को संदर्भ करते हुए, एल्डर जैफरी आर. हॉलैंड ने सीखाया था, "इस बेहतरीन भाषण में, अलमा पाठक को बीज समान परमेश्वर के वचन में विश्वास पर एक समान्य टिप्पणी से परमेश्वर के वचन के समान मसीह में विश्वास पर एक केन्द्रीत भाषण को ले जाता है" (*Christ and the New Covenant* [1997], 169)।

- जीवन के वृक्ष का फल क्या है? (अनन्तकालीन जीवन। अलमा 32:41; 33:23; 1 नफी 15:36; सि. और अनु. 14:7 भी देखो।)

3. अलमा भविष्यवक्ताओं की गवाहियों को बताता और लोगों को अपने हृदयों में परमेश्वर का वचन लगाने को प्रोत्साहित करता है।

अलमा 33 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि अलमा का भाषण सुनने को बाद, लोग जानना चाहते थे कि "किस प्रकार उन्हें अपना विश्वास उपयोग करना आरम्भ करना चाहिए" (अलमा 33:1)। अलमा ने यीशु मसीह के बारे में भविष्यवक्ता ज़ीनस, जीनक, और मूसा की शिक्षाओं को बताने के द्वारा जवाब दिया।

- अलमा ने ज़ोरामायटियों को ज़ीनस की कौनसी शिक्षा बताई थी? (आप शायद चाहे कि कक्षा के सदस्य अलमा 33:3–11 से बारी-बारी आयते पढ़ें।) प्रार्थना के बारे में ज़ीनस की शिक्षा को बताने में अलमा का क्या उद्देश्य था? (अलमा 33:11–14 देखो। वह ज़ोरामायटियों को परमेश्वर के पुत्र में विश्वास उपयोग करने की शिक्षा देना चाहता था। ध्यान दें "कि [उसके] पुत्र के कारण" स्वर्गीय पिता हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और अपना न्याय हमसे अलग करता है।)

- अलमा ने ज़ोरामायटियों को कहा था कि भविष्यवक्ता ज़ीनस ने भी मसीह की गवाही दी थी (अलमा 33:15)। जीनक ने क्या शिक्षा दी थी? (अलमा 33:16 देखो।) ज़ोरामायटियों को संबंधित करने के लिए यह शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण थी? (अलमा 31:12, 16–17 देखो।)

- अलमा ने उस पीतल के सांप के बारे में कहा जिसे मूसा ने वीरान भूमि में बनाया और उपर उठय'ज।' था (अलमा 33:19; गिनतियों 21:9 भी देखो)। सांप कैसे यीशु मसीह का एक प्रकार, या प्रतीक था? (अलमा 33:19 देखो; यूहन्ना 3:14–16; इलामन 8:13–15 भी देखो।) अलमा का पीतल के सांप के बारे में बताना यीशु मसीह में विश्वास का उपयोग करने के बारे में क्या सीखाता है? (अलमा 33:20–23 देखो; अलमा 37:46 भी देखो।)

4. अमूलक यीशु मसीह के प्रायश्चित की गवाही देता है। वह लोगों को प्रार्थना करने और पश्चाताप के लिए विश्वास उपयोग करने की आज्ञा देता है।

अलमा 34 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि अलमा के बोलने के बाद, अमूलक उठा और लोगों को शिक्षा देना आरम्भ किया।

- अलमा और अमूलक ने जाना कि लोग अब भी प्रश्न कर रहे थे कि उन्हें मसीह में विश्वास करना चाहिए या नहीं (अलमा 34:2–5)। अमूलक ने इस प्रश्न का उत्तर कैसे दिया था? (अलमा 34:6–8 देखो।) हम मसीह की ऐसी शक्तिशाली गवाही को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? कैसे धर्मशास्त्रों, भविष्यवक्ताओं, और मसीह की दूसरी साक्षियों ने मसीह की तुम्हारी गवाही को मज़बूत किया है?

- क्यों समस्त मनुष्यजाति यीशु मसीह के प्रायश्चित के बिना नाश होगी? (अलमा 34:8–9 देखो; अलमा 22:14 भी देखो।) क्यों यीशु ही वो एक मात्र है जो दुनिया के पापों के लिए प्रायश्चित कर सकता है और हमें पतन के प्रभाव से बचा सकता है? (अलमा 34:10–12 देखो।) अमूलक की शिक्षा का क्या अर्थ है कि पश्चाताप एक "अपरिमित और अनन्त बलिदान" है? (अलमा 34:14–16 देखो।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने शिक्षा दी थी: "मनुष्य अपनेआपको उद्धार नहीं कर सकता; मनुष्य अपनेआपको बचा नहीं सकता; मनुष्य शक्ति दूसरे को बचा नहीं सकती; मनुष्य शक्ति किसी दूसरे के पापों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकती। मुक्ति के कार्य को अपरिमित और अनन्त होना चाहिए; इसे अपरिमित व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए; स्वयं परमेश्वर को दुनिया के पापों के लिए प्रायश्चित करना पड़ा" (*A New Witness for the Articles of Faith* [1985], 111–12)।

- आपके विचार से अलमा 34:17–29 में कैसे अमूलक की सलाह ने ज़ोरामायटियों की सहायता की थी, जिन्होंने विश्वास किया था कि वे सिर्फ आराधनालय में और सप्ताह में सिर्फ एक बार उपासना कर सकते हैं? हम इस सलाह से क्या सीख सकते हैं?

- लोगों के उद्धारक की अनेकों साक्षियों को प्राप्त करने के बाद अमूलक ने उन्हें क्या करने की आज्ञा दी थी? (अलमा 34:30–31 देखो; आयते 15–17 भी देखो, जिनमें वाक्यांश "पश्चाताप के लिए विश्वास" चार बार आता है।) क्यों मसीह में विश्वास पश्चाताप का एक ज़रूरी भाग है?

- अमूलक ने हमारे पश्चाताप करने के दिन को टाल-मटोल या विलम्ब करने के विरूद्ध चेतावनी दी थी (अलमा 34:31–36)। क्यों लोग कभी-कभी पश्चाताप के लिए टाल-मटोल करते हैं? अलमा 34:32 में सलाह कैसे हमारे प्रत्येक दिन जीने के तरीके पर प्रभाव डालती है?

निष्कर्ष

बताओ कि फल वाले वृक्ष को लगाने का उद्देश्य यह है ताकि हम उसके फलों को खा सकें। जब हम स्थान देते हैं, कि [वचन] हमारे हृदयों में बोया जा सके, हम उसके फलों के लिए [आशा] कर सकते हैं (अलमा 32:28, 41)। अलमा 32:41–42 में इस फल के अलमा के वर्णन को पढ़ो। कक्षा के सदस्यों को याद कराओ कि फल अनन्त जीवन है और सिर्फ यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा हम इस फल को खा सकते हैं (अलमा 34:14–16)।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. "मैं चाहता हूं कि तुम इन बातों को स्मरण रखो" (अलमा 34:37)

पाठ के निष्कर्ष के रूप में, कक्षा के एक सदस्य को अलमा 34:37–41 में, ज़ोरामायटियों को अमूलक के अंत के वचनों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो।

2. गिरजाघर के नये सदस्यों को मज़बूत करना

- "ज़ोरामायटियों के अधिक प्रसिद्ध हिस्से" ने उन लोगों को बाहर निकाल दिया था जो अलमा और उसके भाइयों के वचनों में विश्वास करते थे (अलमा 35:1–6)। आमोन के लोगों ने उन ज़ोरामायटियों को कैसे प्राप्त किया था जो बाहर निकाल दिये गये थे? (अलमा 35:7–9 देखो।) यह उदाहरण नये धर्मपरिवर्तियों को मज़बूत करने के बारे में क्या शिक्षा देता है?

पाठ
29

“मेरे वचनों को सुनो”

अलमा 36–39

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सुसमाचार में विश्वासी रहने के लिए अलमा की सलाह की शिक्षा देना और माता-पिताओं को यह समझने में सहायता करना कि नेक और नेकहीन दोनों तरह के बच्चों को कैसे शिक्षा और सलाह दें।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

क. अलमा 36–37। अलमा अपने धर्मान्तरण को याद करता है और अपने पुत्र इलामन को अपनी गवाही देता है। वह इलामन को पवित्र अभिलेखों को संभालने के निर्देश देता है।

ख. अलमा 38। अलमा अपने पुत्र सिबलोन को उसकी विश्वसनीयता के लिए प्रंशसा करता है और उसे नेकी में, अंत तक जारी रहने को प्रोत्साहित करता है।

ग. अलमा 39। अलमा अपने पुत्र कोरियन्दन को उसके घृणित कर्मो के लिए झिड़कता है और कोरियन्दन को ऐसे पापों के परिणाम के बारे में सलाह देता है।

2. यदि चित्र “स्वर्ण पट्टियां” उपलब्ध है, इस पाठ के दौरान उपयोग करने के लिए तैयार रहो (सुसमाचार कला चित्र किट 325)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या स्वयं की कोई गतिविधि का उपयोग करो।

कक्षा के सदस्यों से पूछोः

- तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें कौनसा सबसे अच्छा सुझाव या सलाह दी है? यह सलाह या सुझाव इतना मूल्यवान क्यों है?

कक्षा के सदस्यों को सोचने के लिए समय दो, और तब उन्हें अपने उत्तर बांटने को आमन्त्रित करो।

समझाओ कि इस पाठ में चर्चित अध्यायों में अपने पुत्रों इलामन, सिबलोन, और कोरियन्दन को अलमा की सलाह के वचन सम्मिलित है। ये सलाह के वचन हम पर भी लागू होते हैं।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. अलमा अपनी गवाही बांटता है और अपने पुत्र इलामन को अभिलेख देता है।

अलमा 36–37 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो।

- अलमा 36 में अलमा की गवाही सम्मिलित है जैसी अपने पुत्र इलामन को व्यक्त की गई थी (विशेषकर आयत 3–5 और 26–28 देखो)। बच्चों के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है कि वो अपने माता-पिता को अपनी गवाहियां देते हुए सुने? किन तरीकों में तुम्हारे माता-पिता की गवाहियों ने तुम्हारे जीवन को प्रेरित किया है?

- अपनी गवाही के भाग के रूप में, अलमा ने इलामन को अपने धर्मान्तरण के बारे में बताया था (अलमा 36:6–24 देखो; अलमा 38:7–9 भी देखो, जहां अलमा अपने पुत्र सिबलोन को अपने धर्मान्तरण के बारे में बताता है और पाठ 20, जो अलमा के धर्मान्तरण की चर्चा अधिक विस्तार से करता है)। आपके विचार से अलमा ने अपने धर्मान्तरण की कहानी को अपने बेटों के साथ क्यों बांटा था? दुसरे कैसे धर्मपरिवर्तित हुए के बारे में सुनने से आप को कैसे लाभ पहुंचा है?

- अनेक बार अलमा ने इलामन को उसके उदाहरण का अनुगमन करने को प्रोत्साहित किया था। (आप शायद कक्षा के सदस्यों के साथ नीचे दिये गये वाक्यों की समीक्षा चाहोगे, जो इलामन को अलमा के निर्देश दिखाते हैं।) माता-पिता के लिए यह ज़रूरी क्यों है कि वो अपने बच्चों के सामने नेक उदाहरण रखें?

  क. "तुम्हें वैसा करना चाहिए जैसा मैंने किया है" (अलमा 36:2)
  ख. "मैं तुमसे याचना करता हूं कि तुम मेरे शब्दों को सुनो और मुझसे सीखो" (अलमा 36:3)।
  ग. "मेरी तरह तुम भी स्मरण रखना" (अलमा 36:29)।
  घ. "तुम्हें यह भी जानना चाहिए जैसा मैं जानता हूं" (अलमा 36:30)।

- यदि आप स्वर्ण पट्टियों का चित्र उपयोग कर रहे हैं, उसे अभी दिखाओ। अलमा ने अभिलेखों को रखने की महत्ता पर इलामन पर कैसे ज़ोर दिया? (अलमा 37:1–2, 6–12 देखो।) किन तरीकों में अभिलेख रखना "छोटी और साधारण चीज़" है जोकि "महान चीज़ों" को लाती है? (अलमा 37:6–7)। कौनसी "महान चीज़ें" धर्मशास्त्र हमारे लिए करेंगे यदि हम परिश्रम से उनका अध्ययन करेंगे? (अलमा 37:8–10 देखो।)

- अलमा ने इलामन से लोगों को क्या सीखाने के लिए कहा था? (अलमा 37:32–34 देखो।) कैसे माता-पिता, शिक्षक, और अन्य वयस्क आज युवा लोगों को "[उनकी] युवावस्था में ज्ञान सीखने" में सहायता कर सकते हैं? (अलमा 37:35)।

- कक्षा के एक सदस्य को अलमा 37:36–37 ज़ोर से पढ़ने को कहो। तुम्हारा जीवन कैसे प्रभावित हुआ है जब आपने इस सलाह का अनुगमन करने की कोशिश की है? हम इस सलाह पर और बेहतर ध्यान कैसे लगा सकते हैं?

- अलमा ने परमेश्वर के वचन और लियाहोना के बीच की क्या तुलना की थी? (अलमा 37:38–45 देखो।) हमें क्या करना चाहिए कि परमेश्वर का वचन हम सबके लिए लियाहोना बन जाए?

- अलमा ने इलामन को सलाह दी थी, "हमें मार्ग के आसान होने के कारण आलसी मत होने दे" (अलमा 37:46; गिनतियों 21:5–9; 1 नफी 17:41 भी देखो)। किस अभिप्राय से अनन्त जीवन का मार्ग आसान है? क्यों मार्ग का आसान होना कुछ लोगों के लिए अवरोधक है? हम कैसे मसीह में बचाने वाले विश्वास पर केन्द्रीत हो सकते हैं? हम कैसे "परमेश्वर को देखते हैं और जीते हैं" (अलमा 37:47)।

2. अलमा अपने पुत्र सिबलोन की प्रंशसा करता है और प्रोत्साहित करता है।

अलमा 38 से चुनी हुई आयतें पढ़ो और चर्चा करो। बताओ कि अलमा ने सिबलोन को भी अपनी गवाही दी थी और सिबलोन को अपने धर्मान्तरण के बारे में बताया था (अलमा 38:6–9)।

- सिबलोन में कौन से गुणों ने उसके पिता को महान आनन्द पहुंचाया था? (अलमा 38:2–4 देखो।) माता-पिता के लिए अपने बच्चों को उनके अच्छे गुणों और नेक जीवन के लिए पहचानना और प्रंशसा करना क्यों महत्वपूर्ण है?

- कक्षा के सदस्य को अलमा 38:5 ज़ोर से पढ़ने दो। परमेश्वर में अपना भरोसा रखने से तुम्हें परीक्षा या दुःख के समय में कैसे सहायता मिलती है?

- हालांकि सिबलोन विश्वासी था, अलमा ने अपने पुत्र को अपने वचनों का अंत एक सलाह देकर किया था (अलमा 38:10–15) । यहां तक कि नेक के लिए भी सलाह और चेतावनी प्राप्त करना क्यों महत्वपूर्ण है? हम विनम्रता में ऐसी सलाह और चेतावनी प्राप्त करना कैसे सीख सकते हैं?

- अलमा ने सिबलोन को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना जारी रखने की सलाह दी थी, "परिश्रमी और संयमी होकर", "साहस का उपयोग करके, परन्तु उद्धतता सहन न करके" (अलमा 38:10, 12)। हम इस सलाह का अनुगमन कैसे कर सकते हैं जब हम अपने विश्वास को दुसरों के साथ बांटते हैं?

- अलमा ने सिबलोन को खुद के ज्ञान या शक्ति पर घमण्ड न करने की चेतावनी दी थी (अलमा 38:11)। हमारे खुद के ज्ञान और शक्ति में घमण्ड करना अधिक पापों की ओर ले जाता है? हम ऐसे घमण्ड पर कैसे विजय पा सकते हैं? (अलमा 38:13–14 देखो। हम हर समय परमेश्वर के सामने [हमारी] अयोग्यता को मान सकते हैं।")

- अलमा ने सिबलोन को [अपनी] सारी उत्तेजनाओं पर काबू पाने की सलाह दी थी (अलमा 38:12)। हमारी उत्तेजनाओं को काबू करने का क्या अर्थ है? (आप शायद बताना चाहोगे कि घोड़ें की लग़ाम का उद्देश्य घोड़े को नियंत्रित और निर्देशित करना है।) हमें "प्रेम के साथ भरने के लिए अपनी उत्तेजनाओं पर काबू क्यों पाना चाहिए"?

3. अलमा अपने पुत्र कोरियन्दन पश्चाताप करने की सलाह देता है।

अलमा 39 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। बताओ कि अपने पुत्र कोरियन्दन को अलमा की सलाह अपने दूसरे पुत्रों को उसकी सलाह से कुछ भिन्न थी। इलामन और सिबलोन नेकी से जी रहे थे, परन्तु कोरियन्दन ने गंभीर पापों को किया था।

- कोरियन्दन ने कौनसे पाप किये थे? (अलमा 39:2–3 देखो।) यौन व्यभिचार एक गंभीर पाप क्यों है?

  एल्डर बोएड के. पैकर ने सिखाया थाः

  "हमारे शरीरों में उपलब्ध कराया गया है—और यह पवित्र है—सृष्टि की एक शक्ति, एक ज्योति, जैसा है, जिसके पास अन्य ज्योतियों को जलाने की शक्ति है। इस उपहार का उपयोग सिर्फ विवाह के पवित्र बन्धनों में ही होना चाहिए। इस सृष्टि की शक्ति के उपयोग द्वारा, एक नाशवान शरीर उत्पन्न हो सकता है, एक आत्मा इसमें प्रवेश करती है, और इस जीवन में एक नया व्यक्ति जन्म लेता है।

  "यह शक्ति अच्छी है। यह पारिवारिक जीवन की रचना और समर्थन कर सकती है, और यह पारिवारिक जीवन में है कि हम सुख के फव्वारे पा सकते हैं....

  "सृष्टि की शक्ति—या हम कह सकते हैं पुनःसृष्टि—योजना का सिर्फ आकस्मिक हिस्सा नहीं हैः यह इसके लिए ज़रूरी है। इसके बिना योजना आगे नहीं बढ़ सकती थी। इसका दुरूपयोग योजना को बाधा पहुंचा सकता है।

  "इस दुनिया में अधिकतर खुशी जो तुम तक आती है वह इस पर निर्भर करती है कि तुम सृष्टि की पवित्र शक्ति का उपयोग कैसे करते हो— यदि [शैतान] तुम्हें इस शक्ति का उपयोग अपरिपक्वता से, इसे बहुत शीघ्र उपयोग करने, या इसे किसी भी तरह से दुरूपयोग करने को ललचाता है, आप शायद अनन्त उन्नति के लिए अपने अवसरों को खो देंगे....

  "अपने उपहार की रक्षा और सुरक्षा करो। तुम्हारी वास्तविक खुशी दांव पर है। अनन्त पारिवारिक जीवन—प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि हमारे स्वर्गीय पिता ने इस चुनिन्दा उपहार को तुम सब को दिया है—यह सृष्टि करने की शक्ति। यह सुख के लिए महत्वपूर्ण कुंजी है" (in Conference Report, Apr. 1972, 136–39; or *Ensign,* July 1972, 111–13)।

- अलमा ने कोरियन्दन के पाप की उसके साथ चर्चा करने को ज़रूरी महसूस क्यों किया था? (अलमा 39:7–8, 12–13 देखो।) माता- पिता अलमा से उन बच्चों को सलाह देने के बारे में क्या सीख सकते हैं जिन्होंने ग़लतियां की हैं या पाप करे हैं? (उत्तरों में नीचे दिए गए सम्मिलित हो सकते हैं।)

  क. अलमा ने कोरियन्दन को जो कोरियन्दन के पाप के लिए ले गया था के बारे में याद कराया (अलमा 39:2–4)।
  ख. उसने कोरियन्दन के पाप के परिणाम समझाए (अलमा 39:7–9, 11)।
  ग. उसने कोरियन्दन को कैसे पश्चाताप करना और भविष्य में पाप से दूर रहने की शिक्षा दी थी (अलमा 39:9–14)।
  घ. उसने कोरियन्दन को परमेश्वर के प्रेम और क्षमादान के बारे में सिखाया था (अलमा 39:15–19)।

- कोरियन्दन में कौनसे कर्म और बर्ताव उसे उसके पाप तक ले गए थे? (अलमा 39:2–3 देखो।) हम अशुद्ध होने की शैतान की लालचों के विरूद्ध अपने आपको मज़बूत करने के लिए क्या कर सकते हैं? (अलमा 39:4, 13; सि. और अनु 121:45 देखो।)

- कोरियन्दन की पापपूर्णता ने दुसरों को कैसे प्रेरित किया था? (अलमा 39:11, 13 देखो।) आपके विचार से जोरामायटियों पर कोरियन्दन के कर्मो का प्रभाव अलमा के वचनों से अधिक क्यों था? गिरजाघर के सदस्यों के लिए अच्छे उदाहरण रखना क्यों महत्वपूर्ण है? आप उन लोगों के द्वारा कैसे आशिषित हुए हैं जिन्होंने अच्छे उदाहरण रखे हैं? (कक्षा के सदस्यों को शान्ति से सोचने दो कि कैसे उनके कर्म दुसरों की गिरजाघर की राय पर प्रभाव डालते हैं।)

- अलमा ने कोरियन्दन को उसके पाप के लिए कैसे पश्चाताप करे और भविष्य में ऐसे पापों से दूर रहे के लिए कौनसी सलाह दी थी? (अलमा 39:9–14 देखो। कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखो। भाग लेने को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ उत्तर, चर्चा प्रश्नों के साथ नीचे दिये गये हैं।)

  क. "सांसारिक सौन्दर्य के पीछे मत जाओ" (अलमा 39:9)। कैसे वो बातें जिन्हें हम देखते हैं या ध्यान देते हैं वे शुद्ध रहने के हमारे दृढ़ विश्वास को प्रेरित करते हैं?
  ख. "तुम अपने ऊपर ली गई जिम्मेदारियों के विषय में अपने बड़े भाइयों से सम्मतियां लिया करो" (अलमा 39:10)। कैसे परिवार के नेक सदस्यों या मित्रों के साथ सलाह करना लालच से बचने की हमारी मज़बूती को सहायता करती है?
  ग. "किसी भी व्यर्थ की या मूर्खतापूर्ण बातों में मत पड़ो" (अलमा 39:11)। कौनसी कुछ व्यर्थ और मूर्ख बातें हैं जो शैतान हमें अलग ले जाने में उपयोग करता है?
  घ. अपनी पूरी बुद्धि, बल और योग्यता के साथ प्रभु की ओर घुमो" (अलमा 39:13)। हम प्रभु के पास सहायता के लिए कैसे जा सकते हैं जब हम लालच का सामना करते हैं?
  ङ. "अपनी भूलो को स्वीकार कर सको" (अलमा 39:13)। क्यों यह मानना कि हमने गलती की है पश्चाताप का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है?
  च. "धन और निरर्थक सांसारिक वस्तुओं को मत खोज़ो" (अलमा 39:14)। कीमती या निरर्थक सांसारिक वस्तुओं को खोज़ना हमें पाप करने को कैसे लालच देता है?

- अलमा ने कोरियन्दन को मसीह के बारे में क्या सीखाया था? (अलमा 39:15–19 देखो। कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर लिखो।) इन बातों को समझना हमें कैसे सहायता करता है जब हम पाप करने को ललचाये जाते हैं?

निष्कर्ष

बताओ कि अलमा ने कोरियन्दन को पश्चाताप कैसे करना और विश्वासपूर्णता को लौटना सीखाया था, और उसने इलामन और सिबलोन को विश्वासी कैसे रहें पर सलाह दी थी । कक्षा के सदस्यों को अलमा की सलाह अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करो । कक्षा के उन सदस्यों को प्रोत्साहित करो जो माता-पिता हैं कि वे अपने बच्चों को शिक्षा देने और सलाह देने में अलमा के उदाहरण का अनुगमन करें ।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. बच्चों को व्यक्तिगत तौर पर सलाह देना

कक्षा के एक सदस्य को अलमा 35:16 ज़ोर से पढ़ने दो।

- हम इस आयत से उन बच्चों को शिक्षा देने के बारे में क्या सीख सकते हैं जिनके विभिन्न व्यक्तित्व, चुनौतियां, और आवश्यकताएं हैं? (बताओ कि अलमा ने प्रत्येक पुत्र से "अलग" बात की थी। उसने अपने पुत्रों से एक साथ बात नहीं की थी या उन्हें समान्य संदेश नहीं दिया था; उसने प्रत्येक पुत्र से अकेले में बात की और उसे वह बताया जिसकी विशेषकर उसे सुनने की आवश्यकता थी।) बच्चों को व्यक्तिगत तौर पर अक्सर शिक्षा देना कैसे सहायक हो सकता है?

2. माता-पिता की अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदारियां

- बच्चों को पालने में माता-पिता की क्या जिम्मेदारियां हैं? (मुसायाह 4:14–15; सि. और अनु. 68:25–28 देखो।)

कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्रों में नेक माता-पिता को पहचानने के लिए कहो जिनके नेक और नेकहीन दोनों तरह के बच्चे थे।) उत्तरों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

आदम और हव्वा (एबल और केन)
इसहाक और रेबैका (याकूब और इसाऊ)
लेही और सराया (नफी, साम, याकूब, युसुफ, लमान, और लेमुएल)
छोटा अलमा (इलामन, सिबलोन, और कोरियन्दन)

बताओ कि नेक माता-पिता भी नेकहीन बच्चों के साथ व्यवहार करने की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। ज़ोर दें कि माता-पिता को अपने बच्चों को सुसमाचार सीखाना है और उन्हें सुसमाचार नियमों द्वारा जीने को प्रोत्साहित करना है, परन्तु उन्हें अपने बच्चों की स्वतन्त्रता का भी आदर करना है। माता-पिता बच्चों को नेकी से जीने पर विवश नहीं कर सकते।

3. "अपराध बहुत बड़ा है" (अलमा 39:7)

आप शायद अलमा की शुद्धता के नियम की शिक्षा पर ज़ोर देना चाहें। निश्चित करें कि कक्षा के सदस्य समझें कि शुद्धता का नियम का अर्थ क्या है, यह क्यों महत्वपूर्ण है, और इसे रखने में अटल कैसे रहें।

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली द्वारा निम्नलिखित बयान भी उपयोगी हो सकता है:

आप बूरी लालचों की दुनिया में रह रहे हैं। अश्लील साहित्य इसकी घटिया गंदगी के साथ, पृथ्वी को खतरनाक, चारों तरफ से उठते ज्वार भाटे के समान घेर रहा है। यह ज़हर है। इसे न तो देखो या पढ़ो। यह तुम्हें नष्ट कर देगा यदि तुम ऐसा करते हो इससे दूर रहो। इसे दूर रखो जैसे तुम घृणित बीमारी को करते हो, क्योंकि यह भी उतना ही मारक है। विचार और कर्म में सदाचारी रहो। परमेश्वर ने तुम्हारे अन्दर, एक उद्देश्य के कारण, एक ईश्वरीय शक्ति को बोया है जो कि आसानी से बूराई और सर्वनाशी अन्त को पलट सकती है। जब तुम युवा हो, उधमी डेटिंग में सम्मिलित मत होना। जब तुम उस आयु पर पहुंचो जहां तुम विवाह का विचार कर सको, तब इसमें सम्मिलित होन का उचित समय है । परन्तु तुम लड़कों जो दसंवी में हैं तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं है, ना ही लड़कियों को" (in Conference Report, Oct. 1997, 71–72; or *Ensign,* Nov. 1997, 51)।

“खुशहाली की महान योजना”

पाठ
30

अलमा 40–42

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को मृत्यु के बाद के जीवन को प्राप्त करने और यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा उन्हें जो दया उपलब्ध है उसके बारे में अधिक समझदारी प्राप्त करने में सहायता करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. अलमा 40:1–23। अलमा कोरियन्दन को मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में शिक्षा देता है।

   ख. अलमा 40:24–26; 41। अलमा कोरियन्दन को शिक्षा देता है कि हमारे पुनरूत्थारित होने के बाद, नेक सुख के लिए पुनगठित होंगे और बूरे दुःख के लिए पुनगठित होंगे।

   ग. अलमा 42। अलमा कोरियन्दन को खुशी की महान योजना में न्याय और दया के बारे में बताता है ।

2. अतिरिक्त पढ़ाईः सिद्धान्त और अनुबंध 138 ।

3. सुसमाचार नियम (31110) अध्याय 12 “मध्यस्तक” कहलाए जाने वाले दृष्टांत को पढ़ने या कहने को तैयार रहो; in Conference Report, Apr. 1977, pp. 79, 80; or *Ensign,* May 1977, pp. 54–55.

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित आकृति बनाओः

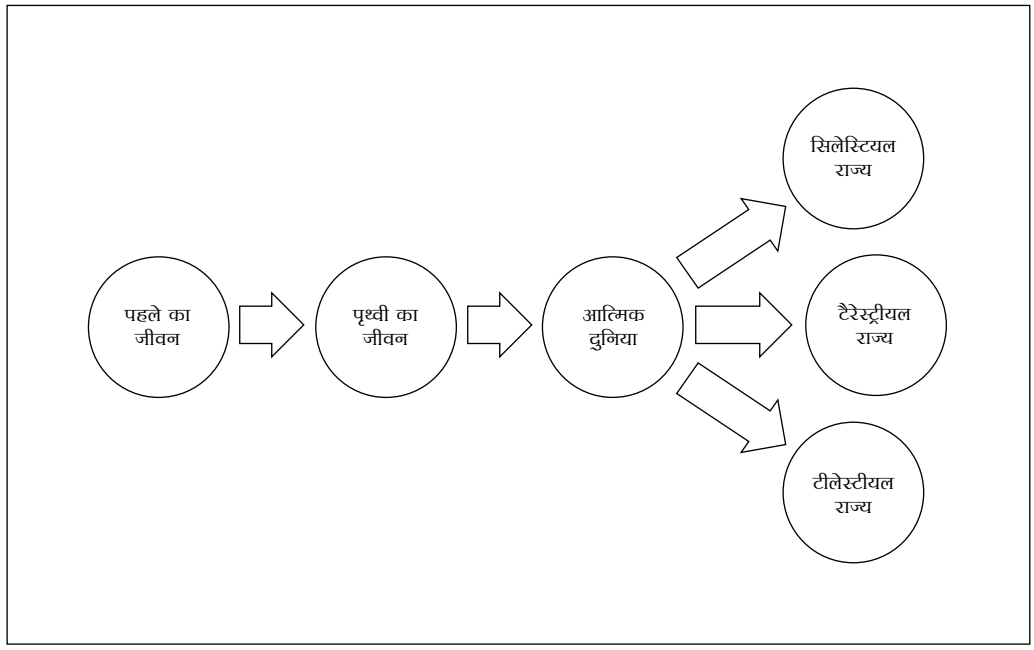

समझाओ कि अक्सर गिरजाघर के सदस्य उद्धार की योजना के बारे में समझाने के लिए इस आकृति को बनाते हैं। यद्यपि, यदि यही है जो हम योजना को समझाने के लिए करते हैं, हम यीशु मसीह का वर्णन करने में असफल होते

हैं, जो योजना में केन्द्रीय भूमिका निभाता है । हम उन सिद्धान्तों को बताने में भी असफल होते हैं जो योजना में प्रमुख हैं, जैसे पतन, प्रायश्चित, और स्वतन्त्रता ।

एल्डर नील ए. मैक्सवल द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ो:

"प्रभु ने मुक्ति की योजना का वर्णन खुशी की योजना के रूप में किया है....हमारी बात-चीत के दौरान, हम इस महान रचना को कभी-कभी बहुत लापरवाही से संदर्भ करते हैं; हम यहां तक कि इसकी मूल रूपरेखा को चॉकबोर्ड और काग़ज पर ऐसे बनाते हैं जैसे यह किसी के घर के एक अतिरिक्त तल का नक्शा हो। तो भी, जब हम योजना का चिन्तन करने का वास्तव में समय लेते हैं, यह प्रोत्साहक और अत्याधिक है!"("Thanks Be to God," *Ensign,* July 1982, 51)।

समझाओ कि आज तुम अलमा की अपने पुत्र कोरियन्दन को कुछ सलाह की चर्चा करो। कोरियन्दन को शिक्षा देने में, अलमा ने स्वर्गीय पिता की योजना को "पुनःस्थापना की योजना" (अलमा 41:2), "उद्धार की महान योजना" (अलमा 42:5), "खुशी की महान योजना" (अलमा 42:8), "मुक्ति की योजना" (अलमा 42:11), और "दया की महान योजना" (अलमा 42:31) के रूप में संदर्भ किया है। जब अलमा ने योजना के बारे में शिक्षा दी थी, उसने पतन, यीशु मसीह के प्रायश्चित और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की प्रमुखता पर ज़ोर दिया था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. अलमा कोरियन्दन को मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में शिक्षा देता है।

समझाओ कि अलमा की पुस्तक के अध्याय 40–42 अपने भटके हुए पुत्र, कोरियन्दन को अलमा की सलाह देना जारी रखते हैं। अलमा ने देखा कि कोरियन्दन का बूरा कर्म गवाही के अभाव और कुछ मूल सुसमाचार सिद्धान्तों के ग़लत समझने के भाग के द्वारा के कारण हुआ था। अलमा ने कोरियन्दन को समझाया कि मृत्यु के बाद हमारा क्या होता है।

अलमा 40:1–23 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो।

- अलमा ने कैसे निर्णय लिया कि उसे कोरियन्दन से किन विषयों पर बात करनी चाहिए? (अलमा 40:1 देखो; 41:1; 42:1 भी देखो।) आपके विचार से अलमा कोरियन्दन की चिंताओं को कैसे "समझा" पाया था? हम उनकी आवश्यकताओं को बेहतर कैसे समझ सकते हैं जिन्हें हम शिक्षा देते हैं?
- मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच हमारी आत्माओं का क्या होता है? (अलमा 40:11–13 देखो। वे या तो स्वर्गलोक जाती हैं या आत्मा कैंद। समझाओ कि आयत 13 में "बाहरी अंधकार को उस स्थान से संदर्भ किया है जिसे हम अक्सर आत्मा कैद बुलाते हैं।) अलमा ने स्वर्गलोक और आत्मा कैंद का वर्णन कैसे किया है? (कक्षा के सदस्यों को अलमा 40:11–15, 21 को इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए पढ़ने को कहो। आप शायद कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर संक्षेप करना चाहेंगे जैसा अगले पृष्ठ में चार्ट में दिया गया है।)

स्वर्गलोक	आत्मिक कैद
खुशी की अवस्था	दुःख की अवस्था
आराम और शक्ति की अवस्था	अन्धकार की अवस्था, रोने, विलाप, और दांतों के पीसने की अवस्था
कोई परेशानियां या दुख नहीं	परमेश्वर के श्राप के लिए बूरा, डरावना इन्तजार

समझाओ कि 1918 में अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने एक प्रकटीकरण प्राप्त किया था जो हमें मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच हमारी आत्मा की अवस्था के बारे में अधिक समझने में सहायता करता है (सि. और अनु. 138)। इस प्रकटीकरण में, अध्यक्ष स्मिथ ने स्वर्गलोक में उद्धारक की सेवा और आत्मिक कैद में लोगों को सुसमाचार की शिक्षा देते हुए देखा था। अध्यक्ष स्मिथ ने सीखा कि आत्मा कैंद में आत्माओं को सुसमाचार सिखाया जाएगा और उन्हें अन्तिम न्याय से पहले पश्चाताप करने का अवसर प्राप्त होगा (सि. और अनु. 138:29–34, 57–59)।

- अलमा ने कहा था कि नियुक्त समय पर, हमारा पुनरूत्थान होगा (अलमा 40:21)। पुनरूत्थान होने का क्या अर्थ है? (अलमा 40:21, 23 देखो । आत्मा और शरीर दुबारा मिल जाते हैं, और शरीर अपने "परिपूर्ण ढाँचे" में पुनःगठित होता है।) कौन पुरूत्थारित होगा? (अलमा 40:5; 11:42–44 भी देखो।)
- अलमा ने की बातों को बताया था जो वह मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में नहीं जानता था (अलमा 40:2–5, 19–21)। हम उस तथ्य से क्या सीख सकते हैं जो अलमा ने पुनरूत्थान के सिद्धान्त की गवाही दी थी जबकि उसे इसके बारे में पूरी जानकारी नहीं थी? (कक्षा के सदस्यों को यह देखने में सहायता करो कि एक सिद्धान्त या घटना की सच्चाई की गवाही प्राप्त करने से पहले उसकी हर जानकारी को समझना ज़रूरी नहीं है।)

2. अलमा शिक्षा देता है कि हमारे पुनरूत्थान के बाद, नेक लोगों को सुख में पुनःगठित किया जाएगा और बूरे लोगों को दुःख में पुनःगठित किया जाएगा।

अलमा 40:24–26; 41 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- अलमा पुनरूत्थान को पुनःस्थापना के रूप में संदर्भ करता है क्योंकि आत्मा और शरीर दुबारा मिलते हैं और शरीर अपने "परिपूर्ण ढाँचे" में पुनःगठित होता है (अलमा 40:23; 41:2)। कौनसी आगे की पुनःस्थापना होगी जब हमारा पुनरूत्थान हो जाएगा और "[हमारे] कार्यो के अनुसार हमारा न्याय होगा"? (अलमा 41:3–6 देखो। नेक लोग खुशी में पुनःगठित होंगे और बूरे लोग दुःख में पुनःगठित होंगे।) अच्छे या बूरे में पुनःगठित होने का क्या अर्थ है?

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा था, "पुनरूत्थान एक पुनःस्थापना है, शरीर और आत्मा दोनों की पुनःस्थापना और व्यक्तिगत की समान्य मानसिक और आत्मिक उपलब्धियों और बर्तावों की पुनःस्थापना जो उसके पास इस जीवन में थे" (*Mormon Doctrine,* 2nd ed. [1966], 641)।

- किस प्रकार से हम "[हमारे] स्वयं के न्यायाधीश हैं"? (अलमा 41:7–8 देखो। हम अच्छा या बूरा करने को चुनते हैं और तब चुनते हैं कि मृत्यु के बाद हम किस में पुनःगठित होंगे।)

- अलमा ने समझाया था कि कोरियन्दन पाप से सुख में पुनःगठित नहीं हो सकता था क्योंकि “पाप कभी भी आनन्ददायी नहीं हुआ है” (अलमा 41:10)। दुष्टता सुख क्यों नहीं ला सकती? (अलमा 41:10–13; इलामन 13:38 देखो।) आप उस बहस का कैसे उत्तर देंगे कि कुछ लोग उन गतिविधियों में सुख पाते प्रतीत होते हैं जो आज्ञाओं के विरूद्ध है?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः ” जब [लोग] पाप में कुछ अस्थायी आनन्द लेते हैं, अन्त में परिणाम दुःख होता है....पाप परमेश्वर के साथ लयहीनता की रचना करते हैं और आत्मा के लिए तनावपूर्ण होते हैं” (in Conference Report, Oct. 1974, 91; or *Ensign,* Nov. 1974, 65–66)।

- अलमा ने क्या कहा था कि कोरियन्दन को उसे अच्छा पुनःगठित होने में क्या करने की आवश्यकता है? (अलमा 41:14–15 देखो।) किन अनुभवों न आपको इस बयान “कि जो तुम भेजते हो वह तुम्हें दुबारा वापस लौटेगा” की सच्चाई को दिखाया है?

3. अलमा कोरियन्दन को न्याय और दया के बारे में सीखाता है।

अलमा 42 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि कोरियन्दन अपने पिता की शिक्षाओं से घबरा गया था। वह नहीं समझ पाया था कि क्यों पापी को दुःख की अवस्था को अर्पित किया जाता है (अलमा 42:1) इस चिंता के जवाब में, अलमा ने परमेश्वर के न्याय के बारे में शिक्षा दी। उसने यह भी सीखाया कि यीशु मसीह ने दुनिया के पापों के लिए प्रायश्चित किया था “दया की योजना को लाने के लिए, न्याय की मांगों को आसान करने के लिए” (अलमा 42:15)।

कक्षा के सदस्यों को न्याय के बारे में अलमा की शिक्षाओं को समझने में सहायता करने के लिए, उन्हें अलमा 42:6–7, 10, 18 ज़ोर से पढ़ने दो। जब वे पढ़ें, उन्हें नीचे दी गई सच्चाइयों को समझने में सहायता करोः

क. आदम और हव्वा के पतन के कारण, हम पतन वाली अवस्था में हैं। हम नश्वर हैं—मृत्यु को आश्रित और अपरिपूर्ण। इस पतन की अवस्था में, हम परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकते हैं, जो अमर और परिपूर्ण है । न्याय मांगता है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति से शारीरिक और आत्मिक तौर पर अलग हो जाएं।

ख. जब हम पाप करते हैं, हम अपने आपको आगे परमेश्वर से अलग कर लेते हैं क्योंकि कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के साथ नहीं रह सकती” (1 नफी 10:21)। न्याय मांग करता है कि हमें हमारे पापों के लिए दंडित किया जाये।

- हमारा क्या होता यदि हम सिर्फ न्याय को आश्रित होते? (अलमा 42:14 देखो।) न्याय की मांग को संतुष्ट करने के लिए क्या आवश्यकता है ताकि हम स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में रहने को लौट सकें? (अलमा 42:15 देखो।)

यदि तुम दृष्टांत को पढ़ या बता रहे हो, अभी ऐसा करो। बताओ कि देनदार हम सब का प्रतिनिधित्व करता है, कर्ज़दार न्याय का प्रतिनिधित्व करता है, और देनदार का मित्र उद्धारक का प्रतिनिधित्व करता है।

- यीशु मसीह का प्रायश्चित “न्याय की मांगों को कैसे आसान करता है“? (मुसायाह 15:7–9 देखो। उसने अपने आपको मृत्यु को आश्रित किया और अपने ऊपर सम्पूर्ण मनुष्यजाति के पापों को लिया।)

- अलमा ने गवाही दी कि “दया, प्रायश्चित के कारण आती है” (अलमा 42:23)। हमें परमेश्वर की दया की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? (अलमा 42:13, 23, 27, 29–30 देखो; अलमा 41:14; सि. और अनु. 19:15–18 भी देखो।)

निष्कर्ष

बताओ कि इस सलाह को अपने पिता से प्राप्त करने के बाद, कोरियन्दन ने पश्चाताप किया और प्रचारक सेवा को लौटा (अलमा 43:1; 49:30)। ज़ोर दो कि जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं का अनुगमन करते हैं और अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, हम उस दया को प्राप्त कर सकते हैं जो कि उद्धारक के प्रायश्चित द्वारा उपलब्ध है।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

पाठ
31

“मसीह के विश्वास में दृढ़”

अलमा 43–52

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यह देखने में सहायता करना कि कैसे युद्ध के समय में नफायटियों के बर्ताव और कार्य हमारे पृथ्वी की समस्याओं और शैतान के विरूद्ध युद्ध के साथ हमारे व्यवहार को एक आदर्श के नाते पूर्ति करते हैं।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. अलमा 43–44। ज़राहेमना द्वारा निदेर्शित, लमनायटी नफायटियों के विरूद्ध युद्ध करने आते हैं, उन्हें दासता में लाने का प्रयास करते हैं। मरोनी द्वारा निदेर्शित, नफायटी अपने परिवारों और अपनी आज़ादी की रक्षा करने के लिए लड़ते हैं। नफायटी विजयी होते हैं क्योंकि वे “बेहतर कार्य द्वारा प्रेरित हैं” और क्योंकि वे यीशु मसीह में विश्वास का उपयोग करते हैं।

   ख. अलमा 45:20–24; 46। अमलिकियाह राजा बनने की अभिलाषा रखता है और नफायटियों के बीच मतभेद कराता है। कप्तान मरोनी लोगों को प्रेरित करने के लिए “आज़ादी का झण्डा” फहराता है, और वे परमेश्वर का अनुगमन करने का अनुबंध करते हैं। अमलिकियाह और उसके कुछ साथी लमनायटियों से जा मिलते हैं।

   ग. अलमा 47–48। झूठेपन के द्वारा, अमलिकियाह लमनायटियों का राजा बन जाता है। वह लमनायटियों को नफायटियों के विरूद्ध लड़ने को उकसाता है। कप्तान मरोनी नफायटियों को नेकता से रक्षा करने को तैयार करता है।

   घ. अलमा 49–52। नफायटियों और लमनायटियों के बीच युद्ध जारी रहता है। राजा के लोग नफायटियों के ऊपर राजा बैठाने की अभिलाषा करते हैं, परन्तु वे हराये जाते हैं। टेनकम अमलिकियाह का कत्ल कर देता है, जिसके बाद उसका भाई अमरोन लमनायटियों का राजा बनता है।

2. यदि चित्र कप्तान मरोनी आज़ादी का झण्डा फहराता हुआ उपलब्ध है, उसे पाठ के दौरान उपयोग करने के लिए तैयार रहो (62051; सुसमाचार कला चित्र किट 312)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

कक्षा के सदस्यों से पूछोः

- आपके विचार से मॉरमन ने मॉरमन की पुस्तक में युद्ध के बारे में इतनी अधिक जानकारी क्यों सम्मिलित की थी?

कक्षा के सदस्यों के उत्तर के अतिरिक्त, आप शायद निम्मलिखित सुझाना चाहेंगेः

1. मॉरमन जानता था कि मॉरमन की पुस्तक को उस समय पढ़ा और अध्ययन किया जाएगा जब युद्ध पूरी दुनिया में समान्य होगा। ये लेख हमें शिक्षा देते हैं कि हम कैसे विवादों के समय के दौरान मसीह जैसे रहें।

2. मॉरमन नफायटी इतिहास को उद्धारक के पहले की उपस्थिति को विस्तार में अंकित करता है। हम नफायटी अनुभवों के बारे में पढ़ सकते हैं और मसीह के दुबारा आने से पहले हमारे दिनों में होने वाली समान्य घटनाओं के लिए तैयार हो सकते हैं।

समझाओ कि यह पाठ चर्चा करेगा कि नफायटियों और उनके शत्रुओं के बीच युद्ध हमें पृथ्वी के विवादों का कैसे सामना करें और अपने आपको और अपने परिवारों को शैतान के विरूद्ध युद्ध में कैसे रक्षा करें के बारे में शिक्षा देता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. नफायटी अपने परिवारों और अपनी आज़ादी की रक्षा करने के लिए लड़ते हैं।

अलमा 43–44 की चर्चा करो । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो।

- नफायटियों ने लमनायटियों के विरूद्ध लड़ाई क्यों की थी? (अलमा 43:3–4, 9–11, 45–47; 48:14 देखो।) किन परिस्थितियों में प्रभु लोगों को युद्ध करने की अनुमति देता है?

  अध्यक्ष चार्लस डबल्यू. पैनरोज़, जो प्रथम अध्यक्षता के एक सदस्य थे, ने कहा थाः “हमारे लिए मानव का खुन बहाने में, प्रतिहिंसा या बदला लेने में व्यस्त रहना उचित नहीं है। परन्तु जब प्रभु अपने सेवकों को इस्राएल के पुत्रों और पुत्रियों को अपनी सहायता नेक युद्ध लड़ने में सलाह करने को आज्ञा या प्रेरित करता है, वह भिन्न है....हमें अपने बल और हमारी शक्ति में उठना है और विजय को बढ़ाना है; खुन बहाने की अभिलाषा के साथ नहीं, हमारे साथी सृष्टियों का नाश करने की अभिलाषा के साथ नहीं, परन्तु आत्म-रक्षा में और क्योंकि हम अपनी संतानों को आज़ादी के वह पवित्र नियमों को संभालना और देना चाहते हैं जो उच्च से प्रकट किए गए हैं” (in Conference Report, Oct. 1917, 21)।

  एल्डर डेविड ओ. मैके ने कहा थाः “दो स्थितियां हैं जो सच्चे ईसाई को प्रवेश करने में न्यायी होती हैं....ध्यान रहे, मैंने कहा है प्रवेश न कि युद्ध आरम्भ करनाः (1) किसी और से उसकी चुनने की स्वतन्त्रता को छीन लेने को और शासन करने की कोशिश, और (2) अपने देश की सत्यनिष्ठा । संभवतः तीसरी है [नामक] कमज़ोर देश की रक्षा जो अन्यायपूर्णता से शक्तिशाली, दयाहीन देश द्वारा रौंदा जाता है” (in Conference Report, Apr. 1942, 72)।

- जब मरोनी ने ज़राहेमना का सामना किया था, उसने युद्ध में नफायटियों की सफलता को किसे विशेषण किया था? (अलमा 44:3–4 देखो।) नफायटियों ने मसीह में अपना विश्वास कैसे दिखाया था? (अलमा 43:23, 49–50 देखो।)

- हम अपने परिवारों और समुदायों में उन स्वतन्त्रताओं को कैसे संभाल सकते हैं जिनका नफायटियों ने आनन्द उठाया था?

- निम्नलिखित नियमों की चर्चा करो जिन्होंने युद्ध के समय में नेक नफायटियो के बर्ताव और कर्मो की निगरानी की थी। कैसे आज इन नियमों को समझना और लागू करना दुनिया में अधिक शान्ति लाने में सहायता करते हैं? हम इन नियमों को हमारे व्यक्तिगत जीवन में लड़ाई का सामना करने में कैसे लागू कर सकते हैं?

  क. सिर्फ अच्छे कारणों के लिए लड़ाई करो, जैसे आत्म-रक्षा (अलमा 43:8–10, 29–30, 45–47; 48:14)।
  ख. अपने शत्रुओं के विरूद्ध कोई नफ़रत मत रखो; उनके उत्तम रूचियों के लिए वैसे ही प्रयत्न करो जैसा अपने लिए करते हो (अलमा 43:53–54; 44:1–2, 6)।
  ग. नेकी से जीयो और परमेश्वर में भरोसा रखो (अलमा 44:3–4; 48:15, 19–20)।
  घ. नेक और समझदार मार्गदर्शकों का अनुगमन करो (अलमा 43:16–19; 48:11–13, 17–19; सि. और अनु. 98:10 भी देखो)।

2. कप्तान मरोनी लोगों को प्रेरित करने के लिए "आज़ादी का झण्डा" फहराता है।

अलमा 45:20–24; 46 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि लमनायटियों से युद्ध के बाद, इलामन और उसके भाई पूरे देश में गए, गिरजाघर के संगठन का प्रचार और पुनःस्थापित करते हुए (अलमा 45:20–22)। तो भी, कुछ नफायटियों में घमण्ड बढ़ा और गिरजाघर का विरोध किया। असन्तुष्टों के समूह का मार्गदर्शक अमलिकियाह था, जो नफायटियों के ऊपर राजा बनना चाहता था (अलमा 45:23–24; 46:1–4)।

- अमलिकियाह दुसरों को उसका अनुगमन करने के लिए कैसे उकसा पाया था? (अलमा 46:1–7, 10 देखो।) उन लोगों का क्या मकसद था जिन्होंने उसका सहयोग दिया था? (अलमा 46:4–5 देखो।) हम अमलिकियाह और उसके पालन करने वालों के अभिलेख से क्या सीखते हैं? (अलमा 46:8–9 देखो।)

- यदि आप चित्र कप्तान मरोनी आज़ादी के झण्डे को फहराता हुआ का उपयोग कर रहे हैं, इसे अभी दिखाओ। मरोनी ने आज़ादी के झण्डे को क्यों बनाया था? (अलमा 46:11–13, 18–20 देखो।) लोगों ने आज़ादी के झण्डे का जवाब कैसे दिया था? (अलमा 46:21–22 देखो।) कैसे अनुबंधों को रखना और बनाना हमारे जीवन पर प्रभाव डालता है?

3. अमलिकियाह लमनायटियों का राजा बनता है और उन्हें युद्ध करने को प्रोत्साहित करता है।

अलमा 47–48 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- अमलिकियाह ने तब क्या किया जब वह नफायटियों का राजा बनने में असफल रहा था? (अलमा 46:33; 47:1, 4 देखो। कक्षा के सदस्यों को अमलिकियाह लमनायटियों का राजा कैसे बना था के अभिलेख को संक्षेप करने दो [अलमा 47:1–35], या इस अभिलेख को स्वयं संक्षेप करो।)

- नफायटियों के कुछ शक्तिशाली विरोधी कभी खुद भी नफायटी थे, अमलकायटियों (अलमा 24:29–30; 43:6–7), ज़ोरामायटी (अलमा 30:59; 31:8–11; 43:4), अमलिकियाह (अलमा 46:1–7), मोरियन्दन (अलमा 50:26, 35), और अमलिकियाह का भाई अमरोन (अलमा 52:3) सहित । क्यों वो जो गिरजाघर छोड़ते हैं अक्सर इसके विरूद्ध बहुत शक्ति से लड़ते हैं? (मुसायाह 2:36–37; अलमा 47:35–36 देखो।)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने एक आदमी को निम्नलिखित बयान दिया था जो सोचता था कि क्यों वो जो गिरजाघर छोड़ते हैं अक्सर इसके विरूद्ध बहुत बल से लड़ते हैंः "इस गिरजाघर से जुड़ने से पहले तुम अपक्षपाती आधार पर होते हो। जब सुसमाचार का प्रचार होता है तुम्हारे सामने अच्छा और बूरा रखा जाता है। तुम दोनों या कोई भी नहीं चुन सकते हो। दो प्रतिकूल स्वामी तुम्हें अपनी सेवा करने को आमन्त्रित करते हैं। जब तुमने इस गिरजाघर को अपनाया था तुम परमेश्वर की सेवा करने को भर्ती होते हो। जब तुमने ऐसा किया था तुमने अपक्षपाती आधार छोड़ा था, और तुम कभी भी इस पर वापस नहीं लौट सकते। क्या तुम उस स्वामी को छोड़ दोगे जिसकी सेवा करने के लिए भर्ती हुए थे यह बूरे प्रोत्साहन द्वारा होगा, और तुम उसकी आज्ञा को मानोगे और उसके सेवक बनोगे" (in "Recollections of the Prophet Joseph Smith," *Juvenile Instructor,* 15 Aug. 1892, 492)।

- अमलिकियाह और मरोनी में फर्क करो (अलमा 48:1–17)। ज़ोर दो कि जैसे एक दुष्ट व्यक्ति लोगों के बीच बहुत दुष्टता का कारण बनता है (अलमा 46:9), वैसे ही एक नेक व्यक्ति, मरोनी के समान, बहुत नेकी को प्रेरित कर सकता है। हम नेक मार्गदर्शकों को कैसे प्रोत्साहन और सहारा दे सकते हैं? कैसे हम सब दूसरों के बीच नेकी को प्रेरित कर सकते हैं?

4. नफायटियों और लमनायटियों के बीच युद्ध जारी रहता है।

अलमा 49–52 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि ये अध्याय नफायटियों और लमनायटियों के बीच चलते युद्ध के जारी रहने का अभिलेख रखते हैं। यह अभिलेख हमें शैतान और उनकी सेनाओं के विरूद्ध चलते हमारे युद्ध में हमारी सहायता कर सकता है, जो सच्चाई और नेकी के विरूद्ध युद्ध शुरू रहे हैं, अनन्त जीवन के लिए हमारे अवसरों को नाश करने के लिए लड़ाई करते हुए।

- मॉरमन की पुस्तक में युद्ध के अभिलेख शैतान की प्रेरणा के विरूद्ध हमारी लड़ाई में कैसे लागू होते हैं? (कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं, चर्चा को प्रोत्साहित करने को उपयोग प्रश्नों के साथ। कक्षा के सदस्य अन्य उदाहरणों का सुझाव भी दे सकते हैं।)

  क. नफायटियों ने लमनायटियों के आक्रमणों से अपने शहरों की रक्षा करने के लिए दीवारे बनाई थी (अलमा 48:7–9; 49:2–4; 13, 18)। कौनसी सुरक्षाएं हमें शैतान की प्रेरणा से रक्षा दे सकती हैं?

  ख. नफायटियों ने अपनी सुरक्षाओं को मज़बूत करना जारी रखा (अलमा 50:1–6)। हमें शैतान के विरूद्ध अपनी सुरक्षाओं को मज़बूत करना जारी क्यों रखना चाहिए?

  ग. नफायटियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को रखा था और अपने गिरजाघर के मार्गदर्शकों का अनुगमन किया था (अलमा 44:3–4; 49:30; 50:20–22)। कैसे परमेश्वर की आज्ञाएं और हमारे गिरजाघर के मार्गदर्शकों की सलाह हमें दुष्टता से लड़ने में सहायता करती है?

  घ. नफायटियों ने युद्ध में उनकी रक्षा करने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया था (अलमा 45:1; 49:28)। प्रभु को आभार शैतान के विरूद्ध हमारी रक्षा कैसे करता है?

  ङ. वाद-विवाद नफायटियों के अपने आप में लड़ाई करने और लमनायटियों का उनके ऊपर शक्ति प्राप्त करने का कारण बना था (अलमा 51:2–7, 12–23; 53:8–9)। विवाद कैसे शैतान को हमारे ऊपर शक्ति प्राप्त करने देता है? कैसे दुसरे लोगों से एकता और सहारा हमें दुष्टता से लड़ने में सहायता करता है?

  च. नेक नफायटी युद्ध के समय में भी खुशहाल और सुखी थे (अलमा 49:30; 50:23)। हम बूरी दुष्टता के समय के दौरान भी शान्ति और सुख कैसे पा सकते हैं?

निष्कर्ष

बताओ कि मॉरमन की पुस्तक के इन अध्यायों में सीखाए गए नियम हमें और हमारे परिवारों को बूराई के प्रबल आक्रमण से रक्षा कर सकते हैं। वे हमें युद्ध और कठिनाइयों के समय के दौरान भी हमारी आत्माओं में शान्ति होने में सहायता करते हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

पाठ
32

"उन्होंने आज्ञा के प्रत्येक वचन का यथार्थता के साथ पालन किया था"

अलमा 53–63

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को देखने में सहायता करना कि प्रभु उन्हें मज़बूती देगा जब वे इलामन के बलवान युवा सैनिकों के उदाहरण का अनुगमन करेंगे।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करो:

   क. अलमा 53:10–19; 56:1–8 । दो हजार युवा आमोनायटी नफायटियों की आज़ादी के लिए लड़ाई करना का अनुबंध करते हैं। इलामन को अपना मार्गदर्शक बनने के लिए कहते हैं।

   ख. अलमा 56:9–58:41 । अपनी माँ की शिक्षाओं के प्रति सच्चे होकर, युवा सैनिक परमेश्वर में विश्वास उपयोग करते हैं और साहस के साथ लड़ाई करते हैं। उनके साथ 60 अन्य युवा आमोनायटी जुड़ते हैं। सारे 2,060 युवा सैनिक घायल होते हैं, परन्तु उनमें से एक भी मरता नहीं है।

2. यदि चित्र दो हजार युवा योद्धा उपलब्ध है, इसे पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयार रहो (62050; सुसमाचार कला चित्र किट 213)

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

युवा योद्धाओं का चित्र दिखाओ। अलमा 57:25–26 ज़ोर से पढ़ो, आयत 26 में शब्द *मारे* के बाद रूकते हुए।

बताओ कि नफायटियों और लमनायटियों के बीच युद्ध, निश्चितता अन्य नफायटी योद्धा थे जिनका जीवन चमत्कारी तरीके से बचाया गया था। तो भी, अनेक नेक नफायटी थे जो मारे गए थे (अलमा 46:10–11; 57:36)। इलामन के युवा योद्धाओं की सेना मॉरमन की पुस्तक में वर्णित एकमात्र सेना थी जिसमें युद्ध में एक भी सैनिक नहीं मरा था।

कक्षा के सदस्यों को कहो कि, इलामन के युवा योद्धाओं की तरह, हम एक महान सेना के हिस्से हैं। तब अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा निम्नलिखित बयान पढ़ो। समझाओ कि जबकि बयान हारूनी पौरोहित्य धारकों को निर्देशित था, यह गिरजाघर के सारे सदस्यों पर लागू होता है।

"आप इस समय पवित्र और महिमापूर्ण उद्देश्य के लिए जन्मे हो। यह संयोग द्वारा नहीं है कि तुम इस पूरे समय के प्रबन्ध में पृथ्वी पर आने को निर्धारित हुए हो। इस विशेष समय पर आपका जन्म अनन्तताओं में पहले से नियुक्त था।

"आपको अन्तिम दिनों में प्रभु की शाही सेना का होना है....

"आत्मिक युद्धों में आप लड़ाई कर रहे हैं, मैं तुम्हें इलामन के आज के पुत्रों के रूप में देखता हूं। इलामन के दो हजार किशोर योद्धाओं का मॉरमन की पुस्तक का अभिलेख अच्छी तरह याद कर लो" (in Conference Report, Apr. 1986, 55; or Ensign, May 1986, 43; ध्यान दें कि *किशोर* का अर्थ है युवक)।

- "प्रभु की शाही सेना होने" का क्या अर्थ है? (इफिसियों 6:11–18; 1 पतरस 2:9; सि. और अनु. 138:55–56 देखो।) हम प्रभु की सेना के भाग के रूप में कौनसी आत्मिक युद्धों को लड़ रहे हैं?

समझाओ कि यह पाठ उन नियमों और चरित्रों की चर्चा करता है जिसने 2,060 आमोनायटी योद्धाओं को प्रभु से बहुत अधिक मज़बूती प्राप्त करने में सहायता की थी। जब हम इन नियमों के अनुसार जीते हैं और इन चरित्रों को विकसित करते हैं; हमारी आत्मिक मज़बूती बढ़ जाएगी। हम "प्रभु की शाही सेना" में अधिक प्रभावी सेवक बन जाएंगे।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. दो हजार युवा आमोनायटी नफायटियों की आज़ादी के लिए लड़ने का अनुबंध करते हैं।

अलमा 53:10–19; 56:1–8 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। इस अभिलेख की चर्चा करने से पहले, कक्षा के सदस्यों को संक्षेप में उस शान्ति के अनुबंध की समीक्षा करने के लिए आमन्त्रित करो जो आमोनायटियों (एण्टी-नफी-लेही) ने अपने धर्मान्तरण के समय पर बनाया था (अलमा 24:15–18; 53:10–11)।

- नफायटियों ने आमोनायटियों को लमनायटियों से रक्षा करने का वादा किया था (अलमा 27:22–24; 53:12)। नफायटियों की पीड़ाओं को देखने के बाद आमोनायटी क्या करना चाहते थे? (अलमा 53:13 देखो।) इलामन ने लोगों को अपने अनुबंध को न तोड़ने को क्यों प्रोत्साहित किया था? (अलमा 53:14–15; 56:8 देखो।) यह अनुबंधों को रखने के बारे में क्या शिक्षा देता है?

- आमोनायटी पुत्रों ने नफायटियों की सहायता करने को क्या किया था? (अलमा 53:16 देखो।) युवा आमोनायटियों ने नफायटियों को सहायता करने के अपने वादों की मज़बूती को कैसे दिखाया था? (अलमा 53:17 देखो।) उन्होंने अनुबंध में प्रवेश किया और अपने अनुबंध को हर तरह से रखने को दृढ़ थे। चॉकबोर्ड पर लिखो पवित्र अनुबंधो को बनाओ और रखो।)

- प्रभु हमें मज़बूत कैसे करेगा जब हम उसके साथ अनुबंधों को बनाते हैं और इन अनुबंधों को "हर तरह" से रखते हैं?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः "पुरूष और स्त्री जो अपने जीवन को परमेश्वर की ओर करते हैं पाते है कि वह उनके जीवन में बहुत कुछ कर सकता है जितना वे स्वयं कर सके। वह उनके आनन्द को गहरा करता है, उनके दर्शन को बढ़ाता है, उनके मन को तेज़ करता है, उनकी मांस पेशियों को मज़बूत करता है, उनकी आत्मा को उठाता है, उनकी आशीषों की बढ़ोत्तरी करता है, उनके अवसरों को बढ़ाता है, और शान्ति उढ़ेलता है। जो भी जीवन को पाएगा" (*The Teachings of Ezra Taft Benson* [1988], 361)।

- युवा आमोनायटियों ने इलामन को अपना मार्गदर्शक बनने को कहा था (अलमा 53:19; 56:1, 5)। इलामन गिरजाघर में एक भविष्यवक्ता और उच्च याजक था (अलमा 37:1–2, 14; 46:6) युवा आमोनायटियों का भविष्यवक्ता का अनुगमन करने का निर्णय उनके युद्धों को लड़ने में उनके प्रभाव को क्यों बढ़ाता था? किस प्रकार के मार्गदर्शक लोगों को उनके आत्मिक युद्धों में कमज़ोर कर सकते हैं?

- युवा आमोनायटियों ने उन आदेशों का क्या जवाब दिया जो उन्होंने प्राप्त किये थे? (अलमा 57:21 देखो, चॉकबोर्ड पर लिखें *"यर्थाथता के साथ" भविष्यवक्ता का अनुगमन करें।*) यह क्यों आवश्यक है कि हम प्रभु के भविष्यवक्ता की शिक्षाओं का यर्थाथता से पालन करें? (अगले पृष्ठ पर उद्धरण देखें) ऐसी कौनसी कुछ विशिष्ट चीज़ें हमें "यर्थाथता के साथ" भविष्यवक्ता का अनुगमन के लिए करनी चाहिए?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया थाः

  "शैतान की शक्ति बढ़ेगी; हम इसको हर हाथ में प्रमाणित देखते हैं....

"आज जो एकमात्र सुरक्षा इस गिरजाघर के सदस्य होने के नाते हमारे पास है वह है हम वैसा ही करें जैसा प्रभु ने उस दिन कहा था जब गिरजाघर संगठित हुआ था। हमें उन वचनों और आज्ञाओं को सुनना चाहिए जो प्रभु अपने भविष्यवक्ता द्वारा देगा, जब वह उन्हें प्राप्त करता है, मेरे सामने पूरी पवित्रता में चलते हुए; जैसे यह मेरे स्वयं के मुख से हो, पूरे धैर्य और विश्वास में। (सि. और अनु. 21:4–5)। कुछ बातें हैं जिनके लिए धैर्य और विश्वास की ज़रूरत है। आपको शायद वह अच्छा न लगे जो गिरजाघर के अधिकार से आता है। यह तुम्हारे राजनितिक विचारों के विरूद्ध हो सकता है। यह तुम्हारे समाजिक विचारों के विरूद्ध हो सकता है। यह शायद तुम्हारे कुछ समाजिक जीवन के साथ दखलअंदाज कर सकता है । परन्तु अगर तुम इन बातों को सुनोगे, नर्क तुम्हारें विरूद्ध नहीं खड़ा होगा; हां, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे सामने से अन्धकार की शक्तियों को हटा देगा, और स्वर्ग को तुम्हारे अच्छे और अपने नाम की महिमा के लिए हिला देगा । (सि. और अनु. 21:6)" (in Conference Report, Oct. 1970, 152; or *Improvement Era,* Dec. 1970, 126)।

2. युवा सैनिक परमेश्वर में विश्वास का उपयोग करते है और साहस के साथ लड़ते हैं।

अलमा 56:9–58:41 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो। यदि तुम युवा योद्धाओं का चित्र उपयोग कर रहे हो, इसे अभी दिखाओ।

- आमोनायटियों ने जिस पहली सेना का सामना किया था वह लमनायटियों की सबसे शक्तिशाली और बड़ी सेना थी (अलमा 56:34–46)। युवा सैनिकों का क्या जवाब था जब इलामन ने पूछा यदि वे इस सेना के विरूद्ध जाना चाहते हैं? (अलमा 56:44–47 देखो।) इन योद्धाओं ने ऐसे विश्वास और साहस को किससे सीखा था? (अलमा 56:47–48 देखो; अलमा 53:21; 57 :21 भी देखो। यदि आप वयस्कों को शिक्षा दे रहे हो, चॉकबोर्ड पर 'अपने बच्चों को परमेश्वर में विश्वास करना सीखाओं' लिखो। यदि आप युवाओं को सीखा रहे हैं लिखो 'माता-पिता की नेक शिक्षाओं का अनुगमन करो।')

  उस प्रेरणा पर ज़ोर देने के लिए जो माँ की अपने बच्चों पर हो सकती हैं, आप शायद अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ना चाहेंगेः

  "इस पृथ्वी पर अन्त के दिनों के दौरान एक नेक स्त्री होना, हमारे उद्धारक के दुबारा आने से पहले, यह एक विशेषकर कुलीन बुलाहट है। नेक स्त्री की आज प्रेरणा और मज़बूती सबसे शान्तियुक्त समय में दस गुना हो सकती है। उसे यहां घर को सुशोभित करने, रक्षा करने, और निगरानी करने को रखा है—जो समाज का मूल और सबसे कुलीन संस्थान है। समाज में अन्य संस्थान लड़खड़ा सकते हैं और यहां तक कि असफल हो सकते हैं परन्तु नेक स्त्री घर को बचाने में सहायता कर सकती है, जो कि तुफान और विवाद के बीच पवित्र स्थान को जानने वाले कुछ अन्तिम और एकमात्र मनुष्य हो सकते हैं" (*The Teachings of Spencer W. Kimball,* ed. Edward L. Kimball [1982], 326–27)।

- युवा सैनिकों ने अपनी माँ की गवाहियों पर शक नहीं किया था (अलमा 56:48)। बच्चों के लिए अपने माता-पिता की गवाहियों की मज़बूती और निश्चितता को जानना क्यों महत्वपूर्ण है? किन तरीकों से माता-पिता अपने बच्चों के साथ अपनी गवाहियों को बांट सकते हैं।

- एक कठिन युद्ध के दौरान, अनेक नफायटी "रास्ता देने वाले थे" (अलमा 57:20; आयत 12–19 भी देखो)। इस युद्ध के दौरान युवा आमोनायटियों का क्या जवाब था? (अलमा 57:19–20 देखो। चॉकबोर्ड पर *"दृढ़ और साहसी," जबकि दूसरे "रास्ता देते हैं"* लिखो।)

- युवा आमोनायटियों के विश्वास और साहस के क्या परिणाम थे? (अलमा 57:22–25; 58:31–33, 39 देखो।) हम "दृढ़ और साहसी" कैसे रह सकते हैं, जबकि मित्र, सहयोगी, और अन्य "रास्ता देने ही वाले हो"?

- किन तरीकों में युवा आमोनायटी "दृढ़ और साहसी" थे? (कुछ उदाहरणों के लिए, अलमा 53:20–21; 57:26–27; 58:40 देखो।)

  क. "वे अत्यन्त साहसी वीर थे" (अलमा 53:20)।
  ख. "उन्हें जिन कामों का उत्तरदायित्व दिया जाता था उन्हें वे ईमानदारी से निभाते थे" (अलमा 53:20)।
  ग. "वे सत्यवादी और बुद्धिमान थे" (अलमा 53:21)।
  घ. "उसमें उनको अनन्त विश्वास था जिसकी उनको शिक्षा मिली थी" (अलमा 57:26)।
  ङ. "वे लगातार परमेश्वर पर विश्वास करते हैं" (अलमा 57:27)।
  च. "वे उस स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ता के साथ [खड़े थे] जिसमें कि परमेश्वर ने उन्हें स्वतन्त्र बनाया था" (अलमा 58:40)।
  छ. "दिन प्रतिदिन वे अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण रखने में भी अडिग थे" (अलमा 58:40)।
  ज. "वे परमेश्वर के व्यवस्था नियम, और आज्ञाओं को लगातार मानते रहे थे" (अलमा 58:40)।
  झ. "उन भविष्यवाणियों में उनका विश्वास दृढ़ था" (अलमा 58:40)।

  ज़ोर दो कि युवा आमोनायटियों ने इन चरित्रों को अपने युवावस्था में विकसित किया था, उनके सैनिक बनने से पहले। यदि आप युवाओं को शिक्षा दे रहे हैं, चॉकबोर्ड पर लिखो *हमारी युवावस्था में नेक गुणों को विकसित करना* ।

- एक युद्ध में, नफायटी सेना इलामन द्वारा मार्गदर्शित की गई, गिड, और टेमनर ने "उन शत्रुओं का सामना किया जो अनगिनत थे," परन्तु उन्हें ज़राहेमला के देश से बहुत कम सहयोग मिला था (अलमा 58:1–9)। नफायटी मज़बूती के लिए किस स्त्रोत को मुड़े थे? (अलमा 58:10 देखो। चॉकबोर्ड पर लिखें *मज़बूती और छुटकारे के लिए प्रार्थना करो* ।)

- प्रभु ने नफायटियों की प्रार्थना का उत्तर किस प्रकार दिया था? (अलमा 58:11–12 देखो।) किन तरीकों में प्रार्थना के ऐसे उत्तर हमें "साहस लेने" में सहायता करते हैं?

निष्कर्ष

पृष्ठ 142 पर अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन द्वारा बयान को पढ़ो। इस बयान के संबंध में, उन नियमों की समीक्षा करो जो तुमने चॉकबोर्ड पर लिखे हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

अलमा 60–61 से परिज्ञान

अलमा 60 और 61 की चर्चा करो, जिसमें देश के राज्यपाल, पहोरन को मरोनी का पत्र, और पहोरन का जवाब सम्मिलित है। इन अध्यायों में निम्नलिखित पाठ सम्मिलित किये गये हैं:

क. उन सभी स्त्रोतों का उपयोग करना जो प्रभु ने उपलब्ध कराए हैं (अलमा 60:21)।
ख. "अंदरूनी पात्र" को साफ करना (अलमा 60:23)।
ग. "उन अनुबंधों के अनुसार परवश होना जो [हमने] आज्ञाओं को रखने को बनाये हैं" (अलमा 60:34)।
घ. परमेश्वर की महिमा को खोज़ना, न कि "दुनिया के सम्मान" को (अलमा 60:36)।
ङ. दूसरों के द्वारा अप्रसन्न न होना (अलमा 61:9)।

पाठ
33

"एक पक्की नींव"

इलामन 1–5

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यीशु मसीह की नींव पर अपनी गवाहियों को बनाने को प्रोत्साहित करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. इलमान 1–2। नफायटियों के बीच अंदरूनी विवाद विकसित होते हैं जब बूरे कार्य और दुष्टता बढ़ती है। गोडियन्दन किस्कूमन के डाकूओं के गुप्त समूह का नेता बनता है।

   ख. इलामन 3। हजारों गिरजाघर से जुड़ते हैं और उन्नति करना आरम्भ करते हैं। गिरजाघर के कुछ सदस्य घमण्ड में बढ़ते हैं।

   ग. इलामन 4। लमनायटी और असंतुष्ट नफायटी नफायटियों की दुष्टता और घमण्ड के कारण नफायटियों को हरा देते हैं।

   घ. इलामन 5। नफी और लेही मसीह के पत्थर पर अपनी नींव बनाने को अपने पिताओं की सलाह को याद करते हैं। चमत्कार उनकी सेवा के दौरान होते हैं जब वे पश्चाताप का प्रचार करते हैं।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग कर रहे हैं, निम्नलिखित विकल्पों में से एक चुनोः

   क. कक्षा में कक्षा के एक छोटे समूह को स्तुतिगीत "एक पक्की नींव" के 1, 2, 3 और 7 वें वाक्य को गाने को तैयार रहने को कहो (स्तुतिगीत संख्या 85)

   ख. कक्षा के सदस्यों के साथ "एक पक्की नींव" के 1, 2, 3, और 7 वें वाक्यों को पढ़ने या गाने के तैयार रहो।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

उस प्रस्तुतीकरण का परिचय दो जो आपने तैयार की है (देखो "तैयारी" विषय 2)।

स्तुतिगीत या गीत के बाद, समझाओ कि आज का पाठ उन लोगों के बीच भिन्नता को दिखाता है जो कमज़ोर नींव पर बनाते हैं, जैसे वो लोग जो अपने भरोसे को दौलत या शारीरिक मज़बूती पर रखते हैं और वो लोग जो अपनी नींव [अपने] मुक्तिदाता के पत्थर पर बनाते हैं,...जो कि दृढ़ नींव है" (इलामन 5:12)।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. नफायटियों में अंदरूनी झगड़ा उत्पन्न होता है।

इलामन 1–2 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो। बताओ कि पहोरन, उच्च न्यायाधीश, मर जाता है, और उसके तीन पुत्र...पहोरन, पाञ्ची, और पाकूमनी न्यायाधीश की कुर्सी के लिए झगड़ा करते हैं (इलमान 1:1–4)।

- पाञ्ची और पाकूमनी ने कैसा जवाब दिया था जब पहोरन को मुख्य न्यायाधीश होने को चना गया था? (इलामन 1:5–7 देखो। पाञ्ची के विरोध के कारण क्या हुआ था? (इलामन 1:8–13 देखो।)

- पाकूमनी के मुख्य न्यायाधीश बनने के बाद, लमनायटी नफायटियों से युद्ध करने के लिए आये (इलामन 1:13–17)। नफायटी लमनायटियों से बाहरी आक्रमण के विरूद्ध अपने आपको बचाने में तैयार क्यों नहीं थे? (इलामन 1:18 देखो।) विवाद राष्ट्रों और समुदायों? वार्ड और शाखाओं? परिवारों और व्यक्तिगत को कमज़ोर कैसे बनाता है? हम विवाद से बचने या निपटने के लिए क्या कर सकते हैं?

- गेडियन्दन जो "अनेक वचनों में बहुत विशेषज्ञ था, और अपनी धूर्तता में भी," किस्कूमन के समूह का नेता बन गया था (इलामन 2:4)। गेडियन्दन ने किस्कूमन के अनुगमकर्ताओं को उन्हें उसका अनुगमन करने को प्रोत्साहित करने को क्या वादा किया था? (इलामन 2:5 देखो; इलामन 5:8 भी देखो।) किन तरीकों में लोग कभी-कभी चापलूसी और शक्ति के वादे द्वारा प्रेरित होते हैं? हम इस प्रेरणा को कैसे टाल सकते हैं?

2. हजारों गिरजाघर से जुड़ते हैं; गिरजाघर के कुछ सदस्य घमण्ड में बढ़ते हैं।

इलामन 3 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- इलामन 3 नफायटी के करीब 11 वर्षो के इतिहास को सम्मलित करता है। उन 11 वर्षो के दौरान, नफायटियों ने शान्ति के दौर और विवाद के दौर का अनुभव किया था। उन वर्षो के दौरान नफायटियों की शान्ति को किसने भंग किया था? (इलामन 3:1, 33–34 देखो।) नफायटियों के घमण्ड का क्या कारण था? (इलामन 3:36 देखो।) घमण्ड हमारे जीवन में शान्ति को कैसे भंग कर सकता है? हम घमण्ड के विरूद्ध बचने के लिए क्या कर सकते हैं? (इलामन 3:27–30 देखो; लैव्यवस्था 8:11, 17–18; अलमा 62:48–51 भी देखो।)

- कक्षा के एक सदस्य को इलामन 3:29 ज़ोर से पढ़ने दो। "परमेश्वर के वचन को थामे रहो" का क्या अर्थ है? (इलामन 3:27–30 देखो; 1 नफी 11:25; 15:24 भी देखो।)

- 51 वें वर्ष में, गिरजाघर के कुछ सदस्यों ने दूसरों को सताना आरम्भ किया था (इलामन 3:33–34)। मसीह के विनम्र अनुयाइयों ने गिरजाघर के घमण्डी सदस्यों से उत्पीड़न का जवाब कैसे दिया था? (इलामन 3:35 देखो।) उनके उदाहरण हमारी सहायता कैसे करते हैं जब हम उत्पीड़न, आलोचना या पीड़ा का सामना करते हैं?

- विनम्र गिरजाघर सदस्य शुद्ध हुए थे क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों के "परमेश्वर पर [लगाया] था" (इलामन 3:35)। शुद्धीकरण क्या है? (यीशु मसीह के प्रयाश्चित द्वारा पाप से मुक्त, स्वच्छ, और शुद्ध होने की प्रक्रिया। सि. और अनु. 76:41; 88:74–75 देखो।) हमारे हृदयों को परमेश्वर पर लगाने का क्या अर्थ है?

3. लमनायटी और असंतुष्ट नफायटी नफायटियों को हरा देते हैं।

इलामन 4 से चुनी हुई आयतो को पढ़ो और चर्चा करो।

- असंतुष्ट नफायटियों ने लमनायटियों को नफायटियों के विरूद्ध युद्ध के लिए मना लिया था। लमनायटियों ने नफायटियों को हरा दिया था और उनके कई स्थानों को प्राप्त कर लिया था (इलामन 4:5)। मॉरमन, जिसने इलामन की पुस्तक को संक्षेप किया था, ने नफायटियों की कमज़ोरी के किस कारण को देखा था? (इलामन 4:11–13 देखो।) नफायटियों के कर्म और आज कुछ लोगों के कर्म में क्या समानताएं हैं? प्रभु पर हमारी निर्भरता को व्यक्त करना हमें मज़बूती कैसे देता है?

- मरोनियाह, लेही, और नफी ने "लोगों के घृणित कार्यो और उनका क्या होगा यदि उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया के बारे में लोगों को कई भविष्यवाणियां दी" (इलामन 4:14)। क्या हुआ जब लोगों ने पश्चाताप करना आरम्भ किया था? (इलामन 4:15–16 देखो; आयत 21–26 भी देखो।)

4. नफी और लेही अपने पूर्वजों की सलाहों को याद करते हैं। चमत्कार उनकी सेवा में होते हैं।

इलामन 5 से चुनी हुई आयते पढ़ो और चर्चा करो।

- नफी ने परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए न्यायाधीश गद्दी क्यों छोड़ दी थी? (इलामन 5:1–4 देखो।) नफी और लेही ने क्या याद किया जो कि उनके पूर्वजों ने उनके नामों के बारे में उन्हें बताया था? (इलामन 5:5–7 देखो।) भविष्यवक्ताओं अन्य गिरजाघर मार्गदर्शकों, और अन्य नेक लोगों के उदाहरणों ने तुम्हें कैसे सहायता की है?
- इलामन ने अपने पुत्रों को यीशु मसीह के प्रायश्चित के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (इलामन 5:9–11 देखो।)
- कक्षा के एक सदस्य को इलामन 5:12 ज़ोर से पढ़ने को कहो। मसीह के पत्थर पर बनाने का क्या अर्थ है? (3 नफी 14:24–27 भी देखो।) कौनसी कुछ शक्तिशाली हवाएं और तूफान हैं जो शैतान हम पर भेजता है? मसीह हमें इन हवाओं और तूफानों का सामना करने में कैसे सहायता करता है?
- हम मसीह को हमारे पत्थर के रूप में क्यों संदर्भ करते हैं? मसीह के अलावा किन नींवों पर लोग कभी-कभी अपने जीवन बनाते हैं? तुम कैसे आशिषित हुए हो जब तुमने मसीह के पत्थर के अपने जीवन को बनाया है?
- ज़राहेमला में कौन से बड़े चमत्कार हुए थे जब नफी और लेही ने सुसमाचार का प्रचार किया था? (इलामन 5:17–19 देखो।) यह क्यों महत्वपूर्ण था कि लमनायटी अपने पूर्वजों की पंरपराओं की दुष्टता को अस्वीकार करें।? (इलामन 5:19, 51 देखो; मुसायाह 1:5 भी देखो।)

  एल्डर रिचर्ड जी. स्काट ने कहा थाः "मैं गवाही देता हूँ कि तुम सुख के लिए रूकावटों को हटाओगे और अधिक शान्ति ढूंढोगे जब तुम यीशु मसीह के गिरजाघर में अपनी सदस्यता और उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन की नींव को प्राथमिकता दोगे। जहां पारिवारिक या राष्ट्रीय परम्पराएं या रीति परमेश्वर की शिक्षाओं के साथ टकराती हैं, उन्हें अलग कर दो। जहां परम्परा और रीति उसकी शिक्षाओं के साथ तालमेल रखती है, उन्हें तुम्हारी संस्कृति और संपदा को बचाने के लिए आनन्द करना और किया जाना चाहिए। एक संपदा है जिसे तुम्हें कभी भी बदलने की आवश्यकता नहीं है। यह वो संपदा है जो कि स्वर्ग के पिता के पुत्र या पुत्री होने से आती है" (in Conference Report, Apr. 1998, 114; or *Ensign,* May 1998, 87)।
- कक्षा के एक सदस्य को इलामन 5:21–32 ज़ोर से पढ़ने दो। लोगों के पश्चाताप करने के आरम्भ करने के बाद क्या हुआ? (इलामन 5:43–45 देखो।) पवित्र आत्मा ने लोगों को कैसे गवाही दी थी? (इलामन 5:45–47 देखो।) तुम्हारे जीवन में पवित्र आत्मा ने सच्चाई की गवाही कैसे दी है?
- उद्धारक की साक्षी प्राप्त करने के बाद लोगों ने क्या किया था? (इलामन 5:49–52 देखो) यीशु मसीह की बचाने वाली शक्ति और पवित्रता की साक्षी प्राप्त करने के बाद हमारी क्या जिम्मेदारी है? (सि. और अनु. 33:9; 88:81 देखो।)

निष्कर्ष

कक्षा का सदस्य दुबारा इलामन 5:12 ज़ोर से पढ़े। ज़ोर दो कि हम यीशु मसीह के पत्थर पर हमारी नींव का निर्माण करने के द्वारा अपने आपको घमण्ड, विवाद, और शैतान के शक्तिशाली तूफान के विरूद्ध रक्षा कर सकते हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. "याद रखो, याद रखो, मेरे पुत्रों" (इलामन 5:5–14)

- मॉरमन की पुस्तक में शब्द *याद रखो* या ऐसे शब्द के 240 से अधिक घटनाएं हैं (जैसे *याद रखो, याद, या भूलना मत*) । इनमें से पंद्रह बार इलामन 5 में हुआ है। हमें क्या याद रखना चाहिए? (इलामन 5:9; मुसायाह 3:17 भी देखो।) याद रखना महत्वपूर्ण क्यों है?

  एल्डर स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल ने कहा थाः

  जब आप शब्द-कोश में सबसे महत्वपूर्ण शब्द के लिए खोज़ते हैं,क्या आपको पता होता है वह क्या है? यह याद रखना हो सकता है । क्योंकि हम सबने अनुबंधों को बनाया है...हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता याद रखने की है । इसलिए हर सब्त के दिन हर कोई प्रभुभोज सभा में जाता है...प्रभुभोज लेने को और याजक को प्रार्थना करते सुनने के लिए कि [हम]...उसे हमेशा याद रखें और उसकी उन आज्ञाओं को रखें जो उसने [हमें] दी हैं...'याद रखना' वह शब्द है" (*Circles of Exaltation* [address to religious educators, Brigham Young University, 28 June 1968], 8)।

2. "[हमारे] हृदयों को परमेश्वर को समर्पित करना" (इलामन 3:35)

जब आप इलामन 3:35 की चर्चा करते हो, एल्डर नील ए. मैक्सवल द्वारा निम्नलिखित बयान को बांटोः

"यह परमेश्वर को समर्पण के द्वारा है कि हम अपने लिए उसकी इच्छा को पहचान सकते हैं। और यदि हम वास्तव में परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, क्यों नहीं उसके प्रिय परिज्ञान को समर्पित होते? आखिरकर, वह हमें और हमारी संभावनाओं को हमसे बेहतर जानता है" (in Conference Report, Apr. 1985, 91; or *Ensign,* May 1985, 72)।

पाठ 34

"तुम अपने परमेश्वर को कैसे भूल गए?"

इलामन 6–12

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उस प्रक्रिया को पहचानने में सहायता करना जो कि नेकी से दुष्टता और वापस नेकी को जाती है।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. इलामन 6:1–14। लमनायटी नफायटियों से अधिक नेक बन जाते हैं। लोग शान्ति और उन्नति के साथ आशिषित होते हैं।

   ख. इलामन 6:15–10:1। नफायटी घमण्डी और दुष्ट बन जाते हैं । नफी लोगों को पश्चाताप के लिए कहता है। मुख्य न्यायाधीश के कत्ल की घटना को देखने के बाद, कुछ नफी को भविष्यवक्ता के रूप में स्वीकार करते हैं परन्तु अधिकतर अपश्चातापी रहते हैं।

   ग. इलामन 10:2–11:6। प्रभु नफी को मुहरबंद शक्ति देता है। नफी प्रभु को कहता है कि वो आकाल भेजने के द्वारा नफायटियों को परिशोधित करें।

   घ. इलामन 11:7–38; 12। नफायटी अपने आपको विनम्र करते हैं और पश्चाताप करते हैं। प्रभु नफी की विनति पर वर्षा भेजता है और दुबारा नफायटियों को शान्ति और उन्नति के साथ आशिषित करता है। मॉरमन नेकी और दुष्टता की प्रक्रिया को पहचानता है और बताता है कि प्रक्रिया को कैसे तोड़ा जाए।

2. निम्नलिखित शब्द-पट्टियां तैयार करोः

   नेकी और उन्नति

   घमण्ड और दुष्टता

   सर्वनाश और दुःख

   विनम्रता और पश्चाताप

   यदि आप शब्द पट्टियों का उपयोग नहीं करना चाहते हैं, शब्दों को चॉकबोर्ड पर लिखो जब पाठ शब्द पट्टियों के बोलता है।

3. कक्षा के सदस्य को इलामन 7:13–29; 8; 9 में वर्णित घटनाओं को संक्षेप में समझाने के लिए कहो।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित संख्याओं को लिखोः 2, 3, 5, 8, 12

बताओं की ये संख्याएं विशेष श्रेणी को जाती है। कक्षा के सदस्यों को पूछो कि श्रेण की अगली तीन संख्याएं कौनसी होंगी। (अगली तीन संख्याएं हैं 17, 23, और 30। तुम्हें समझाने की आवश्यकता है कि प्रथम संख्या में 1 जोड़ने, दूसरी संख्या में 2, तीसरी संख्या में 3, और ऐसे ही करने के द्वारा आकार बनता है।)

समझाओ कि मॉरमन की पुस्तक में आकार है जो कि इस श्रेणी के समान भविष्य कहने योग्य है। आकार कई बार दोहराया गया है। इस आकार को याद करने के द्वारा, हम उससे बच सकते हैं जो नफायटियों के सर्वनाश का कारण बना था।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

यह पाठ चार भागों में बांटा गया है। प्रत्येक भाग घमण्ड प्रक्रिया की एक अवस्था के साथ व्यवहार करता है। समय के सूचित करने पर, चॉकबोर्ड पर वह शब्द पट्टी रखो जो प्रत्येक भाग के साथ सही बैठती है। जैसा नीचे दिखाया गया है, शब्द पट्टियों को जोड़ने के लिए तीरों को बनाओः

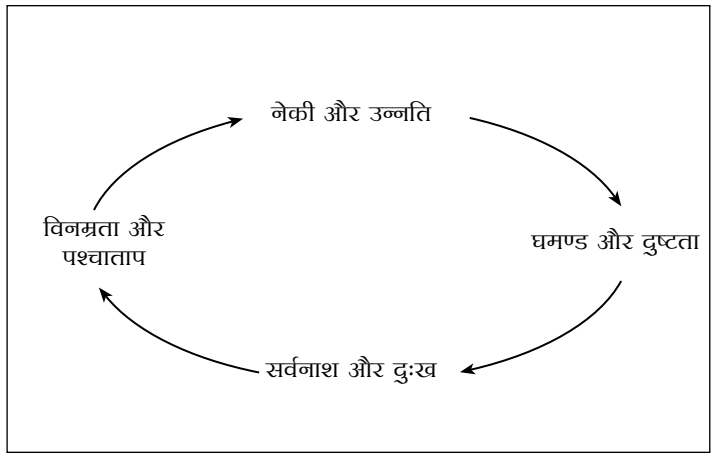

1. लोग नेक हैं और शान्ति और उन्नति के साथ आशीषित हैं।

इलामन 6:1–14 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि नफी और लेही लमनायटियों के लिए प्रचारक रह चुके थे और उनमें से बहुतों को पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने में सहायता की थी। शीघ्र ही लमनायटी नफायटियों से अधिक नेक बन गए।

- लमनायटियों के कौनसे चरित्रों ने उन्हें नफायटियों से कई अधिक नेक बनने में सहायता की थी? (इलामन 6:1 देखो।) धर्मपरिवर्ती लमनायटियों ने नफायटियों की सहायता करने की कोशिश कैसे की थी? (इलामन 6:4–6 देखो।) परिणाम क्या हुआ था? (इलामन 6:7–14 देखो।)

चॉकबोर्ड पर शब्द पट्टी *नेक और उन्नति* लगाओ।

2. नफायटी घमण्डी और दुष्ट बन जाते हैं। नफी उन्हें पश्चाताप करने को कहता है।

इलामन 6:15–10:1 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो। बताओ कि नफायटियों के उन्नत होने के बाद, उनमें से अधिकतर ने परमेश्वर को भूलना शुरू कर दिया और धन और अन्य सांसारिक बातों के लिये प्रयत्न करने लगे।

चॉकबोर्ड पर शब्दपट्टी *घमण्ड* और *दुष्टता* लगाओ।

- क्यों अक्सर उन्नति दुष्टता की ओर ले जाती है? (इलामन 6:17; 7:20–21 देखो।)
- कक्षा के सदस्य इलामन 6:21–24 और 7:4–5 पढ़ें और गिडियन्दन डाकूओं के चरित्रों को पहचाने। इनमें से कौनसे तत्व आज भी हैं? हमारे समुदाय में बूरी प्रेरणाओं से हम उचित तौर पर कैसे लड़ सकते हैं?
- गुप्त संधियों का स्रोत कौन है? (इलामन 6:25–30 देखो।) नफायटियों ने क्या किया था जब शैतान ने "[उनके] हृदयों पर कब्जा कर लिया था?" (इलामन 6:31 देखो।)

कक्षा के सदस्य इलामन 6:34–38 पढ़ें, नफायटियों और लमनायटियों के बीच फर्क को देखने के लिये। आप शायद कक्षा के सदस्यों के जवाबों को नीचे दिए गए चार्ट की तरह संक्षिप्त कराना चाहेंगेः

नफायटी	लमनायटी
अविश्वासी में विलीन थे (आयत 34)।	परमेश्वर के ज्ञान में बढ़े थे (आयत 34)।
दुष्टता और पाप में बढ़े थे (आयत 34)।	परमेश्वर के सामने सच्चाई और नेकी में चले थे (आयत 34)।
प्रभु की आत्मा का मार्गदर्शन खो दिया था (आयत 35)।	आत्मा को प्राप्त किया था (आयत 36)।
गिडियन्दन डाकूओं को बनाते और सहायता करते थे (आयत 38)।	गिडियन्दन डाकूओं को परमेश्वर के वचन का प्रचार किया था (आयत 37)।

- नफायटियों से आत्मा क्यों हटा ली गई थी? (इलामन 6:35 देखो।) प्रभु ने "अपनी आत्मा लमनायटियों पर क्यों उढ़ेली" थी? (इलामन 6:36 देखो।) यह हमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा को कैसे प्राप्त करें के बारे में क्या शिक्षा दे सकता है?

समझाओ कि जब नफायटी अपनी दुष्टता में जारी रहे प्रभु ने इलामन के पुत्र नफी को उन्हें पश्चाताप करने को कहने के लिए भेजा था। जब नफी ने लोगों की दुष्टता को देखा, "उसका हृदय दुःख से भर गया था" (इलामन 7:6)। उसने प्रार्थना करने के लिए अपने बगीचे के चबूतरे पर घुटने टेके थे। जब उसने प्रभु को अपनी आत्मा उढ़ेली, लोगों का एक समूह यह जानने के लिए जमा हुआ, कि वह लोगों की दुष्टता के लिए दुःखी क्यों था? (इलामन 7::11)।

कक्षा के नियुक्त सदस्य को इलामन 7:13–29; 8; 9 में वर्णित घटनाओं की संक्षिप्त विवरण देने को कहो।

- लोगों ने कैसे व्यवहार किया जब नफी ने उन्हें उनकी दुष्टता के बारे में निन्दा की थी? (इलामन 8:1–10 देखो।) क्यों अनेक अपश्चातापी रह गए थे?
- लोगों ने कैसा बर्ताव किया जब सान्तम ने अपने भाई, मुख्य न्यायधीश का कत्ल करने को स्वीकार किया? लोगों के चर्चा करने के बाद यदि नफी भविष्यवक्ता था या एक परमेश्वर था, वे उसे अकेला खड़ा छोड़ गए । हमें अन्तिम-दिन के भविष्यवक्ताओं को सुनने से कौन रोक सकता है?

अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बेनसन ने कहा था :"दो समूह जिसे भविष्यवक्ता का अनुगमन करने में सबसे अधिक कठिनाई है वो हैं घमण्डी जिन्हें ज्यादा ज्ञान है और घमण्डी जो धनी हैं । ज्ञानी महसूस करते हैं कि भविष्यवक्ता सिर्फ तभी प्रेरित होता है जब वह उनके साथ सहमत होता; वरना, भविष्यवक्ता सिर्फ आपनी राय दै रहा है...एक आदमी के नाते बोलते हुए । धनी महसूस करता है कि उसे विनित भविष्यवक्ता की सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है" (The Teaching of Ezra Taft Benson [1988], 138) ।

3. प्रभु नफी को मुहरबन्द शक्ति देता है । अपश्चातापी नफायटी युद्ध और अकाल का सामना करते हैं ।

इलामन 10:2–19; 11:1–6 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो । बताओ कि नफायटी प्रभु को भूल गए थे और उन्होंने दुष्टता जारी रखी थी । उनकी दुष्टता के कारण, लोगों ने अत्याधिक सर्वनाश और दुख सहा था ।

- प्रभु ने नफी को यह कहते हुए मुहरबन्द शक्ति दी,"सारी बातें [नफी] के वचनों के अनुसार होंगी "(इलामन 10:5–10) । प्रभु ने नफी को इतनी महान शक्ति के साथ क्यों प्रतिपादन किया? (इलामन 10:4–5 देखो ।)
- नफी द्वारा अस्वीकार करने और परमेश्वर की अवमानना करने के बाद लोगों का क्या हुआ? (इलामन 10:18–11:2 देखो ।) नफी ने लोगों को प्रभु को याद रखने और पश्चाताप करने में सहायता करने के लिए क्या प्रार्थना की? (इलामन 11:4 देखो ।) नफी ने युद्ध की बजाय आकाल के लिए प्रार्थना क्यों की? (इलामन 11:4 देखो ।) नफी की प्रार्थना का उत्तर कैसे मिला? (इलामन 11:5–6 देखो ।)

चॉकबोर्ड पर सर्वनाश और दुख लिखो ।

4. नफायटी अपने आपको विनम्र बनाते हैं और पश्चाताप करते हैं ।

इलामन 11:7–38; 12 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो । समझाओ कि आकाल और सर्वनाश ने नफायटियों को सहायता के लिए प्रभु की और मुड़ने को प्रेरित किया था । उन्होंने अपने आपको विनम्र बनाया और पश्चाताप किया ।

चॉकबोर्ड पर विनम्र और पश्चाताप लिखो ।

- हम नफी की प्रार्थना को प्रभु के उत्तर से क्या सीख सकते हैं? (इलामन 11:14–15 देखो ।) प्रभु लोगों से क्या चाहता था जिससे वह आकाल का अन्त करें? (इलामन 11:14–15 देखो ।)
- लोग अपनी विश्वसनीयत के कारण दुबारा आशीषित कैसे हुए? (इलामन 11:20–21 देखो ।)
- विनम्रता और नेकी का क्षणिक काल के अन्त का प्रथम चिन्ह क्या था? (इलामन 11:22 देखो ।) नफी, लेही, और उनके भाइयों ने इस विवाद का कैसे अन्त किया? (इलामन 11:23 देखो ।) किन तरीकों में "सिद्धान्त के सच्चे पदों" की शिक्षा देना हमें विवाद का अन्त करने में सहायता देता है?
- दुष्टता के काल और युद्ध द्वारा दोबारा सर्वनाश का काल आने पर, लोगों को पश्चाताप करने और प्रभु को ओर मुढ़ने में किसने सहायता की? (इलामन 11:28–34 देखो ।) जब हम दुष्टता की समान्य परिस्थितियों से घिरते हैं, हम हमेशा प्रभु को याद रखने के लिए क्या कर सकते हैं?
- दो वर्षों के बाद, नफायटियों ने दुबारा अपने परमेश्वर प्रभु को "भूलना आरम्भ किया "(इलामन 11:36) । आप क्यों सोचते हैं कि लोग प्रभु को इतनी जल्दी भूल जाते हैं? आज हम किन तरीकों से प्रभु को भूल रहे हैं?
- मॉरमन ने कहा था कि "मनुष्य के बच्चे...पृथ्वी की मिट्टी से भी कम हैं" (इलामन 12:7) । किस नियम से उसने यह बयान दिया? (कक्षा के सदस्यों को इलामन 12:1–6,8 से आयतें बारी बारी से पढ़ने दें ।)
- हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने या अवमानना करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है परन्तु हमारे कर्मों के परिणामों को चुनने की नहीं । मॉरमन ने क्या कहा था कि उनका क्या होगा जो अवमानना करेंगे? (इलामन

12–25–26 देखो ।) उनका क्या होगा जो पश्चाताप करेगें और प्रभु की आज्ञा का पालन करेंगे? (इलमान 12:23–24, 26 देखो ।)

- कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर बने आकार पर निर्देशित करो । लोग इस आकार से कैसे बाहर आ सकते हैं? (आलमा 62:48–51; इलामन 12:23–24 देखो ।)

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिन्कली ने कहा था : "सच्ची बातों को खोजो, न कि बनावटी । अनन्तकालीन सच्चाइयों को खोजो, न कि काल्पनिक । परमेश्वर की अनन्त बातों को खोजो, न कि उनके लिए जो आज है और कल नहीं । परमेश्वर की ओर देखकर जीवित रहो " (Teachings of Gordon B. Hinckley [1997], 494) ।

निर्ष्कष

एल्डर गोर्डन बी. हिन्कली द्वारा निम्नलिखित बयान पढ़ो, जिसें उन्होंने मॉरमन की पुस्तक के बारे में बात की है :

" कोई भी अन्य लिखित नियम उस वास्तविकता को इतनी सुगमता से नहीं दर्शाता है कि जब मनुष्य और राष्ट्र परमेश्वर के भय में और उसकी आज्ञाओं का पालन करके चलते हैं, वे उन्नत होते हैं और बढ़ते हैं, परन्तु जब वे उसे और उसके वचन की अवमानना करते हैं, तब वह पत्तन आता है जिसे, यदि नेकी द्वारा नहीं रोका गया तो निर्बलता और मृत्यु की ओर ले जाता है" (Conference Report में, अक्टू. 1979, 10; या *Ensign*, नवं 1979, 8) ।

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. घमण्ड की प्रक्रिया को दूर रखना

कक्षा के सदस्यों को एक शर्मिन्दा या बेवकूफी भरी गलती या चयन के बारे में सोचने दो जो उन्होंने की हैं । तब उन्हें उसके बारे में सोचने को कहो कि उन्होंने उस गलती को न दोहराने के लिए का किया है । कक्षा के सदस्यों को इन अनुभवों को बाँटने का अवसर दो ।

चर्चा करें क्यों नफी वह निर्णय लेना जारी रखे हुए थे जो नेकी से दृष्टता को जाता था,और जिसका परिणाम सर्वनाश और दुख था ।

- उसी प्रकार की गलतियों, जो उन्होंने की थी, से दूर रहने में सहायता के लिए हम नफायटियों से क्या सीखा सकतें हैं?

2. "उन्होंने मसीह के आने की गवाही दी थी" (इलामन 8:22)

समझाओ कि भविष्यवक्ताओं ने यीशु मसीह की गवाही दी थी, जैसे स्वर्ग में और पृथ्वी पर सारी वस्तुएं देती है । तब कक्षा के सदस्यों को इलामन 8:11–24 से आयतों को पढ़ने की बारी लेने दो, उन आयतों में उद्धारकर्ता की अनेक साक्षियों के लिए देखने को । इस चर्चा के भाग के नाते, आप शायद मूसा के पीतल के साँप के अभिलेख पर विशेष ध्यान देना चाहेंगे :

- पीतल का साँप क्या दर्शाता है? (इलामन 8:13–15 देखों, गिनतियों 21:6–9, यूहन्ना 3:14–16 भी देखें ।) हम मसीह में अपना विश्वास ने तुम्हारे जीवन की कैसे प्रथावित किया है?

इस चर्चा की समाप्ती के नाते, आप शायद प्रथम अध्यक्षता सन्देश से गिरजाघर के अभी के अध्यक्ष की गवाही पढ़ना चाहेंगे ।

पश्चाताप करो और प्रभु को लौटो

पाठ
35

इलामन 13–16

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को पश्चाताप करने के महत्व, पभु को मुड़ने और भविष्यवक्ताओं का अनुगमन करने को याद दिलाना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, तथा चिंतन एंव प्रार्थना करो :

   क. इलामन 13 । सैमुएल नामक लामनाइटी भविष्यवक्ता भविष्वाणी करता है कि नफायटियों का सर्वमाश हो जाएगा यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया ।

   ख. इलामन 14 । सैमुएल उन चिन्हो की भविष्यवाणी करता है जो उद्धारकर्ता के जन्म और मृत्यु के बाद होंगे । वह लोगों को पश्चाताप करने को बुलाना जारी रखता है ।

   ग. इलामन 15–16 । सैमुएल नफायटियों को लमानाइटियों के धर्मान्तरण के बारे में बताता है । कुछ नफायटी सैमुएल पर विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेतें हैं । अन्य अपने हृदयों को कठोर बनाते हैं और सैमुएल को मारने की कोशिश करते हैं, परन्तु वह परमेश्वर की शक्ति द्वारा बचाया जाता है ।

2. यदि चित्र लमनाइटी सैमुएल दीवार पर उपलब्ध हैं, इसे पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयारी करो (62370 सुसमाचार कला चित्र किट 314)

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या आपकी कोई गतिविधि का उपयोग करो ।

कक्षा के सदस्यों को एक विक्रेता की कलपना करने को कहो जिसके पास बेचने को एक ही उत्पादन है : दुख ।

- अपना उत्पादन बेचने को यह विक्रेता क्या कर सकता है? (उतरों में सम्मिलित हो सकता है कि वह दुख को आर्कषक दिखा सकता है या वह लोगों को बेवकूफ बनाएगा कि उसका उत्पादन दुख की बजाय खुशी लाएगा ।)
- शैतान के पास दुख के सिवाय देने को और कुछ नहीं है (2 नफी 2:17–18, 27) । शैतान कैसे दुख और पाप को अभिलाषी वस्तु बनाकर दिखाता है? वह कैसे लोगों को उकसाता है कि खुशी और नेकी की अभिलाषा उचित नहीं है?

समझाओ कि इस पाठ में आप सैमुएल, एक लमनाइट भविष्यवक्ता की भविष्यवाणियों की चर्चा करते हैं । सैमुएल नफायटियों के एक समुह को प्रचार करता है जिन्होंने अपने आपको शैतान के लालचों द्वारा घेरे जाने की अनुमति दी । उन्होंने दुष्टता करने में खुशी को खोजा," जो कि परमेश्वर कीप्रवृति के विरूद्ध था (इलामन 13:38) ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वस्त्रों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सकें । चर्चा कर कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन को लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. सैमुयल नफायटियों को चेतावनी देता है कि वे नष्ट कर दिए जाएंगे यदि उन्होने पश्चाताप नहीं किया ।

इलामन 13 की चर्चा करें । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें जोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो । समझाओ कि सैमुएल नामक लमनाइटी भविष्यवक्ता जैराहमला में प्रचार करने गया, परन्तु नफायटियों ने उसे शहर में बाहर निकाल दिया । वह शहर की दीवार पर खड़ा हो गया और उन्हें भविष्यवाणी सुनाई । (इलामन 13:1–4) । यदि आप सैमुएल का चित्र उपयोग कर रहें हैं इसे सम्पूर्ण पाठ के दौरान दिखाओ ।

- सैमुएल ने लोगों को चेतावनी दी कि उनके ह्रदयों की कठोरता के कारण, प्रभु उनसे अपने वचन ले लेगा और उनसे अपनी आत्मा हटा लेगा (इलामन 13:8)। उन लोगों को ऐसे परिणाम को आते हैं जो अपने ह्रदयों को कठोर करते हैं? (मोसायाह 2:36:37 देखो ।) हम अपने ह्रदयों को कोमल बनाने के लिए क्या कर सकतें हैं?

- भविष्यवक्ता सैमुएल के द्वारा, प्रभु ने कहा था, "वो आशिषित हैं जो पश्चाताप करते हैं और मेरे पास आते हैं" (इलामन 13:11) कुछ लोग बिना प्रभु के पास आए पश्चाताप करने की कोशिश कैसे करते हैं? प्रभु के पास जाना पश्चाताप का एक ज़रुरी हिस्सा क्यों है?

  अध्यक्ष एज्रा टॉफट बैनसन ने सिखाया था :

  "पश्चाताप का अर्थ साधारणत : सुधार के बर्ताव से अधिक है । दुनिया में अनेक पुरुष और स्त्री ने शरीर की बूरी आदतों और कमजोरियों से उभरने में बहुत इच्छा शक्ति और आत्म अनुशासन दिखाया है । तब भी उसी समय वे स्वामी का कोई विचार नहीं करते हैं, कभी-कभी उसे सार्वजनिक तौर पर ठुकरा देते हैं । बर्ताव के एसे बदलाव, यहाँ तक की सकारत्मक दिशा में, सच्चे पश्चाताप को नहीं बनातें...

  "— सच्चा पश्चाताप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास से आता है और उसी पर आधारित होता है । कोई और रास्ता नहीं है । सच्चे पश्चाताप में ह्रदय का बदलना शामिल होता है और न कि सिर्फ बर्ताव के बदलाव (आलमा 5:13 देखो ।)" (The Teaching of Ezra Taft Benson (1988), 71)।

- नफायटियों ने अपने ह्रदयों को धन पर लगाया "(इलामन 13:20–21) । इसके अतिरिक्त, उन्होंने प्रभु के वचनों को नहीं सुना, जिसने उन्हें उनका धन दिया था (इलामन 13:21) । इस कारण, नफायुटयों और उनके धन को श्रापित किया गया (इलामन 13:17–22) किन तरीको में लोग दुनियावी चिंताओ पर आत्मिक चिंताओ से अधिक समय और ध्यान देते है? हम कैसे निर्धारित कर सकते हैं कि हम अपने आत्मिक कल्याण पर प्रर्याप्त ध्यान दे रहें हैं?

- सैमुएल ने कहा था कि नफायटियों ने हमेशा अपने थन को याद रखा परन्तु उसके लिए प्रभु को धन्यवाद करना याद नही रखा (इलामन 13:22) । कुछ लोगों के लिए आभारी रहना मुश्किल होता है जब वे प्रचुरता के साथ आशिषित होते हैं?

- नफायटियों ने अपने दिनों के भविष्वक्ताओं को सताया और मारा, परन्तु उन्होंने कहा, "यदि हमारे दिन हमारे पुराने समय के पिताओं के दिनों में होते, हम भविष्यवक्ताओं को बन्धी नहीं बनाते "(इलामन 13:24–25; मत्ती 23:29–39 के साथ तुलना करो)। क्यों कभी -कभी लोग प्राचीन भविष्यवक्ताओं की प्रंशसा करते हैं और जीवित भविष्यवक्ताओं को ठुकराते हैं? (इलामन 13:26 देखो ।) कैसे कुछ लोग अपने आपको मूर्ख और अन्धे मार्गदर्शकों द्वारा मार्गदर्शित करवाते हैं? (इलामन 13:27–29 देखो ।)

- सैमुएल के अनुसार, नफाइटियों ने दुष्टता करने में खुशी को ढुंढा था (इलामन 13:38) । पाप में सच्ची खुशी पाना क्यों असंभव है? (इलामन 13:38 देखो; अलमा 41:10–11 भी देखो ।) हम सच्ची खुशी कैसे पा सकते ह? कक्षा के सदस्यों से जवाब मागंने अतिरिक्त आप शायद अगले पृष्ठ पर ब्यान को पड़ना चाहोगे ।)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा था, खुशी हमारे अस्तित्व का उद्देश्य, वस्तु और आंकाशा है; और उसका अन्त होगा, यदि हम उस मार्ग को अपनाएं जो इसको जाता है; और यह मार्ग सामर्थ्य, सच्चाई, विश्यवनीयता,

पवित्रता, और परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करना है " (Teaching of the Prophet Joseph Smith, जोसफ फिल्डींग स्मिथ द्वारा चुनी गई [1976], 255–56)।

2. सैमुएल उन चिन्हों की भविष्यवाणी करता है जोकि उद्धारकर्ता के जन्म और मृत्यु से पहले होंगे। वह लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाना जारी रखता है।

इलामन 14 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- सैमुएल ने उद्धारकर्ता के जन्म और मृत्यु की भविष्यवाणी की (इलामन 14:2, 15)। सैमुएल ने किन चिन्हों को बताया जो उद्धारकर्ता के जन्म और मृत्यु पर होंगे? (इलामन 14:3–7,20–28 देखो। इन भविष्यवाणियों का वर्णन शिक्षा देने के अतिरिक्त सुझाव में किया गया है। भविष्यवाणियों का पूरा होने की चर्चा पाठ 36 में की जायेगी।)

- सैमुएल ने कहा था यदि लोग पश्चाताप करेंगे, वे मसीह की श्रेष्ठता के द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्ता करेंगे (इलामन 14:13)। श्रेष्ठता वो गुण या कर्म हैं जो कि एक व्यक्ति को इनाम का हकदार बनाती है। यह सिर्फ उद्धरकर्ता की श्रेष्ठता द्वारा क्यों है कि हमें हमारे पापों से क्षमा मिले? (2 नफी 2:7–9; अलमा 22:14 देखो।)

  अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बेनसन ने सीखाया था, "यहां तक की सबसे सही और सच्चा व्यक्ति अपने आपको स्वंय की श्रेष्ठता पर नहीं बचा सकता" (The Teachings of Ezra Taft Benson, 71)।

- सैमुएल के अनुसार, यीशु को क्यों मरना पड़ा? (इलामन 14:15–18 देखो।) उद्धारकर्ता के बलिदान को जानना तुम्हें कैसे प्रभावित करता है?

- सैमुएल ने कहा था, "यदि [लोगों] का तिरस्कार हुआ है वे अपने आप अपने उपर तिरस्कार को लाए हैं " (इलामन 14:29)। ऐसा क्यों है? (इलामन 14:30–31 देखो।) अपने आपके लिए कर्म करने की अनुमति होना क्यों जरुरी है"?

3. कुछ ने सैमुएल पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। अन्यों ने अपने हृदयों को कठोर किया और सैमुएल को मारने की कोशिश की

इलामन 15–16 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- प्रभु ने नफायटियों को दण्डित क्यों किया? (इलामन 15:3 देखो; इब्रानियों 12:6 भी देखो।) प्रभु का दण्डित करना हमारे लिए उसका प्रेम कैसे दिखाता है? हम प्रभु के दण्ड से क्या सीख सकते हैं?

कक्षा के एक सदस्य को इलामन 15:7–8 जोर से पढ़ने दो। जब वह पढ़ता है, निम्नलिखित चित्र को चॉकबोर्ड पर बनाओ :

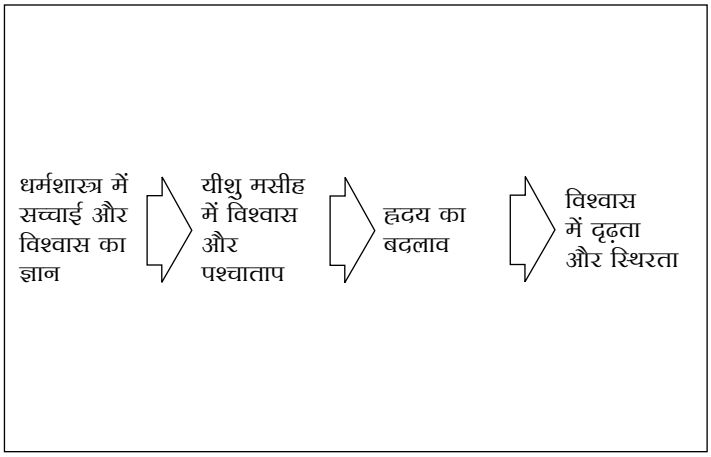

- किन तरीकों में सच्चाई का ज्ञान और धर्मशास्त्रों में भरोसा विश्वास और पश्चाताप का मार्गदर्शन करता है? किन तरीको में विश्वास और पश्चाताप ह्रदय के बदलाव का मार्गदर्शन करते हैं?
- लमनायटियों में जिन्होंने ह्रदय के बदलाव को अनुभव किया था "विश्वास में दृढ़ और स्थिर" रहे (इलामन 15:8)। जब हम ह्रदय के बदलाव को अनुभव करते हैं, हमें यह सुनिश्चित करने के लिए क्या करना चाहिए कि बदलाव कभी समाप्त न हो? (2 नफी 31:19–20 देखो।)
- नफायटियों ने सैमुएल की भविष्यवाणियों और चेतावनियों का कैसे जवाब दिया? (9 इलामन 16:1–7 देखो।) आप क्या सोचते हैं अधिकतर लोगों ने सैमुएल का विश्वास क्यों नहीं किया जबकि उन्होंने देखा था कि वह कैसे चमत्कारी तरीके बचाया गया था?
- जबकि उन्होंने देखा था कि भविष्यवक्ताओं के वचन पूरे हुए थे, अधिकतर नफायटियों ने अपने ह्रदयों को कठोर करना आरम्भ किया और अपनी स्वंय की मजबूती और ज्ञान पर निर्भर थे (इलामन 16:13–15)। कैसे इन अविश्वासी नफायटियों ने उन चिन्हों का सन्देह किया था जो उन्होंने देखे थे? (इलामन 16:16–23 देखो।) सुसमाचार को सिर्फ अपने आपके ज्ञान के साथ समझाने की कोशिश करने के क्या खतरे हैं?

निष्कर्ष

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

आप शायद सैमुएल की भविष्यवाणियों की समीक्षा करने और दिखाने को; कि कैसे इन भविष्यवाणियों का अध्ययन हमें उद्धारकर्ता के पुनःआगमन के लिए तैयारी करने में सहायता कर सकता है के लिए शिक्षा देने का अतिरिक्त सुझाव उपयोग कर सकते हैं।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं।

पुनः आगमन की तैयारी करना

अध्यक्ष एज्रा टाफ्ट बेनसन द्वारा निम्नलिखित ब्यान को पढ़ो :

"नफायटी इतिहास का अभिलेख उद्धारक की भेंट को थोड़ा पहले हमारे स्वंय के दिनों को अनेक समानताएं प्रकट करता है जब हम उद्धारकर्ता के पुनः आगमन की आशा करते है" (Conference Report में, अप्रैल 1687, 3; या Ensign, मई 1687, 4)।

इस बयान में, "नफाइटी इतिहास को अभिलेख" अध्यक्ष बैनसन द्वारा संदर्भ 3 नफी की पुस्तक था.... पुर्नरूत्थारित पथ द्वारा उन्हें भेंट करने का नफायटियों का लेखा। निम्नलिखित पृष्ठ पर चार्ट अध्यक्ष बेनसन के बयान को इलामन की पुस्तक पर लागू होता है.... उद्धारकर्ता के जन्म के चिन्होंको देखने से पहले नफायटियों का अभिलेख।

चार्ट को यह दिखाने के लिए उपयोग करो कि इलामन 13–16 उन भविष्यवाणियों और घटनाओं के अभिलेख को सम्मिलित करता है जो यीशु मसीह के पुन : आगमन के चिन्हों और घटनाओं के लिए एक समान है।

इलामन **13–16** में अंकित भविष्यवाणियाँ और घटनाएं	भविष्यवाणी या घटना	पुनः आगमन से पहले चिन्ह और घटनाएं
इलामन 13:1, 3, 6, 10	शक्तिशाली नेक अल्प पक्ष	1 नफी 14:12; याकूब 5:70
इलामन 13:13–14	आत्मिक बहाव और चमत्कार	योएल 2:28–30; दि॰ और अनु॰ 45:39–42
इलामन 13:22; 16:12,22–23	महान दुष्टता	2 तिमुथियुस 3:1–5; दि॰ और अनु॰ 45:27
इलामन 13:2,68,10–11, 14:9, 11, 15:1–3, 17, 16:2	प्रभु के भविष्यवक्ताओं और उनके पश्चाताप के बुलावे को नकारना	सि. और अनु॰ 1:14–16
इलामन 15:5–11	अनेक लमनाइटीयों का धर्मपरिवर्तन	सि. और अनु॰ 49:24
इलामन 14:3–4	बिना अन्धकार की रात की भविष्यवाणी	जकर्याह 14:7
इलामन 14:5–6, 20	स्वर्ग में चिन्हों और चमत्कारो की भविष्यवाणियाँ	योएल 2:30–31; दि॰ और अनु॰ 45:40
इलामन 16:13–18	चिन्हो, चमत्कारों, और मसीह के आगमन का निषेध	2 पतरस 3:3–4; सि॰ और अनु॰ 45:26
इलामन 14:21, 23, 26	महान तूफानों और अन्य प्राकृतिक नाश की भविष्यवाणियाँ	प्रकाशितवाक्य 16:18, 21; सि॰ और अनु॰ 88:88–90
इलामन 14:24; 14:1	दुष्ट के नाश की भविष्यवाणी	यशायाह 26:21; मलाकी 4:1; सि॰ और अनु॰ 1:9; 133:41

- आज के लोगों और नफाइटीयों जो मसीह के जन्म के थोड़ा पहले जीते थे के बीच क्या सम्भावनाएं हैं?

अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बैनसन द्वारा निम्नलिखित बचाव को पढ़ो :

“मॉरमन की पुस्तक में हम पुनः आगमन के लिए तैयारी के एक नमूने को पाते हैं । पुस्तक का बड़ा हिस्सा मसीह के अमरीका में आगमन के थोड़ा पहले की कुछ दशकों पर केन्द्रीत है । उस काल को ध्यानपूर्वक अध्ययन कर के, हम निर्धारित कर सकते हैं क्यों कुछ भयानक न्याय ये नाश किए गए थे जो कि उसके आगमन से पहले था और किसने अन्यों को सम्पन्नता के देश में मन्दिर पर खड़े होने और उनके हाथों को उसके हाथों और पैरों के घावों में डालने दिया... क्या कोई शंका कर सकता है कि यह पुस्तक हमारे लिए है और इसमें हम महान शक्ति, महान आराम, और महान सुरक्षा पाते है? ” (Conference Report में, अक्तूबर 1986, 5–6; या Ensign, नवम्बर 1986, 6–7) ।

कक्षा के सदस्यों को उन परिज्ञान और प्रभावों को बाँटने को आमंन्त्रित करो जो उन्होंने प्राप्त किए हैं जब वे इलामन 13:16 की चर्चा करते है । उन्हें पूछो कि कैसे ये बातें उन्हें उद्धारकर्ता के पुनः आगमक के लिए तैयारी करने में सहायता करती है ।

पाठ
36

“कल मैं दुनिया में आऊँगा”

3 नफी 1–7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को परिक्षा और लालच के समय में विश्वासपूर्वक बने रहने की आवश्यकता को समझाना ।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिंतन, और प्रार्थना करो :

क. 3 नफी 1:1–22 । देश में चिन्हों और चमत्कारों के बावजूद, अविश्वासियों ने दावा किया कि उद्धारकर्ता के आगमन का समय गुज़र चुका है । दुष्टों ने विश्वसियों को मारने की योजना बनाई । उद्धारकर्ता के जन्म के चिन्ह प्रकट हुए और उनको सहारा दिया जो विश्वास में कायम रहे थे ।

ख. 3 नफी 2–4 । देश में दुष्टता बढ़ती है । गिडिएन्तन चोर और शक्तिशाली बने और नफायटियों के विरूद्ध लड़ाई करने आए । नफायटियों ने अपनी दुष्टता का पश्चाताप किया, और प्रभु उन्हें गिडिएन्तन चोरों को हराने के मदद करता है ।

ग. 3 नफी 5–7 । नफायटी अपने पापों को त्यागते हैं और नेकी से जीते हैं । जब वे उन्नत होते है, गिरजाघर में घमण्ड और विवाद उत्पन्न होते हैं । “नफी पश्चाताप और मसीह में विश्वास का प्रचार करता है, और थोड़े से लोग धर्म-परिवर्तित होते हैं ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या स्वंय की एक गतिविधि का उपयोग करो ।

कक्षा के साथ एल्डर जॉर्ज ए॰ स्मिथ, बारह प्रेरितों की परिषद् के सदस्य द्वारा बताई गई निम्नलिखित कहानी को बाँटो :

एक आदमी, किसी देश के गुजर कर यात्रा कर रहा था, एक बड़े शहर को पहुँचा, बहुत धनी और अलौकिक; उसने उसे देखा और अपने मार्गदर्शक से बोला, यह बहुत ही नेक लोग होंगे, क्योंकि मैं इस महान शहर में सिर्फ एक छोटा सा शैतान देख सकता हुँ ।

“मार्गदर्शक ने उत्तर दिया, “आप समझ नहीं रहें हैं, श्रीमान; यह शहर दुष्टता, भ्रष्टाचार, नीचता, और हर प्रकार की घृणा को बहुत अच्छी तरह पालन करता है कि इसे सिर्फ एक शैतान की आवश्यक्ता है इन सबको नियंन्त्रण में रखने के लिए ।”

“थोड़ा सा आगे यात्रा करते हुए वह एक उबड़ खाबड़ रास्ते पर पहुँचा और एक बूढ़े आदमी को पहाड़ी पर चढ़ने की कोशिश करते देखा, सात बड़े, महान, विषय दिखते शैतानों से घिरा हुआ ।”

“ ‘क्यों,’ यात्री बोला, ‘यह अवश्य ही अत्याधिक दुष्ट व्यक्ति होगा, इसके चारों ओर कितने शैतान है’!”

“देश में,’ गाइड ने उत्तर दिया, ‘यही एक मात्र नेक मनुष्य है और सात दुष्ट लोग इसको इसके मार्ग से हटाने की कोशिश कर रहें हैं और वे सब ऐसा नहीं कर सकते”(Deseret News, 11 नवम्बर. 1857, 7:287) ।

समझाओ कि जब हम आज्ञाओं को विश्वास से पालन करने की कोशिश करतें हैं, हम विरोध का सामना करते हैं । आज का पाठ उस विरोध की चर्चा करता है जिसका नफायटियों के बीच विश्वासियों ने सामना किया गया था । कुछ लोग सारे विरोध के बावजूद सहन करने योग्य रहे, जब कि अन्यों ने महान आशीषें प्राप्त की तब भी शीघ्र ही

अपनी नेकी से अलग हो गए "(3 नफी 7:8) । उन अध्यायों से हम परिक्षा और लालच के बावजूद विश्वासी रहने के महत्व को सीख सकते हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों और अन्य पाठ सामगी, का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सकें । चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बिन्धित हों ।

1. उद्धारकर्ता के जन्म के चिन्ह उनको सहारा देते हैं जिन्होंने विश्वास में अन्त तक सहन किया ।

3 नफी 1:1–22 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो । समझाओ कि इस अध्याय में घटनाएं यीशु के जन्म की सैमुएल की भविष्यवाणी के पाँच वर्ष बाद हुई थी । सैमुएल ने कहा था, पाँच और वर्ष आएंगे, और देखो, तब परमेश्वर का पुत्र आएगा" (इलामन 14:2) । आप संक्षिप्त रुप से सैमुयल की भविष्यवाणियों के उन चिन्हों की समीक्षा कर सकते हैं जो कि यीश के जन्म का साथ होनी थी (इलामन 14:2–7)

- सैमुएल की भविष्यवाणी के पूरा होने की प्रतिज्ञा में, "जिन लोगों ने विश्वास किया था बहुत दुखी होना आरम्भ किया" (3 नफी 1:7) । उनके दुख के कुछ कारण कौनसे थे? (3 नफी 1:5–9 देखो ।)

  क. कुछ अविश्वासियों ने कहा था कि भविष्यवाणियों के पूरा होने का समय बीत चुका है और कि विश्वासियों का विश्वास व्यर्थ रहा (3 नफी 1:5–6) ।
  ख. अविश्वासियों ने "पूरे देश में, भारी शोर मचाया" (3 नफी 1:7)
  ग. सारे विश्वासियों को मृत्यु देने का दिन चुना गया (3 नफी 1:9)

- उनके विश्वास को इन चुनौतियों के बावजूद, विश्वासियों ने क्या किया? (3 नफी 1:8 देखो ।) हम दृढ़ रहने के लिए क्या कर सकते हैं जब हमारा विश्वास चुनौती पर हो?

- जब नफी ने अविश्वासियों की दुष्टता को देखा, उसने अपने लोगों को क्या सन्देश प्रकट किया गया जब उसने अपने लोगों के लिए पूरे दिन प्रार्थना की? (3 नफी 1:12–14 देखों । आप शायद चाहेंगे कि कक्षा का कोई सदस्य इन आयतों को ज़ोर से पढ़े ।) सैमुएल की भविष्यवाणियाँ कैसे पूरी हुई? (3 नफी 1:15–21 देखो ।) यह अभिलेख तुम्हे यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास को मज़बूत करने में कैसे सहायता करता है?

2. गिडिआन्तक चोर नफायटियों के विरूद्ध लड़ाई करने आए ।

3 नफी 2–4 की चर्चा करो । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें जोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो ।

- शैतान कैसे उद्धारकर्ता और उसके जन्म में लोगों को उनके विश्वास से दूर करने की कोशिश करता है? (3 नफी 1:22; 2:1–3 देखो । बताओ कि शैतान धीरे — धीरे लोगों के हृदयों में स्थान को प्राप्त करता है, और शीघ्र ही लोग "उन चिन्हों और चमत्कारों को उतना आरम्भ करते हैं ।") कौनसे उपायों को आप आजकल प्रतिवादी को उपयोग करते देखते हैं? हम अपने आत्मिक अनुभवों को याद रखने और बचाने के लिए क्या कर सकते हैं?

- 'जज'ब लोग दुष्टता में बढ़ना आरम्भ करते है, वे किन खतरों का सामना करते हैं? (3 नफी 2:11–13, 17–19 देखो ।) हमारी सुरक्षा को आज किस प्रकार के बर्ताव और व्यवहार खतरा पहुँचाते है?

- मसीह के जन्म के 16 वें वर्ष के बाद, लोछोनिअस, नफायटियों का गवर्नर और मुख्य व्यायाधीश, ने गिडिआन्तन चोरों के नेता, गिदिआनी से एक पत्र प्राप्त किया (3 नफी 3:1) । गिदिआनी लाछोनिअस से क्या अभिलाषा रखता था? (3 नफी 3:6–8) देखो ।)

- जब गिडिआन्तन चोरो ने नफायटियों का सर्वनाश करने की अपनी भावना की घोषणा की, लोगों ने एक साथ अपने आपको, लाछोनिअस और गिदगिदोनी के निर्देश के अन्तर्गत बचावे को तैयारी की । हम उनके कर्मो से क्या सीख सकते हैं जो हमें लालच और डर के समय में बचने में सहायता कर सकें? (कक्षा के सदस्यों को इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए 3 नफी 3:12–26 पढ़ने दो । कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर संक्षिप्त करो । कुछ जवाब नीचे दिए गए है, चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रश्नों के साथ ।)

  क. "लाछोनिअस, गवर्नर, एक न्यायपूर्ण व्यक्ति था, और डराया नहीं जा सकता था (3 नफी 3:12) । कैसे भय किसी को लालच में पढ़ने का कारण बनता है? कैसे व्यक्तिगत नेकी हमें साहसी रहने में सहायता करती है जब हम लालच का दुख का सामना करते है?

  ख. लाछोलिअस ने लोगों को "मज़बूती के लिए प्रभु को पुकारने" के लिए कहा (3 नफी 3:12) । लालचों या चुनौतियों का सामना करने को मज़बूती के लिए प्रार्थना करना क्यों महत्वपूर्ण है?

  ग. लाछोनिअस ने लोगों को "अपने आपको एकत्रित करने को कहा (3 नफी 3:13, 22) । नफायटियों के लिए अपने आपको बचाने के लिए एक स्थान में एकत्रित करना क्यों महत्वपूर्ण था? (3 नफी 4:3–4 देखों ।) गिरजाघर के अन्य सदस्यों के साथ हमारा सम्बन्ध बुराई की सैनाओ का सामना करने की हमारी क्षमता को कैसे बढ़ाता है? (मरोनी 6:4–6 देखों ।)

  घ. "उसने उनके चारों ओर अति दृढ किले बन्दी करने की आज्ञा दी" (3 नफी 3:14) । हम अपने आपको कैसे दृढ कर सकते हैं और लालच के विरूद्ध सुरक्षा कर सकते हैं?

  च. नफायटियों ने अपने आपको लाछोलिअस के वचनों के अनुसार उत्पन किया "(3 नफी 3:16) । हम कैसे आशीषित होते हैं जब हम प्रेरित मार्गदर्शकों का अनुगमन करते हैं?

  छ. "उन्होंने अपने सारे पापों का पश्चाताप किया" (3 नफी 3:25)। पश्चाताप हमें प्रभु से अधिक मज़बूती प्राप्त करने को कैसे सहायता कटता है?

  ज. वे कवच के साथ मज़बूत थे "(3 नफी 3:26) । हमें कौनसा कवच पहनने की सलाह दी गई है? (सि० और अनु० 27:15–18 देखों ।) हमें परमेश्वर का पूरा कवच पहनने की शिक्षा क्यों दी गई है? हम इस कवच को प्रत्येक दिन कैसे पहन सकते हैं?

- इन तैयारियों के क्या परिणाम थे जब गिडिआन्तन चोर नफायटियों के विरूद्ध आए थे? (3 नफी 4:11–13, 16–29 देखो ।) नफायटी अपनी विजय के बाद कैसे उत्साहित हुए? (3 नफी 4:30–33 देखों ।) तीन तरीकों में हम हमें बचाने और आशीष देने के लिए प्रभु को हमारा आभार दिखा सकते हैं?

3. नफायटी नेकी से जीते, परन्तु घमण्ड और विवाद उत्पन्न हुए ।

3 नफी 5–7 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो । समझाओ कि मसीह के जन्म के 21 वर्ष बाद में नफाइटियों ने गिडिअन्तन चोरों को हराना था । 13 और वर्षों में, उद्धारकर्ता नफाइटियों के पास आएगा और उनकी सेवा करेगा ।

- गिडिआन्तन चोरों की हार के कई वर्षों बाद, नफाइटियों ने महान शान्ति और उन्नति का आनन्द उठाया (3 नफी 5:1–23; 6:1–9 देखो) । उनकी शान्ति भंग होने को क्या हुआ? (3 नफी 6:10–15 देखों । आप शायद पाठ 34 में घमण्ड प्रक्रिया की संक्षिप्त समीक्षा करना चाहेंगे ।)

- जब लोग अपनी दुष्टता में जारी रहे, उन्हे पश्चाताप को बुलाने के लिए भविष्यवक्ता आए, परन्तु लोगों ने उनका बहिषकार किया और उन्हें मार दिया (3 नफी 6:17–23) । गुप्त कर्म बढ़े, और शीघ्र ही लोग जातियों में बँट गए (3 नफी 6:27–30; 7:1–5) । इस दुष्टता के जवाब में नफी ने क्या किया? (3 नफी 7:15–19 देखों ।) उसके कार्य का क्या परिणाम हुआ? (3 नफी 7:21–26 देखो ।)

चॉकबोर्ड पर नीचे दी गई तिथियाँ लिखों । कक्षा के भिन्न सदस्यों को भेल खाते वाक्यों को जोर से पढ़ने को कहो । जब प्रत्येक वाक्य पढ़ा जाए, कक्षा के सदस्यों को लोगों की आत्मिक स्थिति का वर्णन करने को कहो ।

21–26 ईसवी 3 नफी 5:1–3 (लोगों ने पूरी दृढ़ता के साथ परमेश्वर की सेवा की ।)

26–27 ईसवी 3 नफी 6:4–5 (महान अनुशासन और उन्नति थी ।)

28 ईसवी 3 नफी 6:9 (स्थिर शान्ति थी ।)

29 ईसवी 3 नफी 6:10–16 (विवाद, घमण्ड, और अंहकार था ।)

30 ईसवी 3 नफी 6:17–18 ("वे बूरी दुष्टता की अवस्था में थे ।")

31 ईसवी 3 नफी 7:21 (कुछ लोग प्रभु को धर्मपरिवर्तित हुए ।)

32–33 ईसवी 3 नफी 7:23 (नफी ने पश्चाताप को पुकारना जारी रखा ।)

- लोग किन आशिषों का आनन्द उठा सकते थे यदि वे विश्वासी रहते? (3 नफी 10:18–19 देखों । लोगों का सबसे नेक हिस्सा सर्वनाश के दौरान छोड़ा गया था जिसने उद्धारकर्ता के क्रूरू पर चढ़ाए जाने का साथ दिया । उन्होंने महान आशीषें प्राप्त की जब उद्धारकर्ता ने उन्हें अपने पुर्नरूत्थान के बाद भेंट की । लोगों का सबसे बूरा हिस्सा नाश किया गया था । इन घटनाओं की चर्चा ऊगले पाठ में की जाएगी ।)

निर्ष्कष

समझाओ कि हम भी उद्धारकर्ता के आगमन की प्रतीक्षा कर रहें हैं । जब हम प्रतीक्षा करते है, शैतान हमें दुष्टता की ओर ले जाने की कोशिश करता है जैसा उसने नफायटियों के साथ किया था । जब हम अपने आपको लाछोनिअस के समय में लोगों की तरह तैयार करते हैं, और यदि हम नेकी में अन्त तक रहतें हैं, हम सब कुछ प्राप्त करने के योग्य होंगे जो कि प्रभु अभिलाषा रखता है कि हमें दे ।

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

"मैं यीशु मसीह का शिष्य हूँ" (3 नफी 5:13)

कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 5:13 जोर से पढ़ने को कहो । समझाओ कि इस आयत में भविष्यवक्ता मॉरमन के वचन सम्मिलित हैं ।

- आज यीशु मसीह का शिष्य होने का क्या अर्थ है?

पाठ
37 “जो भी कोई आएगा, मैं उसे प्राप्त करूँगा”

3 नफी 8–11

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सैमुएल की भविष्यवाणी की पूर्ति और जो उद्धारकर्ता के पास आते हैं उनके लिए उपस्थित आशिषों को समझने में सहायता करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ों, चिंतन, और प्रार्थना करो :

   क. 3 नफी 8 । मसीह की मृत्यु के समय पर अमरीका में बड़े सर्वनाश हुए । अनेक शहर नष्ट हुए ।)

   ख. 3 नफी 9:10 । बचे हुओं ने प्रभु की आवाज को उन्हे उसके पास लौटने, पश्चाताप करने, और धर्म परिवर्तित होने के आमन्त्रण को सुना ।

   ग. 3 नफी 11 । पुर्नरूत्थारित उद्धारकर्ता स्वर्ग से नीचे आता है और लोगों को शिक्षा देता है ।

2. यदि निम्नलिखित चित्र उपलब्ध हैं, इन्हें पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयार रहो : मसीह नफायटियों को दर्शन देता है (62047; सुसमाचार कला चित्र किट 315) और यीशु पश्चिमी गोलार्द में शिक्षा देते हुए (62380; सुसमाचार कला चित्र किट 316) ।

कक्षा के आरम्भ होने से पहले, पृष्ठ 178 पर चार्ट को चॉकबोर्ड पर लिखो ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या आपकी कोई स्वंय की गतिविधि का उपयोग करो ।

समझाओ कि 3 नफी 11 अक्सर पहला अध्याय होता है जिसे पढ़ने को लोगों को आमन्त्रित किया जाता है जब प्रचारकों से मॉरमन की पुस्तक की प्रति प्राप्त करते हैं । इस अध्याय में नफायटियों को पुर्नरूत्थारित उद्धारकर्ता की भेंट का अभिलेख सम्मिलित है ।

- आप को सोचते कि 3 नफी 11 किसी को मॉरमन की पुस्तक का परिचय देने का एक प्रभावी तरीका है? आपको कौनसी अनुभूति या अनुभव हुए है जब आपने इस अध्याय को पढ़ा है?

समझाओ कि उद्धारकर्ता की नफायटियों को भेंट को वर्णित करते अध्याय मॉरमन की पुस्तक में सबसे शक्तिशाली वाक्य हैं । यह पाठ उन विपतियों कि चर्चा करता है जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया । इसनें नफायटियों के बीच उसकी सेवा का आरम्भ सम्मिलित है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके । चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन पर लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. यीशु की मृत्यु के समय पर अमरीका में महान सर्वनाश हुए ।

3 नफी 8 की चर्चा करो । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें जोर से पढ़ने को आमांन्त्रित करो । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि लमनायटी भविष्यवक्ता सैमुयल ने उन भयानक सर्वनाश की भविष्यवाणी की थी जो यीशु के

क्रूस पर चढ़ाए जाने पर होने थे (इलामन 14:20–27) । यीशु के जन्म के चिन्ह के करीब 33 वर्ष बाद, “लोगों ने अधिक उत्सुक्ता के साथ सैमुएल के वचनों के पूरे होने को देखना आरम्भ किया (3 नफी 8:3) ।

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को आप के द्वारा लिखे चॉकबोर्ड पर चार्ट की ओर ले जाओ :

सैमुएल की भविष्यवाणियाँ	पूर्ण होना
इलामन 14:21,23	3 नफी 8:5–7, 17–18, 9:8
इलामन 14:24	3 नफी 8:8–10, 14
इलामन 14:20,27	3 नफी 8:20–21

कक्षा के सदस्यों को “सैमुएल की भविष्यवाणियाँ” के अन्तर्गत प्रत्येक वाक्य को पढ़ने दो और तब “पूर्ण होना” के अन्तर्गत मेल खाते वाक्य को पढ़ो ।

- जब सर्वनाश रूका, पृथ्वी गहरे अंधकार के साथ ढक गई (3 नफी 8:19–23) । उद्धारकर्ता की मृत्यु के लिए सम्पूर्ण अंधकार एक उचित चिन्ह क्यों था? (3 नफी 9:18 देखो; यूहन्ना 8:12; सि॰ और अनु॰ 11:28 भी देखो ।) किन तरीकों से उद्धारकर्ता तुम्हारें जीवन में ज्योति लाया है?
- जो लोग सर्वनाश के बाद बचें थे उनका कैसा व्यवहार था? (3 नफी 8:23–25 देखों ।) उनके अनुभव के बारे में पढ़ना हमें पुनः आगमन के लिए तैयार होने में कैसा सहायता करता है?

2. बचे हुए प्रभु की आवाज को उन्हें उसके पास लौटने को आमन्त्रित करतें सुनतें हैं ।

3 नफी 9:19 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो ।

- सर्वनाश के बाद बचें हुए नफायटियों ने मसीह की आवाज को यह वर्णन करते सुना कि कैसे दुसरे शहरों का नाश हुआ था (3 नफी 9:1–12) । प्रभु ने सर्वनाश का क्या कारण दिया? (3 नफी 9:12 देखों । आप शायद बताना चहेंगे कि कितनी बार उसने इस कारण को आयत 2–12 में दोहराया है ।) उसने उन्हें क्या आमंन्त्रण दिया जो दिये गए थे? (3 नफी 9:13–14 देखो । आप शायद बताना चाहेंगे कि शायद ‘आओ’ आयत 14 में तीन बार आता है । नीचे दी गई टिप्पणी भी देखों ।) हमें इस आंमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए आज क्या करने की आवश्यकता है?

  एल्डर जैफरी आर. हॉलैण्ड ने कहा था : “‘आओ’, (मसीह) प्यार से कहता है । ‘आओ, मेरे पीछे । चाहे तुम जहाँ भी जा रहें हो, पहले आओ और देखों मैं क्या करता हूँ, देखो यौं अपना समय कहाँ और कैसे व्यक्ति करता हुँ । मेरे बारे में सीखो, मेरे साथ चलो, मेरे साथ बात करो, विश्वास करो मुझे प्रार्थना करते सुनों । उसके पहले तुम अपनी स्वर्य की प्रार्थनाओं के उत्तर पाओंगे । परमेश्वर तुम्हारी आत्मा को शान्ति देगा । आओ, मेरे पीछे”(Conference Report मैं, अक्तूबर 1997, 88; या Ensign, नव. 1997,65)।
- यीशु ने घोषणा की थी कि मूसा का नियम उसमें पूरा हुआ है और कि वह अब जलाने वाले भेंटों और बलिदानों को स्वीकार नहीं करेगा (3 नफी 9:17, 19) । उसने किन बलिदान को कहा है जो हमें प्रस्तुत करने चाहिए? (3 नफी 9:20 देखो।) “टुटे हुए हृदय और पश्चातापी आत्मा” को प्रस्तुत करने का क्या अर्थ है? (3 नीच ही गई टिप्पणी देखो ।) उद्धारकर्ता ने उनसे क्या वादा किया है जो हम भेंट को करेंगे? (3 नफी 9:20 देखो ।)

अध्यक्ष जे. रूबेन क्लॉक जू॰, जो प्रथम अध्यक्षता के सदस्य थे, ने कहा था : “नए अनुबन्ध के अन्तर्गत जो मसीह के साथ आया था, पापी को अपने स्वयं के जीवन से बलिदान प्रस्तुत करना चाहिए, ना कि किसी अन्य प्राणधारी जीव के लूह की भेंट द्वारा, उसे अपने पापों को छोड़ना चाहिए, उसे पश्चाताप करना चाहिए, उसे अपने आप ही बलिदान देना चाहिए “(Behold the Lamb of God. (1962), 107)।

- यीशु ने क्या कहा था कि उसने अपना जीवन किसके लिए दिया था? (3 नफी 9:22 देखो ।) हमें उद्धारकर्ता के पास जाने के लिए बच्चों के समान किन गुणों की आवश्यक्ता है? (मुसायाह 3:19 देखो ।)

- सर्वनाश की सीमा को यीशु की घोषणा के बाद और उनको मुक्ति का वादा करने जो विश्वास करेंगे, सन्नाटे के अनेक घन्टे बीते । जब यीशु दुबारा बोला, उसने अपने लोगों को इच्छा करने की अभिलाषा का वर्णन करने के लिए किस तुलना का उपयोग किया? (3 नफी 10:4–6 देखों । बताओ कि यीशु ने इस तुलना का उपयोग तीन बार किया था परन्तु प्रत्येक आयत में थोड़ा सा बदला था ।) वह हमें इक्कठा क्यों करना चाहता है? (नीचे दी गई टिप्पणी देखो ।) हम इस इक्कट्ठा करने में कैसे सहायता दे सकते हैं? (सि॰ और अनु॰ 4:1–7 देखो ।)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सिखाया था : “दुनिया के किसी भी समय परमेश्वर के लोगों को इक्कट्ठा करने का क्या कारण था?.... मुख्य कारण प्रभु को एक घर बनाने का था जहाँ से वह अपने लोगों को अपने घर को धर्मविधियाँ और अपने राज्य की महिलाँए प्रकट कर सके, और लोगों को उद्धार का रास्ता सीखा सके... यह उसी प्रकार के उद्देश्य के लिए है जिसके लिए परमेश्वर अपने लोगों को अन्तिम दिनों में इक्कट्ठा करता हैं “(Teachings of the Prophet Joseph Smith, जोसफ फील्डींग स्मिथ द्वारा चुनी गई (1976), 307–8)।

- लोगों को पश्चाताप करने और अपने पास आने को बुलाने के बाद, मसीह ने लोगों को बोलना बंद किया । शोक के तीन दिन गुज़र गए । तब अंधकार हट गया, आवाज़ और सर्वनाश रूका, और लोगों का दुख आनन्द में बदल गया (3 नफी 10:9–10)। लोग क्यों छोड़ दिए गए? (3 नफी 10:12–13 देखो)। उन्होंने कौनसी आशीषों को प्राप्त किया था? (3 नफी 10:18–19 देखो ।)

- मॉरमन की हमें, इस अभिलेख को पढ़ने वालों को क्या सलाह है? (3 नफी 10:14 देखो ।)

3. यीशु मसीह स्वर्ग से उतरता है और लोगों को शिक्षा देता है ।

3 नफी 11 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो । समझाओ कि लोग सम्पन्न देश में मन्दिर के आसपास इक्कट्ठा हुए, उन बदलावों के बारे में शक्ति जो हुए थे और इस यीशु मसीह के बारे में बाते करते, जिसके करे में उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में चिन्ह दिए गए थे (3 नफी 11:1–2)।

- जब लोग उस बारे कर रहे थे जो हुआ था, उन्होंने पिता परमेश्वर की वाणी को सुना था । वाणी कैसी थी? (3 नफी 11:3 देखो) । लोगों ने कितनी बार सुना उनके इसे समझने से पहले? (3 नफी 11:4–6 देखो) ।

- लोग आखिरकार वाणी को कैसे समझ पाए? (3 नफी 11:5 देखो)। “उन्होंने इसे सुनने के अपने कानों को खोला” का आप क्या अर्थ समझते है? (3 नफी 11:5)। हम परमेश्वर के वचनों को बेहतर सुनने और समझने को क्या कर सकते हैं?

- परमेश्वर पिता ने उद्धारकर्ता का परिचय कैसे दिया? (कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 11:7 जोर से पढ़ने दो ।) यीशु ने अपना परिचय किस प्रकार दिया? (कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 11:8–11 जोर से पढ़ने दो । यदि आप यीशु नफायटियों को दिखता है का चित्र उपयोग कर रहे हैं, उसे अभी दिखाओ ।)

- यीशु ने स्मूह में सारे लोगों को क्या आमंन्त्रण दिया था? (3 नफी 11:13–15 देखो, 3 नफी 17:25 भी देखो, जो कहता है कि समुह में 2,500 लोग थे । यदि आप यीशु शिक्षा देते हुए का चित्र उपयोग कर रहें हैं इसे अभी दिखाओ ।) हम उद्धारकर्ता के प्रेम के हम उदाहरण से क्या सीख सकते हैं?
- उद्धारकर्ता ने नफायटियों को बपतिस्मा के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (3 नफी 11:21–27 देखो ।) क्यों सही तरीके से बपतिस्मा लेना महत्वपूर्ण है और उसके द्वारा जिसके पास बपतिस्मा देने का अधिकार है?
- यीशु ने शिक्षा दी थी कि लोगों के बीच बपतिस्मे या उसके सिद्धान्त के किसी भी अन्य सूचना को कोई विवाद नहीं होने चाहिए (3 नफी 11:22,28)। क्यों सुसमाचार सिद्धान्तों के लिए विचार खतरनाक है? (3 नफी 11:29, सि॰ और अनु॰ 10:62–63 देखो)। हम सच्चे सिद्धान्त में एक कैसे हो सकते है?
- उद्धारक ने अपने सिद्धान्त के नाते क्या शिक्षा दी? (3 नफी 11:30–38 देखों । उतरों में सम्मिलित होना चाहिए स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह में विश्वास करना, पश्चाताप करना और बच्चे के समान बनना, बपतिस्मा लेना, और पवित्रात्मा प्राप्त करना ।) उसने उन्हें क्या वादा किया है जो अपने जीवन को उसके सिद्धान्त पर निर्मित करेंगे? (3 नफी 11:39 देखो ।)
- हम इन शब्दों को पूरी पृथ्वी के सन्तों को उद्धारकर्ता के निर्देशों की घोषणा करने को अधिक पूर्ण पालन कैसे कर सकते है? (3 नफी 11:41) ।

निष्कर्ष

3 नफी 10:14 पढ़ो, और कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्रों को समझने और ढूंढने के महत्व को याद दिलाओ । यद्यापि उत्पीड़न बढ़ेगा जब नेक और दुष्ट के बीच अलगाव पड़ता है, हम मज़बूत होंगे जब हम धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते हैं और भविष्यवक्ताओं का अनुगमन करते हैं ।

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

गतिविधि समीक्षा

गतिविधि समीक्षा के नाते, यीशु पश्चिमी गोलार्द में शिक्षा देता है का चित्र दिखाओ (62380; सुसमाचार कला चित्र किट 316)। निम्नलिखित बयानों को पढ़ो, और कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक बयान को सच्चा या झूठा के नाते पहचान हो । कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक बयान के लिए नीचे दिए गए धर्मशास्त्र वाक्यों को पढ़ने को कहो ।

1. इस चित्र में घटनाओ जाराहैमला के शहर में हुई थी । (3 नफी 11:1 देखो ।)
2. लोगों ने पहले ही प्रभु की वाणी को सुना था । (सच; 3 नफी 9:1–2 देखो ।)
3. प्रभु ने उन्हें उसे न छूने को कहा । (3 नफी 11:14 देखो)।
4. यीशु के पास पुर्नरूत्थारित शरीर था जब नफायटियों से मिला था । (सच; 3 नफी 11:15 देखो)।
5. वो जो सर्वनाश के बाद बच्चे थे वे पाप से मुक्त थे । (3 नफी 9:13 देखो)।
6. यीशु ने लोगों को बपतिस्में के सही तरीके के बारे में शिक्षा दी ।(सच; 3 नफी 11:21–25 देखों) ।

पाठ
38

“पूराने बातें हटा ली गई हैं, और सारी बातें नई बन गई है”

3 नफी 12:15

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यीशु मसीह के उदहारण द्वारा उसका अनुगमन करने और उस उच्च नियम का पालन करने के द्वारा उसके सच्चे शिष्य होने को प्रोत्साहित करना जो उसने नफायटियों को सिखाया ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्र के बारे में पढ़ो, चिंतन, और प्रार्थना करो :

   क. 3 नफी 12:1–12 । यीशु नफायटियों को पहाड़ का संदेश सिखाता है

   ख. 3 नफी 12:13–16 । यीशु घोषित करता है कि उसके अनुगमन करने वालों को पृथ्वी का नमूना बनना है और अन्य लोगों को ज्योति बनना है ।

   ग. 3 नफी 12:17–48; 15:1–10 । यीशु घोषित करता है कि उसने मूसा के नियम को पूरा किया है । वह लोगों को उच्च नियम सिखाता है ।

   घ. 3 नफी 13:14 । यीशु नफायटियों को सिखाता है कि उन्हें उसका सच्चा शिष्य होने को कैसे जीना चाहिए । वह उन्हें बताता है कि वो जो उसके कथन को सुनते और करते हैं वो उस ज्ञानी पुरूष के समान हैं जो घर को एक पत्थर पर बनाते हैं ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई : मत्ती 5–7; सि॰ और अनु॰ 101 : 39–40; 103:9–10 ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि को उपयोग करेंगे, यीशु मसीह के चित्रों को कक्षा में लाओ (सभाघर पुस्तकलय या सुसमाचार कला चित्र किट से)।

4. यदि आप प्रष्ठ “170” पर गतिविधि का उपयोग कर रहें हैं, कक्षा में दो पारदर्शी डिब्बे लाओ.... एक साफ नमक से भरा हुआ और दुसरा नमक और मिट्टी के मिश्रण के साथ भरा हुआ ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित का अपनी स्वयं की गतिविधि का उपयोग करो ।

यीशु मसीह के कुछ चित्र प्रदर्शित करो । बताओ कि यीशु के चरित्र के प्रतिनिधित्व उपलब्ध कराने में, विभिन्न कलाकारों ने यीशु को विभिन्न तरीकों के चित्रित किया है । तब कक्षा के सदस्यों को बिना जोर से उतर दिए निम्नलिखित प्रश्न के बारे में सोचने को कहो :

- यदि आपसे कोई यीशु के चरित्र का वर्णन करने को कहेगा, तो आप क्या कहेंगे?

समझाओ कि अध्यक्ष हारोल्ड बी. ली ने यीशु के चरित्र का एक बिलकुल सही वर्णन के बारे में कहा था । तब अध्यक्ष ली द्वारा निम्नलिखित वचन को पढ़ो :

“पहाड़ पर अपने संदेश में स्वामी ने हमें अपने स्वयं के चरित्र का तकरीबन कुछ प्रकटीकरण दिया है, या जो कि आत्म चित्रण कहलाया जा सकता है, प्रत्येक अगर जिसे उसने कर्मों में लिखा, और ऐसा करने में हमें हमारे स्वयं के जीवन के लिए एक योजना दी” (Stand Ye in Holy Places (1974), 342)।

समझाओ कि जब यीशु नफायटियों से मिला, उसने पहाड़ पर संदेश से मिलता जुलता उपदेश दिया, जब हम इस उपदेश में शिक्षाओं का अध्ययन और उपयोग करते हैं, हम उद्धारकर्ता के चरित्र के बारे में और अधिक जानेंगे । हम एक मानचित्र, या योजना को विकसित कर पांएगे, हमारे जीवन को स्वामी के जीवन के समान निर्धारित करने को ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनपूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चमन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके । चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन पर लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्र नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. यीशु नफायटियों को पहाड़ पर संदेश की शिक्षा देता है ।

3 नफी 12:1–12 से चुने हुए धर्मशास्त्र पढ़ो और चर्चा करो, जैसा नीचे दिया गया है । आप 3 नफी 12:3–12 की तुलना मत्ती 5:3–12 में पाए जाने वाले, पहाड़ पर संदेश से करना चाहेंगे ।

- *3 नफी 12:3* । मसीह के पास आने का क्या अर्थ है? (जब कक्षा के सदस्य इस प्रश्न की चर्चा करेंगे, आप 3 नफी 9:13–14, 20–22 और इथर 12:27 को संदर्भ कर सकते हैं ।) कैसे "आत्मा में गरीब होना" या विनम्र होना, हमें मसीह के पास आने में सहायता करता है?
- *3 नफी 12:4* । कौनसे कुछ तरीके हैं जो प्रभु हमारे लिए आरामदेह होने को उपलब्ध कराता है (कुछ उदाहरणों के लिए, यूहन्ना 14:23–27; मोसायाह 18:8–9 देखो)।
- *3 नफी 12:5* । विनीत होने का क्या अर्थ है?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था, "विनितता आभार की आत्मा को सूचित करती है जैसे आत्मा प्रर्याप्तता को बर्ताव के विरूद्ध, अपने आपकी अधिक शक्ति की स्वीकृति के परे, परमेश्वर की मान्यता, और उसकी आज्ञाओं कि स्वीकृति ("With all thy Getting Get Understanding," Ensign; August. 1988, 3–4)।
- *3 नफी 12:6* । "नेकी के लिए भूखा और प्यास होना" का आप क्या अर्थ समझते हैं? हम किस बात से भर जाएगें जब हम""नेकी के लिए भूखे और प्यासे रहेंगे"?
- *3 नफी 12:7* । हमारा दयालु होना क्यों महत्वपूर्ण है? हमें प्रभु की दया की आवश्यकता क्यों है? (2 नफी 2:8–9 देखों)
- *3 नफी 12:8* । परमेश्वर को देखने के लिए हमें हृदय में शुद्ध क्यों होना चाहिए? (1 नफी 10:21 देखो) । किन तरीकों से हम अपने हृदयों को शुद्ध कर सकते हैं? (9 सि॰ और अनु॰ 93:1 इस प्रश्न के थुछ उतरों के लिए देखों ।)
- *3 नफी 12:9* । हम अपने घरों और समुदायों में शान्ति बनाने वाले कैसे हो सकते हैं?
- *3 नफी 12:10–12* । क्यों नेक पर कभी — कभी अत्याचार किया जाता है? हमें अत्याचार का जवाब कैसे देना चाहिए? (3 नफी 12:44, लूका 6:35 देखो)।

2. यीशु घोषणा करता है कि उसके अनुगमन करने वालों को पृथ्वी का नमक होना है और दुसरो लोगों को ज्योति होना है ।

3 नफी 12:13–16 पढ़ो और चर्चा बरो ।

यीशु ने कहा थ, "मैं तुम्हें पृथ्वी का नमक होना देता हूं" (3 नफी 12:13)। कक्षा के सदस्यों को समझने में सहायता करना कि "पृथ्वी का नमक" होने का क्या अर्थ है," पढ़ो या कक्षा के सदस्य को एल्डर ब्रूस आर मैकान्की द्वारा निम्नलिखित बयान को पाने को :

“पुरातन इब्रानियों के बीच.... आना था प्रयोग उपद्रव के नाते, आहार को स्वीकार बनाने वाले पदार्थ थें, और सारे जानवरों के बलिदान में किया जाता था । (लैव्य 2:13; यहेजकेल 43:24; मरकुस 9:49–50) । यह बलिदान देने की धर्मविधि को बहुत ज़रूरी था किया उस अनुबन्ध का चिन्ह था जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में उस पवित्र कार्य के साथ सम्बन्ध में बनाया गया था । (लैव्य 2:13; गिनतियों 18:19; 2 इतिहास 13:5)।

इसलिए, हमारे प्रभु का बयान, पहले यहूदियों को और तब इब्रानियों, नफाईटियों के अन्य महान समुहों को दिया गया, ताकि उनके पास पृथ्वी का नमक होने की शक्ति हो, ” उनके पास शक्ति थी, अन्य शब्दों में, दुनिया में स्वीकार्य बनाने वाला पदार्थ, उपद्रव प्रेरणा होना, वह प्रेरणा जो सभी को शान्ति और आशीष लाए” Mormon Doctrine, दुसरा संस्करण (1966), 667–68) ।

- हमारी प्रेरणा दुसरों को शान्ति और अन्य आशिषों को प्राप्त करने मैं कैसे सहायता मिलती है?

नमक के डिब्बे दिखाओ (देखो”तैयारी” वस्तु 4) कक्षा के सदस्यों को पूछो कि वे किस नमक का उपयोग करेंगे । तब एल्डर कारलोस ई. असय द्वारा निम्नलिखित कथन को पढ़ो :”सुप्रसिद्ध रसायन शास्त्री ने मुझे बताया था कि आयु के साथ नमक अपना स्वाद नहीं खोंता है । स्वाद मिश्रण और भ्रष्टता द्वारा खोता है “(ConferenceReportमें, अप्रैल 1980, 60; या Ensign, मई 1980, 42)।

- हम दुनिया की बातों द्वारा भ्रष्ट होने से कैसे बच सलते हैं?
- कक्षा के सदस्यों को सिद्धान्त और अनुबन्ध 101:39–40 और 103:9–10 को जोर से पढ़ने दो । ये आयतें “पृथ्वी के नमक होना” और “लोगों की ज्योति” होने के बारे में क्या सिखाते है? अन्तिम दिन सन्त “मनुष्य के उद्धारकर्ता” कैसे हो सकते है? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकताहै सुसमाचार को बाँटना और मन्दिर कार्य करना ।)
- हम लोगों के सामने हमारी ज्योति को कैसे चमका सकते हैं? (3 नफी 12:16; 18:24 देखो)। हमारी ज्योति को चमकाने के क्या परिणाम होंगे? (3 नफी 12:13 देखो)

3. यीशु घोषित करता है कि उसने मूसा के नियम को पूरा किया है । वह लोगों को उच्च नियम की शिक्षा देता है।

3 नफी 12:17–48; 15:1–10 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो । समझाओ कि इन आयतों में वर्णित नियम मूसा का नियम है । मूसा के नियम जानवर के बलिदान सहित कार्यो और धर्माविधियों की एक सख्त प्रणाली थी, (मोसायाह 13:29–30)। यह इसालियों को यीशु मसीह के प्रायाश्चित को देखने के लिए सहायता करने को दिया गया था । (2 नफी 25:245; मोसायाह 13:31–33; आलमा 34:13–14)।

- इस्त्रालियों को मूसा का नियम किसने दिया था? (3 नफी 15:4–5 देखो)।
- यीशु नफायटियों को घोषणा करता है कि उसने मूसा के नियम को पूरा किया है (3 नफी 12:17–19; 15:2–5)। यीशु ने इस नियम को कैसे पूरा किया?

  यीशु ने मूसा के नियम पूरा किया जब उसने हमारे पापों के लिए प्रत्यश्चित किया (आलमा 34:13–16)। उसके प्रायश्चित के बाद, लोगों को जानवर का बलिदान करने की आज्ञा अब नहीं थी, जिसकी आवश्यकता यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान की ओर दर्शानो को मूसा के नियम के नाते थी । इनके बदले, लोगों को टुटे हुए ह्रदय और पश्चातापी आत्मा का बलिदान करने को आज्ञा दी गई “(3 नफी 9:20; आयत 19, भी देखों)।

समझाओ कि यीशु की घोषणा के बाद कि उसने भाग के नियम को पूरा किया है, उसने नफायटियों को एक उच्च नियम दिया । निम्नलिखित चार्ट को चॉकबोर्ड पर लिखों उन धर्मशास्त्र आयतों की सूची बनाते हुए जिसे आप कक्षा के सदस्यों के लिए सबसे मददगार महसुस करते हो । कक्षा के सदस्यों को “मूसा के नियम” के अन्तर्गत प्रत्येक आयत को पढ़ने दो और तब “उच्च नियम” के अन्तर्गत मेल खाते आयतों को पढ़ों । उन्हें इन नियमों के बीच के

अन्तर की चर्चा करने को कहो । उन्हे उन तरीको को बाँटने को आमंन्त्रित करो कि उच्च नियम हमें प्रभु के समीप जाने में सहायता करता है ।

मूसा का नियम	उच्च नियम
3 नफी 12:21	3 नफी 12:22–24
3 नफी 12:27	3 नफी 12:28–30
3 नफी 12:31	3 नफी 12:32; प्रथम अतिरिक्त सुझाव की देखो
3 नफी 12:33	3 नफी 12:34–37
3 नफी 12:38	3 नफी 12:39–42
3 नफी 12:43	3 नफी 12:44–45

- नफायटियों को सिखाने के बाद कि उन्हें अपने शत्रुओं को प्रेम करना चाहिए, यीशु ने कहा, "इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम भी मेरी तरह या जो पिता स्वर्ग में है, उसकी तरह निर्दोष बनो "(3 नफी 12:48) । हमें परिपूर्ण होने के लिए यीशु मसीह के प्रायश्चित की आवश्यकता क्यों है? (2 नफी 2:7–9; 3 नफी 19:28–29; मरोनी 10:32–33 देखों ।)

4. **यीशु नफायटियों को सिखाता है कि उन्हें उसका शिष्य होने के लिए कैसे जीना चाहिए ।**

3 नफी 13–14 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों । समझाओ कि इन आध्यायों में वे शिक्षांए सम्मिलित हैं कि हम यीशु मसीह के सच्चे शिष्य कैसे बन सकते हैं । इन शिक्षाओं में से कुछ था सारी शिक्षाओं की चर्चा करो, जैसी नीचे दी गई है ।

- *3 नफी 13:1–8, 16–18* । यीशु ने कुछ लोगों की निंदा क्यों की जिन्होंने अच्छों कार्य किये थे जैसे दान देना (गरीबों को देना), प्रार्थना करना, और उपवास करना? हमारा क्या मकसद होना चाहिए जब हम सेवा करते हैं और अन्य अच्छे कार्य करते है?
- *3 नफी 13:9–13; 14:7–11* । इन आयतों में यीशु के वचन हमें प्रार्थना कैसे करते हैं के बारे में क्या शिक्षा देते हैं?
- *3 नफी 13:14–15* । हमें दुसरों को क्षमा करना क्यों महत्वपूर्ण है? हम और अधिक क्षमा करने वाले कैसे बन सकते हैं?
- *3 नफी 13:16–24* । उस आँख को होने का क्या अर्थ है जो कि "अकेली" है? (सि॰ और अनु॰ 88:67–69 देखों ।) हमारे लिए परमेश्वर और धन (दुनियावी) की सेवा करना क्यों असंभव है?
- *3 नफी 13:25–34* । इन आयतों में अंकित वचनों को उद्धारकर्ता ने किसे निर्देशित किया है? (3 नफी 13:25 देखो ।) हम इन वचनों को हमारे जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं, जबकि हमने भोजन, पानी, या वस्त्रों के लिए कोई विचार न करने की आज्ञा को प्राप्त नहीं किया है? (3 नफी 13:33 देखो ।) उन लोगों को क्या आशीषे मिलती हैं जो अपने जीवन में परमेश्वर की बातों को पहले रखते है?
- *3 नफी 14:1–5* । हम दुसरों का अनुचित न्याय या आलोचना करने को कैसे दूर रख सकते हैं?

- *3 नफी 14:6* । इसी प्रकार को शिक्षा मत्ती 7:6 में पाई जाती हैं । इस आयत के जोसफ स्मिथ अनुवाद में, यीशु अपने शिष्यों को राज्य के रहस्यों की बजाय पश्चाताप का प्रचार करने की आज्ञा देता है (Joseph Smith Translation, Matthew 7:9–11)। हमारे सुसमाचार शिक्षा को मूल सिद्धान्तों पर केन्द्रित करना क्यों महत्वपूर्ण हैं?
- *3 नफी 14:12* । इस नियम का पालन करना हमें यीशु मसीह का बेहतर शिष्य कैसे बनाता है?
- *3 नफी 14:13–14* । यह को र्थ पूर्ण है कि अनन्त जीवन को मार्ग सकरा है, जबकि सर्वनाश को मार्ग चौड़ा?
- *3 नफी 14:15–20* । यह शिक्षा विशेषकर आज महत्वपूर्ण क्यों हैं? (जोसफ स्मिथ मत्ती 1:22 देखो, जो कि अन्तिम दिनों का वर्णन करता है ।)
- *3 नफी 14:21–23* । स्वर्ग के राज्य के प्रवेश करने के लिए हमें स्वर्गीय पिता की इच्छा को क्यों करना चाहिए? (सि॰ और अनु॰ 130:20–21 देखो ।)
- *3 नफी 14:24–27* । तिन तरीकों में पत्थर या रेत पर घर बनाने के बारे में यीशु का दृष्टांत हमारे जीवन पर लागू होता है? (इलामन 5:12 देखो ।)

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्य को 3 नफी 15:1 जोर से पढ़ने दो । समझाओ कि जब हम उद्धारकर्ता की शिक्षाओं के अनुसार जीते हैं, हमारे पास हर नींव होगी और किसी भी तरह की परिक्षाओं या लालचों का सामना करने को मजबूत होंगे जो हम अनुभव करते हैं । हम "पृथ्वी के नमक " और "लोगों की ज्योति" बन जाएगे, और हम दुसरों को उद्धारकर्ता के समीप आने में सहायता कर पाएगें (3 नफी 12:13–16)।

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ रुपरेखा को निर्धारित करती है । आप एक या दोनों सुझावों का उपयोग पाठ के भाग के नाते कर सकते है ।

1. यीशु तलाक के बारे में शिक्षा देता है ।

जब तुम 3 नफी 12:32 में अंकित उद्धारकर्ता की शिक्षा की चर्चा करते हो, आप निम्नलिखित सूचना बाँटना चाहेंगे :

पुरातन इस्त्राइल में एक पुरूष अपनी पत्नी को अनुचित कारणों के लिए अलग या तलाक दे सकता था । तथापि, एक परिपूर्ण दुनिया में, जैसे सेलेस्टीमल राज्य में, तलाक का अस्तित्व नहीं है । क्योंकि पृथ्वी अभी परिपूर्ण नहीं है, तलाक की अनुमति है परन्तु सबसे गंभीर कारणों के अलावा नहीं होने चाहिए । मत्ती 19:9 में यीशु सूचित करता है कि यदि पुरूष अपनी पत्नी को अनुचित कारण के लिए तलाक देता है वह परमेश्वर की आँखो में तब भी उससे विवाहित रहता है, और पुरूष तब व्यभिचार करता है यदि वह किसी अन्य स्त्री से विवाह करता है ।

2. "तुम वो हो जिनके बारे में मैंने कहा था : मेरे पास अन्य भेड़ें हैं" (3 नफी 15:21)

- कक्षा के एक सदस्य को यूहन्ना 10:13 जोर से पढ़ने दो । इसमें अन्य भेड़ें कौन हैं? (3 नफी 15:21; 16:1–3 देखो ।) यरुशलेम में शिष्य "अन्य भेड़ों" के बारे में यीशु की शिक्षा को क्यों नहीं समाझ पाए? (3 नफी 15:14–19 देखो । अविश्वास लोगों को परमेश्वर के वचन को उसकी पूर्णता में समझने से कैसे रोकता है?

“देखो, मेरा आनन्द पूर्ण है”

पाठ
39

3 नफी 17–19

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को प्रभु यीशु मसीह के प्रेम को महसुस करने और उसमें विश्वास को उपयोग करने को अधिक अभिलाषा को विकसित करने और उसकी गवाही देने को सहायता करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिंतन, और प्रार्थना करो :

   क. 3 नफी 17 । नफायटियों को सिखाने के बाद, यीशु उन्हें अपने घर लौटकर चिंतन करके, प्रार्थना करने, और अगले दिन उसके लौटने को तैयारी करने की आज्ञा देता है । यह जानकर की लोगों का ह्रदय चाहता था कि वह रूके, वह थोड़े समय के लिए रूका और बीमारों को चंगा किया, बच्चों को आशीषित किया, और लोगों के लिए प्रार्थना की ।

   ख. 3 नफी 18 । यीशु नफायटियों के बीच प्रभु भोज का आयोजन करता है और स्वर्ग में जाने से पहले उन्हें अतिरिक्त सलाह देता है ।

   ग. 3 नफी 19 । नफायटी यीशु के आने का समाचार फैलाते हैं, और उसके लौटने के पूर्वज्ञान में बड़ी भीड़ जमा होती है । उद्धारकर्ता के 12 शिष्यों भीड़ को शिक्षा देते है और सेवा करते हैं । शिष्यों का बपतिस्मा होता है और पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं और स्वर्गदूतों की सेवा । उद्धारकर्ता लोगो ंको शिक्षा देने और उनके लिए दुर्घटना घटने को लौटता है ।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि को उपयोग करेंगे, नफायटियों को यीशु चंगा करता हुआ (62541; सुसमाचार कला चित्र किट 316) और यीशु नफाइटी बच्चों का आशीषित करता है (सुसमाचार कला चित्र किट 322) चित्र दिखाने को तैयार रहो और कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 17:5–13, 17–24 को जोर से पढ़ने को तैयार करो ।

3. श्रद्धालु माहौल बनाने के लिए, आप चाहेंगे कि उद्धारकर्ता के बारे में स्तुति-गीत बजे जब कक्षा के सदस्य कमरे में प्रवेश करते हैं ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या अपनी स्वयं की एक गतिविधि को उपयोग करेंगे ।

यीशु नफायटियों को चंगा करते और बच्चों को आशीष देते के चित्र प्रदर्शित करो और निर्धारित कक्षा के सदस्य को 3 नफी 17:5–13, 17–24 जोर से पढ़ने को ।

कक्षा के सदस्यों को इन घटनाओं पर अपने विचार बाँटने को आमंन्त्रित करो कि उन्हें कैसा लगता यदि वे भी उस भीड़ के बीच होते जिन्होने हर घटनाओं को अनुभव दिया था।” समझाओ कि यह पाठ उन घटनाओं की चर्चा करता है जो पुर्नरूत्थरित, उद्धारकर्ता ने सिखाया और किया का जब अपनी मृत्यु और पुर्नरूत्थान के बाद नफायटियों से मिला था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सकें । चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन को लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करें जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. यीशु ने नफायटियों को उसके बारे में चिंतन और प्रार्थना करने को आज्ञा दी जो उसने सिखाया था । वह बीमारों को चंगा करता है, बच्चों को आशीष देता है, और लोगों के लिए प्रार्थना करता है ।

3 नफी 17 की चर्चा करो । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें जोर से पढ़ने को आमंन्त्रित करो ।

- जब यीशु नफायटियों को छोड़ने के लिए तैयार था, उसने जाना कि लोग उस सबको नहीं समझ पाए थे जो वह उन्हें सिखा रहा था (3 नफी 17:1–2)। उसने लोगों को क्या करने का निर्देश दिया? (3 नफी 17:3 देखो ।) चिंतन करने का क्या अर्थ है? चिंतन करने ने नफाइटियों को उद्धारकर्ता से आगे के निर्देश के लिए तैयार करने को कैसे सहायता की? चिंतन करना हमें सुसमाचार नियमों को बेहतर समझाने में कैसे सहायता कर सकता है?

  एल्डर जोसफ बी. वर्थलीन ने लिखाया था :"चिंतन करना, जिसका अर्थ है मानसिक तौर पर तोलना, विचार करना, ध्यान लगाना, किसी की समझदारी की आत्मिक आँखों को खोलने को प्राप्त कर सकता है । और, प्रभु की आत्मा चिंतन करने वाले पर आएगी" (Conference Report, अप्रैल 1972,33; या Ensign, मई 1982, 23 में)।

- यीशु ने लोगों को उस बारे में की प्रार्थना करने को कहा था जो उसने उन्हें सिखाया था । प्रार्थना हमें सुसमाचार नियमों को समझने में कैसे सहायता करती है? कौनसे अन्य तरीकें हैं जिनसे हम "[हमारे] मनों को प्रभु की सच्चाइयों को प्राप्त करने के लिए तैयार कर सकते हैं?

- क्यों यीशु लोगों के साथ "थोड़ी देर और ठहरा"? (3 नफी 17:5–6 देखो ।) कैसे ये लोगों के लिए उसकी भावनाओं को दिखाता है? आपने अपने लिए यीशु के प्रेम और चिंता को कैसे महसूस किया है?

यदि आपने ध्यान गतिविधि का उपयोग नही किया है, आप चाहेंगे कि कक्षा के सदस्य उद्धारकर्ता के कार्यों को संक्षिप्त करें जब वह नफाइटियों के साथ ठहरा था (3 नफी 17:7–25)।

- किसने नफायटियों के बीच बीमार और लंगड़ो को उद्धारकर्ता द्वारा चंगा होने मे समर्थ किया? (3 नफी 17:7–6, 20 देखो ।) बीमार और लंगड़े के चंगा होने के बाद लोगों ने क्या किया? (3 नफी 17:10 देखी ।) हम उद्धारकर्ता को उन आशीषों के लिए हमारा आभार कैसे दिखा सकते हैं जो उसने हमें दी हैं?

- नफायटी बच्चे कैसे आशीषित हुए? (3 नफी 17:21 देखो । जोर दें कि उद्धारकर्ता ने उन्हें एक एक करके आशीषित किया था, छोटे बच्चों के लिए उसके प्रेम की गहराई को दिखाते हुए । आप मत्ती 19:13–15 भी पढ़ना चाहेंगे ।)

- उद्धारकर्ता नफायटियों को छोटे बच्चों के समान बनने की आज्ञा देता है (3 नफी 11:37–38) यीशु हमें बच्चों के समान कौनसी कुशलताओं को रखना चाहता है? (मुसायाह 3:19 देखो ।) हम इन कुशालताओं को विकसित करने के लिए क्या कर सकते हैं?

2. यीशु नफायटियों के बीच प्रभु — भोज का आयोजन करता है ।

3 नफी 18 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो ।

- यीशु के बच्चों को आशीषित करके के बाद, उसने नफायटियों के बीच प्रभु-भोज का आयोजन किया (3 नफी 18:1–4)। हम 3 नफी 18:1–11 से प्रभु — भोज की धर्मविधि के बारे में क्या सीख सकतें हैं? (उत्तरों में नीचे दिए सम्मिलित हो सकते है ।)

  क. प्रभु-भोज उनके द्वारा आशीषित और बाँटा जाना चाहिए जो ऐसा करने को नियुक्त किए गए है (3 नफी 18:5) ।
  ख. प्रभु-भोज को गिरजाघर के सारे योग्य सदस्यों को दिया जाना चहिए (3 नफी 18:5,11)।
  ग. रोटी और दाख रस उद्धारकर्ता के शरीर और लहू को दर्शाते हैं (3 नफी 18:7, 11; सि. और अनु. 27:2 भी देखो, ध्यान दें कि आजकल हम दाख रस के स्थान पर पानी का उपयोग करते है)।

- हम प्रभु-भोज लेने के द्वारा किसकी गवाही देते हैं? (3 नफी 18:7, 10–11 देखों ।) उन्हें कौनसी आशीषें वादा की गई हैं जो मसीह को याद करते हैं और अनुगमन करते है? (3 नफी 18:7,11 देखों ।) हम प्रत्येक सप्ताह अपने आपको प्रति भोज लेने के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं? प्रभु भोज लेना तुम्हारे लिए आशीष कैसे रहा है?

- यीशु ने शिष्यों को प्रभु-भोज को योग्यता से लेने के महत्व के वारे में क्या सिखाया? (3 नफी 18:26–29 देखो; 1 कुरिन्थियों 11:28–29 भी देखो ।) क्यों प्रभु-भोज को अयोग्यता से लेना हम पर दण्ड लाता है?

- उद्धारकर्ता ने अपने शिष्यों को उनके लिए क्या करने को कहा जो प्रभु भोज लेने के लिए योग्य नहीं थे? (3 नफी 18:29–32 देखो ।) उसने उन्हें उनको नहीं निकालने का निर्देश को दिया जो प्रभु-भोज लेने को योग्य नहीं थे? (3 नफी 18:32 देखो ।) उनकी सेवा करना जारी रखना क्यों महत्वपूर्ण है जो सुसमाचार से अलग हो गए हैं? हम किन तरीकों से इसे कर सकते हैं?

- किन कारणो से प्रभु ने लोगों को उसके पास आने की आज्ञा दी है? (3 नफी 18:25 देखो ।) हमारे लिए यीशु मसीह की गवाही देना क्यों महत्वपूर्ण है?

3. शिष्य लोगों को शिक्षा देते है और सेवा करते हैं । उद्धारकर्ता लोगों को शिक्षा देने और उनके लिए प्रार्थना करने को लौटता है ।

3 नफी 19 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो ।

- नफायटियों जिन्होंने उद्धारक को देखा था ने उसके स्वर्ग में जाने के बाद क्या किया? (3 नफी 19:1–3 देखो ।) उन्होंने जिन्होंने नफायटियों की उद्धारक की गवहियों को सुना था उन गवाहियों पर कैसा व्यवहार किया? हमारें पास उद्धारकर्ता की साक्षी देने के कौनसे अवसर हैं?

- अगले दिन जब भीड़ उद्धारकर्ता के आगमन के लिए प्रतीक्षा कर रही थी, बाहर प्रेरितों ने लोगों को शिक्षा दी, उनके साथ प्रार्थना की और उनकी सेवा की (3 नफी 19:4–8; ध्यान दें कि इसके पहले दिन उन्हें उद्धारकर्ता के निर्देश को पूरा किया, जैसा 3 नफी 18:16 में अंकित किया गया है)। शिष्यों ने किसके लिए प्रार्थना की? (3 नफी 19:6 देखो) आयत 10–14 और दुसरा शिक्षा देने का अतिरिक्त सुझाव भी देखो ।) आप क्या सोचते है कि शिष्यों ने इतनी उत्सुकता से क्यों सोचा कि उन्हें पवित्र आत्मा ही जानी चाहिए? (3 नफी 19:9)। यह क्यों ज़रूरी है कि हम पवित्र आत्मा प्राप्त करें?

- शिष्यों को प्रार्थना करने को निर्देश देने के बाद, यीशु अकेले प्रार्थना करने को “उनसे थोड़ा सा अलग चला गया” (3 नफी 19:17,19)। यीशु ने किसके लिए प्रार्थना की? (3 नफी 19:21,23 देखो । आप इस प्रार्थना की तुलना क्रूस पर चढ़नने से पहले यीशु की महान प्रार्थना से कर सकते है, जैसा यूहन्ना 17:20–23 में अंकित किया गया है ।) यह क्यों ज़रूरी है कि यीशु मसीह के अनुगमन कर्ता उसके और पिता के साथ “एक रहें”? हम उनके साथ एक कैसे हो सकते है?

- क्यों नफायटी शिष्यों की प्रार्थनाएँ प्रभु को अच्छी लगी थीं? (3 नफी 19:24–25 देखो । आप कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेंगे ।) हम अपनी स्वंय की प्रार्थनाओं में शिष्यों के उदाहरणों का अनुगमन कैसे कर सकते है?

- क्यों भीड़ यीशु के वचनों को सुन और समझ पाई जब उसने तीसरी बार प्रार्थना की? (3 नफी 19:31–33 देखें ।) खुला ह्रदय होने का क्या अर्थ है? हमें अपने ह्रदयों को खोलने के लिए क्या करना चाहिए ताकि आत्मा हमें सिखा सके?

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को याद कराओ कि नफायटी आशचर्यजनक बातों को उनके महान विश्वास (3 नफी 17:20; 19:35) और उनकी उत्साही प्रार्थना (3 नफी 19:6–9) के कारण देख और सुनने को आशिषित हुए थे । बताओ कि जब हम यीशु मसीह में विश्वास उपयोग करते हैं और अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रार्थनाओं में उत्साह से प्रार्थना करते हैं, प्रभु की आत्मा हमें उन सब में जो हम करते हैं के लिए हमें आशीष देखे और सहायता देने को होगी ।

जैसा आत्मा द्वारा मार्गदर्शित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रुपरेखा को परिशिष्ट करती है । आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. "हमेशा प्रार्थना करो और देखो" (3 नफी 18:15)

कक्षा के सदस्यों की 3 नफी 18:15, 18–19, 21 पढ़ने दो ।

- प्रार्थना हमें शैतान की लालचों से रक्षा करने में कैसे सहायता करती है? पारिवरिक प्रार्थना ने तुम्हारे परिवार को कैसे प्रेरित किया है? हम अपनी दैनिक पारिवारिक प्रार्थना की वचनबद्दता को कैसे बढ़ा सकते है?

2. "और उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की जिनकी उन्हें सबसे अधिक आभिलाषा थी" (3 नफी 19:9)

इससे पहले आप 3 नफी 19:9 की चर्चा करें, कक्षा के सदस्यों को कागज़ और पैन या पैन्सिल दें, और उन्हें छः बातों की सूची बनाने को कहो जिनकी उन्हें सबसे अधिक अभिलाषा है ।(यदि कागज़ और पैन या पैन्सिल उपलब्ध नहीं है, कक्षा के सदस्यों को छह वस्तुओं के बारे में सोचने को आमंन्त्रित करो जिनकी उन्हें सबसे अधिक अभिलाषा है ।) तब उन्हें सूची में उन वस्तुओं को काटने के लिए कहो जिनके लिए वे प्रार्थना करने में आरामदायक महसूस नही करते हैं । कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 19:9 पढ़ने को आमंन्त्रित करो ।

- नफायटी शिष्यों ने सबसे ज्यादा किसकी अभिलाषा की? हम नेकी और आत्मिक्ता के लिए अपनी अभिलाषा कैसे बढ़ा सकते हैं?

3. "और उन्होने यीशु से प्रार्थना की" (3 नफी 19:18)

साफ करने को कि नफायटी शिष्यों ने यीशु से प्रार्थना क्यों की (3 नफी 16:18, 24–25, 30), कक्षा के सदस्यों को 3 नफी 19:22 पढ़ने दें । आप एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ना चाहेंगे :

"एकमात्र धर्मशास्त्र घटना जिसमें प्रार्थना सीधी पुत्र को सम्बोधित की गई जब... और क्योंकि कि...! पवित्र व्यक्ति, एक पुनःरूत्थारित व्यक्ति के नाते, विनति करने वालों के सामने खड़ा था" (Doctrinal New Testament Commentary, 3 संस्करण [1966–73], 2:69)।

बताओ कि यीशु ने स्वयं इस समय पर पिता से प्रार्थना की थी (3 नफी 19:19–24, 27–29,31)। हमारी सारी प्रार्थनांए हमारे स्वर्ग के पिता को सम्बोधित होनी चाहिए और यीशु मसीह के नाम में समाप्त होनी चाहिए ।

“तब मैं उन्हें एकत्रित करूँगा”

पाठ
40

3 नफी 16; 20–21

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को इस्राएल को इक्कट्ठा करने के कार्य और सियोन को स्थापित करने के अन्तिम दिन कार्य को समझने में सहायता करना ।

तैयारी

1. 3 नफी 16, 20, और 21 के बारे में पढ़ो, चिंतन, और प्रार्थना करो । इन अध्यायों में नफायटियों को पुर्नरूत्थारित उद्धारकर्ता की शिक्षाएं शामिल हैं । इन अध्यायों में, प्रभु सुसमाचार की पुनःस्थापना और अन्तिम-दिनों में इस्राएल के घराने को इक्कट्ठा करके की शिक्षा और भविष्यावणी देता है ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: 3 नफी 29–30; मॉरमन 5:9–24; विश्वास के अनुच्छेद 1–10 ।

3. कक्षा से पहले, निम्नलिखित प्रश्नों को चॉकबोर्ड पर लिखो :

> इस्राएल का घराना क्या है?
>
> इस्राएल क्यों बिखराया गया?
>
> अन्य जातियां कौन हैं?
>
> अन्य जातियों को इस्राएल के बिखरने औऱ इक्कट्ठा होने के साथ क्या करना है?
>
> इस्राएल का इक्कट्ठा होना क्या है?
>
> यह दिखाने के लिए कि अन्तिम-दिन के इस्राएल का इक्कट्ठा होना आरम्भ हो गया है कौन सा चिन्ह दिया गया है?
>
> गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, इस्राएल के इक्कट्ठा करने की हमारी कौन सी जिम्मेदारियां हैं?

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग कर रहे हैं, कक्षा में कुछ या सभी निम्नलिखित वस्तुएं लाओ :

   क. चित्र याकूब अपने पुत्रों को आशीष देते हुए (सुसमाचार कला चित्र किट 122); जोसफ स्मिथ (62449; सुसमाचार कला चित्र किट 400); और बालक का बपतिस्मा होते हुए (62018) या बपतिस्मा (सुसमाचार कला चित्र किट 601) ।

   ख. मॉरमन की पुस्तक की एक प्रति ।

   ग. एक प्रचारक नाम पट्टी या अन्य वस्तु जोकि प्रचारक कार्य को दर्शाता हो ।

   घ. तुम्हारा और तुम्हारे परिवार की एक फोटो ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या अपनी स्वंय की गतिविधि का उपयोग करो ।

उन वस्तुओं को दिखाओ जो आप कक्षा में लाए हो (देखो “तैयारी”, वस्तु 4) । समझाओ कि ये सारी वस्तुएं आज के पाठ के महत्वपूर्ण भाग को दर्शाती हैं । कक्षा के सदस्यों को पाठ के दौरान इन वस्तुओं को याद रखने के लिए कहा और उन रास्तों के लिए देखने को कहा जिसमें वस्तुएं 3 नफी 16, 20, और 21 को सम्बन्धित हो सके ।

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सकें। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन पर लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करो जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो।

1. उद्धारक इस्राएल के घराने के बिखरने की भविष्यवाणी करता है।

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर लिखे पहले प्रश्न पर निर्देशित करो (देखो "तैयारी" वस्तु 3):

- इस्राएल का घराना का क्या है?

  समझाओ कि इस्राएल के घराने और इस्राएल को बदल दिया गया था (यदि आपने ध्यन गतिविधि को उपयोग किया है, आप शायद इस भाग को समझने के लिए याकूब अपने पुत्रों को आशिष देते हुए का चित्र दिखाना चाहोगे)। धर्मशास्त्रों में इस्राईल के घराने के सदस्यों को "प्रभु के अनुबन्धित लोग" (1 नफी 15:14) और "अनुबन्ध के बच्चे" (3 नफी 20:25–26) के नाते संदर्भ किया गया है नफायटी इस्राएल के घराने के थे, जैसे याकूब के पुत्र जोसफ के वशंज के नाते (1 नफी 5:14)।

समझाओ कि उद्धारकर्ता ने इस्राएल के बिखरने के बारे में बताया तब कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर लिखे दुसरे प्रश्न पर निर्देशित करो :

- इस्राएल क्यों बिखरा?

  कक्षा के सदस्य को 3 नफी 16:4 जोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो। कक्षा के अन्य सदस्यों को साथ साथ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर के लिए देखने को प्रोत्साहित करो। जब कक्षा के सदस्य प्रश्न की चर्चा करें, यह निश्चित करें कि वे समझें कि इस्राएल के घटाने के सदस्य "अपने अविश्वास के कारण पृथ्वी पर बिखरे थे"।

2. उद्धारक इस्राएल के घटाने की आत्मिक रूप से इक्ट्ठा होने भविष्यवाणी करता है।

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर तीसरे प्रश्न को निर्देशित करो।

- अन्य जातियाँ कौन हैं?

  समझाओ कि धर्मशास्त्र में, अन्यजातियों शब्द का उपयोग या तो उन लोगों को नियुक्त करने को उपयोग किया गया है जो इस्राएल के घटाने में नहीं जन्में हैं या राष्ट्र जो बिना सुसमाचार के हैं। इस पाठ में चर्चित अध्यायों में, शायद अन्य जाति को उन राष्ट्रों से संदर्भ किया गया है जो बिना सुसमाचार के हैं, हो सकता है उन राष्ट्रों में कुछ व्यक्ति याकूब के वंशज हों।

कक्षा के सदस्यों के घाने को चॉकबोर्ड पर चौथे प्रश्न को निर्देशित करो :

- अन्य जातियों को इस्राएल के बिखरने और इकक्ट्ठा होने के साथ क्या करना है?

  कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 16:7–9 और 21:1–5 पढ़ने को आमंन्त्रित करों। कक्षा के अन्य सदस्यों को प्रश्न के जवाबों को देखने के लिए साथ — साथ पढ़ने को प्रोत्साहित करो।

  उद्धारक की भविष्यवाणी पर जोर दो कि अन्य जातियों का इस्राएल के बिखरने में भूमिका है। उस भविष्यवाणी पर भी जोर दो कि अनततः अन्य जातियों के द्वारा ही इस्राएल पुनः गणित सुसमाचार प्राप्त करेगा और इक्कठ्ठा होगा।

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर लिखे पाँचवे प्रश्न पर निर्देशित करो :

- इस्राएल का इकक्ट्ठा होना क्या है?

कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 16:4, 12; 20:10–13 पढ़ने को आमंन्त्रित करो । कक्षा के अन्य सदस्यों को प्रश्न के जवाबों को देखने के लिए साथ — साथ पढ़ने को प्रोत्साहित करो । जब कक्षा के सदस्य प्रश्न की चर्चा करें, निश्चित करें कि वे निम्नलिखित को समझें :

इस्राएल इक्कट्ठा होगा जब लोग मुक्तिदाता और उसकी पुनःस्थापित सुसमाचार की गवाही को प्राप्त करते हैं और उसके गिरजाघर से जुड़ते हैं (यदि आपने ध्यान गतिविधि का उपयोग किया है, आप इस चर्चा के भाग के नाते बपतिस्मे के चित्र को दिखा सकते हैं)।

पुनःस्थापित गिरजाघर के शुरूआती दिनों में, इस्राएल के इक्कट्ठा होने का भाग प्रभु की आज्ञा थी कि उसके गिरजाघर के सदस्य उत्तरी अमरीका में सन्तों के संघठन से जुड़े, चाहें वह मिस्सूरी, इलनाय या सालट लेक घाटी में हो । भविष्य में, एक और संसारिक रूप, इक्कट्ठा होगा, जब इस्राएल के घराने के सदस्य उनकी पैतृक देशों में जमा होंगे (इस पाठ का भाग 3 देखें)। जो इकक्ट्ठा होना अभी हो रहा है वह आत्मिक इक्ट्ठा होना है ।

अध्यक्ष स्पेन्सर डब्लयू. किम्बल ने समझाया था : “इस्राएल की इकक्ट्ठा होना तब पूरा होता है जब दूर के देशों के लोग सुसमाचार को स्वीकार करें और अपने स्वाभाविक देशों में रहें । मैक्सिकन वासियों का जनसमुह मैक्सिको में है; स्कैन्डेनेविया में, उत्तरी देशों में रहने वालों के लिए; जर्मन वासियों के लिए इक्ट्ठा होना जर्मनी में है; और पॉलिनसीयों के लिए, टापुओं में है; ब्राज़ील वासियों के लिए, ब्राज़ील में; अर्जेंटीना वासियों के लिए अर्जेंटीना में” (Conference Report, अप्रैल 1975, 4; या Ensign, मई 1975, 4 में)।

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को चॉकबोर्ड पर लिखे छठे प्रश्न पर निर्देशित करो :

- यह दिखाने को कौन से चिन्ह दिए गए हैं कि इस्राएल का अन्तिम-दिन का इक्ट्ठा होना आरम्भ हो गया है?

  कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 21:2–7 और 29:1–2 पढ़ने को आमंन्त्रित करो, प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए, कक्षा के अन्य सदस्यों को साथ — साथ पढ़ने को प्रोत्साहित करो ।

- अन्य जातियों को नफायटियों के ‘वचन’ और कर्म कैसे आए? (मॉरमन की पुस्तक के अनुवाद के द्वारा यदि आपने ध्यान गतिविधि का उपयोग किया है, इस चर्चा के भाग के रूप में आप मॉरमन की पुस्तक की प्रति का उपयोग करना चाहेंगे) कौनसी कुछ भूमिकाएं हैं जो मॉरमन की पुस्तक इस्राएल के इक्कट्ठा होने में निभाती है? (कुछ उदाहरणों के लिए, 3 नफी 16:4, 12 और 20:10–13 की तुलना 1 नफी 6:3–4 और मॉरमनकी पुस्तक के मुख्य पृष्ठ के साथ तुलना करो । जोर दो कि मॉरमन की पुस्तक को प्रभु के अनुबन्धों को सिखाने और सब लोग को सहमत करने को लिखी गई है कि यीशु ही मसीह है ।)

- प्रभु ने एक सेवक के बारे में बात की थी जो मॉरमन की पुस्तक को लाने के अदभुत और महान कार्य में सहायता करेंगा (3 नफी 21:9–10)। यह सेवक कौन था? (जोसफ स्मिथ । यदि आपने ध्यान गतिविधि का उपयोंग किया है, आप इस चर्चा के भाग के नाते जोसफ स्मिथ के चित्र को दिखाना चाहेंगे ।)

  आप यह बताना चाहेंगे कि जोसफ स्मिथ याकूब का वास्तविक वंशज था (2 नफी 3:3–8, 11–12), परन्तु वह एक अन्यजाति राष्ट्र में रहता था । सुसमाचार की पुनःस्थापना और मॉरमन की पुस्तक को लाने में उसका कार्य प्रभु के उस वादे का पूरा होना थ कि “सच्चाई अन्यजातियों के पास आएगी ।” (3 नफी 16:7)।

- कक्षा के सदस्य को 3 नफी 16:11–12 जोर से पढ़ने दो । अन्यजातियों के द्वारा सुसमाचार की पूर्णता की पुनःस्थापना के बाद प्रभु ने क्या करने का वादा किया? (उसने इस्राएल के घराने के साथ अपने अनुबंध को याद रखने का वादा किया ।)

- जिस अनुबन्ध को प्रभु ने याद रखने का वादा किया था वह अब्राहम अनुबन्ध था (3 नफी 20:25, 27, 29, 21:4, मॉरमन 5:20) । अब्राहम अनुबन्ध के कौनसी आशीषें और जिम्मेदारियाँ हैं? (उत्पति 17:1–8, अब्राहम 2:6, 9–11 देखो ।)

- उन अन्यजतियों का क्या होगा जो पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे? (2 नफी 30:2, 3 नफी 16:13, 21:6, 22 देखो । वो सारे लोग जो पश्चाताप करेंगे और बपतिस्मे के द्वारा प्रभु के पास आएंगे उनकी गिनती उसके अनुबन्ध लोगों में होगी ।)

  अध्यक्ष जोसफ फील्डींग स्मिथ ने कहा थाः "हर व्यक्ति जो सुसमाचार को स्वीकार करता है वह इस्राएल के घराने का बनता है । अन्य शब्दों में, वे चुनी हुई पीड़ी बनते हैं, या इसहायक और याकूब के द्वारा अब्राहम के बच्चे बनते हैं जिनसे वादा किया गया था । जो गिरजाघर के सदस्य बनते हैं उनकी अधिक मात्रा इफरम, जोसफ के पुत्र द्वारा अब्राहम के वास्ताविक बच्चे बनते हैं । वो जो अब्राहम और इस्राएल के वास्ताविक वंशज नहीं हैं उन्हें ऐसा बनना चाहिए, और जब उनका बपतिस्मा होता है और प्रमाणीकरण होता है वे वृक्ष में जोड़ दिए जातें हैं और वापिस होने के नाते सारे आधिकारों और अवसरों के योग्य होते हैं" (Doctrines of Salvation, ब्रूस आर. मैकान्की द्वारा संक; 3 संस्क. [1954–56], 3:246) ।

कक्षा के एक सदस्य को चॉकबोर्ड पर लिखे साँतवे प्रश्न को पढ़ने को आमंन्त्रित करो :

- गिरजाघर के सदस्य होने के नाते, इस्राएल के इक्कठ्ठा करने में हमारी कौनसी जिम्मेदारियाँ हैं?

  कक्षा के सदस्यों को प्रश्न का उत्तर देने का अवसर दो । आप चर्चा को अधिक प्रोत्साहित करने को नीचें दिया गया प्रश्न पूछ सकते हो । यदि आपने ध्यान गतिविधि का उपयोग किया है, आप चर्चा के दौरान फोटो और प्रचारक नाम पट्टी (या अन्य वस्तु) दिखाना चाहेंगे ।

- गिरजाघर का उद्देश्य सब लोगों को मसीह के पास आने को आमंन्त्रित करने का है । हम इस उद्देश्य को सुसमाचार का प्रचार, मृतकों की मुक्ति और सन्तों को परिपूर्ण करने के द्वारा पूरा कर सकते हैं । गिरजाघर का उद्देश्य इस्राएल के इक्कठ्ठा होने को कैसे सहायता कर सकता है?

3. उद्धारक इस्राएल के घराने के संसारिक रूप से इक्कठ्ठा होने की भविष्यवाणी करता है ।

- कक्षा के सदस्य को 3 नफी 16:16 और 20:14 जोर से पढ़ने दो । इन आयतों के अनुसार, प्रभु ने नफायटियों को कौनसा विशेष वादा दिया? (उन्हें सम्पति के नाते अमरीका के राज्य दिए जाएगें । 2 नफी 1:5–7 भी देखों ।) इस वादे के साथ कौनसी जिम्मेदारियाँ जुड़ी थी? (इनोस 1:10; एथर 2:8–9 देखो ।)

- कक्षा के सदस्यों को 3 नफी 21:22–29 से आयतों को पढ़वे की बारी लेने दो । इन आयतों के अनुसार, अन्तिम दिनों में सम्पति के इस राष्ट्र में क्या होगा? नया येरूशलेम कहलाया जाने वाले शहर का निमार्ण होगा ।)

बताओ कि यरुशलेम के असली शहर की भी पुनःस्थापना होगी (3 नफी 20:29–34) । यह राष्ट्र यहूदियों को सम्पति के नाते दिया जाएगा ।

- उद्धारकर्ता ने कहा था कि वह अपने लोगों को इक्कठ्ठा करेगा और उनके बीच दुबारा सियोन को स्थापित करेगा (3 नफी 21:1) । जब सियोन शब्द अक्सर विशेष स्थानों को संदर्भ होता है, यह मन और ह्रदय की एक स्थिति भी है । धर्मशास्त्रों में सियोन का वर्णन कैसे किया गया है? (सि. और अनु. 97:21 और मूसा 7:18–19 कुछ उदाहरणों के लिए देखों ।) आज हम हमारे घरों, वार्डो, और स्टेकों में सियोन कैसे स्थापित कर सकते हैं?

निर्ष्कष

कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि अन्तिम दिनों में, शिर्षक इस्राएल का घराना उन सबको सम्मलित करता है जो पश्चाताप करते हैं, यीशु मसीह का अनुगमन करते हैं, और उसके गिरजाघर में बपतिस्मा लेते हैं । कक्षा के सदस्यों को ऐसा जीने को प्रोत्साहित करो ताकि वो प्रभु के अनुबन्ध लोगों के भाग के नाते योग्य हों । जैसा आत्मा द्वारा मार्गदर्शित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

“उसने उन्हें सब बातों की व्याख्या सुनाई”

पाठ
41

3 नफी 22–26

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को भविष्यवक्ताओं के वचनों को सत्यनिष्ठा से खोजने को सहायता करने को ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ों, चिंतन और प्रार्थना करो :

   क. 3 नफी 22, 23:1–5 उद्धारक ने अन्तिम दिनों में इस्राईल के घटाने के बारे में मशायाह की भविष्यवाणियों के कुछ उदाहरण दिए थे । उसने लोगों को यशायाह और अन्य भविष्यवक्ताओं के वचनों को खोजने की आज्ञा दी थी ।

   क. 3 नफी 23:6–14; 24; 25 । उद्धारकर्ता ने लोगों को अपने अभिलेखों में लमनाईटी सैमुएल और मलाकी के वचनों को जोड़ने की आज्ञा दी।

   ख. 3 नफी 26 । उद्धारक ने शुरूआत से लेकर उस समय तक सब बातों की व्याख्या की जब वह अपनी महिमा में आएगा ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई : यशायाह 54; मलाकी 3–4 ।

3. यदि चित्र मसीह अभिलेखों के लिए पूछता है उपलब्ध है, इसे पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयार रहो (सुसमाचार कला चित्र किट 323) ।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या आपकी स्वयं की एक गतिविधि को उपयोग करो ।

निम्नलिखित शब्दों को चॉकबोर्ड पर लिखो : ढूंढों, चिंतन करो, प्रार्थना करो ।

कक्षा के सदस्यों को पूछो कि कैसे ये शब्द हमारे धर्मशास्त्र अध्ययन से सम्बन्धित हैं ।

समझाओ कि यह पाठ दिखाता है कि कैसी उद्धारकर्ता ने मुल्यवान सच्चाइयों की शिक्षा देने के लिए धर्मशास्त्रों का उपयोग किया था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके । चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन पर लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करो जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. उद्धारक ने इस्राएल के घराने के बारे में यशायाह की भविष्याणियों के कुछ उदाहरण दिए ।

3 नफी 22; 23:1–5 की चर्चा करो । कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें जोर से पढ़ने को आमंन्त्रित करो । समझाओ कि अध्याय 22 में उद्धारक यशायाह की शिक्षाओं के एक सम्पूर्ण अध्याय (यशायाह 54) को उद्धारित करता है अन्तिम—दिनों में सियोन की महिमा के बारे में ।

- यशायाह ने इस्राएल के घराने की व्याख्या की : “अपने तम्बू के स्थान को और बढ़ा कर और अपने निवास स्थान के पर्दों को फैला” (3 नफी 22:2)। तम्बू और निवास स्थान किसे प्रतिरूप करते हैं? (नीचे दिया गया

उदाहरण देखो ।) आप क्या सोचते हैं कि “अपने तम्बू के स्थान को बढ़ा कर” और “अपने निवास स्थान के पर्दों को फैला” का क्या अर्थ है?

अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बैनसन ने कहा था :

“भविष्यवक्ताओं ने अन्तिम दिनों के सियोन की तुलना एक बड़े तम्बू से की जिसने पृथ्वी को ढक रखा है । वह तम्बू रस्सियों द्वारा स्टेकों से खड़ा है । वो स्टेक, बेशक, वर भिन्न भूगोलिक संगठन हैं जो पूरी पृथ्वी पर फैले हुए है । इस समय, इस्राएल सियोन के भिन्न स्टेकों में इक्कठ्ठा किया जा रहा है...

“....स्टेक सन्तों के लिए दोनों दिखने वाले और न दिखने वाले शत्रुओं से एक रक्षा है । रक्षा पौरोहित्य कड़ीयों द्वारा उपलब्ध कराई गई वह दिशा हैजो गवाही को मज़बूत करती है और पारिवारिक मज़बूती और व्यक्तिगत नेकता को स्थापित करती है” (“Strengthen Thy Stakes,” Ensign, जन. 1991, 2, 4)।

- हम व्यक्तिगत और परिवार के नाते यह निश्चित करने को कि हमारे स्टेक एक शरण हों और बूराई के विरूद्ध रक्षा हों क्या कर सकते है?

- यशायाह ने प्रभु और इस्राएल के घराने के बीच सम्बन्ध को कैसे वर्णित किया है? (3 नफी 22:4–10 देखो । उसने प्रभु को पति के नाते और इस्राएल को पत्नी के नाते वर्णित किया है ।) यह वर्णन अपने लोगों के प्रति प्रभु की भक्ति के बारे में हमें क्या सीखा सकता है?

  एल्डर जैफरी आर हॉलैण्ड ने सिखाया था : “यहोवा को दूल्हें के नाते और इस्राएल को दुल्हन के नाते कलपना धर्मशास्त्र में सबसे सामान्य उपयोग किया जाने वाला रूपक है, प्रभु और उसके भविष्यवक्ताओं द्वारा ईश्वर और अनुबन्ध के बच्चों के बीच रिश्ते का वर्णन करने को उपयोग किया गया.... मसीह, एक अवसर पर, धर्मशास्त्र इस्राएल के साथ सही तौर पर क्रोधित हुआ, परन्तु यह हमेशा एक छोटा और अस्थाई.... एक छोटा सा क्षण रहा । करूणा और दया हमेशा लौटती है और बहुत सुनिश्चित तरीके से उजागर होती है । पर्वत और पहाड़ियाँ शायद गुम हो जाए । महान समुद्रओं का पानी शायद सूख जाए.... परन्तु प्रभु की दयालुता और शान्ति उसके अनुबन्ध के लोगों से कभी नदी ली जाएगी । उसने स्वर्गीय शपथ के साथ कसम ली है कि वह उनके साथ कभी भी क्रोधित नहीं होगा” (Christ and the New Covenant [1997], 290)।

- प्रभु ने उस स्थान का वर्णन कैसे किया है जहाँ अन्तिम दिनों में इस्राएल का घराना इक्कठ्ठा किया जाएगा? (3 नफी 22:11–12 देखो; प्रकाशितवाक्य 21:18–21 भी देखो ।) उन से क्या वादे किए गए हैं जो इस स्थान में रहेंगे? (3 नफी 22:13–17 देखो ।) यह वादे उन्हें मजबूती कैसे देते हैं जो पीड़ित हैं?

- इन भविष्यवाणियों को यीशु द्वारा उद्धरित करने के बाद, उसने लोगों से कहा, “तुम्हें इन बातों को ढूढना चाहिए” (3 नफी 23:1) । सिर्फ पढ़ने की बजाय धर्मशास्त्रों को ढूंढने का क्या अर्थ है?

  एल्डर हैनरी बी. आयरिंग ने कहा थाः “हम परमेश्वर के वचन को सिर्फ धर्मशास्त्रों के शब्दों को पढ़ने के द्वारा नहीं परन्तु उन्हें अध्ययन के द्वारा के बढ़ाते हैं । हम शायद कुछ शब्दों को चिंतन के द्वारा अधिक पोषक हो सकते हैं, पवित्र आत्मा को उन्हें हमारे लिए कोष बनाने को, न कि धर्मशास्त्र के सारे अध्यायों को जल्दी और बिना समझे पढ़ने से” (Conference Report में, अक्तू. 1997, 115; या Ensign, नव. 1997, 84)।

- क्या आप आशिषित हुए जब आपने धर्मशास्त्रों का अध्ययन लिया है? (आप शायद कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटते को आमंन्त्रित करना चाहेंगे जिसमें धर्मशास्त्र की विशेष आयत ने व्यक्तिगत समस्याओं के उत्तर में अर्थपूर्ण बनें हों या प्रेरणा व परिजान उपलब्ध कराया हो ।)

- यह क्यों महत्वपूर्ण था कि लोग उद्धारकर्ता के वचनों को अंकित करें? (3 नफी 23:3–5) देखो ।

- उद्धारक ने लोगों को आज्ञा दी,"भविष्यवक्ताओं को ढूंढो क्योंकि अनेक हैं जो इन बातों की गवाही देते हैं" (3 नफी 23:5)। भविष्यवक्ता किसकीगवाही देते हैं? आप पुरातन और आधुनिक भविष्यवक्ताओं की गवाहियों द्वारा कैसे मज़बूत हुए हैं?

2. उद्धारक ने लोगों को अपने अभिलेखों में जोड़ने के आज्ञा ही ।

3 नफी 23:6–14, 24, 25 से चुनी हुई आयतें को पढ़ों और चर्चा करो । लोगों को उन बातों को लिखने की आज्ञा देने के बाद जो उसने उन्हें सिखाई थी, यीशु ने अन्य धर्मशास्त्रों के बारे में सिखाना जारी रखा । यदि आप चित्र यीशु अभिलेखों के लिए पूछता है, उपयोग कर रहें हैं, उसे अभी दिखाओ ।

यीशु ने नफायटियों को लमनाईटी शमुएल द्वारा दी गई भविष्यवाणी को अपने अभिलेखों में जोड़ने की आज्ञा दी । इस भविष्यवाणी में, शमुएल ने कहा कि "बहुत से सन्त मृत्यु से उठ जाएगें, और बहुतों को दिखेंगे, और उनकी सेवा करेंगे" (3 नफी 23:6–13) । आप क्या सोचते हैं यह विशेष अभिलेख महत्वपूर्ण क्यों था? (उत्तर में शामिल हो सकता है कि शमुएल की भविष्यवाणी का पूरा होना पूर्नरुतथान की वास्तविक्ता की साक्षी देती है ।)

- यीशु का लोगों को शमुएल की भविष्यवाणी को लिखने के लिए कहने के बाद, उसने उन्हें क्या करने को आज्ञा दी? (3 नफी 23:14 देखो ।) किन विशेष तरीकों से हम अधिक प्रश्न से उद्धारकर्ता के वचनों की शिक्षा दे सकते हैं?

- यीशु ने लोगों को भविष्यवक्ता मलाकी के कुछ वचनों को भी लिखने की आज्ञा दी (3 नफी 24:1)। मलाकी के वचन नफायटियों के अभिलेखों से अनुपास्थित क्यों थें? (मलाकी पूराने नियम का भविष्यवक्ता का जिनके वचन पीतल की पट्टीयों पर सम्मिलित नहीं लिए गए थे क्योंकि वह लेही के येरूशलेम छोड़ने के करीब 200 वर्ष तक नहीं दिया था ।

- मलाकी की कौनसी शिक्षाएं हमारे लिए विशेष महत्व की है? (उस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए कक्षा के सदस्यों को 3 नफी 24:1, 8–18 और 25:1–6 पढ़ने दो । आप कक्षा को चार समुहों में बाँटना चाहेंगे । प्रत्येक समुह को वर्णन करने के लिए निम्नलिखित आयतों में से एक को देखनेके लिए आंमन्त्रित करो जिसे मलाकी ने सिखाया था । तब आयतों की चर्चा करो जैसे दिखाई गई है ।)

  क. 3 नफी 24:1, मलाकी 3:1 की तुलना करो । इत क्या है जिसे प्रभु के पुनः आगमन के लिए रास्ता बनाने को भेजा गया है? (देखें सि. और अनु. 45:9 देखो । पुनःस्थापित सुसमाचार, स्वर्गीय इत द्वारा पुनःस्थापित कुंजियों और शक्तियों सहित ।)

  ख. 3 नफी 24:8–12; मलाकी 3:8–12 की तुलना करो । इन आयतों में उनसे कौनसी आशीषें का वादा किया गया है जो दसवांश और भेंटे देते हैं? आपको कैसे आशीष मिली है जब आपने दसवांश और भेटें दी है?

  ग. 3 नफी 24:13–18; मलाकी 3:13–18 की तुलना करो । कुछ लोग क्यों विश्वास करते हैं कि परमेंश्वर की सेवा करना व्यर्थ है"? (3 नफी 24:14–15 देखो ।) हम हमारे विश्वास में इढ़ कैसे रह सकते हैं जबकि बूराई फल फूलती प्रतीत हो?

  घ. 3 नफी 25:1–6; मलाकी 4:1–6 की तुलना करो । बिना जड़ या शाखा के टुटने का क्या अर्थ है? (जड़ो को अपने अभिवावक और पूर्वजों और शाखाओ को अपने बच्चे और वंश मानो । हमारे जड़ो और शाखाओं के साथ मिलने को, हमें मन्दिर धर्मविधियों को प्राप्त करना चाहिए ।) प्रभु ने क्या कहा है कि वह पुनःआगमन से पहले किसे भेजेगा? (एलिय्याह कब और कहाँ लौटेगा? सि. और अनु. 110:13–16 देखो ।) उसने कौनसी कुंजियों को पुनःस्थापित किया है? (मुहरबन्द शक्ति की कुंजियों को, जो हमारे लिए हमारे पूर्वज और वंशजो के साथ कितने के मार्ग को उपलब्ध कराता है ।)

3. उद्धारक ने आरम्भ से अभी तक की बातों का वर्णन किया ।

3 नफी 26 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो ।

- नफायटियों को मलाकी की भविष्यवाणियाँ की शिक्षा देने के लिए उद्धारक ने क्या कारण दिया? (3 नफी 26:2 देखो ।) तुम्हारे लिए मलाकी की कौनसी शिक्षा विशेष महत्व की है?

- मलाकी की भविष्यवाणियों की चर्चा करने के बाद उद्धारकर्ता ने लोगों को क्या सिखाया? (3 नफी 26:1, 3–5 देखो । यदि ज़रूरी हो, विस्तार से समझायें ।) हमें सुसमाचार को "आरम्भ से क्यों दिखाना चाहिए, जैसे यीशु ने किया था?

- इस अभिलेख में, मॉरमन ने सिर्फ "निचले हिस्से" को सम्मिलित किया था जिसकी शिक्षा यीशु ने लोगों को भी थी (3 नफी 26:8) । कैसे सिर्फ यह छोटी सा हिस्सा विश्वास की परिक्षा लेता है? हम "महान वस्तुएं कैसे प्राप्त कर सकते है?" (3 नफी 26:9 देखो ।)

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू किमबल ने कहा था: "कई वर्षों के दौरान बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा है," आप क्या सोचते हैं हम मॉरमन की पुस्तक के अभिलेख का शेष हिस्सा कब प्राप्त करेंगे? और मैंने कहा, "कलिसिया में कितने पट्टीयों के मुहरबन्ध हिस्से को पढ़ना चाहते हैं? और तकरीबन हमेशा 100 प्रतिशत जवाब होता है । और तब मैं उसी कलिसिया से पूछता हूँ, "तुम में से कितनों ने वह हिस्सा पढ़ा है जो हमारे लिए दिया गया है? और बहुत से हैं जिन्होंने मॉरमन की पुस्तक केउस हिस्से को नही पढ़ा है जो बिना मुहरबन्ध के हमारे पास है । हम अक्सर आशचर्य जनक रुप से उसे प्राप्त करने की प्रतिक्षा करते हैं जो प्राप्त नहीं किया जा सकता है । मैंने बहुत से लोगों को पाया है जो उच्च नियमों को जीना चाहतें हैं जब कि वे निम्न नियमों को नहीं जीते है" (The Teachings of Spencer W. Kimball, एडवर्ड एल. किम्बल [1982], 531–32 संक)।

- कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 26:14, 16 पढ़ने को आमंन्त्रित करो । यह आयतें उद्धारकर्ता बच्चों से कैसा व्यवहार करता है के बारे में क्या सूचित करती हैं?

- नफायटियों जिन्होंने इन घटनाओं को देखा था ने एक दुसरे के साथ कैसा व्यवहार किया था? (3 नफी 26:19–21 देखों ।) हम उनके उदाहरणों का अनुगमन अपने विवाहों, परिवारों, वार्डो, और स्टेकों में कैसे कर सकते हैं?

निर्ष्कष

समझाओ कि उद्धारकर्ता ने हमें धर्मशास्त्रों की महता को उन्हें उद्धारित करके दिखाया है, लोगों को उन्हें खोजने को आज्ञा, और उन्हें जोड़ने के द्वारा दिखाया है । जब हम धर्मशास्त्रों के बारे में ढूंढते, चिंतन, और प्रार्थना करते हैं, हम उन्हें अधिक गहटाई से समझ सकते हैं और दुसरों को इनकी अधिक प्रभाव से शिक्षा दे सकते हैं ।

जैसा आत्मा द्वारा निर्देशित हो, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो ।

"यह मेरा सुसमाचार है"

पाठ
42

3 नफी 27–30, 4 नफी

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को यीशु मसीह के मौलिक सिद्धान्तों को समझने में सहायता करना और उन्हें यह शिक्षा देना कि अनन्त और सच्चे सुख का एकमात्र रास्ता सुसमाचार के अनुसार जीवन को जीना है ।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिंतन और प्रार्थना करो :

क. 3 नफी 27 । उद्धारक अपने बारह नफायटी शिष्यों को गिरजाघर को उसके नाम पर बुलाने की आज्ञा देता है । वह अपने सुसमाचार का वर्णन करता है ।

ख. 3 नफी 28 । एक, एक करके, उद्धारकर्ता अपने बारह नफायटी शिष्यों को उनके हृदय की अभिलाषाओं को पूरा करता है । तीन शिष्यों की अभिलाषाएं और शक्ति दी गई कि वह उद्धारकर्ता के अपनी महिमा में लौटने तक सुसमाचार का प्रचार करने को पृथ्वी पर होंगे ।

ख. 4 नफी 1 । सारे लोग धर्मपरिवर्तित हैं, और उन्होंने परिपूर्ण शान्ति की संस्था को स्थापित किया । बहुत वर्षों बाद, लोगों का बड़ा हिस्सा अविश्वास में पड़ा और सुसमाचार को अस्वीकार किया ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई : सिद्धान्त अनुबन्ध 39:1–6

3. यदि चित्र मसीह तीन नफायटियों के साथ उपलब्ध है, इसे पाठ के दौरान उपयोग करने को तैयार रहो (सुसमाचार कला चित्र किट 324)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ आरम्भ करने के लिए निम्नलिखित या अपनी स्वयं की एव गतिविधि को उपयोग करो ।

चॉकबोर्ड पर लिखो *मॉरमन गिरजाघर* । कक्षा के सदस्यों को शान्ति से इस उपनाम के बारे में अपनी भावनाओं को सोचने दो । तब अध्यक्ष बॉयड के. पैकर द्वारा निम्नलिखित बयान पढ़ें :

"दूसरे लोग हमें मॉरमन के नाते संदर्भ करते हैं । मुझे बूरा नहीं लगता यदि वे यह शीर्षक का उपयोग करते हैं । तो भी, कभी कभी हम अपने आप ही कहते हैं 'मॉरमन गिरजाघर' । मैं यह नहीं समझता कि हमारे लिए ऐसा करना उत्तम है "(The Peaceable Followers of Christ," *Ensign*, अप्रैल 1998, 64)।

- हमारे लिए अपने आपको "मॉरमन गिरजाघर" के नाते संदर्भ करना उत्तम क्यों नहीं है?

  प्रथम अध्यक्षता ने कहा था :"ध्यान रहे कि यह यीशु मसीह का गिरजाघर है; कृप्या इस सत्य को दुसरों के साथ मेलजोल करते समय जोर देकर बताएं.... हम महसूस करते हैं कुछ लोग 'मॉरमन गिरजाघर' शब्द के बार बार उपयोग द्वारा भटकते हैं" ("Policies and Announcements," Ensign, मार्च 1983, 79)।

चॉकबोर्ड से *'मॉरमन गिरजाघर'* मिटाओ । कक्षा के सदस्यों को कहो कि 3 नफी 27 नफायटी शिष्यों को उसके गिरजाघर के बारे में यीशु के निर्देश को सम्मिलित करता है ।

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्रों, वाक्यों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन पर लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बाँटने को प्रोत्साहित करो जो कि धर्मशास्त्रीय नियमों से सम्बन्धित हो ।

1. उद्धारकर्ता अपने नफायटी शिष्यों को गिरजाघर को उसके नाम से बुलाने की आज्ञा देता है । वह अपने सुसमाचार का वर्णन करता है ।

3 नफी 27 से चुनी हुई आयतें पढ़ों और चर्चा करो ।

- यीशु के नफायटी शिष्य प्रार्थना और उपवास में एकत्रित थे जब यीशु उनके पास आया और पूछा, "तुम मुझसे क्या चाहते हो जो मैं तुम्हें हुँ?" (3 नफी 27:4–9 देखो ।)
- प्रभु ने आज्ञा दी है कि उसके पुनःस्थापित गिरजाघर को, नफायटियों के बीच उसके गिरजाघर की तरह, उसके नाम से पुकारा जाए (सि. और अनु. 115:4)। यह हमारे लिए याद रखना क्यों महत्वपूर्ण है कि गिरजाघर को यीशु मसीह के नाम से बुलाया जाए?
- यीशु ने कहा था, "तुम जो भी कुछ करो, तुम तेरे नाम में करो" (3 नफी 27:6)। कौन सी कुछ बातें हैं जो हम यीशु मसीह के नाम में करते हैं? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को पूछने के अतिरिक्त, आप नीचे दिया गया उद्धरण पढ़ो)।

  अध्यक्ष बोयड के. पैकर ने कहा था :

  "हर प्रार्थना जो हम उसके नाम में करते हैं । हर धर्मविधि जो उसके नाम में की गई । हर बपतिस्मा, प्रमाणीकरण, आशीष, धर्मविधि, हर संदेश, हर गवाही उसके पवित्र नाम के साथ समाप्त की गई । यह उसके नाम में है जिससे हम बीमार को चंगा करते हैं और अन्य चमत्कार करते हैं जिनके बारें में हम बोल नहीं सकते ।

  "प्रभु भोज में हम अपने उपर मसीह का नाम लेते है । हम उसे याद रखने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अनुबन्ध करते हैं । वह उस सब में उपस्थित है जिसमें हम विश्वास करते हैं" ("The Peaceable Followers of Christ," Ensign, अप्रैल 1998, 64)।
- यीशु ने सिखाया था कि उसके नाम से बुलाए जाने में, उसके गिरजाघर को [उसके] सुसमाचार पर निर्मित होना चाहिए ।" उसने कहा था, "अगर गिरजाघर मेरे सुसमाचार पर बना होगा तब पिता भी अपने कामों को उसमें दिखाएगा" (3 नफी 27:10)। पिता के कार्य कौन से हैं? (कुछ उतरों के लिए, 3 नफी 21:1–9, 24–29, मूसा 1:39 देखो ।) आपने इन कार्यों को अन्तिम-दिन के सन्तों के यीशु मसीह के गिरजाघर में कैसे देखा है?

बताओ कि जब अन्तिम-दिन सन्त अपनी गवाहियों को देते हैं, वे अक्सर कहते हैं कि वे जानते हैं कि सुसमाचार सच्चा है । कक्षा के सदस्यों को शान्ति से सोचने दो कि वे कैसे जवाब देंगे यदि, कहने के बाद "मैं जानता या जानती हूँ सुसमाचार सच्चा है," उनसे पूछा गया, "सुसमाचार क्या है?"

चॉकबोर्ड पर लिखो *"यह मेरा सुसमाचार है"* । समझाओ कि यीशु के कहने के बाद कि उसके गिरजाघर को उसके सुसमाचार पर निर्मित होना चाहिए, उसने अपने शिष्यों को अपने सुसमाचार की सम्पूर्ण परिभाषा दी । कक्षा के सदस्यों को 3 नफी 27:13–22 में आयतों को पढ़ने में बारी लेने दो, यीशु मसीह के सुसमाचार के विभिन्न पहलुओं के लिए ढूंढने को । आप शायद कक्षा के एक सदस्य को चॉकबोर्ड पर जवाबों को लिखने के लिए आमंत्रित करना चाहेंगे । कुछ संभावित जवाब आगे है :

क. यीशु का पिता की इच्छा को समर्पण (3 नफी 27:13)
ख. प्रायश्चित (3 नफी 27:14)
ग. पुर्नरूत्थान (3 नफी 27:14–15)

घ. न्याय (3 नफी 27:14–15

च. पश्चाताप (3 नफी 27:16, 19–20)

छ. बपतिस्मा (3 नफी 27:16,20)

ज. यीशु मसीह में विश्वास (3 नफी 27:19)

झ. पवित्र आत्मा का उपहार (3 नफी 27:20)

ठ. अन्त तक करना (3 नफी 27:16–17, 19)

- यीशु ने उनसे क्या वादा किया है जो उसकी सुसमाचार के अनुसार जीते हैं? (3 नफी 27:21–22 देखो ।)
- यीशु ने अपने शिष्यों को पूछा, "तुम किस प्रकार के मनुष्य बनना चाहते हो?" इस प्रश्न का क्या जवाब था? (3 नफी 27:27 देखो । कक्षा के सदस्यों को शान्ति से यह सोचने को आमंन्त्रित को कि वे उद्धारकर्ता की तरह बनने के लिए क्या कर सकते हैं ।)

2. उद्धारकर्ता अपने बारह शिष्यों की अभिलाषाओँ को पूरा करता है । तीन शिष्य उसके पुनःआगमन तक पृथ्वी पर रहने के लिए चुने जाते हैं ।

3 नफी 28 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो । समझाओ कि उद्धारकर्ता के अपने पिता के पास लौटने से पहले, उसने अपने शिष्यों से एक-एक करके बात की और पूछा कि वह उससे क्या अभिलाषा रखते हैं । नौ ने कहा कि उनकी सेवा एक विशेष आयु पर आकर समाप्त हो जाए और कि वे उसके पास उसके राज्य में शीघ्र ही चले जाएँ । अन्य तीन अपने अभिलाषा को व्यक्त करने में झिझक रहें थ, परन्तु उद्धारकर्ता उनके विचारों को जानता था (3 नफी 28:1–5)। यदि आप चित्र यीशु तीन नफायटियों के साथ उपयोग कर रहें हैं, इसे अभी दिखाओ ।

- अन्तिम तीन नफायटी शिष्यों की क्या अभिलाषाएं थी? (3 नफी 28:7–9 देखो । वे पृथ्वी पर रहना चाहते थे और दुनिया के अन्त तक मसीह के पास लोगों को लाना चाहते थे ।) यीशु ने कहा कि ये शिष्य अपनी अभिलाषा के कारण "अधिक आशिषित" थे (3 नफी 28:7) हम इस बयान से क्या सीख सकते हैं? (देखें सि. और अनु. 15:6, 16:6, 18:10–16 देखो ।)
- उनकी विनति के जवाब में, तीन शिष्य रूपान्तरित हो गए, जिसका अर्थ है कि उनके शरीर बदल गए थे यानि वो "परमेश्वर की बातों को देख सके" (3 नफी 28:13–15)। तब उनको छुपा दिया गया । 3 नफी 28 छुपे हुए व्यक्तियों के बारे में क्या शिक्षा देता है? (3 नफी 28:7–40 और नीचे दी गई सूची देखो । आप कक्षा को तीन समुहों में बाँटना चाहेंगे, एक समुह को आयत 7–17 पढ़ने को नियुक्त करके, दुसरे समुह को आयत 18–28 पढ़ने दो, और तीसरे समुह को आयत 29–40 पढ़ने दो । प्रत्येक समुह को छुपे हुए व्यक्तियों के बारे में नियुक्त आयतों पर अपनी रिपोर्ट देने दो ।)

  क. छुपे हुए व्यक्ति कभी भी मृत्यु को अनुभव नहीं करते या मृत्यु के दर्द को सहते (3 नफी 28:7–8, 38)।

  ख. जब उद्धारकर्ता अपनी महिमा में आएगा, वे पलकों के झपकने के साथ नश्वरता से अनश्वरता में बदल जाएगे" (3 नफी 28:8) ।

  ग. सिर्फ दुनिया के पापों के लिए वे दुख महसुस करेगे, वे दुख या दर्द को अनुभव नहीं करेंगे (3 नफी 28:9, 38)।

  घ. वे लोगों को प्रभु की ओर धर्मपरिवर्तित होने में सहायता करेंगे (3 नफी 28:9, 18, 23, 29–30) ।

  च. उन्हें किसी भी तरीके से मारा या हानि नहीं पहुँचाइ जा सकती (3 नफी 28:19–22)।

  छ. शैतान उन्हें ललचा नहीं सकता या उन पर कोई शाक्ति नहीं रख सकता (3 नफी 28:39)।

  ज. वे न्याय वाले दिन तक छुपे हुए रहेंगे, जब वे पुर्नरुत्थारित होंगे और परमेश्वर के राज्य में प्राप्त किए जाएगें (3 नफी 28:40) ।

ध्यान दें : तीन नफायटियों के बारे में अक्सर कहाँनियाँ बताई जाती है जो छुपा दिए गए थे । गिरजाघर के सदस्यों को इन कहाँनियों को बताने और स्वीकार करने में सावधान रहना चाहिए । आपको इसकी कक्षा में चर्चा नही करना चाहिए ।

3. शान्ति के कई वर्षों बाद, बहुत से लोग अविश्वासी हुए और सुसमाचार को अस्वीकार किया ।

4 नफी से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो । समझाओ कि 4 नफी की छोटी सी पुस्तक में इतिहास के 300 वर्षो का मॉरमन का सार सम्मिलित है । इतिहास वास्तव में चार पुरूषों द्वारा लिखा गया था, जिसका अपने पिता के जैसा नाम था, उद्धारकर्ता के बारह नफायटी शिष्यों में से एक, नफी का पुत्र आमोस और आमोस का पुत्र और अमोस की पुस्तक का पहला भाग महान नेक और सुख के काल का वर्णित करता है, और पुस्तक का दुसरा भाग लोगों की दुष्टतों में जाने को बताता है ।

4 नफी की तुम्हारी चर्चा आरम्भ करने के लिए, आप चाहेंगे कि कक्षा के सदस्य 4 नफी 1:1–18 से आयतों को बारी बारी से पढ़ें । उन्हें इन आयतों में लोगों के चरित्रों के वर्णन पर ध्यान देने के लिए को कहो । चरित्रों को चॉकबोर्ड पर लिखो जब कक्षा के सदस्य इन्हे बताते हैं ।

- यीशु के भेंट करने के कई वर्षो बाद तक, लोगों के बीच कोई विवाद नहीं था (4 नफी 1:2, 4, 13, 15–18)। विवाद क्यों नहीं था? (4 नफी 1:15 देखो ।) हम 4 नफी में वर्णित नेक लोगों के जैसे कैसे बन सकते हैं? हम क्या कर सकते हैं कि परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में रहे?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिन्कली ने कहा था : "यदि दुनिया को बेहतर होना है, प्रेम की प्रक्रिया को [हमारे] ह्रदयों में बदलना होगा.... ऐसा हो सकता है जब हम अपने से परे परमेश्वर और दुसरों को हमारा प्रेम देते हैं, और ऐसा अपने पूरे ह्रदय के साथ, हमारी पूरी आत्मा के साथ, और हमारे पूरे मन के साथ कर सकते हैं ("And the greatest of these Is Love," Ensign, मार्च 1984, 5)।

- शान्ति के इस काल के दौरान, "किसी प्रकार के -यों" नहीं थे (4 नफी 1:17) । इसका क्या अर्थ है? (4 नफी 1:2–3, 15–17 देखो ।) आज लोगों के समुहों के बीच भेद भाव के कारण कौनसी समस्याँए हैं? किन तरीकों में सुसमाचार हमारी विभिन्नताओं के बावजूद हमें एक होने मेंसहायता कर सकता है?

- शान्ति के इस लम्बे काल में किसका योगदान था? (कक्षा के सदस्यों को 4 नफी 1:20–46 को इन प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए पढ़ने दो । उनके जवाबों की समिक्षा चॉकबोर्ड पर करें । कुछ सम्भावित उत्तर नीचे दिखाए गए हैं ।)

  क. वर्गों में बंटना और निर्माण (4 नफी 1:20, 26, 35)
  ख. धनी होने के कारण घमण्ड और लालच (4 नफी 1:23–25, 41, 43, 3 नफी 27:32 भी देखो) ।
  ग. गिरजाघर जो मसीह को जानने का दावा करते हैं परन्तु उसके अधिकत्तर सुसमाचार को अनेदखा करते हैं (4 नफी 1:26–29; 34) ।
  घ. गिरजाघरों का निर्माण लोगों को लाभ प्राप्त करने में सहायता करने के लिए किया गया है (4 नफी 1:26–29, 41)।
  ङ. कठोर-हृदय (4 नफी 1:31)
  च. मसीह के अनुयाइयों का उत्पीड़न (4 नफी 1:29–34)
  छ. माता-पिता बच्चों को मसीह में विश्वास न करने की शिक्षा देना (4 नफी 1:38)
  ज. माता-पिता बच्चों को नफ़रत करना सीखाना (4 नफी 1:39)
  झ. गुप्त कार्य (4 नफी 1:42, 46)

- 4 नफी 1:40–46 में वर्णित स्वभाव और कर्मो ने नफायटियों को नेतृत्व नाश की ओर किया । हमारे लिए इस अभिलेख की जांच करना क्यों महत्वपूर्ण है?

निष्कर्ष

कक्षा के एक सदस्य को 3 नफी 27:10, 22, 28–29 में प्रभु के वादों को ज़ोर से पढ़ने दो । बताओ कि जब लोग सुसमाचार के प्रति विश्वासनीय रहते हैं, "यहां इनसे सुखी लोग नहीं हो सकते" (4 नफी 1:16)। जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. उत्पीड़न के प्रति प्रतिक्रिया

- "यीशु के लोगों ने कैसी प्रतिक्रिया दी जब उन्हें उत्पीड़ित किया गया? (4 नफी 1:34 देखो।) इस प्रतिक्रिया ने कैसे दिखाया कि वे वास्तव में यीशु के लोग थे? (3 नफी 12:10–12, 38–39 देखो।) हमारी कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए यदि हमारा उत्पीड़न हो?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः "आओ हम उन तक प्रेम और दयालुता के साथ पहुंचे जो हमारे विरूद्ध खड़े होंगे...मसीह की आत्मा में जिसने हमें दुसरा गाल आगे करने का सुझाव दिया था, आओ अच्छे के साथ बूराई पर विजय पाएं" (in Conference Report, Oct. 1982, 112; or *Ensign,* Nov. 1982, 77)।

2. 3 नफी 29–30 से अंर्तदृष्टि

3 नफी 29–30 की चर्चा करो। अध्याय 29 मॉरमन की पुस्तक के आने और इस्राएल के साथ प्रभु के अनुबंध के बीच संबंध की शिक्षा देता है (3 नफी 29:1–4, 8–9)। अध्याय 30 में वो शब्द सम्मलित हैं जिन्हें प्रभु ने मॉरमन को अन्तिम-दिनों की अन्य जातियों को लिखने की आज्ञा दी थी।

पाठ
43

"तुम प्रभु के मार्ग से कैसे भटक गए?"

मॉरमन 1–6; मरोनी 9

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को दुनिया में बढ़ती दुष्टता के बावजूद सुसमाचार नियमों के अनुसार जीने की महता को देखने में सहायता करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. मॉरमन 1। लड़कपन में ही, मॉरमन को पवित्र अभिलेखों के लिए जिम्मेदारी दी गई। सम्पूर्ण प्रदेश में दुष्टता उजागार हुई, परन्तु लोगों को इसका प्रचार करने को मना किया गया था।

   ख. मॉरमन 2; 3:1–16। मॉरमन नफायटी सेना का मार्गदर्शक बनता है और लमनायटियों के विरूद्ध अनेक युद्धों में नेतृत्व करता है। अपनी दुष्टता के कारण नफायटियों को चोट पहुंची। मॉरमन नफी की पट्टियों को प्राप्त करता है और अभिलेख जारी रखता है। अन्त में, नफायटियों की दुष्टता के कारण, मॉरमन उनका नेतृत्व करने को मना करता है।

   ग. मॉरमन 3:17–22; 5:8–24। मॉरमन अन्तिम दिनों में लोगों से बात करता है, उन अभिलेखों के उद्देश्यों को समझाते हुए जिन्हें उसने संक्षिप्त किया और लिखा था।

   घ. मॉरमन 4; 5:1–7; 6; मरोनी 9। नफायटियों ने लमनायटियों के साथ लड़ाई करना जारी रखा। मॉरमन ने दुबारा सेना का नेतृत्व करना स्वीकार किया। वह शिम पहाड़ से अभिलेखों को लेकर आता है और उन्हें कुमोराह पहाड़ में छुपा देता है। अन्तिम महान युद्ध में, सब 24 नफायटी मारे जाते हैं।

2. मॉरमन एक बार के महान राष्ट्र को अलविदा करता है (62043; सुसमाचार कला चित्र किट 319) का चित्र दिखाओ और कक्षा के एक सदस्य को मॉरमन 6:16–22 ज़ोर से पढ़ने दें।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

कक्षा के सदस्यों को पूछोः

- यदि आप पानी का जहाज को चला रहे हैं, आप किन उपकरणों को प्राप्त करना चाहेंगे?

सारे उत्तरों को स्वीकार करो, और समझाओ कि मॉरमन ने अपने लोगों, नफायटियों की तुलना, एक पानी के जहाज से की है जिसे कुछ ज़रूरी उपकरणों का अभाव था। कक्षा के एक सदस्य को मॉरमन 5:17–18 ज़ोर से पढ़ने दो।

- किन तरीकों से जो लोग उद्धारक का अनुगमन नहीं करते हैं "बिना नाविक और लंगर के एक जहाज़ के जैसे हैं"?

बताओ कि बाकी नफायटियों की तरह न होकर, मॉरमन ने सुसमाचार का उपयोग अपने जीवन में दोनों एक नाविक और एक कांटे के रूप में किया था। वह नेकता से जीता जब कि उसके आस-पास सारे दुष्ट थे। यह पाठ चर्चा करेगा कि मॉरमन और उसके लोगों को क्या हुआ था और हम सुसमाचार का उपयोग अपने लोगों में नाविक और एक कांटे के रूप में कैसे कर सकते हैं।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. मॉरमन को पवित्र अभिलेखों के लिए जिम्मेदारी दी जाती है।

मॉरमन 1 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतों को ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो। समझाओ कि मॉरमन सारी पट्टियों को अभिलेख में संक्षिप्त करने के लिये जिम्मेदार था जिसे हम मॉरमन की पुस्तक के रूप में जानते हैं। मॉरमन 1–6 में मॉरमन के स्वयं के समय और उसके लोगों का अभिलेख सम्मलित है।

- मॉरमन की उम्र कितनी थी जब उसे पवित्र अभिलेखों के लिए जिम्मेदारी दी गई थी? (मॉरमन 1:2–3 देखो; पहला अतिरिक्त शिक्षा सुझाव भी देखो।) अमरोन ने मॉरमन को पट्टियों के साथ क्या करने का निर्देश दिया था? (मॉरमन 1:3–4 देखो।) युवा मॉरमन ने कौनसे चरित्रों को पाया जिसने उसे पवित्र अभिलेखों को सुरक्षित रखने और संक्षिप्त करने को तैयार किया था?

- जब मॉरमन 15 वर्ष का था, उसके पास "प्रभु आया था, और उसकी परीक्षा ली गई और वह यीशु की नेकी को जानता था" (मॉरमन 1:15)। हम यीशु की नेकी को कैसे जान सकते हैं?

- नफायटियों को प्रचार करने के लिए प्रभु ने मॉरमन को क्यों मना किया था? (मॉरमन 1:16–17 देखो।) अपने हृदयों की कठोरता के कारण कौनसे नुकसानों का अनुभव किया था? (मॉरमन 1:13–18 देखो। ध्यान दें कि "प्रिय शिष्य" जिन्हें उठा लिया गया था तीन नफायटी शिष्य थे जिन्होंने उद्धारक के द्वितीय आगमन तक पृथ्वी पर रहने की इच्छा की थी; 3 नफी 28:1–9 देखो।) हम किन नुकसानों का अनुभव कर सकते हैं यदि हम प्रभु और उसके सेवकों के विरूद्ध अपने हृदयों को कठोर बना लेते हैं?

2. मॉरमन नफायटी सेना का मार्गदर्शक बनता है। नफायटी अपनी दुष्टता के कारण युद्ध में पीड़ा उठाते हैं।

मॉरमन 2; 3:1–16 से चुनी हुई आयतों को पढ़ों और चर्चा करो।

- मॉरमन के जीवनकाल के दौरान नफायटी समाज में क्या परिस्थितियां थीं? (मॉरमन 1:19; 2:1, 8, 10, 18 देखो।) कैसे इन परिस्थितियों ने पुराने भविष्यवक्ताओं के शब्दों को पूरा किया था? (मॉरमन 1:19; मुसायाह 12:4–8; इलामन 13:5–10 देखो।) यद्यपि हम, मॉरमन की तरह, अधिक दुष्टता के समय में रहते हैं, अपने विश्वास और व्यक्तिगत नेकता को बनाये रखने के लिए हम क्या कर सकते हैं? (कुछ संभव उत्तरों के लिए, अलमा 17:2–3; इलामन 3:35; सि. और अनु. 121:45–46 देखो।)

- मॉरमन क्यों आनन्दित हुआ था जब उसने लोगों को विलाप करते देखा? (मॉरमन 2:10–12 देखो।) उसका आनन्द व्यर्थ क्यों था? (मॉरमन 2:13–14 देखो।) "पश्चाताप में...दुःखी होने" और "रूकावट के दुःख" में क्या अन्तर है? (2 कुरिन्थियों 7:9–10 भी देखो।)

- "टूटे हृदय और पश्चातापी आत्मा के साथ यीशु के पास आने" का क्या अर्थ है? (मॉरमन 2:14; 3 नफी 9:20; सि. और अनु. 59:8 भी देखो)।

- मॉरमन को किसने आशा और शान्ति दी थी जबकि उसने अपने लोगों की दुष्टता को देखा था? (मॉरमन 2:19 देखो।) आज दुनिया की दुष्टता के बीच हम आशा और शान्ति को कैसे बनाये रख सकते हैं?

- मॉरमन ने कहा था कि जब उसके लोगों ने युद्ध में लमनायटियों को पराजित किया था, तब "उन्होंने यह अहसास नहीं किया था कि वह प्रभु था जिसने उनको उनसे बचाया था" (मॉरमन 3:3)। यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम जाने कि जो आशीषें हमने प्राप्त की हैं वे प्रभु की ओर से हैं?

- नफायटी सेना का मार्गदर्शन करने के 30 वर्ष से ज्यादा के बाद, मॉरमन ने उनकी दुष्टता और उनकी बदले की भावना के कारण उनका मार्गदर्शन करने से इन्कार कर दिया था (मॉरमन 3:9–13)। प्रभु ने उन्हें बदला न लेने की आज्ञा दी थी, और उसने घोषणा की थी, "बदला लेना मेरा काम है" (मॉरमन 3:14–15)। क्या परिणाम होते हैं जब लोग बदला लेने का प्रयत्न करते हैं? हम बदले की भावना पर कैसे विजय पा सकते हैं जब वे हमारे हृदयों में आती हैं?

- उन कठोर हृदय वाले लोगों को जवाब देने के बारे में हम मॉरमन से क्या सीख सकते हैं? (मॉरमन 3:12 देखो।) ऐसे लोगों के हम महान प्रेम को कैसे विकसित कर सकते हैं? कठोर हृदय के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करना क्यों महत्वपूर्ण है?

3. मॉरमन अभिलेखों के उद्देश्यों को बताता है जिन्हें उसने संक्षिप्त किया था और लिखा था।

मॉरमन 3:17–22; 5:8–24 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। बताओ कि नफायटी सेना का मार्गदर्शन करने से इन्कार करने के बाद, मॉरमन ने कहा था कि वह "[एक] साक्षी के रूप में खड़ा होगा," उन घटनाओं को अंकित करते हुए जो नफायटियों के बीच हो रही थीं (मॉरमन 3:16)। इन आयतों में, मॉरमन सीधे उनको संबोधित करता है जिनके लिए उसका अभिलेख अभिप्रेरित है।

- किसे ध्यान में रखकर मॉरमन का अभिलेख लिखा गया था? (मॉरमन 3:17–19; 5:9–10, 14 देखो। चॉकबोर्ड पर कक्षा के सदस्यों के जवाबों की सूची बनाएं।)

- किन उद्देश्यों के लिए अभिलेख रखा और सुरक्षित किया गया था? (मॉरमन 3:20–22; 5:14–15 देखो। उत्तरों में नीचे दिये लिखे गये शामिल हो सकते हैं।) कैसे मॉरमन के लेखों ने आपके जीवन में इन उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता की है?

  क. "कि तुम्हें यह मालूम हो कि तुम सभी को मसीह के न्याय आसन के सामने...अपने कर्मों के न्याय के लिए खड़ा होना ही पड़ेगा" (मॉरमन 3:20)।

  ख. "कि तुम यीशु मसीह के उस सुसमाचार पर विश्वास करो" (मॉरमन 3:21; मॉरमन 5:15 भी देखो)।

  ग. साक्षी देने के लिए "कि यीशु [ही] वही मसीह और परमेश्वर है" (मॉरमन 3:21; मॉरमन 5:14 भी देखो)।

  घ. "जगत के कोने-कोने को पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित करूं" (मॉरमन 3:22)।

4. एक अन्तिम महान युद्ध में, 24 को छोड़ सारे नफायटी मारे जाते हैं।

मॉरमन 4; 5:1–7; 6; मरोनी 9 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- लमनायटियों के विरूद्ध नफायटियों की हार पर टिप्पणी करते हुए, मॉरमन ने व्याख्या की थी कि "दुष्टों को दुष्टों द्वारा ही दण्ड दिया जाता है" (मॉरमन 4:5)। आपके विचार से इसका क्या अर्थ है? आज दुनिया में यह हो रहा है को आप कैसे देखते हैं?

- मॉरमन को कैसा लगा था जब वह सेना का नेतृत्व करने के लिए दुबारा से सहमत हुआ? (मॉरमन 5:2 देखो।) युद्ध में नफायटियों के लिए विजय कौन ला सकता था के बारे में मॉरमन ने क्या समझा था? वे कैसे विजय पा सकते हैं के बारे में यह नफायटियों के विश्वास से कैसे भिन्न था? (मॉरमन 5:1 देखो।)

- शिम के पहाड़ से मॉरमन पट्टियों को क्यों ले गया था? (मॉरमन 4:23 देखो; मॉरमन 1:3–4 भी देखो।) उसने उन्हें कुमोराह पहाड़ पर क्यों छिपा दिया था? (मॉरमन 6:6 देखो।) पट्टियों को बचाना क्यों महत्वपूर्ण था?

- कुमोराह पर अन्तिम युद्ध का क्या परिणाम था? (मॉरमन 6:7–15 देखो।)

मॉरमन के नफायटी राष्ट्र को अलविदा करते हुए का चित्र दिखाओ और कक्षा का एक सदस्य मॉरमन 6:16–22 ज़ोर से पढ़े।

- कुमोराह के युद्ध के बाद, लमनायटियों ने 24 बचे नफायटियों को मार डाला और सिवाय मरोनी के (मॉरमन 8:2–3)। नफायटी राष्ट्र पूरी तरह से नष्ट हो गया था। क्यों इतनी "बड़ी आपत्ति" नफायटियों के ऊपर आई थी? (मॉरमन 1:13, 16; 2:26–27; 3:2–3; 4:12; 5:2, 16–19; मरोनी 9:3–5, 18–20 देखो।)
- हम भी अति दुष्टता के बीच रहते हैं। कैसे व्यक्तिगत नेकता एक अधर्मी समाज में बदलाव ला सकती है?

  एल्डर नील ए. मैक्सवल ने चेतावनी दी थीः "सिर्फ सुधार और आत्म-नियंत्रण, सरकारों और व्यक्तिगत लोगों, अन्ततः समाज को बचा सकते हैं! सिर्फ पाप-नियंत्रण व्यक्ति की पर्याप्त संख्या हर दिन की दुनिया को बदल सकते हैं। गिरजाघर के सदस्य होने के नाते उस पाप-नियंत्रित विरोध समूह का हिस्सा बनना चाहिए" (in Conference Report, Apr. 1993, 96; or *Ensign,* May 1993, 77)।

निष्कर्ष

ज़ोर दो कि नफायटी समाज महान दुष्टता के कारण नष्ट हो गया था। यद्यपि हम महान दुष्टता के समय में रहते हैं, हमें इसका हिस्सा नहीं बनना चाहिए। स्थिरता और विश्वास के मॉरमन के उदाहरण का अनुगमन करने के द्वारा, और उन अभिलेखों को अध्ययन करने के द्वारा जो उसने बहुत सावधानी से सुरक्षित रखे थे, हम हमारे दिनों के बूरे प्रभाव का सामना कर सकते हैं और अन्यों के लिए साहस और आशा का एक उदाहरण रख सकते हैं।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. नेक युवक

- मॉरमन कितने साल का था जब अमरोन ने उसे अभिलेख सौंपा था? (मॉरमन 1:2–4 देखो।) मॉरमन कितने साल का था जब उसने यीशु मसीह को देखा था? (मॉरमन 1:15 देखो।) बाताओ कि जोसफ स्मिथ 14 साल का था जब उसे पिता और पुत्र का प्रथम दिव्यदर्शन प्राप्त हुआ था, और वह 21 साल का था जब उसने स्वर्गदूत मरोनी से स्वर्ण पट्टियों को प्राप्त किया था।

ज़ोर दो कि नेकता और ज्ञान उम्र या अन्य परिस्थितियों द्वारा सीमित नहीं हैं। प्रभु उनको आशीष देगा जो उसकी सेवा किसी भी उम्र में करेंगे।

2. युवा चर्चा

कक्षा के सदस्यों को याद दिलाओ कि मॉरमन नेक और विश्वासी रहा था जबकि उसके आस-पास के लोग दुष्ट थे।

- एक अधर्मी समाज में दवाब के बावजूद भी हम कैसे विश्वासी रह सकते हैं? ऐसा करने से क्या लाभ होगा?
- हम उनकी जो हमारे आस-पास रहते हैं कैसे सहायता कर सकते हैं जो सुसमाचार के अनुसार नहीं जी रहे हैं? मॉरमन ने उनको जो उसके आस-पास रहते थे कैसे जवाब दिया था जो अधर्मी थे? (उदाहरण के लिए, मॉरमन 3:12, देखो।) ऐसी परिस्थितियों में खीचे जाने के बिना जो हमारे आदर्शों के लिए खतरा हैं प्रेम और मित्रता में कैसे पहुंच सकते हैं?

पाठ
44

“मैं तुमसे उसी तरह बोल रहा हूं जैसे मानो तुम मेरे सामने उपस्थित हो”

मॉरमन 7–9

उद्देश्य

अन्तिम दिनों में रह रहे लोगों को मॉरमन और मरोनी के द्वारा दी गई चेतावनियों और सलाह को समझने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करना।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. मॉरमन 7। मॉरमन लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज को पश्चाताप करने, मसीह में विश्वास करने, और बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

   ख. मॉरमन 8। मरोनी भविष्यवाणी करता है कि मॉरमन की पुस्तक महान दुष्टता के दिन आएगी।

   ग. मॉरमन 9। मरोनी अन्तिम दिनों में लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए बुलाता है। वह घोषणा करता है कि प्रभु चमत्कारों का परमेश्वर है।

2. अतिरिक्त पढ़ाईः मॉरमन की पुस्तक का शीर्षक पृष्ठ।

3. आप शायद पहले से ही कक्षा के चार सदस्यों के साथ बात करना चाहो, उनमें से प्रत्येक से निम्नलिखित लेखांशों में से एक को ज़ोर से पढ़ने के लिए कहते हुएः 2 नफी 28:2–6; मॉरमन 9:7; जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:17–19, 21–22; और विश्वास के अनुच्छेद 1:7।

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग कर रहे हैं, निम्नलिखित बयानों को कक्षा आरंभ होने से पहले चॉकबोर्ड पर लिखोः

“मैं तुमसे उसी तरह बोल रहा हूं जैसे मानो तुम मेरे सामने उपस्थित हो, परन्तु तुम यहां हो नहीं।”

“यीशु मसीह ने तुम्हें मुझे दिखाया है, और मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूं।”

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

व्याख्या करो कि शिक्षक प्रायः लोगों के ध्यान को केन्द्रीत करने के लिए पाठ के आरंभ में कहानियां, पाठों के उद्देश्य, या रूचिकर प्रश्नों का उपयोग करते हैं। फिर बयान को संदर्भ करो जो आपने चॉकबोर्ड पर लिखा है (देखो “तैयारी” विषय 4)।

- क्यों इन बयानों को हमारा ध्यान केन्द्रीत करना चाहिए? (लगभग 400 ईस्वी. में, जब मरोनी ने इन बयानों को कहा था, वह सीधे हमसे बात कर रहा था। मॉरमन 8:35 देखो।)

बताओ कि मॉरमन 7–9 में सारी शिक्षाएं सीधे अन्तिम दिनों में रह रहे लोगों के लिए हैं। मॉरमन 7 में सलाह विशेषरूप से लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज के लिए है, और मॉरमन 8–9 में सलाह अन्तिम दिनों में सारे लोगों के लिए है।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. मॉरमन लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज को पश्चाताप करने, मसीह में विश्वास करने, और बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मॉरमन 7 को पढ़ो और चर्चा करो, जिसमें लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज के लिए मॉरमन के शब्द हैं। आप शायद बताना चाहें कि लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज उत्तरी, मध्य, और दक्षिण अमेरिका और प्रशांत द्वीपों के लोगों के बीच पाए जाते हैं।

- कक्षा का एक सदस्य मॉरमन 7:2 ज़ोर से पढ़े। बताओ कि इस अन्तिम संदेश में, लेही के अन्तिम-दिनो के वंशज के लिए ये मॉरमन के पहले शब्द थे। लेही के वंशज के यह जानना क्यों महत्वपूर्ण है कि वे "इस्राएल के घराने" के हैं? इस्राएल के घराने के नेक सदस्यों के लिए प्रभु ने किन आशीषों का वादा किया है? (इब्राहिम 2:8–11 देखो।)
- मॉरमन ने लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज को क्या आदेश दिये थे? (मॉरमन 7:3–10 और नीचे दी गई सूची देखो। सूची में कुछ विषयों में चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रश्न शामिल हैं।)

  क. पश्चाताप करो, बपतिस्मा लो, और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करो (मॉरमन 7:3, 5, 8. 10)।
  ख. युद्ध के हथियारो को धर दो जब तक कि परमेश्वर अलग ढंग से आज्ञा नहीं देता (मॉरमन 7:4)।
  ग. उनके पूर्वजों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया (मॉरमन 7:5)। लेही के अन्तिम-दिनों के वंशज के लिए अपने पूर्वजों के बारे में जानना क्यों महत्वपूर्ण है? (मॉरमन 7:9 और मॉरमन की पुस्तक का शीर्षक पृष्ठ देखो।) हमारे पूर्वजों के बीच परमेश्वर के कार्यो के ज्ञान से हम सब कैसे लाभ उठा सकते हैं?
  घ. यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित में विश्वास करो (मॉरमन 7:5–7, 10)।
  ङ. बाइबल और मॉरमन की पुस्तक में सुसमाचार का अध्ययन करो (मॉरमन 7:8–9)। मॉरमन की पुस्तक लोगों की बाइबल में विश्वास करने में कैसे सहायता करती है? (मॉरमन 7:9 देखो; 1 नफी 13:38–40; 2 नफी 3:11–12 भी देखो।)

- इस प्रबन्ध में प्रभु ने कहा है कि "लमनायटी गुलाब की तरह खिलेंगे" (सि. और अनु. 49:24)। कैसे यह भविष्यवाणी आज पूरी होती है?

2. मरोनी भविष्यवाणी करता है कि मॉरमन की पुस्तक महान दुष्टता के दिन आएगी।

मॉरमन 8 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। बताओं कि इस अध्याय में मरोनी अपने पिता, मॉरमन की मृत्यु के बाद पहली बार लिख रहा है।

- कक्षा का एक सदस्य मॉरमन 8:1–5 ज़ोर से पढ़े। आप मरोनी से क्या भावनाएं महसूस करते हैं जब आप इन शब्दों को पढ़ते हो? इतना अकेले होने के बावजूद मरोनी की निष्ठा से हम क्या सीख सकते हैं?
- मरोनी ने जोसफ स्मिथ के बारे में भविष्यवाणी की थी, यह कहते हुए, "धन्य होगा वह जो इसे [मॉरमन की पुस्तक] को प्रकाश में लाएगा" (मॉरमन 8:16; आयतें 14–15 भी देखो)। जोसफ स्मिथ के मॉरमन की पुस्तक को "अन्धकार से प्रकाश में" लाने में मरोनी ने क्या भूमिका निभाई थी? (मॉरमन 8:14; जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:30–35, 46, 59 देखो।) हम क्या कर सकते हैं कि मॉरमन की पुस्तक नियमित रूप से "अन्धकार से प्रकाश में लाई जाये"?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः "विश्वासी सन्तों मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं जो पृथ्वी और अपने जीवन को मॉरमन की पुस्तक के साथ भर देने का प्रयास कर रहे हैं। ना ही हमें सिर्फ स्मारक रूप से मॉरमन की

पुस्तक की प्रतियों को आगे करना चाहिए, बल्कि हमें इसके संदेश को साहस के साथ अपने स्वयं के जीवन में और समस्त दुनिया में आगे ले जाना चाहिए" (in Conference Report, Apr. 1989, 3; or *Ensign,* May 1989, 4)।

- कक्षा का एक सदस्य मॉरमन 8:21–22 को ज़ोर से पढ़े। मॉरमन 8:22 में मरोनी के शब्द कैसे हमें मज़बूती दे सकते हैं जब हम प्रभु की वजह से कार्य करते हैं?

- मरोनी ने दुनिया में परिस्थितियों के बारे में क्या भविष्यवाणी थी जब मॉरमन की पुस्तक आएगी? (कक्षा के सदस्यों को बारी-बारी मॉरमन 8:26–33 से पढ़ने दो। जब वे पढ़ते हैं, उन्हें उन तरीकों की चर्चा करने को कहो जिनमें इन आयतों में वर्णित परिस्थितियां आज प्रमाण हैं।) मरोनी अन्तिम दिनों के बारे में स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी करने में क्यों समर्थ हुआ था? (मॉरमन 8:34–35 देखो।)

- मरोनी ने कहा था कि वह अन्तिम दिनों में हमसे बात करेगा "जैसे कि [हम] उपस्थित हों" (मॉरमन 8:35)। फिर उसने कहा था, "मैं जानता हूं कि तुम अपने हृदयों के अहंकार में चलते हो" (मॉरमन 8:36 देखो)। मरोनी ने अन्तिम दिनों में अहंकार के बारे में क्या कहा था? (मॉरमन 8:36–41 देखो।)

- कैसे अहंकार ज़रूरतमन्दों की ओर लोगों के व्यवाहारों पर असर डालता है? (मॉरमन 8:37, 39 देखो।)

- कक्षा का एक सदस्य मॉरमन 8:38 ज़ोर से पढ़े। क्यों कुछ लोग "मसीह के नाम को [अपने] ऊपर लेने से शर्म महसूस करते हैं"? क्यों यह हमारी याद रखने में सहायता कर सकता है कि "अनन्त सुख" की कीमत "दुनिया के गुणगान" से अधिक है?

- अहंकार के बारे में मरोनी की भविष्यवाणी के प्रति हमारा जवाब क्या होना चाहिए?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः

  "अहंकार का उपचार विनम्रता—नम्रता, सहनशीलता है (अलमा 7:23 देखो)। यह टूटा हृदय और पश्चातापी आत्मा है (3 नफी 9:20; 12:19; सि. और अनु. 20:37; 59:8; भजन संहिता 34:18; यशायाह 57:15; 66:2)....

  "परमेश्वर के पास विनम्र लोग होंगे। हम विनम्र होना चुन सकते हैं या हम बलपूर्वक विनम्र बन सकते हैं....

  "आओ विनम्र होना चुने" (in Conference Report, Apr. 1989, 6; or *Ensign,* May 1989, 6)।

3. मरोनी अन्तिम दिनों में लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

मॉरमन 9 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- मॉरमन 9 अन्तिम दिनों में उन लोगों को मरोनी के शब्दों से आरंभ होता है जो मसीह में विश्वास नहीं करते (मॉरमन 9:1)। क्यों इस प्रकार के लोग..."परमेश्वर के साथ रहने में, अपराधी आत्माओं के साथ अधोलोक में रहने से अधिक दुःखी रहेंगे"? (मॉरमन 9:3–5 देखो।) हमें क्या करना चाहिए ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में रह सके के बारे में मॉरमन 9:6 क्या शिक्षा देता है? (सि. और अनु. 121:45 देखो।)

- कक्षा के सदस्यों को निम्नलिखित धर्मशास्त्र लेखांशों को पढ़ने के लिए आमन्त्रित करोः 2 नफी 28:2–6; मॉरमन 9:7; जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:17–19, 21–22; और विश्वास के अनुच्छेद 1:7 (देखो "तैयारी" विषय 3)। कैसे ये चार लेखांश एक दूसरे से संबंधित हैं? मरोनी उन लोगों से क्या कहा था जो आत्म के उपहारों में विश्वास नहीं करते हैं? (मॉरमन 9:8–10 देखो।)

- उनके लिए जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अब चमत्कार नहीं करता, मरोनी ने कहा था, "मैं तुमको चमत्कारों का एक परमेश्वर दिखाऊंगा" (मॉरमन 9:11)। उसने यह दिखाने के लिए कि प्रभु ही चमत्कारों

का एक परमेश्वर है क्या शिक्षा दी थी? (मॉरमन 9:11–17 देखो, जो अगले पृष्ठ पर रूपरेखित है। बताएं कि ये सिद्धान्त मुक्ति की योजना को संक्षिप्त करते हैं।)

क. स्वर्गों, पृथ्वी, और मानवजाति की सृष्टि (मॉरमन 9:11–12, 17)।
ख. पतन (मॉरमन 9:12)।
ग. यीशु मसीह द्वारा मुक्ति (मॉरमन 9:12–13)।
घ. सारे लोगों का पुनरूत्थान (मॉरमन 9:13)।
ङ. न्याय के लिए प्रभु की उपस्थिति में सारे लोगों की वापसी (मॉरमन 9:13–14)।

- मरोनी ने यीशु और उसके प्रेरितों द्वारा "कई शक्तिशाली चमत्कारों" का संदर्भ दिया था (मॉरमन 9:18)। यीशु और उसके प्रेरितों द्वारा किये गये कुछ चमत्कार कौनसे हैं जिन्होंने आपको प्रेरित किया है?

- कुछ लोगों के लिए चमत्कारों के रूक जाने का क्या कारण है? (मॉरमन 9:20 देखो।) कौनसे चिन्ह निरन्तर उनके पीछे चलेंगे जो मसीह में विश्वास करते हैं? (मॉरमन 9:21–25 देखो।)

- यदि कोई आपको बताता है कि प्रभु चमत्कारों का परमेश्वर नहीं है, आप कैसे जवाब दोगे? यह साक्षी देने के लिए कि प्रभु चमत्कारों का परमेश्वर है आप कौनसा अनुभव उचित प्रकार से बांट सकते हैं?

- मरोनी ने हमें प्रोत्साहित किया था कि "सन्देह मत करो परन्तु विश्वास करो" (मॉरमन 9:27)। इस प्रबन्ध में, भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने घोषणा की थी, "जहां सन्देह होता है, वहां विश्वास का कोई प्रभाव नहीं होता" (*Lectures on Faith* [1985], 46)। हम अपने सन्देह पर विजय पाने के लिए क्या कर सकते हैं?

  जोसफ स्मिथ ने शिक्षा दी थीः "वे जो पाप करने के लिए अपनी कमजोरी और उत्तरदायित्व को जानते हैं उद्धार के स्थिर सन्देह में रहेंगे यदि यह विचार नहीं होता जो उनके पास परमेश्वर की उत्तमता का है, कि वह कम क्रोधित होता है और लम्बे समय तक सहता है, और क्षमा करने के मिजाज, और दुष्टता, उल्लंघन, और पाप क्षमा करता है। इन तथ्यों की विचार सन्देह को दूर करता है, और विश्वास को अत्याधिक मज़बूत बनाता है" (*Lectures on Faith,* 42)।

निष्कर्ष

अगर तुमने ऐसा अभी नहीं किया है, कक्षा के एक सदस्य को मॉरमन 9:27 पढ़ने को कहें। बताओ कि यद्यपि मरोनी ने परमेश्वर के न्याय के बारे में चेतावनी दी थी, उसने प्रभु की "चमत्कारों का परमेश्वर" के रूप में गवाही भी दी थी। जिसका प्रायश्चित "मनुष्य की मुक्ति" लाता है (मॉरमन 9:11–12)।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

पाठ
45

“मुझ पर मनुष्य ने कभी ऐसा विश्वास नहीं किया जैसे तुमने किया है”

एथर 1–6

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की यारद के भाई के उदाहरण से समझने में सहायता करना कि कैसे विश्वास हमें अनन्त रूप से प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए हमें समर्थ बना सकता है।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

   क. एथर 1। प्रभु यारद के भाई की विनति को स्वीकार करता है और यारदाईयों का वादा किये हुए देश के लिए नेतृत्व करने का वादा करता है।

   ख. एथर 2। यारदाई वादा किए गए देश की ओर अपनी यात्रा आरंभ करते हैं।

   ग. एथर 3। यारद का भाई यीशु मसीह को देखता है।

   घ. एथर 4। मरोनी तब तक यारद के भाई के लेखों मुहरबंद करके रखता है जब तक गैर यहूदी पश्चाताप नहीं करते और विश्वास का उपयोग नहीं करते।

   ङ. एथर 6:1–12। यारदाई वादा किए गए देश की यात्रा करते हैं, और जब वे पहुंचते हैं वे अपने ऊपर प्रभु की अनन्त कृपा के लिए उसकी प्रंशसा करते हैं।

2. अतिरिक्त पढ़ाईः उत्पत्ति 11:1–9; मुसायाह 8:7–11।

3. यदि यारद का भाई प्रभु की अंगुली देखता है का चित्र उपलब्ध है, पाठ के दौरान इसे उपयोग करने के लिए तैयार करें (62478; सुसमाचार कला चित्र किट 318)।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जब उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करें।

कक्षा के सदस्यों के साथ निम्नलिखित लेखा बांटोः

“किर्टलैंड में रहते हुए एल्डर रेनोल्ड काहून के यहां एक बेटा हुआ था। एक दिन जब अध्यक्ष जोसफ स्मिथ उनके दरवाजे से गुजर रहे थे, उन्होंने भविष्यवक्ता को अन्दर बुलाया और उन्हें शिशु को आशीष और नाम देने को कहा। जोसफ ने ऐसा ही किया और लड़के को महोनराय मोरिअनकमर नाम दिया। जब उन्होंने आशीष देना पूरा किया तो उन्होंने बच्चे को पलंग पर लिटाया, और एल्डर काहून की ओर मुड़े और कहा, ‘नाम जो मैंने तुम्हारे बेटे को दिया है यारद के भाई का नाम है; प्रभु ने अभी-अभी इसे मुझे दिखाया [या प्रकट] किया है। एल्डर विलियम एफ. काहून...ने भविष्यक्ता को यह बयान अपने पिता को कहते सुना था; यह पहली बार था कि यारद के भाई का नाम इस प्रबन्ध में गिरजाघर में जाना गया था” (George Reynolds, “The Jaredites,” *Juvenile Instructor,* 1 May 1892, 282)।

बताओ कि यह अध्याय यारद के भाई, महोनराय मोरिअनकमर की चर्चा करता है, जिसके बारे में प्रभु ने कहा था, “मुझ पर मनुष्य ने कभी ऐसा विश्वास नहीं किया जैसे तुमने किया है” (एथर 3:15)। उसके विश्वास के कारण, यारदाई बबूल की मीनार के बाद अपनी भाषा बचाने के लिए आशिषित हुए थे, और उनका वादा किए गए देश की ओर सुरक्षित नेतृत्व किया गया था। उसका उदाहरण विश्वास के महत्व और शक्ति की हमारी समझ को बढ़ा सकता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. प्रभु यारद के भाई की विनति को स्वीकार करता है।

एथर 1 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयते ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो। बताओ कि भविष्यवक्ता एथर ने यारदाइयों के अभिलेख को लिखा था, जिन्होंने बाबूल छोड़ दिया था जब प्रभु ने उन लोगों की भाषा को भ्रष्ट कर दिया था जो बाबूल की मीनार बनाने का प्रयत्न कर रहे थे (एथर 1:33–43; उत्पत्ति 11:1–9 भी देखो)। एथर ने इस अभिलेख को 24 स्वर्ण पट्टियों पर अंकित किया था, जो बाद में लिमही के लोगों द्वारा पाई गई थी (मुसायाह 8:7–11)। एथर की पुस्तक में एथर के अभिलेख का मरोनी का संक्षेप है।

- जब लोगों को तितर-बितर कर दिया था और उनकी भाषा को भ्रष्ट कर दिया गया था, यारद ने अपने भाई से प्रभु के पास जाने के लिए कहा। यारद का भाई किस प्रकार का व्यक्ति था? (एथर 1:34 देखो।)
- यारद से विनति के जवाब में, यारद के भाई ने "प्रभु को पुकारा था" (एथर 1:34–39)। "प्रभु को पुकारना" और सिर्फ प्रार्थनाएं करना के बीच क्या अन्तर है? हम अपनी प्रार्थनाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए क्या कर सकते हैं? (अलमा 34:17–28 देखो।)
- हर बार जब यारद के भाई ने प्रार्थना की थी, प्रभु की "कृपा" उस पर और उसके लोगों पर थी (एथर 1:35, 37, 40)। आपने अपनी प्रार्थनाओं के जवाब में प्रभु की कृपा को कैसे महसूस किया है?
- प्रभु ने लोगों को क्या तैयारी करने के लिए आदेश दिये थे? (एथर 1:41–42 देखो।) क्या कारण था कि प्रभु ने यारदाइयों का वादा किए गए देश को नेतृत्व करने का वादा किया था? (एथर 1:43 देखो। प्रभु के शब्दों पर ध्यान दो: "इस लम्बे समय तक तुमने मुझे पुकारा है।") हम इस उदाहरण से प्रार्थना की शक्ति के बारे में क्या सीख सकते हैं?

2. यारदाई वादा किए गए देश की ओर अपनी यात्रा आरंभ करते हैं।

एथर 2 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- प्रभु यारदाइयों का "वादा किए गए देश की ओर मार्गदर्शक करने का वादा करता है, जो दूसरे देशों से कई बेहतर था" (एथर 2:7)। किनके लिए प्रभु ने उस चुने हुए देश को सुरक्षित रखा था? (एथर 2:7 देखो।) वादा किए गए देश के बारे में प्रभु ने यारद के भाई को क्या चेतावनी दी थी? (एथर 2:8 देखो।)
- वादा किए गए देश से जुड़ी परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में मरोनी ने क्या कहा था? (एथर 2:9–12 देखो। बताओ कि चेतावनी और वादा सारे लोगों के लिए थे जो अमेरिका में बसे थे, न कि सिर्फ यारदाइयों के लिए.)
- जब वे समुद्र के तट पर पहुंचे, यारदाइयों ने अपने तम्बू लगाया और वहां चार साल तक रहे (एथर 2:13)। चार सालों के अन्त में, प्रभु ने यारद के भाई से बात की। क्यों प्रभु ने उसे क्यों झिड़की दी थी? (एथर 2:14 देखो।) हमें क्यों कभी-कभी प्रभु को पुकारना भुल जाते हैं?
- यारद के भाई ने पश्चाताप किया और समुद्र पार करने के लिए नौकाएं बनाना आरम्भ किया (एथर 2:15–17)। यारद के भाई ने नौकाओं को बनाने के बाद कौनसी समस्या का सामना किया था? (एथर 2:19 देखो।) नौकाओं में सांस लेने की हवा के लिए प्रभु ने यारद के भाई को क्या आदेश दिए थे? (एथर 2:20 देखो।)

- प्रभु का क्या जवाब था जब यारद के भाई ने नौकाओं में कैसे प्रकाश किया जाये को पूछा था? (यारद 2:23–25 देखो।) हम प्रभु के जवाब से क्या सीख सकते हैं? (नीचे दिए गए उद्धरण को देखो।) यह क्यों ज़रूरी है कि सहायता के लिए प्रभु से पूछने के अतिरिक्त में हम क्या सब करें?

  एल्डर रसल एम. नेलसन ने कहा था कि उन्होंने अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली को प्रायः कहते सुना है, "मैं नहीं जानता कि कैसे कोई चीज़ करूं सिवाय अपने घुटने पर होना और सहायता के लिए विनति करना और फिर अपने पैरो पर खड़ा होकर कार्य पर चला जाता हूं" (in Conference Report, Oct. 1997, 18; or *Ensign,* Nov. 1997, 16)।

- आपके विचार से नौकाओं में प्रकाश लाने की चुनौती ने यारद के भाई की बढ़ने में कैसे सहायता की थी? कैसे हमारे जीवन में चुनौतियों हमारे सहायता करती हैं?

3. यारद का भाई यीशु मसीह को देखता है।

एथर से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- कैसे यारद के भाई ने नौकाओं में प्रकाश लाने के समाधान का प्रस्ताव रखा था? (एथर 3:1–5 देखो।) इसने कैसे उसकी विनम्रता और विश्वास को दिखाया था? (यारद के भाई द्वारा बोले गए शब्द या वाक्यांश को पहचानने के लिए कक्षा के सदस्यों को कहना चाहें जो उसकी विनम्रता और विश्वास को दिखाते हैं।)

- जब यारद के भाई ने बोलना पूरा किया, प्रभु ने पत्थरों को अपनी एक अंगुली से छुआ था (एथर 3:6)। क्यों यारद का भाई इतना डर गया था जब उसने प्रभु की अंगुली देखी थी? (एथर 3:6–8 देखो। यदि आप चित्र यारद का भाई प्रभु की अंगुली देखता हुआ उपयोग कर रहे हैं इसे अभी दिखाओ।) प्रभु ने यारद के भाई के विश्वास के बारे में क्या कहा था? (एथर 3:9 देखो।)

- अपने आपको यारद के भाई को दिखाने से पहले प्रभु ने क्या प्रश्न पूछा था? (एथर 3:11 देखो।) कैसे यारद के भाई के जवाब ने उसके विश्वास की गहराई को प्रदर्शित किया था? (एथर 3:12 देखो। उसने प्रभु के शब्दों की आशा की थी उन्हें सुनने से पहले।) उसके उदाहरण पर चलने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

- प्रभु ने स्वयं को यारद के भाई को कैसे वर्णित किया था? (एथर 3:13–14 देखो। आप शायद चाहें कि कक्षा के सदस्य इन आयतों को ज़ोर से पढ़ें।) प्रभु की उपस्थिति में रहने के लिए यारद के भाई के लिए क्या ज़रूरी था? अनन्त रूप से प्रभु की उपस्थिति में रहने के लिए हमारे लिए क्या ज़रूरी है?

- प्रभु ने यारद के भाई को क्या दिखाया था? (एथर 3:15–18, 25–26 देखो।) इन चीज़ों को देखने के बाद यारद को प्रभु ने क्या आदेश दिया था? (एथर 3:21–24, 27–28; 4:1 देखो।)

4. मरोनी यारद के भाई के लेखों को मुहरबंद करता है।

एथर 4 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- मरोनी यारद के भाई के दिव्यदर्शन को कैसे वर्णित किया था? (एथर 4:4 देखो।) प्रभु ने मरोनी को यारद के भाई के लेख और दुभाषियों के साथ करने के क्या आदेश दिया था? (एथर 4:3, 5 देखो।) हम इन अभिलेखों को कब प्राप्त करेंगे? (एथर 4:6–7 देखो। हम इनको तब ही प्राप्त कर पाएंगे जब हमारे पास यारद के भाई जैसा विश्वास होगा और शुद्ध होंगे।)

- प्रभु ने उनके बारे में क्या शिक्षा दी थी जो अन्तिम दिनों में उसके शब्दों को अस्वीकार करें? (एथर 4:8, 10, 12 देखो।) उनके पास कौनसी आशीषें आएंगी जो प्रभु के शब्दों में विश्वास करते हैं? (एथर 4:11 देखो।) किन तरीकों से पवित्र आत्मा आपकी यह जानने में सहायता करता है कि प्रभु के शब्द सच्चे हैं?

- प्रभु ने अन्यजातियों और इस्राएल के घराने को अपने पास आने और महान आशीषों और ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया था (एथर 4:13–14)। उसके पास आने के लिए हमें क्या करना चाहिए के बारे में उसने क्या कहा था? (एथर 4:15, 18 देखो।) कौनसी आशीषें उसने उनके साथ वादा की थी जो इन चीज़ों को करते हैं? (एथर 4:15–19 देखो।)

5. यारदाई वादा किए गए देश की ओर यात्रा करते हैं।

एथर 6:1–12 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि ये आयतें यारदाइयों के अभिलेख को जारी रखते हैं जब उन्होंने वादा किए गए देश की ओर यात्रा की थी। चर्चा करो कि कैसे यारदाइयों की वादा किए गए देश की ओर यात्रा हमारे जीवन की यात्रा के समान हो सकती है?

- "पुरूषों, स्त्रियों, और बच्चों को प्रकाश देने के लिए, नौकाओं में अंधेर में पत्थरों को उज्जवल" किया था। (एथर 6:3)। कौनसा "प्रकाश" प्रभु हमारे लिए देता है जब हम जीवन की यात्रा करते हैं?
- अपनी यात्रा के लिए जो उनसे हो सकता था को तैयार करने के बाद यारदाइयों ने क्या किया था? (एथर 6:4 देखो। उन्होंने अपने आप को प्रभु को सौंपा था।) हम प्रभु में इस प्रकार के विश्वास को कैसे दिखा सकते हैं?
- जैसे-जैसे हवा चली यारदाई आगे बहते गये, यारदाइयों ने पूरी रात और दिन क्या किया था? (एथर 6:8–9 देखो।) कौनसे कुछ तरीकें हैं जिनमें हम प्रभु की प्रंशसा कर सकते हैं?
- यारदाइयों ने क्या किया था जब वे वादा किए गए देश में पहुंचे थे? (एथर 6:12 देखो।) किन तरीकों से यह हमारे स्वर्ग के पिता के पास वापस जाने के समान है?

निष्कर्ष

एल्डर जैफरी आर. हॉलैंड द्वारा निम्नलिखित बयान को पढ़ो:

"यारद के भाई को शायद अपने में इतना विश्वास नहीं होगा, परन्तु परमेश्वर में उसका विश्वास अपूर्व था। उसमें हम सब के लिए आशा है। उसका विश्वास बिना सन्देह या सीमा के था...एकबार और हमेशा यह घोषणा की गई थी कि साधारण लोग साधारण चुनौतियों के साथ अविश्वास का पर्दा हटा सकते हैं और अनन्तता के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं" (*Christ and New Covenant* [1997], 29)।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप शायद इस सुझाव को पाठ के हिस्से के रूप में उपयोग करना चाहें।

एथर 5 से शिक्षाएं

- एथर 5 किसको सम्बोधित करता है? (जोसफ स्मिथ।) एथर 5:3 में किन तीन साक्षियों के बारे में मरोनी ने बात की थी? (ओलिवर कॉऊड्री, डेविड विटमर, और मार्टिन हैरिस। मॉरमन की पुस्तक में परिचय सामग्री में तीन साक्षियों की गवाही को देखो।) कैसे तीन साक्षियों की गवाही ने मॉरमन की पुस्तक की आपकी गवाही को मज़बूत किया है?

पाठ
46

“विश्वास द्वारा सब बातें पूरी हुई हैं”

एथर 7–15

उद्देश्य

विश्वास उपयोग करने, विनम्र होने, और भविष्यवक्ताओं की सलाह पर ध्यान देने की महता को समझने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करना।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

क. एथर 12:1–22। मरोनी विश्वास के महत्व को बताता है और विश्वास की शक्ति का उदाहरण देता है।

ख. एथर 12:23–41। प्रभु मरोनी की शिक्षा देता है कि वह हमें कमज़ोरी देता है कि हम विनम्र हो सकें। मरोनी हमें “इस मसीह को खोज़ने की आज्ञा देता है, जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने लिखा है।”

ग. एथर 13:1–12। मरोनी वादा किए गए देश के बारे में एथर की भविष्यवाणियों को अंकित करता है।

घ. एथर 13:13–15:34। यारदाई राष्ट्र के नाश के एथर के अभिलेख को मरोनी अंकित करता है।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

कक्षा के सदस्य मुसायाह 8:8–9, 12, 19; 28:17–19 पढ़ें।

- यहां कौनसे अभिलेख को संदर्भ किया गया है? (यारदाइयों का अभिलेख, जो मरोनी द्वारा एथर की पुस्तक में संक्षिप्त किया गया था।) इस अभिलेख को सुनने के बाद मुसायाह के लोगों पर क्या असर पड़ा था? आपके विचार क्यों यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इस लेख को पढ़ें?

समझाओ कि यह पाठ यारदाइयों के लेख के बारे में चर्चा करता है उनके वादा किए गए देश में आने से लेकर कई पीढ़ीयों बाद उनके पूरी तरह से नष्ठ हो जाने तक । यद्यपि उनके विनाश का लेख दुःख भरा है, हम, मुसायाह के लोगों की तरह, उस ज्ञान में आनन्द मना सकते हैं जो अभिलेख देता है।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. मरोनी विश्वास के महत्व को बताता है।

समझाओ कि वादा किए गए देश में पहुंचने के बाद, यारदाई “देश में बढ़ने लगे...और मज़बूत बन गये” (एथर 6:18)। जब यारद और उसके भाई की मृत्यु हो गई, लोगों का नेतृत्व करने के लिए एक राजा नियुक्त किया गया (एथर 6:21–30)। एथर 7–11 नेक और दुष्ट राजाओं के अनुक्रम, लोगों के बीच गुप्त संधियों का उजागर होना, भविष्यवक्ताओं की शिक्षायें जिन्हें यारदाइयों को पश्चाताप करने को कहने बुलाया गया था को अंकित करते हैं (एथर 7–11 की अधिक चर्चा के लिए प्रथम और द्वितीय अतिरिक्त सुझाव देखो)। एथर 12 एथर की शिक्षाओं के लेखे की शुरूआत करता है, जो उनमें से एक भविष्यवक्ता था।

एथर 12:1–22 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- एथर ने लोगों को परमेश्वर में विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया था, यह कहते हुए कि "विश्वास के द्वारा सारी चीज़ें पूरी होती हैं" (एथर 12:3)। एथर ने उनका वर्णन कैसे किया था जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं? (एथर 12:4 देखो।) कैसे विश्वास और आशा हमारे लिए एक स्थिरक हो सकते हैं? क्या कुछ उदाहरण हैं कि कैसे विश्वास अच्छे कार्यों के लिए नेतृत्व करता है जो परमेश्वर का गुनगान करते हैं?

- एथर ने लोगों को "महान और अद्भुत बातों" की भविष्यवाणी की थी, लेकिन उन्होंने उसका विश्वास नहीं किया था। क्यों? (एथर 12:5 देखो।)

  कक्षा के सदस्यों से उन समयों के बारे में सोचने को कहें जब वे या अन्य लोग भविष्यवक्ता की सलाह पर चलकर आशिषित हुए हैं जबकि वे सलाह के कारणों को "देख" या समझ नहीं सकते थे। जब उचित हो उन्हें अपने उदाहरण बांटने के लिए आमन्त्रित करो।

- मरोनी ने अंकित किया था कि लोगों ने एथर की भविष्यवाणियों का विश्वास नहीं किया था क्योंकि वे उन्हें नहीं देख सकते थे। मरोनी तब विश्वास की परिभाषा दी थी और इसके उदाहरण दिये थे। उसने विश्वास की कैसे परिभाषा दी थी? (एथर 12:6 देखो; इब्रानियों 11:1; अलमा 32:21 भी देखो।) आपके विचार से इसका मतलब क्या है कि हमें "तब तक साक्षी नहीं मिल सकती जब तक कि [हमारे] विश्वास की परीक्षा न हो जाए"? (एथर 12:6; एथर 12:29–31; सि. और अनु. 58:2–4 भी देखो)। किन तरीकों से परीक्षा आपके विश्वास को मज़बूती करती है और इसकी पुष्टि करती है?

- मरोनी ने कई घटनाओं की सूची बनाई थी जो विश्वास के परिणाम के रूप में हुई थीं। कौनसी घटनाओं की सूची उसने बनाई थी? (एथर 12:7–22 देखो। चॉकबोर्ड पर कक्षा के सदस्यों के जवाबों की सूची बनाये। यह भी सलाह दें कि कक्षा के सदस्य इन आयतों में जब *विश्वास* शब्द आये तो उस पर निशान लगाएं।) धर्मशास्त्रों से कौनसे अन्य उदाहरणों ने आपको विश्वास की शक्ति दिखाई है?

- भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने शिक्षा दी थी कि, "हम विश्वास के द्वारा सारी लौकिक आशीषें प्राप्त करते हैं जो हम प्राप्त करते हैं, [और] हम उसी तरह से विश्वास द्वारा आत्मिक आशीषों को भी प्राप्त करते हैं जो हम प्राप्त करते हैं" (*Lecture on Faith* [1985], 3)। कौनसी कुछ आशीषें आपने अपने विश्वास के कारण प्राप्त की हैं? (आप शायद इस प्रश्न का उत्तर ज़ोर से कहने बजाय इसके बारे में सोचने के लिए कक्षा के सदस्यों को आमन्त्रित करना चाहें।)

2. प्रभु मरोनी को शिक्षा देता है कि वह हमें कमज़ोरी देता है कि हम विनम्र बन सकें।

एथर 12:23–41 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- अन्यजातियां उसके अभिलेख को कैसे प्राप्त करेंगे के बारे में मरोनी क्या चिन्ता थी? (एथर 12:23–25 देखो।) प्रभु का जवाब क्या था? (एथर 12:26 देखो।) यह क्यों महत्वपूर्ण है कि मरोनी की शब्दों—और सारे धर्मशास्त्रों को—नम्रता से पढ़ें?

कक्षा के सदस्यों को एथर 12:27 ज़ोर से पढ़ने दो। उन लोगों के लिए प्रभु के वादे पर कक्षा के सदस्यों का ध्यान लायें जो अपने आपको विनम्र बनाते हैं और उसमें विश्वास रखते हैं। ("तब उनके लिए मैं निर्बल बातों को सबल कर देता हूं")। कक्षा के सदस्यों को इस वादे का धर्मशास्त्रों, उनके जीवन, या अन्यों के जीवन में पूरे होने के उदाहरण के बारे में सोचने को कहो। उन्हें इनमें से कुछ उदाहरणों को बांटने के लिए आमन्त्रित करो।

- मरोनी ने विश्वास, आशा, और दानशीलता की महत्वपूर्णता के बारे में लिखा था (एथर 12:28–34)। कैसे ये गुण हमें मसीह के पास लाते हैं?

- मरोनी हमें "इस मसीह को खोज़ने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने लिखा है।" (एथर 12:41)। किन तरीकों से हम आज "यीश को खोज़" सकते हैं? प्रभु उनके साथ क्या वादा करता है जो ऐसा करते हैं? (एथर 12:41 देखो।) हमें परमेश्वर और उसके पुत्र की कृपा की ज़रूरत क्यों है?

3. मरोनी वादा किए गए देश के बारे में एथर की भविष्यवाणियों को अंकित करता है।

एथर 13:1–12 पढ़ो और चर्चा करो।

- एथर ने नये यरूशलेम और पुराने यरूशलेम के बारे में क्या भविष्यवाणी की थी? (इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के लिए कक्षा के सदस्य एथर 13:2–12 पढ़ें; नीचे दी गई सूची को भी देखें।)

  क. पुराना यरूशलेम ("जहां से लेही [आया] था"), "यीशु के लिए दुबारा से बनाया जाएगा, एक पवित्र शहर" (एथर 13:5)। यह द्वितीय आगमन से पहले यहूदा के वंशज द्वारा किया जाएगा।

  ख. द्वितीय आगमन से पहले, "इस भूमि [अमेरिका] पर एक नया यरूशलेम बनाया जाएगा" (एथर 13:6)। नया यरूशलेम एक पवित्र शहर होगा जो युसुफ के घराने के बचे लोगों द्वारा बनाया जाएगा (एथर 13:8)।

  ग. इनोस का शहर स्वर्ग से नीचे उतर आएगा और नये यरूशलेम का हिस्सा बन जाएगा (एथर 13:3, 10; प्रकाशितवाक्य 21:2, 10)। यह द्वितीय आगमन के बाद होगा।

- मरोनी ने उन लोगों के बारे में कैसे वर्णन किया था जो इन पवित्र शहरों में रहेंगे? (एथर 13:10–11 देखो।) "मेमने के लहू में धुलने" का क्या अर्थ है? (यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा पापों से साफ होना।)

4. पूरे देश में युद्ध बढ़ जाता है। यारदाइयों का राष्ट्र नष्ट हो जाता है।

एथर 13:13–15:34 में से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि लोगों ने एथर को बाहर फैंक दिया था, और उसने बाकी बचे अभिलेख को पत्थर की गुफा में छुप कर पूरा किया था (एथर 13:13–14)। लोग जल्द ही युद्धों और गुप्त संधियों में डूब गये थे।

- दूसरे साल के दौरान जब एथर पत्थर की गुफा में था, प्रभु के शब्द उसके पास आये। प्रभु ने उसे क्या करने का आदेश दिया था? (एथर 13:20–21 देखो।) कैसे कोरियण्टूमर ने एथर की भविष्यवाणियों का कैसे जवाब दिया था? (एथर 13:22 देखो।)

बताओ कि एथर 13:23–15:28 निरन्तर खुन खराबे का वर्णन करता है जब अलग-अलग समूह सत्ता लेने की कोशिश कर रहे थे। लाखों यारदाई युद्धों में मारे गए थे। यद्यपि कोरियण्टूमर कई युद्ध हार गया था और कई बार घायल भी हुआ था, वह मरा नहीं था। अभिलेख के लगभग खत्म होने पर, कोरियण्टूमर और सेज ने सारे लोगों आखरी युद्ध के लिए इकट्ठा किया। कई दिनों तक लड़ने के बाद, सिर्फ कोरियण्टूमर और सेज बचे थे।

- आखिर में युद्ध कैसे खत्म हुआ था? (एथर 15:29–32 देखो।) यह कैसे एथर की भविष्यवाणी का पूरा होना था? (एथर 13:20–21 देखो।)

- हमारे पाप में पूरी तरह समा जाने से पहले पश्चाताप की महता के बारे में यारदाइयों के लेख से हम क्या सीख सकते हैं? (एथर 15:1–5, 18–19 देखो; इलामन 13:32–33, 38 भी देखो।) पाप करना हमारी स्वतन्त्रता को कैसे रोकता है?

- नफायटियों के इतिहास और यारदाइयों के इतिहास में क्या समानताएं हैं? इन राष्ट्रों के अभिलेखों से हम क्या सीख सकते हैं?

निष्कर्ष

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

1. भविष्यवक्ताओं का अनुगमन करने की महत्वपूर्णता

बताओ कि यारदाइयों का इतिहास निम्नलिखित नमूने के कई उदाहरण देता हैः

क. लोग दुष्ट बन जाते हैं।

ख. भविष्यवक्ता लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाते हैं।

ग. लोग भविष्यवक्ताओं को स्वीकार करते हैं और आशिषित होते हैं, या वे भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार करते हैं और अपनी दुष्टता के परिणामों भुगतना आरम्भ करते हैं।

घ. परिणामों के जवाब में, लोग पश्चाताप करते हैं और भविष्यवक्ताओं का अनुगमन करते हैं, या वे लगातार अपने विनाश के लिए दुष्टता में रहते हैं।

आप एथर 7:23–27; 9:23–35; 11:1–8, 11–14. 19–23 में इस नमूने के उदाहरणों को पढ़ना और चर्चा करना चाहेंगे।

2. मरोनी गुप्त संधियों के विरूद्ध चेतावनी देता है

यारद और उसके भाई की मृत्यु के बाद, लोगों पर राजाओं के अनुक्रमों द्वारा शासन हुआ था। हर पीढ़ी के गुजरने के साथ-साथ, सिहांसन के विवाद और बढ़ गए। जब यह विवाद बढ़े, यारद की लड़की ने अपने पिता को राजा बनाने के लिए एक योजना रची (एथर 8:8; कक्षा के सदस्यों को याद दिलाये कि इस लेख में यारद नाम का व्यक्ति यारद का वंशज था जिसका एथर 1–6 में संदर्भ किया गया था)।

- अपने पिता को राजा बनाने के लिए यारद की बेटी ने क्या योजना बनाई थी? (एथर 8:9–12 देखो।) कैसे इस योजना ने गुप्त संधि का देश में परिचय कराया था? (एथर 8:13–18 देखो।)
- मरोनी ने गुप्त संधियों के खतरे के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (एथर 8:21–22 देखो।) क्यों इन बातों को अपने अभिलेख में शामिल किया था? (एथर 8:23, 26 देखो।) हम कैसे गुप्त संधियों को पहचान सकते हैं और उनसे अपने आप को बचा सकते हैं? एथर 8:23–25 देखो।)

3. "अपनी दुर्बलता देखने के कारण तुमको बलवान किया जाएगा" (एथर 12:37)

- जैसे हैरम स्मिथ कार्टेज जेल में जाने के लिए तैयार किया था, जहां उसका और भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ का खुन हो गया था, उसने एथर 12:36–38 पढ़ा था और पृष्ठ को मोड़ कर रख दिया था (सि. और अनु. 135:4–5)। ये आयते क्या आराम देते हैं? धर्मशास्त्र के किन लेखांशों ने आपको मज़बूती या आराम दिया है?

पाठ
47

"उन्हें सही मार्ग में रखने के लिए"

मरोनी 1–6

उद्देश्य

सुसमाचार धर्मविधियों और एक दूसरे को मज़बूत करने की ज़रूरत की कक्षा के सदस्यों की समझ को बढ़ाना।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

क. मरोनी 1। नफायटियों के विनाश में बचने के बाद, मरोनी अपने लेख को जारी रखता है। वह छुपा रहता है क्योंकि वह "मसीह को कभी अस्वीकार नहीं करेगा।"

ख. मरोनी 2–5। मरोनी महत्वपूर्ण सुसमाचार धर्मविधियों के बारे में शिक्षा देता है।

ग. मरोनी 6। मरोनी गिरजाघर सदस्यता की अपेक्षाओं और अभिलेख रखने और मित्रता करने की ज़रूरत को बताता है

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

अपने स्वयं के अलावा वार्ड या शाखा में आखरी प्रभुभोज सभा में उपस्थिति होने को याद करने को कहें।

- प्रभुभोज का कौनसे भाग समान होते हैं जहां कहीं भी आप गिरजाघर जाते हैं? (उत्तरों में शामिल होते हैं प्रार्थना करना, स्तुति गीत गाना, प्रभुभोज को आशिषित करना और लेना, नये धर्मपरिवर्तितों को पवित्र आत्मा का उपहार देना, और यीशु मसीह के नाम में गवाहियों को या उपदेशों को समाप्त करना।) आपके विचार से यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम इन विषयों में एक रहें?

बताओ कि यह पाठ सुसमाचार की कुछ धर्मविधियों के बारे में मरोनी की शिक्षाओं पर चर्चा करता है—पवित्र आत्मा का उपहार देना, शिक्षकों और याजकों को नियुक्त करना, प्रभुभोज का प्रबन्ध करना, और बपतिस्मा देना—जो आज पुनःस्थापित गिरजाघर के हिस्से हैं। उसकी शिक्षाएं हमारी यह देखने में सहायता करते हैं कि वही धर्मविधियों को आज जारी रहना जो पहले के गिरजाघर में थीं जिसे उद्धारक ने पुराने समय में स्थापित किया था। एक दूसरे को मज़बूत करने और "[एक दूसरे] को सही रास्ते में रखने" के लिए गिरजाघर के सदस्यों के रूप में हमारी जिम्मेदारियों को पूरा करने में ये सहायता भी करते हैं (मरोनी 6:4; 2 नफी 25:28–29 भी देखो)।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. नफायटियों के विनाश में बचने के बाद, मरोनी अपने लेख को जारी रखता है।

मरोनी 1 पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि मरोनी ने विश्वास किया था कि एथर के अभिलेख का उसका संक्षिप्त करना उसका आखिरी लेख होगा। तथापि, वह अभी नहीं मरा था, उसने लिखना जारी रखा।

- कक्षा के सदस्यों को मरोनी 1:1–4 ज़ोर से पढ़ने को कहो। मरोनी की क्या परिस्थितियां थी जब उसने इस अध्याय को लिखा था? (मरोनी 1:1 देखो। वह अकेला था और लमनायटियों से छुप रहा था।) लमनायटी उसको

क्यों मारना चाहता था? (मरोनी 1:2–3 देखो।) यह हमें मरोनी के विश्वास के बारे में क्या दिखाता है? हम कैसे यीशु मसीह की ऐसी दृढ़ गवाही को विकसित कर सकते हैं?

- मरोनी लिखना क्यों जारी रखा था? (मरोनी 1:4 देखो। बताओ कि यद्यपि उसके दिन लमनायटी उसके मार देना चाहते थे, मरोनी निरन्तर उनके वंशज के लिए चिन्तित था।)

2. मरोनी महत्वपूर्ण सुसमाचार धर्मविधियों के बारे में शिक्षा देता है।

मरोनी 2–5 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। समझाओ कि मॉरमन की पुस्तक हमें महत्वपूर्ण सुसमाचार धर्मविधियों के बारे में शिक्षा देती है। तथापि, मरोनी की पुस्तक तक, अपेक्षाकृत धर्मविधियां कैसे पूरा करें के बारे में थोड़ा सा अंकित किया गया था। पूर्व गिरजाघर में धर्मविधियां कैसे सम्पन्न होती थी की हमारी समझ को कैसे बढ़ाता है पर चर्चा करें।

मरोनी 2 को ज़ोर से पढ़ने के लिए कक्षा के एक सदस्य को आमन्त्रित करो, जो उन शब्दों को वर्णित करता है जो उद्धारक ने अपने नफायटी शिष्यों को बोले थे जब उसने अपने हाथों को उनके ऊपर रखा था। चॉकबोर्ड पर शीर्षक *पवित्र आत्मा का उपहार देना* लिखो।

- पवित्र आत्मा का उपहार देने के लिए उद्धारक ने शिष्यों को कैसे आदेश दिये थे? (मरोनी 2:2 देखो। चॉकबोर्ड पर शीर्षक के नीचे, लिखें *यीशु मसीह के नाम में हाथों को रखने के द्वारा* ।)

कक्षा के सदस्यों को मरोनी 3 ज़ोर से पढ़ने को आमन्त्रित करो, जो वर्णित करता है कि कैसे शिष्यों ने याजकों और शिक्षकों को नियुक्त किया था। चॉकबोर्ड पर शीर्षक *याजकों और शिक्षकों को नियुक्त करना* लिखें।

- याजकों और शिक्षकों को क्या करने के लिए नियुक्त किया गया था? (मरोनी 3:3 देखो। दूसरे शीर्षक के नीचे, लिखो *पश्चाताप और पापों की क्षमा का प्रचार करने के लिए* ।) ये जिम्मेदारियां आज के पौरोहित्य धारकों के कर्त्तव्यों के समान कैसे हैं? (सि. और अनु. 20:46–59 देखो।) हम हारूनी पौरोहित्य धारकों की उनकी नियुक्त कर्त्तव्यों को समझने और पूरा करने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

मरोनी 4 और 5 को ज़ोर से पढ़ने के लिए कक्षा के दो सदस्यों को आमन्त्रित करो, जो प्रभुभोज को प्रबन्ध करने के तरीके की वर्णित करते हैं। चॉकबोर्ड पर शीर्षक *प्रभुभोज का प्रबन्ध* करना लिखें।

- प्रभुभोज के द्वारा कौनसे अनुबंध हम बनाते हैं? (मरोनी 4:3; 5:2 देखो। तीसरे शीर्षक के नीचे लिखो *उद्धारक को याद करो, अनुगमन करो, और पालन करो* ।) वापसी में हम क्या वादा करते हैं? आप कैसा महसूस करते हैं जब आप श्रद्धा और योग्यता के साथ प्रभुभोज लेते हैं?

- अध्याय 2–5 हमारे दिन के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं? (उत्तरों में शामिल हो सकते हैं कि वे भिन्न भिन्न समय में सुसमाचार की स्थिरता देखने में हमारी सहायता करते हैं।) यह कैसे आपको मज़बूती देता है यह देखना कि वही धर्मविधियां प्रभु के गिरजाघर के अलग-अलग प्रबन्ध में उपस्थित है?

3. मरोनी गिरजाघर सदस्यता की अपेक्षाओं और अभिलेख रखने और मित्रता करने की ज़रूरत को बताता है।

मरोनी 6 को पढ़ो और चर्चा करो।

- बपतिस्मा के लिए अपेक्षाओं के बारे में मरोनी ने क्या शिक्षा दी थी? (मरोनी 6:1–3 देखो।)

  कक्षा के सदस्यों को लोगों के उन उदाहरणों के बारे में सोचने को कहो जिन्होंने बपतिस्मा लेने के बाद भी इन अपेक्षाओं को पूरा किया है। जब उचित हो उन्हें इन उदाहरणों को बांटने के लिये आमन्त्रित करो।

- मरोनी ने शिक्षा दी थी कि लोगों के बपतिस्मा लेने और और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करने के बाद, "उनकी मसीह के गिरजाघर में गिनती की जाती थी; और उनके नाम लिये जाते थे" (मरोनी 6:4)। उनके नाम

क्यों लिखे गये थे? (मरोनी 6:4 देखो।) किसी जिम्मेदारियां है यह देखना कि दोनों पुराने और नये धर्मपरिवर्ती को "याद रखा जाये और परमेश्वर के शब्दों द्वारा पोषण किया जाये"? (ज़ोर दो कि हम में से प्रत्येक का यह अवसर और जिम्मेदारी है। तब नीचे दिये गये उद्धरण को बांटे।)

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने शिक्षा दी थीः "कोई धर्मपरिवर्ती जिसका विश्वास ठंडा पड़ जाता है दुःख की बात है। कोई सदस्य जो असक्रिय हो जाता है एक गंभीर चिन्ता का विषय बन जाता है। प्रभु ने निन्यानवे छोड़कर खोई भेड़ को ढूंढने गया था। जाने वाले के लिए उसकी चिन्ता बहुत ही गंभीर थी कि उसने अपने एक पाठ का विषय बना दिया था। हमें निरन्तर गिरजाघर के अधिकारियों और सदस्यता को हर वास्तविक और गर्म और खुबसुरत तरीके में मित्रता बहुत बड़े अनुग्रह को सचेत करना चाहिए वो जो धर्मपरिवर्तितों के रूप में गिरजाघर में आते हैं, और उनको के पास प्रेम के साथ पहुंचे जो किसी वजह से असक्रियता की परछाई में चले जाते हैं" (in *Church News,* 8 Apr. 1989, 6)।

अध्यक्ष हिंकली ने यह भी कहा थाः "प्रत्येक धर्मपरिवर्ती की बढ़ती संख्या के साथ, हमें उनकी सहायता करने के लिए एक बढ़ते वास्तविक प्रयास करना चाहिए जब वे अपना रास्ता ढूंढते हैं। उनमें से प्रत्येक को तीन चीज़ों की ज़रूरत हैः एक दोस्त, एक जिम्मेदारी, और परमेश्वर के अच्छे शब्दों के साथ पोषण' (मरोनी 6:4)" (in Conference Report, Apr. 1997, 66; or *Ensign,* May 1997, 47)।

- हम अध्यक्ष हिंकली की सलाह पर चलने के लिए क्या कर सकते हैं? आप कैसे दुसरों के द्वारा आशिषित हुए हो जिन्होंने आपको याद किया और पोषण किया?
- मरोनी ने अंकित किया था कि गिरजाघर "प्रायः एक साथ मिलता था" (मरोनी 6:5)। क्यों? (मरोनी 6:5–6 देखो।) हम कैसे मज़बूत होते हैं जब हम एक साथ उपवास रखते हैं और प्रार्थना करते हैं? कैसे गिरजाघर सभाएं हमें "[हमारी] आत्माओं के कल्याण के बारे में" एक दुसरे से बोलना का अवसर देती हैं? यह क्यों ज़रूरी है कि हम प्रभुभोज को लेने के लिए एक साथ मिलें?
- मरोनी ने गिरजाघर की सभाओं का संचालन कैसे होता था के बारे में क्या शिक्षा दी थी? (मरोनी 6:9 देखो।) हमारी सभाओं में आत्मा को आमन्त्रित करने के लिए हम में से प्रत्येक क्या कर सकता है।

निष्कर्ष

समझाओ कि मरोनी ने गिरजाघर के सदस्यों के रूप में एक दुसरे को मज़बूत करने की महता के बारे में शिक्षा दी थी। कक्षा के सदस्यों को उन तरीकों को देखने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें वे वार्ड या शाखा के अन्य सदस्यों को "याद रख सकें और पोषण कर सकें।

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा को परिशिष्ट करती है। आप एक या अधिक का प्रयोग पाठ के भाग के रुप में कर सकते हैं ।

अन्यों की सहायता करना हमारे वार्ड और शाखा में स्वागत महसूस करना है

एल्डर कार्ल परैट ने अहसासों के बारे में बताया था जो उसके परिवार ने अनुभव किया था जब वे गिरजाघर में दूसरे वार्ड में गए थे। कक्षा के सदस्यों के साथ निम्नलिखित उद्धरण बांटेंः

"कुछ वार्ड में जाना हमारे बच्चों को अच्छा लगता है क्योंकि वे युवाओं में जल्दी ही मित्र पा लेते हैं और हम सब उत्तेजित और हार्दिक स्वागत को पाते हैं। लेकिन कुछ वार्ड हैं जहां से हमारे बच्चे कम प्रोत्साहन के साथ वापस आते हैं, और वहां ध्यान देने वाली उत्तेजित और हार्दिक कमी को महसूस किया था।

“हमने तब ध्यान देना आरम्भ किया कुछ वार्ड जहां हम गये थे में...अगर हम जांचकर्ता होते या नये सदस्य होते, हम स्वागत को महसूस नहीं करते...

“ये अनुभव..उस ज़रूरत को हमें सचेत किया कि हम *सब* को सुधार करने की आवश्यकता है जो हम कहते हमारा मित्रता गुण...

“भाइयों और बहनों, हमारे पास कीमती आशीषें हैं जो परमेश्वर अपने बच्चों को दे सकता है। हमारे पास यीशु मसीह के सुसमाचार की पूर्णता है। हमें पूरी दुनिया में अधिक मिलनसार, मैत्रीपूर्ण, खुश, दयालु, विचारवान, समझदार, लोगों से प्यार करने वाला होना चाहिए...

“क्या हमारे उपासना गृह में असदस्य, नये धर्मपरिवर्ती, और दौरा करने वाले हमें हमारे अभिवादन की उत्तेजना के द्वारा, हमारी मुस्कुराहटों के द्वारा, उस दयालु और वास्तविक चिन्ता द्वारा जो हमारे आंखों में चमकती हैं उसके शिष्य के रूप में पहचानेंगे?” (in Conference Report, Oct. 1997, 12; or *Ensign,* Nov. 1997, 11–12)।

- आपके विचार से दौरा करने वाले या नये धर्मपरिवर्ती हमारे वार्ड और शाखा में कैसा महसूस करेंगे? (कक्षा के सदस्यों को इसका उत्तर जोर से देने के बजाय इस प्रश्न पर चिन्तन करने को कहो।) हम दौरा करने वालो और नये धर्मपरिवर्ती के साथ अपने व्यवहार करने के तरीके में कैसे सुधार ला सकते हैं?

पाठ
48

“मसीह के पास आओ”

मरोनी 7–8; 10

उद्देश्य

अच्छे और बुरे के बीच कैसे फर्क करें और सुसमाचार और मॉरमन की पुस्तक की गवाही कैसे प्राप्त करें की शिक्षा कक्षा के सदस्यों को देना।

तैयारी

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के बारे में पढ़ो, चिन्तन करो, और प्रार्थना करोः

क. मरोनी 7:1–19। मॉरमन बताता है कि कैसे अच्छे और बुरे में फर्क करें (ध्यान दो कि ये शब्द मॉरमन के पुत्र मरोनी ने अंकित किये थे)।

ख. मरोनी 7:20–48। मॉरमन बताता है कि मसीह में विश्वास एक शक्ति है जिसके द्वारा चमत्कार किये जाते हैं। वह विश्वास, आशा, और दानशीलता की महता बताता है।

ग. मरोनी 8। मरोनी को पत्र में, मॉरमन उद्धार की शर्तों को रूपरेखित करता है और बताता है कि मसीह के प्रायश्चित के द्वारा छोटे बच्चे बचते हैं।

घ. मरोनी 10। मरोनी बताता है कि पवित्र आत्मा उनको सारी सच्चाइयों की साक्षी देता है जो विश्वास में मांगते हैं। वह आत्मिक उपहारों की व्याख्या करता है और सभी को मसीह के पास आने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पाठ विकास के लिए सुझाव

ध्यान गतिविधि

जैसा उचित हो, पाठ की शुरूआत करने के लिए निम्नलिखित या अपने स्वयं की गतिविधि का प्रयोग करो।

निम्नलिखित कहानी बताओः

फरवरी 1910 में एक ठंड के दिन, विसैन्जो डी फ्रांससिका, एक प्राटैस्टेंट पादरी, को बिना शीर्षक पृष्ठ के साथ एक फटी हुई धार्मिक पुस्तक मिली। उत्तेजित, उसने अखबार में पुस्तक को लपेटा और अपने साथ ले गया। घर पर उसने पुस्तक को साफ करके पढ़ा। “मैंने पढ़ा और फिर से पढ़ा, दो बार और फिर दो बार, और मैंने यह कहना उचित पाया कि पुस्तक मुक्तिदाता का पांचवा सुसमाचार थी,” उसने कहा।

पुस्तक जो उसे मिली थी वह मॉरमन की पुस्तक थी। जब उसने इसे पढ़ा था, तो उसने मरोनी 10:4 में चेतावनी का अनुगमन किया था। “दिन के खत्म होने पर, मैंने अपने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया, अपने हाथों में पुस्तक को रख घुटने टेके, और मरोनी की पुस्तक का अध्याय दस पढ़ा। मैंने अनन्त पिता, परमेश्वर से, उसके पुत्र, यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना की, मुझे यह बताने के लिए यदि पुस्तक परमेश्वर की थी, यदि यह अच्छी और सच्ची थी, और अगर मुझे इसके शब्द अपने प्रचार में चार सुसमाचार के साथ मिलाने चाहिए।

“मुझे महसूस हुआ कि मेरा शरीर समुद्र से हवाओं की तरह ठंडा हो गया था। फिर मेरे हृदय लगातार धड़कने लगा, और खुशी के अहसास ने, जैसे कि कुछ मूल्यवांन और असाधारण चीज़ मिल गई हो, मेरी आत्मा को आराम दिया और मुझे वह आनन्द दिया जो मानव भाषा वर्णन करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ सकती। मुझे विश्वास हो गया था कि परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया था और पुस्तक मेरे लिए और उन सबके लिए जो इसके शब्दों को सुनेंगे बहुत ही लाभदायक है।”

इस समय में जो गवाही विसैन्जो डी फ्रांससिका को प्राप्त हुई थी ने उसकी कई परेशानियों में सहायता की थी। उसे एक पादरी के रूप उसके पद से हटा दिया गया था क्योंकि उसने मॉरमन की पुस्तक से शिक्षा दी थी। 1930 में

उसने पुस्तक का नाम और उस गिरजाघर का नाम जाना जिसने इस प्रकाशित किया था। युद्ध और अन्य राजनैतिक समस्या के कारण, 21 साल और गुजर गये थे तब जाकर वह बपतिस्मा ले पाया था। इन मुश्किलों के दौरान, उसने मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई की गवाही को बनाये रखा था। (See Vincenzo di Francesca, "I Will Not Burn the Book!" *Ensign,* Jan. 1988, 18–21.)

बताओ कि यह पाठ मॉरमन की पुस्तक के आन्तिम अध्यायों की चर्चा करता है। इन लेखों में सम्मलित हम सब कैसे मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई की व्यक्तिगत गवाही कैसे पा सकते हैं के बारे में मरोनी के निर्देशन हैं

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

प्रार्थनापूर्वक उन धर्मशास्त्र लेखाशों, प्रश्नों, और अन्य पाठ सामग्री का चयन करो जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा कर सके। चर्चा करो कि कैसे चुने हुए धर्मशास्त्र दैनिक जीवन में लागू होते हैं। कक्षा के सदस्यों को उचित अनुभवों को बांटने के लिए प्रोत्साहित करो जिनका संबंध धर्मशास्त्र नियमों से हो।

1. मॉरमन बताता है कि कैसे अच्छे और बुरे में फर्क करें।

मरोनी 7:1–19 की चर्चा करो। कक्षा के सदस्यों को चुनी हुई आयतें ज़ोर से पढ़ने के लिए आमन्त्रित करो। बताओ कि मरोनी 7 में मॉरमन के शब्द हैं, जो उसके पुत्र मरोनी द्वारा अंकित किये गये थे।

- मॉरमन ने गिरजाघर के सदस्यों को "मसीह के शान्त अनुगामी" के रूप में संदर्भ किया था (मरोनी 7:3)। किस आधार पर मॉरमन ने गिरजाघर के सदस्यों के बारे में यह निर्णय लिया था? (मरोनी 7:4–5 देखो।) हम "मसीह के शान्त अनुगामी" कैसे बनते हैं?

- अच्छे कार्यों के लिए हमारे उद्देश्य की महत्वपूर्णता के बारे में मॉरमन ने क्या शिक्षा दी थी? (मरोनी 7:6–9 देखो।) उपहार देने या "अच्छी भावना" से प्रार्थना करने का क्या अर्थ है? अच्छा करने के लिए हम कैसे अपनी धारणा को शुद्ध कर सकते हैं?

- हम अच्छे बुरे में कैसे फर्क कर सकते हैं के बारे में मॉरमन ने क्या शिक्षा दी थी? (मरोनी 7:12–19 देखो।)

  चॉकबोर्ड पर लिखें *क्या_____मुझे परमेश्वर को प्रेम और सेवा करने के लिए आमन्त्रित करता है? क्या_____परमेश्वर से प्रेरित है?* कक्षा के सदस्यों को इन प्रश्नों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करो जब वे आंकते हैं कि क्या चीज़ या कार्य अच्छा है या बुरा है। (आप शायद यह बताना चाहे कि यह निर्णय करना कि क्या वह चीज़ हमें परमेश्वर की ओर ले जाएगी या नहीं आसान होता है यह निर्णय लेने से कि क्या वह चीज़ हमें शैतान की ओर ले जाएगी या नहीं। शैतान के धोखा देने वाले कार्य हमेशा हमें यह सोचने के लिए उत्तेजित करते हैं कि कोई चीज़ "गन्दी नहीं" है—कि यह वास्तव में बुरी नहीं है, जबकि यदि यह अच्छी भी नहीं है। ज़ोर दो कि कई चीज़ जो हमें परमेश्वर की ओर नहीं ले जाती सिर्फ हमें उससे दूर ले जाती है।)

- मॉरमन लोगों को चेतावनी देता है कि "ध्यान दो...कि तुम उसको जो बुरी है परमेश्वर की ओर से न समझो, या वह जो अच्छी है...उसे शैतान की ओर से न समझो" (मरोनी 7:14; 2 नफी 15:20 भी देखो)। कौनसे कुछ तरीकें हैं जिनमें आप आज ऐसा हो रहा है देख सकते हैं? (आप शायद कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर शीर्षक *बुरा अच्छे की तरह प्रस्तुत किया जाता है और अच्छा बुरे की तरह प्रस्तुत किया जाता है* के नीचे लिखो।)

- अच्छे और बुरे में फर्क करने में हमारी सहायता के लिए क्या प्रेरणा दी गई है? (मरोनी 7:16, 18–19 देखो।)

  बताओ कि "मसीह की आत्मा" या "मसीह का प्रकाश" "एक ऊपर उठाने वाला, उद्धार करने वाला, बचाने वाला प्रभाव है जो मानवजाति पर यीशु मसीह के कारण आता है" (Bible Dictionary, "Light of Christ," 725)। यह सारे लोगों के लिए उपलब्ध है और व्यक्ति को सच्चाई ढूंढने और पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए तैयार

कर सकता है। सही और ग़लत में फर्क करने में हमें सहायता करने की अपनी भूमिका में, मसीह का प्रकाश प्रायः हमारा विवेक कहा जाता है।

- किन तरीकों में मसीह के प्रकाश ने आपकी अच्छे और बुरे में फर्क करने में सहायता की है? हम मसीह के प्रकाश के नेतृत्व के लिए अधिक आदरणीय कैसे बन सकते हैं?

2. मॉरमन विश्वास, आशा, और दानशीलता की महत्वपूर्णता बताता है।

मरोनी 7:20–48 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- मॉरमन ने पूछा था कि, "यह कैसे संभव हो सकता है कि तुम हर एक भली बातों को अपना लो?" (मरोनी 7:20)। उसने इस प्रश्न का उत्तर कैसे दिया था? (मरोनी 7:21–26 देखो। "सारी बातें जो भली हैं मसीह की तरफ से आती हैं," और हम उसमें विश्वास का उपयोग करने के द्वारा उन्हें "अपना" सकते हैं।)

  कक्षा के सदस्यों को उन आशीषों के बारे में सोचने को कहो जो उनके पास या अन्य के पास विश्वास के कारण आई हो। जब उचित हो उन्हें इन उदाहरण को बांटने के लिए आमन्त्रित करो।

- विश्वास और चमत्कार में क्या संबंध हैं? (मरोनी 7:28–30, 35–38 देखो।) क्यों यह ज़रूरी है कि विश्वास चमत्कार से पहले हो? (मरोनी 7:37 देखो; एथर 12:12, 18 और नीचे दिए उद्धरण को भी देखो।) क्यों चमत्कार स्वयं विश्वास के लिये दृढ़ नींव उपलब्ध नहीं करता है?

  अध्यक्ष ब्रिग्हम यंग ने कहा था, "चमत्कार, या परमेश्वर की शक्ति के ये असाधारण प्रकटीकरण, अविश्वासियों के लिए नहीं हैं; वे सन्तों को आराम देने के लिए हैं और उनके विश्वास को मज़बूत और पक्का करने के लिए हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, डरते हैं, और उसकी सेवा करते हैं" (*Discourses of Brigham Young,* sel. John A. Widtsoe [1941] 341)।

- आशा क्या है? विश्वास और आशा में क्या संबंध होता है? (मरोनी 7:40–42 देखो।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने शिक्षा दी थीः "जैसा कि प्रकाशितवाक्य में उपयोग किया गया था, *आशा* यहां के बाद परमेश्वर के राज्य में अनन्त उद्धार पाने के लिए विश्वासी लोगों की इच्छा है....विश्वास और आशा अपृथक हैं। आशा [हमें] पहले मामले में विश्वास करने के लिए समर्थ बनाती है और फिर विश्वास के कारण आशा बढ़ती है जब तक उद्धार प्राप्त न हो जाये" (*Mormon Doctrine,* 2nd ed. [1966], 365–66)।

- कौनसी गुणवत्ता विश्वास और आशा के पहले आना चाहिए? (मरोनी 7:43 देखो।) सच्चा विश्वास और आशा होने के लिये क्यों एक व्यक्ति को "विनीत और हृदय का दीन" बनना चाहिए?

- मॉरमन ने शिक्षा दी थी विश्वास और आशा के अतिरिक्त, हमें दानशीलता भी होनी चाहिए। दानशीलता क्या है? (मरोनी 7:46–47 देखो।) दानशीलता के क्या चरित्र हैं? (मरोनी 7:45 देखो। आप कक्षा के सदस्यों के जवाब चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेंगे।) आपके जीवन में अनुभवों ने कैसे पुष्टि की है कि "दानशीलता कभी असफल नहीं होती"?

- हम अपने विश्वास और आशा को कैसे बढ़ा सकते हैं? हम कैसे मसीह के शुद्ध प्रेम से भर सकते हैं? हमें विश्वास, आशा, और दानशीलता रखने का प्रयत्न क्यों करना चाहिए? (मरोनी 10:20–21 देखो।)

3. मॉरमन शिक्षा देता है कि मसीह के प्रायश्चित के द्वारा छोटे बच्चे बचते हैं।

मरोनी 8 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो। बताओ कि इस अध्याय में अपने पुत्र मरोनी को लिखा पत्र शामिल है।

- छोटे बच्चों को बपतिस्मे की ज़रूरत क्यों नहीं होती है? (मरोनी 8:8–9, 11, 19–20 देखो। ध्यान दो कि बच्चों के बारे में मॉरमन की शिक्षाएं उन सब पर लागू होती है "जो नियम के बिना हैं" [मरोनी 8:22], जो उनको संदर्भ करता है जो मानसिक रूप से आज्ञाओं और सुसमाचार की धर्मविधियों को समझने में असमर्थ होते हैं।) छोटे बच्चों का बपतिस्मा "परमेश्वर के सामने हंसी करना" क्यों है? (मरोनी 8:20, 22–23 देखो।)

- छोटे बच्चे बचे होते हैं क्योंकि वे मासूम और पाप करने में असमर्थ होते हैं। कैसे हम में वो जो पाप करते हैं मसीह के प्रायश्चित के द्वारा उद्धार प्राप्त करते हैं? (मरोनी 8:10, 24–26 देखो।)

4. पवित्र आत्मा सारी सच्चाई की गवाही देता है। आत्मिक उपहार उनके पास आते हैं जो मसीह के पास आते हैं।

मरोनी 10 से चुनी हुई आयतों को पढ़ो और चर्चा करो।

- मॉरमन की पुस्तक में अन्तिम अध्याय के नाते, मरोनी 10 में मरोनी के समापन शब्द हैं। यह अध्याय किसको संबोधित करता है? (मरोनी 10:1 देखो।) मरोनी "प्रोत्साहन के कुछ शब्दों के साथ" समाप्त करता है (मरोनी 10:2)। शब्द *प्रोत्साहित* का क्या अर्थ है? (सलाह देना और दृढ़ता से याचना करना।) कक्षा के सदस्यों को जल्दी से पूरा अध्याय पढ़ने और उन बातों को पहचानने को कहें जो मरोनी अपने पाठकों को करने के लिए प्रोत्साहित करता है। (नीचे उत्तर दिये गये हैं। आप शायद कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक आयत को ज़ोर से पढ़ने दो जिसमें प्रोत्साहन है।)

  क. "याद रखो परमेश्वर मानव वंश के लिए कितना दयालु रहा है" (आयत 3)।
  ख. "तुम परमेश्वर, अनन्त पिता से मसीह के नाम पर पूछो किया क्या ये बातें सत्य नहीं हैं" (आयत 4)।
  ग. "परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार मत करो" (आयत 7)।
  घ. "परमेश्वर के उपहारों को अस्वीकार मत करो" (आयत 8)।
  ङ. "स्मरण रखो कि हर एक अच्छा उपहार मसीह से मिलता है" (आयत 18)।
  च. "स्मरण रखो कि [मसीह] भूत, वर्तमान, और भविष्य में सदा एक समान है" (आयत 19)।
  छ. "इन सब बातों के स्मरण रखो [कि मॉरमन ने लिखा है]" (आयत 27)।
  ज. "मसीह के पास आओ" (आयत 30)।

- कक्षा के सदस्यों को यह सोचने के लिए आमन्त्रित करो कि क्या उन्होंने गवाही प्राप्त की है कि मॉरमन की पुस्तक परमेश्वर के शब्द है। आत्मिक बातों की गवाहियों के हमारे प्राप्त करने में पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है? (मरोनी 10:4–5 देखो।) हम अपनी समझदारी के द्वारा हमारी गवाहियां क्यों नहीं प्राप्त कर सकते? (1 कुरोन्थियों 2:11; अलमा 26:21–22; मरोनी 10:6–7 देखो)।

- मरोनी ने हमें "परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार न करने" के लिए प्रोत्साहित किया था (मरोनी 10:7)। किन तरह से कभी- कभी हम परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार कर देते हैं? (कक्षा के सदस्यों के जवाबों को पूछने के अतिरिक्त, आप शायद नीचे दिए गए बयान को पढ़ना चाहें।)

  एल्डर जैफरी आर. हॉलैंड ने शिक्षा दी थीः

  "उद्धारक ने कहा था, 'मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं...तुम्हारा मन न घबराए और न डरे' (यूहन्ना 14:27)।

  "मैं आपको प्रस्तुत करता हूं, जो शायद उद्धारक की एक आज्ञा हो जो, यहां तक कि अन्तिम-दिनों के सन्तों के अन्यथा हृदयों में है, लगभग विश्वक अवज्ञा की जाती है; और अब मैं आश्चर्य करता हूं कि कहीं इस अमन्त्रण से हमारा दूर रहना प्रभु के दयावान हृदय के लिए कितना दर्द भरा हो सकता है। मैं आपको यह एक माता-पिता के रूप में बता सकता हूं: मैं बहुत चिन्ता में पड़ जाऊंगा यदि कहीं पर उनके जीवन में मेरा एक बच्चा गंभीर रूप से मुश्किल में है या दुःखी है या अवज्ञाकारी है, फिर भी मैं पूरी तरह से और अधिक नष्ट हो जाऊंगा जब मुझे

महसूस होगा कि ऐसे समय में बच्चा मदद के लिए मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता या सोचता है कि रूचि मेरे लिए कम महत्वपूर्ण है या मेरी देख रेख में असुरक्षित है। उसी तरह, मैं विश्वास करता हूं कि हम में कोई भी सराहना नहीं कर सकता कि यह दुनिया के उद्धारक के हृदय में कितना बड़ा घाव करता होगा जब उसे पता चलता है कि उसके लोग उसकी देखरेख में भरोसा नहीं महसूस करते या उसके हाथों में सुरक्षित नहीं महसूस करते या उसकी आज्ञाओं में भरोसा नहीं करते हैं" ("Come unto Me," *Ensign,* Apr. 1998, 19)।

- आत्मिक उपहारों के बारे मरोनी ने क्या शिक्षा दी थी? (मरोनी 10:8–19 देखो।) हम में से हर को परमेश्वर से अलग-अलग उपहार क्यों प्राप्त करते हैं? (सि. और अनु. 46:11–12 देखो।)
- आपने क्या सीखा और महसूस किया जब आपने मॉरमन की पुस्तक के संदेश पर चिन्तन किया? (कक्षा के सदस्यों को इस प्रश्न पर शान्तिपूर्वक चिन्तन करने के लिए आमन्त्रित करो यदि वे अपने विचारों को कक्षा के साथ नहीं बांटना चाहते हैं।)
- कैसे मरोनी का प्रोत्साहन "मसीह के पास आओ" मॉरमन की पुस्तक के पूरे संदेश को प्रतिबिंबित करता है? (मरोनी 10:30, 32)। किन निश्चित तरकों से इस साल मॉरमन की पुस्तक के अध्ययन ने मसीह के पास आने में आपकी सहायता की थी?

निष्कर्ष

जब आत्मा द्वारा निर्देशित हों, पाठ के दौरान चर्चित सच्चाइयों की गवाही दो।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

आप शायद निम्नलिखित बयान बांटना चाहें जब आप कक्षा के सदस्यों को मॉरमन की पुस्तक के उनके निरन्तर अध्ययन करने के प्रोत्साहित करते हो:

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था: "मैं प्रत्येक पुरूष और स्त्री...और प्रत्येक लड़के और लड़की से जो पढ़ने लायक हो विनति करूंगा कि आने वाले साल के दौरान मॉरमन की पुस्तक को दुबारा से पढ़ो...हम हमारे व्यक्तिगत जीवन में एक स्थिर दृढ़ विश्वास को बनाने से ज्यादा अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं कर सकते कि यीशु ही मसीह है, जीवित परमेश्वर का जीवित पुत्र...इस योग्य और अद्भुत पुस्तक के आने का यही उद्देश्य है" (in *Church News,* 4 May 1996, 2)।

अध्यक्ष जोसफ फिलडिंग स्मिथ ने कहा था: "इस गिरजाघर के किसी भी सदस्य को परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने की मंजूरी नहीं मिल सकती जिसने मॉरमन की पुस्तक को गंभीरता और ध्यान से नहीं पढ़ा है" (in Conference Report, Oct. 1961, 18)।

अध्यक्ष एज़्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था: "मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन हर चौथे साल में हमारे रविवार विद्यालय और शिक्षालय कक्षाओं में किया जाता है। यह चौथे-साल का नमूना, तथापि, गिरजाघर के सदस्यों द्वारा उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक अध्ययन में नहीं अपनाया जाना चाहिए। हमें पुस्तक के पृष्ठों से रोज़ाना पढ़ने की ज़रूरत है जो व्यक्ति को किसी 'अन्य पुस्तक के मुकाबले इसके उपदेशों द्वारा जुड़े रहने से परमेश्वर के नज़दीक' ले जाएगी (History of the Church, 4:461)" (in Conference Report, Oct. 1988, 3; or *Ensign,* Nov. 1988, 4)।

अध्यक्ष बेनसन ने यह भी कहा था: "प्रत्येक अन्तिम-दिनों के सन्त को इस पुस्तक के अध्ययन को जीवन भर का अनुसरण बनाना चाहिए" (in Conference Report, Apr. 1975, 97; or *Ensign,* May 1975, 65)।

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

HINDI
4 02356 83294 4
35683 294